राणायनीयशाखीयं सामगानम्

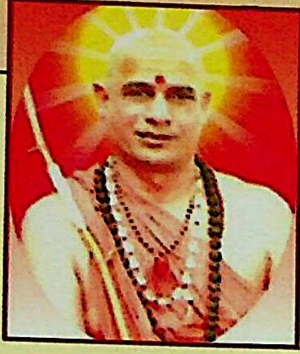
(आग्नेयमारभ्य महानाम्न्यन्तो भागः)



प्रकाशक

श्रीशारदापीठ विद्यासभा

द्वारका



स्वामी सदानन्द सरस्वती

जन्म - मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के एक ग्राम बरगी (करकबेल) में भाद्रकृष्ण द्वितीया सं. 2014 (31 अगस्त सन् 1958 ई.)

माता-पिता - सौ. मानकुंवर देवी एवं पिता आयुर्वेद रत्न पं. विद्याधर अवस्थी जी।

पूर्वनाम - रमेश कुमार अवस्थी।

शिक्षा - प्राथमिक शिक्षा बरगी तथा नरसिंहपुर में, वहीं संस्कृत शिक्षा का आरम्भ, ऋषिकुल संस्कृत विद्यालय झोतेश्वर तथा पूज्यपाद शङ्कराचार्य जी महाराज के सान्निध्य में एवं वाराणसी में संस्कृत विद्या एवं व्याकरण-वेदान्तादि शास्त्रों का अध्ययन।

दीक्षा - प्रयाग महाकुम्भ सन् 1977 ई. के अवसर पर।

दण्ड संन्यास - काशी में वैशाख पूर्णिमा सं.2060 तदनुसार दिनाङ्क 15 अप्रैल 2003।

दीक्षा गुरु - अनन्तश्रीविभूषित उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज।

प्रवृत्ति - वैयक्तिक आध्यात्मिक साधना एवं चिन्तन के अतिरिक्त ज्योतिष्पीठ एवं द्वारका शारदापीठ द्वारा संचालित जनकल्याण की अनेक प्रवृत्तियों में समर्पण भाव से निरन्तर सेवा।

कृतित्त्व - राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी नित्याराधन स्तोत्राणि, जीवन-संदेश, आद्य शङ्कराचार्य जीवन परिचय (गुजराती), दिव्य द्वारका-भव्य शारदापीठ, सौन्दर्य-लहरी, भज-गोविन्दम्, मणिद्वीप-संदेश, श्रीविद्या समाराधना, भागवत-प्रबोध, परमार्थ-पथ, मठाम्नाय महानुशासन (गुजराती व्याख्या), गुरुदीक्षा-क्रम, शङ्कराचार्य स्तोत्रावलिः, नवभारती (गुजराती मासिक) के स्वत्त्वाधिकारी, शारदापीठ विद्यासभा की शोधपत्रिका 'शारदापीठ-प्रदीप' का प्रकाशन तथा शारदापीठ आर्ट्स, कामर्स एवं एजुकेशन कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'शारदा' का प्रकाशन आदि अनेक कार्य ।



राणायनीयशाखीयं सामगानम्

(आग्नेयमारभ्य महानाम्न्यन्तो भागः)

प्रेरक

उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

मार्गदर्शक

दण्डी स्वामी सदानन्द सरस्वती जी महाराज, शारदापीठ, द्वारका

'स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती, ज्योतिर्मठ, बदरिकाश्रम, हिमालय

सम्पादक

डॉ. विजय कुमार शर्मा सामवेदाचार्य एम.ए. (संस्कृत)

श्री प.शा.वे.मी.अनु. केन्द्र, वाराणसी

सम्पादन सहयोग

वेदविभूषण पं. शम्भूलाल शर्मा

ज.शं.स्वा.स्व.स. न्याय-वेदान्त महाविद्यालय, वाराणसी

प्रकाशक

श्रीशारदापीठ विद्यासभा

द्वारका

राणायनीयशाखीयं सामगानम्

(आग्नेयमारभ्य महानाम्न्यन्तो भागः)

प्रेरक

उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

मार्गदर्शक

दण्डी स्वामी सदानन्द सरस्वती जी महाराज, शारदापीठ, द्वारका

'स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती, ज्योतिर्मठ, बदरिकाश्रम, हिमालय

सम्पादक

डॉ. विजय कुमार शर्मा

सहयोग

वेदविभूषण पं. शम्भूलाल शर्मा

प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ

हरितालिका तीज संवत् २०६९ वि.

प्रकाशक

श्रीशारदापीठ विद्यासभा

द्वारका, जामनगर - ३६१३३५ (गुजरात)

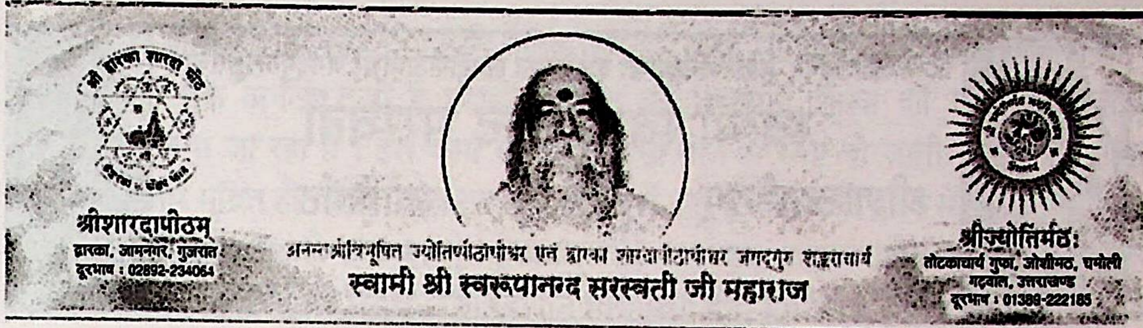
मूल्य : ७००/- रुपये मात्र

मुद्रक

मुद्रणालयः

बी. ७/१९३, केदारघाट, वाराणसी - २२१००१ (उ.प्र.)

दूरभाष - ०५४२ - २२७५२७४



अधिक भाद्र शुक्ल त्रयोदशी सं. २०६९ वि.

क्रमांक.................. सञ्चारयात्रास्थल.......वाराणसी.................................दिनाङ्क :२९-अगस्त-२०१२ ई.

।। मङ्गलाशंसनम् ।।

भगवान् मनु ने अपनी स्मृति में **'पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम् । अशक्यं चाप्रमेयञ्च वेदशास्त्रमिति स्थितिः'** कहकर वेद और वेदज्ञ की भूयसी महिमा गाई है । उनका यह परिनिष्ठित मत है कि वेद देव, पितर तथा मनुष्यों के लिए मार्गदर्शक, नित्य, अपौरुषेय तथा अप्रमेय हैं । महाभारतकार महर्षि व्यास जी ने कहा है कि युगान्त में वेद अन्तर्धान होते हैं और युगादि में स्वयंभू ब्रह्मा जी के द्वारा अनुशासित महर्षिगण अपनी तपस्या से उन्हें सेतिहास प्राप्त करते हैं ।

यद्यपि वेदराशि एक ही थी परन्तु कालक्रम से ब्राह्मणों की धारण शक्ति के क्रमिक ह्रास को देखते हुए वेदव्यास जी ने उनका **ऋग्यजुस्सामाथर्व** चतुर्धा विभाग किया और कालक्रम से आदि शङ्कराचार्य जी ने भारत देश को याग-शाला मानकर चारों दिशाओं में चार 'आम्नाय' मठों की स्थापना की जिसमें पश्चिमाम्नाय शारदापीठ सामवेदपीठ है । **'वेदानां सामवेदोऽस्मि'** इस भगवद्गीतोक्ति का अनुसरण करते हुए शङ्कर भगवत्पाद ने **प्रथमः पश्चिमाम्नायः** स्थापित किया।

शारदापीठ के ७८वें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित होने के बाद से पूज्यपाद जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज ने इस दिशा में अनेक ऐतिहासिक कार्य कराए हैं और सामवेद के पारम्परिक अध्ययन-अध्यापन तथा शोधकार्यों को प्रत्सोहित किया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ भी पूज्य महाराजश्री के उन्हीं महनीय कार्यों की एक कड़ी है । इस कार्य को सम्पादित करने वाले सामवेदाचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा जी तथा उनके सभी सहयोगियों को पूज्य महाराजश्री के नारायण-स्मरणात्मक मङ्गलाशीष प्रेषित हैं ।

पूज्य श्रीचरणों की प्रेरणा से .....

('स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती)



अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरुशङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

श्रीशारदापीठम्
द्वारका, जामनगर, गुजरात
दूरभाष : 02892-235109

ज्योतिर्मठ
तोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल, उत्तराखण्ड
दूरभाष : 01389-222185



क्रमाङ्क :

दिनाङ्क :
स्थल :

शुभाशंसा

भारतीय संस्कृति में 'वेद' का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहारार्थ जितने भी अलौकिक उपाय हैं उनका ज्ञान 'वेद' से ही होता है। 'वेद' का 'वेदत्व' इसी में है कि वह प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा न जाने जा सकने वाले उपायों का ज्ञान करा देता है। धर्म और ब्रह्म दोनों का ज्ञान प्रत्यक्षादि प्रमाणों से संभव ही नहीं। अतः वेद अपरिहार्य हैं।

जीवन के लिए अपरिहार्य वेदों का ज्ञान निष्कारण ही करने की परम्परा है। वेदों का सस्वर उच्चारण सीखना और तदनन्तर वेदार्थ परिज्ञान - ये वेदाध्ययन के दो स्तर हैं। दोनों ही अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यदि स्वर सहित मन्त्रोच्चारण न किया जाए तो - **मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्** का उदाहरण है और यदि सस्वर उच्चारण आता भी है और अर्थज्ञान नहीं है तो - **स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद् अधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्। योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूत पाप्मा** की स्थिति बनती है।

यही कारण है कि वेदों की रक्षा के लिए सृष्टि के आदिकाल से ही चली आ रही "**नारायणं पद्मभुवं वशिष्ठं शक्तिञ्च तत्पुत्र पराशरञ्च। व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्। श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादञ्च हस्तामलकञ्च शिष्यम्। तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् संततमानतोऽस्मि** में पठित गुरु परम्परा के वर्तमान गुरु भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्य जी ने भारत की चार दिशाओं में चार 'आम्नाय' पीठों की स्थापना कर चार वेदों के संरक्षणार्थ केन्द्र स्थापित किए। प्रसन्नता का विषय है कि आज भी ये पीठ वेद रक्षा के अपने मूल उद्देश्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

इसी क्रम में पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य **स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज** की प्रेरणा से न केवल द्वारका, काशी आदि अनेक स्थानों पर वेद-शास्त्र विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है अपितु ग्रन्थ प्रकाशन आदि द्वारा भी वैदिक जगत् को उपकृत किया जा रहा है। सामवेदीय पश्चिमाम्नाय शारदापीठ के द्वारा इससे पूर्व **सामवेदकौथुमशाखीयगानार्चिक-**

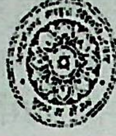
पदस्तोभः का प्रकाशन किया गया जिसे वैदिक जगत् ने बहुत सराहा है। यह प्रस्तुत प्रकाशन उसी उपक्रम की एक अगली कड़ी है जिसमें सामवेद की राणायनी शाखा की संहिता को सस्वर प्रकाशित किया जा रहा है। इस कार्य की महत्ता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि यह संहिता ऐदम्प्रथम बार मुद्रित हो रही है। अब तक यह ताड़ पत्रों पर या विद्वानों के हृदय में ही सुरक्षित थी।

इस संहिता को हम अपने पूज्य गुरुवर्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य **स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज** की प्रेरणा से शारदापीठ विद्यासभा द्वारा प्रकाशित कर रहे हैं। इस कार्य का मुख्य श्रेय तो ग्रन्थ की प्राचीन लिपि वाली पाण्डुलिपि को सुरक्षित रखने और उसे देवनागरी में लिप्यंतरण करने वाले विद्वान् पं. श्री सुब्राय सत्यनारायण भट्ट (हारूरी) तथा पं. श्री परमेश्वर गणपति भट्ट जी (नीलकोडु कर्नाटक) तथा उसे संगणक में स्थापित कर संपादित करने में अत्यधिक श्रम करने वाले वेदमूर्ति डॉ. विजय कुमार शर्मा जी को ही जाता है। गौण श्रेय भी क्रमशः सम्पादनादि में सहयोगी पं. शम्भू लाल शर्मा, साध्वी शारदाम्बा, साध्वी पूर्णाम्बा एवं श्री दुर्गादास गुप्ता आदि को जाता है। हम अपने प्रिय गुरुभाई स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का स्मरण इस अवसर पर अवश्य करना चाहेंगे, जिनका सहयोग हमें सदा और सब कार्यों में मिलता रहता है। उनके सहित सबके प्रति हृदय का वह शुभ भाव समर्पित है जिससे यह जीव-जगत् दुःखजलधि में भी प्रफुल्लता का अनुभव करता है।

नारायणस्मरण पूर्वक..........

(स्वामी सदानन्द सरस्वती)
शारदापीठ - द्वारका
गुजरात

Prof. Yugal Kishor Mishra
FORMER– VICE-CHANCELLOR
J.R. RAJASTHAN SANSKRIT UNIVERSITY, JAIPUR
FORMER– SECRETARY, M.S.R.V.V.P.
(MINISTRY OF H.R.D., GOVT. OF INDIA)



PROFESSOR & HEAD, DEPTT. OF VEDIC STUDIES
Sampurnanand Sanskrit University
7, Professor Colony, Jagatganj
Varanasi-221002
Tel: 0542-2200136; Mob : 09415224713

आभ्युदयिकम्

श्रीमद्भगवद्गीता के विभूति-वर्णन प्रसंग में भगवान् श्रीकृष्ण ने "वेदानां सामवेदोऽस्मि" कहकर सामवेद की महत्ता प्रकाशित की है। सामवेद के आन्तरिक स्वरूप को देखने पर भी अन्य वेदों की अपेक्षा सामवेद की विशिष्टता एवं सौन्दर्य स्पष्ट प्रतिभासित होता है। श्रौतयागों में सामवेद के अनेकविध विशिष्ट प्रयोग होते हैं जो अनुसन्धान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं ।

चतुर्वेदभाष्यकर्ता आचार्य सायण सामवेद का सौन्दर्य वर्णन करते हुए कहते हैं - "सामाख्या मणिमुक्ताद्या ऋक्षु तासु समाश्रिताः"। यज्ञ-शरीर को सामवेद के माध्यम से उद्गाता नामक ऋत्विक् अलंकृत करता है इस तथ्य को आचार्य सायण इन शब्दों में कहते हैं - "आज्यपृष्ठादिभिः स्तोत्रैरुद्गातालंकरोत्यमुम्" । आचार्य भरतमुनि ने भी अपने 'नाट्यशास्त्र' के प्रारम्भ में "सामभ्यो गीतमेव च" कहकर सामवेद से गीति-तत्व के समाहरण का निर्देश किया है जिससे सामवेद के विपुल-वैभव का निदर्शन होता है। इन सब विशेषताओं एवं महत्त्व के होते हुए भी सामगान की जटिलताओं और दुरूह विविधताओं के कारण सामवेद का संरक्षण आज एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। यह चुनौती इसलिये भी बड़ी हो जाती है क्योंकि सामगान-संहिता के मुद्रित संस्करण न केवल अत्यल्प हैं अपितु दुर्लभ भी होते जा रहे हैं ।

महर्षि पतञ्जलि की उक्ति "सहस्रवर्त्मा सामवेदः" के बाद आज सामवेद की मात्र तीन शाखायें कौथुम, जैमिनि एवं राणायनी ही बच पाई हैं । इनमें सामवेद की राणायनी-शाखा का दक्षिण-भारत में यद्यपि कुछ प्रचार दिखलाई पड़ता है किन्तु इसी शाखा की गोवर्धनी-पद्धति नाम से एक विशिष्ट गान परम्परा की उपलब्धि काशी में होती है जिसे उत्तर-भारत की देन माना जा सकता है।

यह ध्यातव्य है कि सामवेद की प्राचीन पाण्डुलिपियों में स्वरांकन की दो प्रकार की विधियाँ उपलब्ध होती हैं- 1. अंको के माध्यम से स्वरांकन 2. अक्षरों के माध्यम से स्वरांकन। राणायनी-शाखा के कतिपय प्राचीन पाण्डुलिपि ग्रन्थ जो तिगलारी लिपि में उपलब्ध होते है, उनमें स्वरांकन अंकों के माध्यम से न होकर अक्षरों के माध्यम से किया हुआ है। व्यावहारिक दृष्टि से अक्षरों के माध्यम से किया हुआ स्वरांकन अध्येता के लिए कठिन एवं जटिल होता है जबकि अंको के माध्यम से किया गया स्वरांकन अपेक्षाकृत सरलतया बोधगम्य है। प्रस्तुत संस्करण में डॉ0 विजय कुमार शर्मा (सामवेदाध्यापक, श्रीपट्टाभिरामशास्त्री वेदमीमांसानुसंधान केन्द्र, वाराणसी) ने इदम्प्रथमतया सामवेद की राणायनीय शाखा की तिगलारी लिपि की पाण्डुलिपि को देवनागरी लिपि में रूपान्तरित कर अक्षरस्वरों को अंकस्वरों में ढाला है। इसप्रकार अब राणायनी-शाखा का अध्ययन पूर्वापेक्षया सुगम हो जायेगा, ऐसा विश्वास है। मैं इस परिश्रमसाध्य विशिष्ट-कार्य के लिये डॉ0 शर्मा को हृदय से साधुवाद देता हूँ। आजकल ऐसे ग्रन्थों का प्रकाशन भी एक जोखिम भरा कार्य है क्योंकि सांमान्यतया व्यावसायिक प्रकाशक इसप्रकार के ग्रन्थ प्रकाशन में रुचि नहीं रखते हैं किन्तु पीठद्वयाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्दसरस्वतीजी महाराज के कृपापूर्ण अमोघ आशीर्वाद से श्री शारदापीठ विद्यासभा, द्वारका द्वारा उदारतापूर्वक इसका प्रकाशन किया गया जो वेद-संरक्षण का श्रेष्ठ निदर्शन है। मैं सम्पूर्ण वैदिक-जगत् की ओर से ज्योतिष्पीठ एवं द्वारकापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य महाराजश्री के चरणों में वन्दना अर्पित करता हूँ तथा उनके वरेण्य शिष्यद्वय स्वामी सदानन्दसरस्वती जी एवं स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करता हूँ।

युगल किशोर मिश्र

(युगल किशोर मिश्र)
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद-विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व-कुलपति, ज0रा0 राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,जयपुर
पूर्व-सचिव, म0सा0 राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, (मानव संसाधन विकास मनत्रालय, भारत सरकार)

साम्न उद्गीथो रसः   प्रभावतीनगरम्

सामवेद जलाकीर्णं छन्दःकल्लोलसंकुलम्।

तन्त्र ग्रहान्वितं वन्दे सामवेद महार्णवम्।।

सामवेद एक ऐसा वेद है जिसका अध्ययन तथा उसके बारे में लिखना बहुत कठिन बात है क्यों कि अन्य वेदों कि अपेक्षा इसके ज्ञान हेतु लक्षण ग्रन्थों का अध्ययन बहुत ही कठिन है इसमे भी राणायनीयशाखीय सामगानम् जा कि अत्यन्त लुप्तप्राय होने वाली सामवेद राणायनी शाखा (अभ्यासपूर्ण ग्रन्थ) के बारे में अभिप्राय लिखना बहुत ही अभ्यास पूर्ण होना चाहिए। ऐसे कई प्रमाण मिलते है जिसके मूल स्रोत आधार राणायनी शाखा ही है अनेक स्मार्त प्रयोग के दर्शन करता स्वयं राणायन ही है। चरणव्यूह भाष्य में- 'राणायनीयानां नवभेदा भवन्ति' ऐसा कहा गया है उन नव भेदों में कुथुम तथा कौथुम भी आते हैं अर्थात् राणायनी शाखा का प्राचीनत्त्व पुरातनत्त्व इसी से सिद्ध हो जाता है। राणायनी शाखीय अतिस्वार स्वर का ॅ उच्चारण सामतन्त्र के 'कटोयास्थायीनां' सूत्र के अनुसार करते हैं। जिसका उच्चारण पं॰ रामनाथ दीक्षित जी के अनुसार कौथुम शाखीय भी करते थे परन्तु वर्तमान मे केवल राणायनी शाखीय ही इसका उच्चारण करते हैं। लुप्तप्राय राणायनी शाखा का भले ही कोई ग्रन्थ अद्यतन प्रकाशित नही है परन्तु आज भी कर्नाटक प्रान्त में ताळपत्रों पर तिगळारी लिपि में राणायनी शाखीय संहिता से लेकर रहस्यान्त पर्यन्त गान,अष्टब्राह्मण समेत सूत्रग्रन्थ एवं श्रौतयागों के कई ग्रन्थ लिखित स्वरूप में हम लोगों को देखने को मिलते हैं। विजय शर्मा जी द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ के स्वरोच्चारण आदि तिगळारी लिपि में प्राप्त ताळपत्रों के अनुसार पूर्णरूप से प्रामाणिक हैं।

आदरणीय विजय जी शर्मा ने इस दृष्टि से सामवेद राणायनी शाखा के लिए किया गया योगदान सचमुच स्तुत्य है। वेद भगवान् इनके कार्य में सदैव अनुग्रह करे और सामवेद राणायनी शाखा के उपग्रन्थ एवं श्रौत परम्परा के संरक्षण के रूप में कार्य हमारे मित्र विजय जी के हाथों हो ऐसी मनीषा रखते हुए इनको मेरी शुभकामना।

कृष्णा एम्. पळस्कर

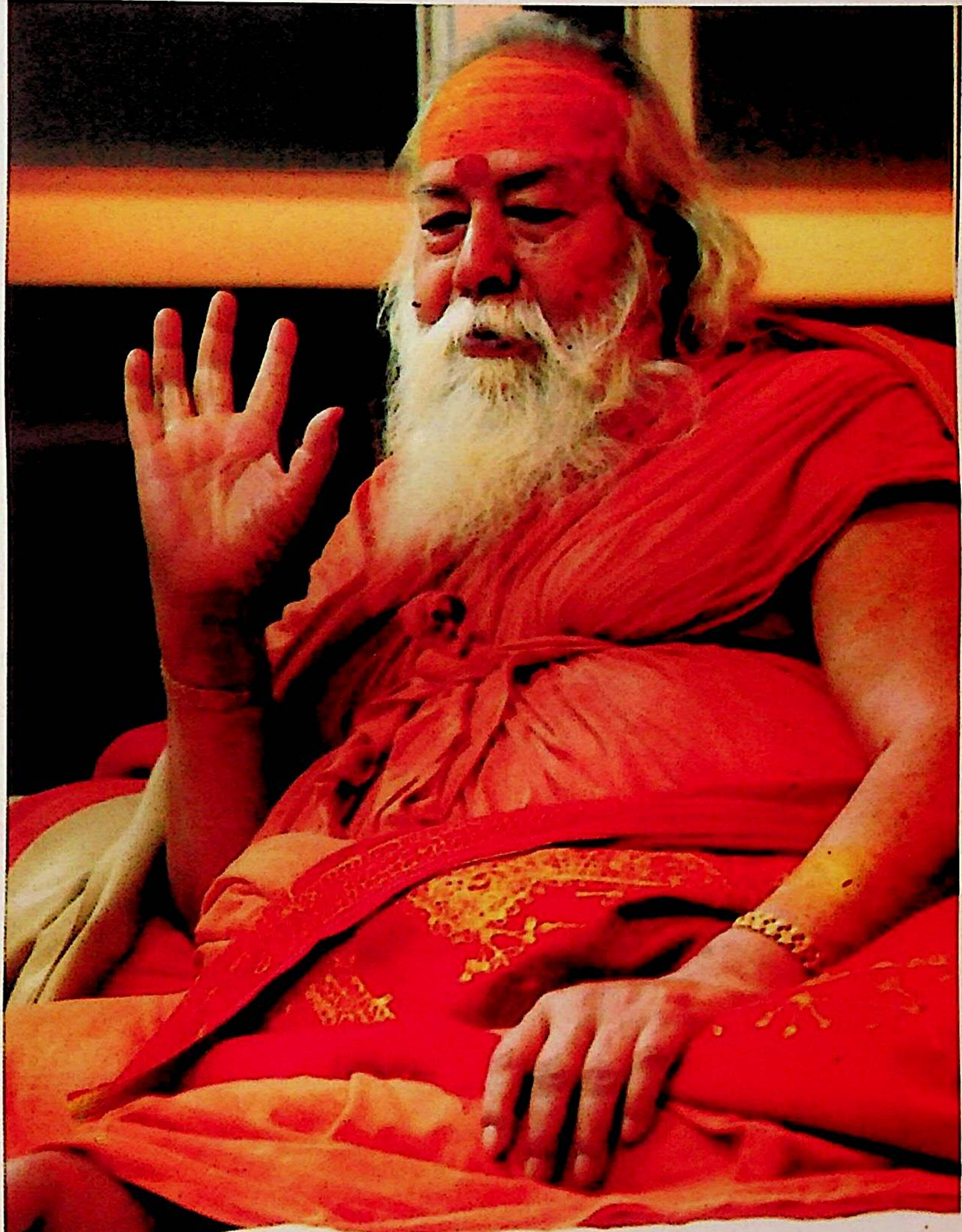
वेदाभ्यासी

सामवेदकोविद् कृष्णभट्ट एम्. पळस्कर

वेदवाणी गुरुकुलम्

प्रभावतीनगरम्परभणी-431401

(महाराष्ट्र)



अनन्तश्रीविभूषित उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर

जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज



अपने समकालीन विभिन्न शाखाओं के वेदाध्यापकों के साथ डॉ. विजय कुमार शर्मा जी



काशी में अध्ययनरत राणायनीय शाखा के विद्यार्थियों के साथ
डॉ. विजय कुमार शर्मा जी एवं वेदविभूषण पं. शम्भूलाल शर्मा जी

ॐ नमःसामवेदाय नीलकोडु

सामप्रियं सामगेयं सामवेद समन्वितम्।
वामदेवमहं वन्दे सामगाँश्च महीसुरान्।।

परब्रह्म परमेश्वर से निःश्वासोऽभूत वेदों में सामवेद एक हजार शाखाओं से संवलित था परन्तु धीरे-धीरे सभी शाखाएं लुप्त होकर मात्र कौथुमी,राणायनी और जैमिनी तीन शाखाएं बची हुई हैं। राणायनी शाखा अपने ग्रन्थ के अभाव में लुप्तप्राय होती चली गई जिससे अल्पप्राय अध्येताओं को ज्यादा परेशानी होने लगी तब मेरे पूज्य दादाजी स्व0 सुब्राय विश्वेश्वर भट्ट जी ने इसके संरक्षण हेतु यत्र-तत्र भ्रमणकर अपने असाध्य परिश्रम से ताळपत्रों में संरक्षित राणायनी शाखा को एकत्र किया तथा ताळपत्रों की भाषा-शैली का अध्ययन कर राणायनी शाखा के गान भाग सहित सम्पूर्ण ग्रन्थों को संरक्षण दिया। वर्तमान में राणायनी शाखा का अध्ययन-अध्यापन कर्नाटक के अतिरिक्त काशी,महाराष्ट्र,आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान तथा हिमाचल आदि प्रदेशों में भी प्रवर्तित है जो कि होन्नावर व गोकर्ण क्षेत्र की ही शिष्य परम्परा के अन्तर्गत है। हम लोगों ने इसके प्रिन्टिंग की बहुत कोशीश की परन्तु यह असाध्य कार्य नही हो सका। जब विजय कुमार जी ने इस कार्य हेतु जिम्मेदारी लीं तो मुझे बहुत खुशी हुई। इस ग्रन्थ से अवश्य ही राणायनी शाखा के अध्येताओं को लाभ मिलेगा। यह ग्रन्थ तिगळारी पाण्डुलिपि में प्राप्त ताळपत्रों के अनुसार पूर्ण रूप से प्रामाणिक है। आज राणायनी शाखा का प्रकृति भाग प्रिन्ट हुआ तो मेरे स्वर्गवासी पूज्य दादाजी को भी अवश्य खुशी मिली होगी। मैं इस कार्य की सम्पन्नता के लिए प्रिय विजय कुमार शर्मा जी को बहुत-बहुत शुभकामना देता हूँ और राणायनी शाखा के अन्य ग्रन्थों के सम्पादन हेतु विजय कुमार जी को शक्ति मिले ऐसी वेद भगवान से प्रार्थना करते हुए पूज्य दादाजी को यह ग्रन्थ अर्पण करता हूँ।

इति शम्
P.S.Bhat

परमेश्वर गणपति भट्ट
सलक्षण रहस्यान्त विद्वान्
नीलकोडु, होन्नावर
उत्तर कन्नड़- कर्नाटक

श्रीः

'वेद' शब्द उस ज्ञान का वाचक है जिसका साक्षात्कार ऋषियों ने कठिन तपस्या के पश्चात् किया था । वेद चतुष्टय हैं, **ऋग्वेदोयजुर्वेदः सामवेदोऽत्यथर्वणः** इन चतुर्विध वेदों में भी सामवेद का अन्यतम स्थान है । साम का अर्थ गान है । **''गीतिषु सामाख्या''** इसके पाठ एवं श्रवण मात्र से ही सम्पूर्ण स्थान पवित्रता को प्राप्त करते हुए एक अपूर्व चमत्कार को प्रदान करता है । अर्थात् भारतीय संस्कृति के संवाहक तत्त्वों में वेद के सामगान का अभूतपूर्व योगदान है । प्राचीनकाल में सामवेद विभिन्न ऋषियों द्वारा एक हजार शाखाओं से संवलित था। परन्तु दुर्भाग्य से आज मात्र तीन (राणायणी, कौथुमी, जैमिनि) शाखाएँ ही उपलब्ध हैं । जिनमें प्रथम राणायणी शाखा का अद्यतन कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं था । प्रथम बार प्रकाशित राणायणी शाखा के इस ग्रन्थ में अंकस्वरों के साथ वर्णाक्षर स्वरों का अंकन भी किया गया है जो राणायणी शाखा के प्राप्त ग्रन्थाक्षर लिपी में ताड़पत्रों के अनुसार ही है। प्राचीन ताड़पत्रों को नीचे दर्शाया गया है ।

प्राक्कथन

सप्तस्वरैः समस्तं यो जगदेतच्चराचरम् ।
संजीवयति विश्वात्मा स मे विष्णुः प्रसीदतु ।।

सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः महर्षि पतञ्जलि के इस कथन के अनुसार प्राचीन कालिक आर्यावर्त्त में सामवेद विभिन्न ऋषियों द्वारा दृष्ट एक हजार शाखाओं में विस्तृत होकर मानव के अन्तर्निहित ज्ञानराशि का प्रकाशन कर अपनी स्वरोपासना के माध्यम से सांसारिक जीवन में ईश्वरीय शक्ति की प्राप्ति के निमित्त सरल एवं सहज उपायों का प्रदर्शन करता आया है, किन्तु दौर्भाग्यवशात् वर्तमान में मात्र कौथुमी, राणायनी तथा जैमिनीय-शाखाओं का ही अध्ययन-अध्यापन प्रचलित है ।

राणायनी शाखा का पठन-पाठन प्रायः कर्नाटक राज्य में बहुलता से हो रहा है । वहाँ इसके स्व-शाखीय विद्वान् परिवार भी हैं, जो परम्परागत इस शाखा से ही श्रौत स्मार्त कर्म करते-कराते हैं । अद्यावधि राणायनी शाखा का अपना कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं है, कौथुम शाखा के ग्रन्थ से ही अध्ययन-अध्यापन चलता आ रहा है ।

राणायनी शाखा के ग्रन्थ अप्रकाशित अवश्य हैं, किन्तु अनुपलब्ध नहीं हैं । कर्नाटक राज्य में होन्नावर तालुक के नीलकोडु नामक ग्राम के **विद्वान् पं. परमेश्वर गणपति भट्ट** के गुरु तथा वंश-पूर्वज स्व. **पं. सुब्राय विश्वेश्वर भट्ट** ने प्राचीन समय से ही इस शाखा के सम्पूर्ण संहिता-ब्राह्मण-सूत्र आदि ग्रन्थ तिगळारी लिपि में आबद्ध कर सुरक्षित रखे हैं, जो आज भी देखने को मिलते हैं। वहीं से प्रति उपलब्ध होने पर मैंने इस ग्रन्थ पर कार्य किया।

कौथुम और राणायनी शाखाओं के मन्त्रों की संख्या में कोई भेद नहीं है, मात्र स्वरोच्चारण आदि प्रक्रिया में भेद मिलते हैं। राणायनी शाखा की ग्रन्थाक्षर-लिपि में प्राप्त पत्रों के अनुसार उसमें अंकस्वर के स्थान पर वर्गाक्षर-स्वर ही वर्णित हैं। मैंने अध्ययन-अध्यापन की सौकर्यता को देखते हुए इस ग्रन्थ में अंकस्वर तथा वर्गाक्षर स्वर दोनों को ही ग्रहण किया है, परन्तु यहाँ अंकस्वरों से राणायनीयों का कोई सम्बन्ध नहीं है। राणायनी शाखा में विशेष रूप से कौथुम में पठित कतिपय ह्रस्व वर्णों को दीर्घ पढ़ने की परम्परा है तथा अतिस्वार (षष्ठ) स्वर को उच्चारण करते हैं।

सामगानों में प्रयुज्यमान कृष्ट-प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-मन्द्र-अतिस्वार्य आदि अंकस्वरों को परिभाषा पाठ में परिवर्तित कर कैसे उनका प्रयोग किया गया उसकी प्रक्रिया निम्नवत् है- १,२,३,४,५ इन स्वरों से ही सामों के पर्वों का प्रारम्भ होता है; ६ तथा ७ स्वर से किसी भी साम के पर्व का प्रारम्भ नहीं होता। उक्त पाँचों अंकस्वरों के लिए परिभाषा पाठ में क च ट त प क्रम से पाँच वर्ग निर्धारित किये गये हैं, यथा- प्रथमस्वर हेतु क वर्ग, द्वितीयस्वर हेतु च वर्ग, तृतीयस्वर हेतु ट वर्ग, चतुर्थ स्वर हेतु त वर्ग तथा पंचमस्वर हेतु प वर्ग। इनके अतिरिक्त 'ल', 'व' तथा 'क्व' ये क वर्ग के, 'श-ष-स-र' तथा 'ल' च वर्ग के, 'य' ट वर्ग का, तथा 'ह' त वर्ग का शेष सूचक स्वर है। सामग साम के मध्य जहाँ विराम लेते हैं, उन्हें पर्व कहते हैं- **छन्दोगा यत्र विरम्य-विरम्य पठन्ति तस्य पर्व इति नाम**। एक साम में कितने भी पर्व हो सकते हैं। ये पर्व दो प्रकार के होते हैं- एकस्वर पर्व तथा अनेकस्वर पर्व। **ओग्नाइ** इत्यादि एकस्वर से युक्त पर्व एकस्वर पर्व हैं और
४ ५ ४ ५र ४
आग्नाआयाहिवी इत्यादि अनेकस्वर से युक्त पर्व अनेकस्वर पर्व हैं। एकस्वर पर्वों में परिभाषा पाठ के वर्गाक्षर का प्रथम अक्षर तथा अनेकस्वर पर्वों हेतु उन-उन वर्गों के 'क' 'का' 'कि' इत्यादि प्रत्येक स्वर के लिए पृथक् वर्गाक्षर का निर्धारण किया गया, जैसे प्रथमस्वर से प्रारम्भ एकस्वर पर्व $\overset{१}{\text{तयाइ}}$ पर प्रथमस्वर है, तो इसका वर्गाक्षर स्वर में परिवर्तित रूप $\overset{क}{\text{तयाइ}}$ इस प्रकार होगा। यदि इस पर्व पर अंकस्वर तथा वर्गाक्षर स्वर दोनों प्रयुक्त हैं तो पर्व का स्वरूप $\underset{क}{\overset{१}{\text{तयाइ}}}$ इस प्रकार होगा। यही प्रक्रिया सम्पूर्ण राणायनी शाखा के सामों में प्रयुक्त है।

पाँचों वर्गों के उदाहरण तथा नियमावली को अग्रलिखित सारणी से जाना जा सकता है । तत्र क-च-ट-त-प वर्गाणां, प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पञ्चमस्वराणां तदादिनाञ्च पर्वणां ज्ञापकः -

१ क
क - तयाइ । = तयाइ ॥

१ र २र का र र
का - गृणानोहा । = गृणानोहा ॥

१ २ कि
कि - समायेऽ३ । = समाये ।

१ की
की - ताऽ२३४म् । = ताम् ॥

१ कु
कु - ओऽ२३४५इ । = ओइ ॥

१ ५ कू
कू - हाऽ२३४इषोऽ६ँ्हाइ । = हाइषोहाइ ॥

१ के
के - आताऽ२३४५ इष्ठाऽ६ँ्५६ँ्त् । = आताइष्ठात् ॥

१ २ १ कै
कै - समिद्धश्शुक्रया । = समिद्धश्शुक्रया ॥

१ २ १ को
को - उपाऽ३होइ । = उपाहोइ ॥

१र र ३ २ १ कौ र र
कौ - नाकेसुपार्णमुपयात्पातन्ताम् । = नाकेसुपार्णमुपयात्पातन्ताम् ॥

१ ३ २ १ कं
कं - चाऽ२दक्षसाइ । = चादक्षसाइ ॥

१ र र र २ कः र र र र
कः - गृणानोहव्यदाताऽ२३याइ । = गृणानोहव्यदातायाइ ॥

१ ४ ख
ख - नाऽ२३वेऽ३ । = नावे ॥

१ र ४ खा र
खा - कूऽ२३४वस्यवाऽ५र्षभोयुवा । = कूवस्यवार्षभोयुवा ॥

१ प २ खि
खि - वाऽ२र्तोऽ३५हाइ । = वार्तोहाइ ॥

१ न खी न
खी - ष्णवाऽ३इ । = ष्णवाइ ॥

१ ३२ खु
खु - दाइवंययाउ । = दाइवंययाउ ॥

१ न खू न
खू - दाइमाऽ३२उवाऽ३ । = दाइमाउवा ॥

न २ २ खे न
खे - औऽ३होऽ३वा । = औहोवा ॥

न २ २ खै न
खै - औऽ३होऽ३वाऽ३ । = औहोवा ॥

न २ खो न
खो - औऽ३होऽ३४इ । = औहोइ ॥

१ न खौ न
खौ - माहाऽ३२उवाऽ३४३ । = माहाउवा ॥

न २ २ खम् न
खम् - ओऽ३हाऽ३एऽ३४ । = ओहाए ॥

न २ ३ ५ खः न
खः - स्वाऽ३आओऽ२३४वा । = स्वाआओवा ॥

१ ३ ५ ग
ग - द्रविणाऽ२३४स्यूः । = द्रविणास्यूः ॥

१ ३ ।।। गा
गा - इहाऽ२३४५ । = इहा ॥

न गि न
गि - औऽ३होऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ। = औहोवा ॥

न २ गी न
गी - औऽ३होऽ३१इ । = औहोइ ॥

न २ गु न
गु - औऽ३होऽ३१२ । = औहो ॥

न २ २ गू न
गू - औऽ३होऽ३१येऽ३ । = औहोये ॥

न २ गे न
गे - हौऽ३होऽ३१२३४५इ । = हौहोइ ॥

१ १ २र ३र २ गै र र
गै - ईऽ५हीहीहीहीहि । = ईहीहीहीहीहि ॥

१र २ १र २ र १ गो र र
गो - स्तोमँरुद्रायदृशीकाम् । = स्तोमरुद्रायदृशीकाम् ॥

१ अ २ गौ अ
गौ - ण्वाऋताजाऽ३१ । = ण्वाऋताजा ॥

१ २ १ २ १ ५ गम्
गम् - योवृत्रहोवाऽ३ओऽ२३४वा । = योवृत्रहोवाओवा ॥

१र २र ३र २ १ गः र र र
गः - औहोवाहाऽ३होइ । = औहोवाहाहोइ ॥

घ - नामत्वष्टुरपीचियामियाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया । = नामत्वष्टुरपीचि-यामियाउवाहोवाहाईया ॥

घा - मधोअर्षन्तिधारयाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईयाऽ२ । = मधोअर्षन्तिधारया-उवाहोवाहाईया ॥

घि - कस्यानूऽ१नाऽ२म् । = कस्यानूनाम् ॥

घी - नाइहोतासाऽ२३ । = नाइहोतासा ॥

घु - इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२३४इ । = इन्द्रमर्चयाथाविदाइ ॥

घू - गाइर्भिर्नवोऽ२३४वा । = गाइर्भिर्नवोवा ॥

घे - यस्सुक्षिताऽ२३४इनोऽ६ँहाइ । = यस्सुक्षिताइनोहाइ ॥

घै - गृणानोहव्यादाऽ१ताऽ३ये । = गुणानोहव्यादाताये ॥

घो - वाइश्वेभिस्सोऽ२३हाऽ३ । = वाइश्वेभिस्सोहा ॥

घौ - उपमान्देवाताताऽ२३याऽ३४इ । = उपमान्देवातातायाइ ॥

घम् - ओनारीऽ२३४३ । = ओनारी ॥

घः - होवाऽ३होऽ२ । = होवाहो ॥

ङ - सूनुँ सत्याऽ३१२३ । = सूनुँ सत्या ॥

ङा - आभिवत्साऽ३१२३४म् । = आभिवत्साम् ॥

ङि - धियाऋणयानओवाऽ३ओऽ२३४वा । = धियाऋणयानओवाओवा ॥

ङी - आँ शुमतीमतिष्ठाऽ२३त् । = आँ शुमतीमतिष्ठात् ॥

ङु - षूऽ२दाध्रिषोऽ२३४५इ । = षूदाध्रिषोइ ॥

ङू - अभ्राजीज्ज्योतिरभ्राजीऽ२३४५त् । = अभ्राजीज्ज्योतिरभ्राजीत् ॥

१ विर १र २र १विर ङे विर र र विर
ङे - इन्द्राऽ२ँ्साबाधऊतयेऽ२ । = इन्द्राँ्साबाधऊतये ॥

१विर १र २१ ङै विर र
ङै - सदाऽ२याचन्नहङ्ञियाऽ२३ । = सदायाचन्नहङ्ञिया ॥

१ २ १ २१र २र ३ ।।। ङो र र
ङो - इन्दुस्सामुद्रमुर्वियाविभातीऽ२३४५ । = इन्दुस्सामुद्रमुर्वियाविभाती ॥

१रर २र १र २१ ।।। ङौरर र र
ङौ - सेतूँ्स्तीर्त्वाचातुराऽ२३४५ः । = सेतूँ्स्तीर्त्वाचातुरा ॥

१ विर १र विर १ २१ ङम् विर र विर
ङम् - इन्द्रेऽ२सोमाऽ२स्साहाइ । = इन्द्रेसोमास्साहाइ ॥

१ र २ १र र २ १ २१ ङः र र र
ङः - त्वंवृत्राणिहँ्स्यप्रातीन्येकाइत्परू । = त्वंवृत्राणिहँ्स्यप्रातीन्येकाइत्पुरु ॥

१र २ १ २र १ विर र १ २ ळ र र विर र
ळ - योजारितृभ्योमाघावाऽ२पुरूवासुः । = योजारितृभ्योमाघावापुरूवासुः ॥

१र विर १र विर र १र२१विर ळा र विर विरर र विर
ळा - योराऽ२यामाऽ२नेतायइडाऽ२नाऽ३म् । = योरायामानेतायइडानाम् ॥

१रर र २ १ २ १र २र १ ।।। ळिरर र र र
ळि - येकेचोदरसर्पिणस्तेभ्योनमाऽ२३४५ः । = येकेचोदरसर्पिणस्तेभ्योनमा ॥

१ २र१र२१र २र१ २र १ ळी र र र र र
ळी - यस्मादापओषधयोभुवनानिचक्रदुः । = यस्मादापओषधयोभुवनानिचक्रदुः ॥

१ २ १ २ १र २ १र २ १ र २र र ळु
ळु - जनदिवमन्तरिक्षंपृथिवींविश्वपुरुभोजसंपुरुरूपाअजीजनः ।=जनदिवमन्त-
र र र र र
रिक्षंपृथिवींविश्वपुरुभोजसंपुरुरुपाअजीजनः ॥

१र२ १र २र १र २ १र२र१ २र२ ।।। ळूर र र
ळू - अरुरुचद्धर्मोअरुरुचदुधसांदिविसूर्योविभातीऽ२३४५ । = अरुरुचद्धर्मोअरु-
र र रर र
रुचदुधसांदिविसूर्योविभाती ॥

१-रर२१र२ रर१र २र र१र २१२र१ ळेर र र
ळे - नमोन्नायनमोन्नापतयएकाक्षायचावपन्नादायचनामोनमः । = नमोन्नायनमोन्नापता-
ररर र रर र
यएकाक्षायचावपन्नादायचनामोनमः ॥

१रर२१ र २रर१र २र१र २ र १२१ २र ळैरर
ळै- तेजाधर्मस्संक्रीडन्तेवायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रादूः । = तेजोधर्म-
र रर ररर र र
स्संक्रीडन्तेवायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रादूः ॥

१ २ २ १ २१ २ १ २ १ २१ २
ळो - ऋश्यासइन्द्रभुङ्ङिङ्गतिमघवन्निन्द्रभुङ्ङिङ्गतिभुङ्ङिङ्गतिप्रभुङ्ङिङ्गत्तीन्द्रस्तसर-
२र ३ ।।। ळो र र
पूताऽ२३४५ः । = ऋश्यासइन्द्रभुङ्ङिङ्गतिमघवन्निन्द्रभुङ्ङिङ्गतिभुङ्ङिङ्गतिप्रभुङ्ङिङ्गत्ती-
र
न्द्रस्तसरपूता ॥

१र र २ १ र २ र १ २ र र १ र२र १र २र १ २ १ २र
ळौ - तेजोघर्मस्संक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदूः । =
ळौ र र र र र र र र र र र
तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदुः ॥

१ २र र १ र र २ १र २ र र १२र २ १र र र २ र १र
ळम् - भ्यभवोवायुनाविश्वाःप्राजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धभाक्सोमेनसोमपास्समि-
२र र १र ळम् र र र र र र र र र र र र र
त्यापरमेष्ठी । = भ्यभवोवायुनाविश्वाःप्राजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धभाक्सोमेनसो-
र र र र
मपास्समित्यापरमेष्ठी ॥

१ २ १ र २ १ २ १ २ १र २ १र र र २ १ २ १र २र १ ।।।
ळः - संयमन्नव्यायमन्वियमन्नसमायमन्येकेचोदरसर्पिणस्तेभ्योनमाऽ२३४५ः । =
ळः र र र र र र र
संयमन्नव्यायमन्वियमन्नसमायमन्येकेचोदरसर्पिणस्तेभ्योनमाः ॥

१ २र १ २र १र २र १र २र १ २ १र २ १ २ १ २ १र २ १र व र र र
व - मनःप्राणःप्राणोपानोव्यानश्चक्षुश्श्रोत्रँशर्मवर्मभूतिः प्रतिष्ठा । = मनःप्राणःप्राणो-
र र र र र र
पानोव्यानश्चक्षुश्श्रोत्रँशर्मावर्मभूतिः प्रतिष्ठा ॥

१र र र १ २ १ २ १ २ र १ २ १ र २ १र २ १ र २ १ २ १र २ १ २र
वा - तेभ्यश्चश्रायिभ्यश्चनामस्तिष्ठद्भ्यश्चोपतिद्भ्यश्चनमोयातेचवियतेचनमःपाथेचविपथयच ।
वा र र र र र र र र र र र
= तेभ्यश्चश्रायिभ्यश्चनामस्तिष्ठद्भ्श्चोपतिद्भ्यश्चनमोयातेचवियतेचंनमःपथेविपाथच॥

१ २ वि
वि - त्साऽ२३इबाऽ३ । = त्साइबा ॥

१ २ वी
वी - ष्टाऽ२३न्धूऽ३४ । = ष्टान्धू ॥

१ २ वु
वु - इडाऽ२३भाऽ३४३ । = इडाभा ॥

१ ३ ५ वू
वू - इवाऽ२प्राऽ२३४याम् । = इवाप्रायाम् ॥

१ ३ ५र र वे र र
वे - त्साऽ२इबाऽ२३४औहोवा । = त्साइबाऔहोवा ॥

१ २ ३ वै
वै - स्याकामाऽ२३४५याऽ६ँ५६ँम् । = स्याकामायाम् ॥

१र र र २ २ वोर र र
वो - त्वेनःप्रपित्वेतूयामाऽ१गाहि । = त्वेनःप्रतित्वेतूयामागाहि ॥

१ —न २ वौ न
वौ - इयाऽ२ईऽ३या । = इयाईया ॥

१ विर १ र वम् विर र
वम् - यउस्रियाऽ२आपियाअन्तरश्मानीऽ२३ । = यउस्रियाअपियाअन्तरश्मानी ॥

१ २ १ २ ।।। वः
वः - आतिद्विषाऽ२३४५ः । = आतिद्विषाः ॥

१र —१ —न २ क न
क्र - आयुषागैऽ२हीऐऽ२हीऽ३या । = आयुषागैहीऐहीया ॥

१ विर १र र २ र १ ३ क्रा विर र र र
क्रा - अव्याऽ२वारेभिःपवतेमादिन्तामाःऽ२३ः। = अव्यावारेभिःपवतेमादिन्तमाः ॥

१ २र१र२ १ ३ ।।। क्वि र र
क्वि - तत्रपूषाभुवत्साचाऽ२३४५ । = तत्रपूषाभुवत्साचा ॥

१र २र १ २१विर १र३ ।।। क्वी र र विर र
क्वी - दातामाघानिमाघावाऽ२सुराधाऽ२३४५ । = दातामाघानिमाघावासुराधाः ॥

१र र र २ र १र २ १ २ १ र २ १र२१ र २र १२र
क्वु - आयुर्विश्वायुर्विश्वंविश्वमायुराशीमाहिप्राजांत्वाष्टराधिनिधेह्यस्मेशातश्रीवेमशरदो-
१ ३ ।।। क्वुर र र र र र र
वयन्तेऽ२३४५ । = आयुर्विश्वायुर्विश्वंविश्वमायुराशीमाहिप्राजांत्वाष्टाराधिनिधेह्यस्मे-
र र र
शातश्रीवेमशरदोवयन्ते ॥

१ र र र ४ २ ३ ५ क्वू र र र
क्वू - विश्वाद्वेषाँसितरतीऽ२३साऽ३युग्वाभिः । = विंश्वाद्वेषासितरतीसायुग्वाभिः ॥

१ २१ २ १ ३ ।।। क्वे
क्वे - हस्प्रहस्एऽ३चक्षूऽ२३४५ः । = हस्प्रहस्एचक्षूः ॥

१र र २१ र २ र१ २ र र१ र२र १र २र १ २ १ २र ३ ।।।
क्वै -तेजोघर्मस्संक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रादू ऽ२३४५ः।
क्वै र र र र र र र र र र
= तेजोघर्मस्संक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदू ॥

२र चर
च - गिरा । = गिरा ॥

२ चा
चा - स्तुषाइमित्राऽ३म् । = स्तुषाइमित्राम् ॥

२ चि
चि - त्याऽ३४म् । = त्याम् ॥

२ ४ ५ ची
ची - औऽ३होवा । = औहोवा ॥

२ ५ चु
चु - दाऽ३४५योऽ६ँ्हाइ । = दायोहाइ ॥

२ ४ चू
चू - ताऽ३वाऽ५जाऽ६ँ्५६ँ्म् । = तावाजाम् ॥

२ चे
चे - दाऽ३२साम् । = दासाम् ॥

२ चै
चै - दाऽ३४३इ । = दाइ ॥

२र १ २र चो र र
चो - ग्नेमाहोभिः । = ग्नेमाहोभिः ॥

२ १र २ चौ र
चौ - आपान्नापाऽ३ । = आपान्नापा ॥

२ १ २ चम्
चम् - रविश्पतायेऽ३४ । = रविश्पताये ॥

२ र १ २ चः र
चः - चयोनिमसतश्चवाइवाऽ३४३ः । = चयोनिमसतश्चवाइवाः ॥

२ १ ४र ५ छ र
छ - प्रातित्याऽ२३श्चारुमध्वराम् । = प्रातियाश्चारुमध्वराम् ॥

२ १ ४ र ५ छा र
छा - बृहान्द्रीऽ२३रग्नेअर्चिभिर्हाउ । = बृहान्द्रीरग्नेर्चिभिर्हाउ ॥

२ १ ५ छि
छि - काइत्पूऽ२३४रूऽ६ँ् । = काइत्पूरू ॥

२ १ छी
छी - साहास्वाऽ२३४५ता ६ँ्५६ँ् इ । = साहास्वाताइ ॥

२ १ २र र १२र छु र र र
छु - शुक्राइणादेवशोचिषा । = शुक्राइणादेवशोचिषा ॥

२र १ २ छू र
छू - रेवात्पाऽ१वाऽ२३ । = रेवात्पावा ॥

२ १अ छे
छे - भुनोह्वदाऽ२३४इ । = भुनोह्वदाइ ॥

२१ २१ ५ छै
छै - नाइन्द्रावृत्राऽ२३४हान् । = नाइन्द्रावृत्राहान् ॥

२ र १ २र छो र र
छो - अस्मभ्यमूताऽ३याइमहे । = अस्मभ्यमूतायाइमहे ॥

२र र १ छौ र र
छौ - ओहोइहुऽ३वाऽ२३इ । = ओहोइहुवाइ ॥

२ १ २ २ छम्
छम् - चाऽ३दाक्षाऽ३साइ । = चा दाक्षासाइ ॥

२ छः
छः - एऽ३१२३४ । = ए ॥

२र र १ ५ जर र
ज - ऊर्ध्वऊषुणाऽ३ऊताऽ२३४याइ । = ऊर्ध्वऊषुणाऊतायाइ ॥

२र १र २ जार र
जा - देवेभाऽ२३इर्मा । = देवेभाइर्मा ॥

२ १र २ जि र
जि - जुहूमाऽ२३सीऽ३ । = जुहूमासी ॥

२ १र २ जी र
जी - प्रियादाऽ२३इवाऽ३४ । = प्रियादाइवा ॥

२ १र २ जु र
जु - तयेमाऽ२३साऽ३४३इ । = तयेमासाइ ॥

२ १ र २ ३ ।।। जू र
जू - अग्निराहूताऽ२३४५: । = अग्निराहूता ॥

२र १ ३ ५र र जे र र र
जे - औहोऽ२वाऽ२३४औहोवा । = औहोवा औहोवा ॥

२र १र र २ १र २ जैर र र र
जै - देवैरग्नेसायावाऽ२३भीः । = देवैरग्नेसायावाभीः ॥

२र १ अ २ जो र
जो - आजिन्नगाइर्वावाऽ२३हाऽ३: । = आजिन्नइर्वावाहा ॥

२ १ विर १र २र ३ ।।। जौ विर र र
जौ - सानिम्मेऽ२धामयासिषाऽ२३४५म् । = सानिमेविन्धामयासिषाम् ॥

२ १र २ १ २ १ विर जम् र विर
जम् - श्रुतासइद्वहन्तस्सन्तदाऽ२शत । = श्रुतासइद्वहन्तस्सन्तदाशत ॥

२ १ २र १ २ १ २ जः र
जः - पवित्रन्तेवितातंब्रह्मणस्पतेऽ३ । = पवित्रन्तेवितातंब्रह्मणस्पते ॥

२ १ २ १र र २र १र ।।। झ र र र र
झ - घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानृधेवृधेसुवाऽ२३४५: । = घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानृधेवृधेसुवाः ॥

२ १ २ र १र २ १र विर ३ ।।। झा र र र विर
झा - अर्कस्यदेवाःपरमेवियोऽ२माऽ२३४५न् । = अर्कस्यदेवाःपरमेवियोविन्मान्॥

२ १ र १ झि र
झि - नत्वदन्योमघवाऽ२३नाऽ२ । = नत्वदन्योमघवाना ॥

२ १ र र २ झी र र
झी - रिपुरीशीतमाऽ३१उवाऽ२३ । = रिपुरीशीतमाउवा ॥

२ १ २ झु
झु - तक्षद्यदाऽ३१२३४इ । = तक्षद्यदाइ ॥

२ १ २ ।।। झू
झू - द्रावाससाऽ३१उवाऽ२३४५ । = द्रावाससाउवा ॥

२र ३ २ १ झेर
झे - ख्येअन्धासाऽ२: । = ख्येअन्धासा ॥

२ ३र २ १ झैर
झै - तावेदासाऽ२३म् । = तावेदासाम् ॥

२ ३२ १२ झो

झो - सापर्यातायेऽ३४ । = सापर्याताये ॥

अ — झौ

झौ - इन्द्रंवायाऽ२म् । = इन्द्रंवायाम् ॥

अ झम्

झम् - राराऽ२३ । = रारा ॥

अ २ झः

झः - जानाऽ२३नाम् । = जानानाम् ॥

अ २ ञ

ञ - त्साराऽ२३हाऽ३४इ । = त्साराहाइ ॥

२ र १ न ञा र न

ञा - पुनानमभिगाऽ३ । = पुनानमभिगा ॥

अ ञि

ञि - ईवाऽ२३४ । = ईवा ॥

अ ञी

ञी - षूवज्रिणाऽ२३४३म् । = षूवज्रिणाम् ॥

अ ३ ५ ञु

ञु - आमाऽ२र्ताऽ२३४याम् । = आमार्तायाम् ॥

अ ३ ञू

ञू - यूवाऽ२साऽ२३४५खाऽ६ँ५६ँ । = यूवासाखा ॥

अ विर १ ञे विर

ञे - तामाऽ२र्भ्वासाऽ२३म् । = तामान्र्भ्वासाम् ॥

अ १ ञै

ञै - आनूऽ२३हो । = आनूहो ॥

२ न ञो न

ञो - त्राहाऽ३ । = त्राहान ॥

२ — न ञौ न

ञौ - दादाऽ२याऽ३ । = दादाया ॥

२ र १र ३ २ ञम् र र

ञम् - सुतेवायाँसियन्ताउ । = सुतेवायासियन्ताउ ॥

२ न न ञः न न

ञः - स्तुवौऽ३हौऽ३ । = स्तुवौहो ॥

२ १र र ३ श र र

श - सुषावसोममद्रिभीऽ२३४ः । = सुषावसोममद्रिभीः ॥

२र न २ शा र न

शा - औहोऽ३वा३४३ । = औहोवा ॥

२ १र ३ ।।। शि र

शि - क्रायाहूताऽ२३४५ः । = क्रयाहूताः ॥

२ २ शी

शी - वाऽ३चाऽ३ः । = वाचा ॥

२ २ शु
शु - हाऽ३हाऽ३४ । = हाहा ॥

२ ३र २ ष्णु र
शू - ष्णुमोजासाऽ३४३ । = ष्णुमोजासा ॥

२ ३ ५ शे
शे - वारावाऽ२३४न्ताम् । = वारावान्ताम् ॥

२ र र २ ५र र शै र र र र
शै - औऽ३होवाहाऽ३४औहोवा । = औहोवाहाऔहोवा ॥

२ ३ ५ शो
शो - याशाआऽ२३४सीऽ६ँ॒। = याशाआसी ॥

२ शौ
शौ - ओऽ३२३४५वा६ँ॒५६ँ॒ । = ओवा ॥

२र ३ २ ३ २ शम् र
शम् - पावाकावर्णाः । = पावाकावर्णाः ॥

२ र र ३२ ३ २ शः र र
शः - सुषावासोममद्रिभिः । = सुषावासोममद्रिभिः ॥

२ २ ३ २ ष
ष - वोऽ३ग्नायएऽ३४ । = वाग्नयए ॥

२ र २ ३ षा र
षा - इन्द्रस्येवाऽ३४३प्राताव । = इन्द्रस्येवाप्राताव ॥

२र २ ५ षिर
षि - ऐयाऽ३४३ईऽ३४या । = ऐयाईया ॥

२र २ षी
षी - ओवाऽ३४३ओऽ३४५वाऽ६ँ॒५६ँ॒ । = ओवाओवा ॥

२ र १ २ — षु र
षु - इतएतऊऽ३दारूऽ१हाऽ२न् । = इतएतउ दारूहान् ॥

२र १ अ २ षू
षू - ह्वणीऽ३थाआतिथीऽ३म् । = ह्वणीथाअतिथिम् ॥

२र १ अ २ षेर
षे - पावाऽ३काशाँ॒साऽ२३याम् । = पावाकाशँ॒सायाम् ॥

२र १ अ षैर
षै - र्वावाऽ३ताइवृत्राहाऽ२३४न् । = र्वावाताइवृत्राहान् ॥

२र र र ५ अ । । । षोर र र र
षो - प्रतेधारामधुमाऽ३ताइरासृप्राऽ२३४५न् । = प्रतेधारामधुमाताइरासृप्रान् ॥

२ १ २र १र २ १र २ षौ र र र र
षौ - उतत्राताशिवोभुवः । = उतत्राताशिवोभुवः ॥

२ १ र २र १ २ र १ षम् र र र
षम् - प्राभुर्गात्राणिपारियेषिविश्वताऽ२३ः । = प्राभुर्गात्राणिपारियेषिविश्वता ॥

२ १ २ १ २र १र २र ३ षः र र र
षः - हत्यस्स्पत्म्योजायमानाऽ२३४ः । = हत्यस्स्पत्म्योजायमाना ॥

२र १र २र१र २र १ विर ३ ।।। सर र र र र विर

स - वाजीजिगीवाविश्वाधानाऽ२नीऽ२३४५ । = वाजीजिगीवाविश्वाधानानी ॥

२ १ २ १र र२र १र ।।। सा र र र र

सा - घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानशेमाहेसुवाऽ२३४५ः। = घर्मप्रवृक्तस्तन्वासमानशेमाहेसुवाः॥

२र र१ २ १र २ १ २ १२र सिरर र र

सि - ईयानःकृष्णोदाशाभिस्साहस्रैः । = ईयानःकृष्णोदाशाभिस्साहस्रैः ॥

२ १र २र १ २१ २ १ सीर र

सी - माहामापारंवृषाभँ्सुवज्राऽ२३म् । = माहामापारंवृषाभसुवज्राम् ॥

२ १ २ १र २ १ २र १ ।।। सु र र

सु - वृत्रआघन्वाँ्आपतद्ववारयत्तमाऽ२३४५ । = वृत्रआघन्वाआपतद्ववारयत्तमा ॥

२ १ र२र १ २ १ २ र १ २ १२ १ २ र १ २ १ २

सू - तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्यश्चनामःसरद्भ्यश्चत्सारिभ्यश्चनमश्श्रि ।=

सू र र र र

तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्यश्चनामःसरद्भ्यश्चत्सारिभ्यश्चनमश्श्रि ॥

२ १ र २ १रर र२ १र २१र २ १२र १ २र १र २१रर २र १ २र र

से - मन्युनावृत्रहासूर्येणस्वाराड्यज्ञेनमाघावादक्षिणास्यप्रियातानूराज्ञाविशन्दाधार।

से र र र र र र र र र र र र र र र

= मन्युनावृत्रहासूर्येणस्वाराड्यज्ञेनमाघावादक्षिणास्यप्रियातानूराज्ञाविशन्दाधार ।

२१र २र १ २र१ २ १र २ १ २र१२ १ २र १ २ १२ १ २

सै - रुद्रायंतीरासादेनमस्थिरायस्थिराधन्वनेनमःप्रतिपदायचपटरिणेचानामस्त्रियम्ब-

र सैर र र र र र र

कायचक । =रुद्रायंतीरासादेनमस्थिरायस्थिराधन्वनेनमःप्रतिपदायचपटरिणेचानाम-

र

स्त्रियम्बकायचक ॥

२ १ ३ ।।। सो

सो - एऽ३माहाऽ२३४५ः । = ए माहाः ॥

२ १ २र १ ३ सौ र

सौ - आभिव्रजंतत्निषेगव्यमश्वियाऽ२३म् । = आभिव्रजंतत्निषेगव्यमश्वियाम् ॥

२ १र २ १र ३ ।।। सम् र र

सम् - जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोऽ२३४५ः । = जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोः ॥

२र १र २ १ २ र १ररर ३ ।।। सः र र ररर

सः - आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः। = आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याः ॥

२र १२र१ २ १ २र १ ३ ।।। श्च र र

श्च - योषितांयन्मनस्तन्मयियोषिताऽ२३४५म्। = योषितांयन्मनस्तन्मयियोषिताम्॥

२र१ २ १र र २र१ २१र २१ र २ १ २ १ ३ ।।। श्चर र

श्चा - तोकंप्राजांगर्भोनोयमदध्मह्याचपराचपथिभिश्चरन्ताऽ२३४५ । = तोकंप्राजां-

र र र र

गर्भोनोयमदध्मह्याचपराचपथिभिश्चरन्ता ॥

श्चि - नास्ति । = नास्ति ॥

२ १ विर र ३ २ श्री विर र

श्री - अग्निर्नोऽ२व ँ सतेरयीऽ१म् । = अग्निर्नोविन्व ँ सतेरयीम् ॥

२१ ४ २र ३ ५ श्रु र

श्रु - अर्चन्तुपूऽ२३त्राऽ३काउत । = अर्चन्तुपूत्राकाउत ॥

२१ ४ ५ ४ ५ श्रू

श्रू - उपनोऽ२३हरिभिस्सुतोवा । = उपनोहरिभिस्सुतोवा ॥

२१र ४ ५४र५४५ ४ ५ श्रे र

श्रे - इमेताऽ२३इन्द्रातेवयंपुरुष्टुतोवा । = इमेताइन्द्रतेवायंपुरुष्टुतोवा ॥

श्रै - इत्यादि नास्ति ॥

२ १ र

र - नन्दाइ । = नन्दाइ ॥

२ १ रा

रा - काऽ३म्परः । = काम्परः ॥

२३र २ १ रि र

रि - प्रप्रावायाम् । = प्रप्रावायाम् ॥

२ २ री

री - औऽ३होऽ३१इ । = औहोइ ॥

२ १२१ रु

रु - षूऽ३महिषो । = षूमहिषो ॥

२ १र रर १ रू र रर

रू - परमाच्चित्सधस्थादैयाऽ२३होइया । = परमाच्चित्सधस्थादैयाहोइया ॥

२र १र १ —१ रे र र

रे - स्वानासइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया । = स्वानासइन्दवाउवाहोवाईया॥

२ — १ रै

रै - षणाऽ२इनाम् । = षाणोनाम् ॥

२र १ २र १ रो र र

रो - माताइहेत्याः । = माताइहेत्याः ॥

२ १ २र१ २१र रौ र र

रौ - आरिरग्नेतवस्विदा । = आरिरग्नेतवस्विदा ॥

२ १र २ १र २ १र २ १र रम् र र र र

रम् - जर्निंतादिवोजानितापृथिव्याः । = जर्निंतादिवोजनितापृथिव्याः ॥

२ १ २ १ २ १र२र१२र१ रः र र र

रः - ब्रघ्नश्चिद्यस्यवातोनजूतिम् । = ब्रघ्नश्चिद्यस्यवातोनजूतिम्

२ र १र २ १२१२र१२ १२१ ल र र

ल- चराचराय बृहतइदंवाममिदंबृहद्धस् । = चराचराय बृहतइदंवाममिदंबृहद्धस् ॥

२ १ र २१र २र १२१र२१ २ १र २ १र र २र१

ला - वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशाचीपातिरन्नेनगयःपृथिव्यासृणिकोग्निनाविश्वंभूतम । =

ला र र र र र र र र र

वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशाचीपातिरन्नेनगयःपृथिव्यासृणिकोग्निनाविश्वंभूतम ॥

२ १ २ १र २ १विर ३ २ लि र विर
लि - सुवृक्तिभिर्नृमादानंभारेऽ२षुवाऽ१ । = सुवृक्तिभिर्नृमादानंभारेषुवा ॥

२१ २ १र २ १ २र १ ली र र
ली - वृत्रआघन्वाँ॒आपतद्ववारयत्तमः । = वृत्रआघन्वाआपतद्ववारयत्तमः ॥

लु - इत्यादि नास्ति ॥

३ ट
ट - इ । = इ ॥

३ ४ ५र टा र
टा - प्रत्याग्ने । = प्रत्याग्ने ॥

३४र ५ ५ टि र
टि - हरसाहराऽ६ँ॒ए । = हरसाहराए ॥

३ २ टी
टी - प्रागोऽ३ । = प्रागो ॥

३र २ टुर २
टु - एहियाऽ३४ । = एहिया ॥

३ ५ टू
टू - हीऽ२३४षी । = हीषी ॥

३र २ ५र र टेर रर
टे - यायाऽ३४औहोवा । = याया औहोवा ॥

३ ५ टै
टै - मदाऽ२३४याऽ६ँ॒ । = मदाया ॥

३ २ ४ टो
टो - कायाऽ३स्थाऽ५इराऽ६ँ॒५६ँ॒न् । = कायास्थाइरान् ॥

३ २ १ टौ
टौ - याहीन्द्राऽ२३ । = याहीन्द्रा ॥

३ २ १ टम्
टम् - धुमत्तामाऽ२३४ः । = धुमत्तामा ॥

३ २र१ ।।। टः र
टः - दिवस्पायूऽ२३४५ः । = दिवस्पायूः ॥

३ २ ठ
ठ - शामाऽ३१२३इ । = शामा ॥

३ २ ठा
ठा - कण्वाऽ३१२३४ः । = कण्वाः ॥

३र १ ठिर
ठि - औहोऽ२३४वा । = औहोवा ॥

३ ४र ३ ४ ५ ठी र
ठी - अग्नेजारितर्वि । = अग्नेजारितर्वि ॥

३र ४ र ४ ठुर र
ठु - औहोऽ५इन्द्रतेशवाः । = औहोइन्द्रतेशवाः ॥

३र४र ५ र र ४ ५ ठू र र र र
ठू - आनोअग्नेवयोवृधम् । = आनोअग्नेवयोवृधम् ॥

३ ४ ३र ४ ५ ४ ५र ठे र र
ठे - आवद्रप्सोअँ॒शुमातीम् । = आवद्रप्सोअशुँ॒मातीम् ॥

३ ४र ३ ४ ३र ४ ५ ठै र र
ठै - अग्नेमृडामाहाँ॒आसि । = अग्नेमृडामाहाँ॒आसि ॥

३ २ ३ ठो
ठो - तुराणाऽ२३४ः । = तुराणाः ॥

३ २ ३ ५ ठौ
ठौ - माहाइत्राऽ२३४इणाम् । = माहाइत्राइणाम् ॥

३ २ ३ ५ ठम्
ठम् - मदाऽ३२इन्ताऽ२३४राम् । = मदाइन्ताराम् ॥

३ २ ठः
ठः - वृताऽ३४३ः । = वृताः ॥

३ २ ३ २ ड
ड - पिबाऽ३४तुवाऽ३ । = पिबातुवा ॥

३ २ २ ३र५र डा र र
डा - माहाऽ३४३म् विपोधाम् । = माहाम् विपोधाम् ॥

३ २ ३र ४र५ डि र र
डि - कादाऽ३४औहोवा । = कादा औहोवा ॥

३ २ ३ ५ डी
डी - आहाऽ३१२न्याऽ२३४हा । = आहान्याहा ॥

३र न २ डुर न
डु - औहोऽ३हाऽ३ । = औहोहा ॥

३ ४ ५ र ३ ४ ५ र डू र र
डू - वियअतेसामअते । = वियअतेसामअते ॥

३ ४ ३र४र ३ ४ ३ डे र र
डे - अस्तिसोमोआयँ॒सुतः । = अस्तिसोमोआयँ॒सुतः ॥

३ ४ ३ ४ ३र४३र ४ ५ डै र र
डै - इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहा । = इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहा ॥

३ र २ न डो र न
डो - थिनाशावाऽ३२३२३४३ः । = थिनाशावाः ॥

३ ४र३र ४ ५ ३र ४ ५ डौ र र र
डौ - उपोपेन्नुमघवन्भूयाइत । = उपोपेन्नुमघवन्भूयाइत ॥

३र २ यर
य - एहिया । = एहिया ॥

३ र २ १ यार
या - नुषेजाना । = नुषेजाना ॥

३र २ यि र

यि - ओहोऽ३१इ । = ओहोइ ॥

३र २ यी र

यी - औहोऽ३१२ । = औहो ॥

३ २ १ यु

यु - कविक्रातोऽ२ । = कविक्रातो ॥

३र २ ३ २ यू र

यू - योजाऽ३४रितृ । = योजारितृ ॥

ये - नास्ति । = नास्ति ॥

३ २ ३र २ यै र

यै - घ्नाताऽ३४वामाऽ१ । = घ्नातावामा ॥

३र१ २ यो र

यो - औहोवा । = औहोवा ॥

३र न २ यौ र न

यौ - औहोऽ३वा । = औहोवा ॥

३ २ यम्

यम् - नावाऽ३२ । = नावा ॥

३ २ न २ यः न

यः - माहित्वाऽ३२३२३मा । = माहित्वामा ॥

४ त

त - ओग्नाइ । = ओग्नाइ ॥

४ ५ ता

ता - जारा । = जारा ॥

४ ५ ति

ति - हूऽ५तोऽ६ँ॒हाइ । = हूतोहाइ ॥

४र ५ ४ ती र

ती - प्रेष्ठंवाः । = प्रेष्ठंवाः ॥

४ ५ ४र ५र तु र र

तु - आग्नाआयाहि । = आग्नाआयाहि ॥

४ ५ ४ ५ तू

तू - हारिश्मश्रुन्नवर्मणाऽ६ँ॒ । = हारिश्मश्रुन्नवर्मणा ॥

४ ५ ४र ५र ४ ते र र

ते - आग्नाआयाहिवी । = आग्नाआयाहिवी ॥

४ ५र ४ ५ ४ ५ तै र

तै - अग्नेजारितर्विश्पातिः । = अग्नेजारितर्विश्पातिः ॥

४ ५र ४ ५ ४र ५ ४ तो र र

तो - अग्नेविवस्वदाभारो । = अग्नेविवस्वदाभारो ॥

४र ५ ४ ५र ४र ५ ४र ५र तौ र र र र र

तौ - नयोमातारावन्वेतिधातावे । = नयोमातारावन्वेतिधातावे ॥

४ ५ ४ ५र ४ ५ ४ ५ ४ त्वम् र

तम् :- त्वामिन्द्रबालादाधिसहसाः । = त्वामिन्द्रबालादाधिसहसाः ॥

४ ५ ४र ५ ४ ५ र ४र ५ ४ ५ तः र र र

तः - इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवीनांमतिस्सृ । = इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवीनांमतिस्सृ ॥

४र ३ ४र ५ र थर र र

थ - पाहिनोअग्नए । = पाहिनोअग्नए ॥

४ ३ ४र ५र ४ ५र था र र र

था - माघावानोजाना । = माघावानोजाना ॥

४ ३ ४ र ३ ४ ५ र थि र र

थि - इमाउत्वाविचाक्षते । = इमाउत्वाविचाक्षते ॥

४र ३र ४ ३ ४ ५ ४ ५ थी र र

थी - श्वासेपातयन्तमुक्षाणम् । = श्वासेपातयन्तमुक्षाणम् ॥

४र ३ ४र ३ ४ ३ ४ ५र र थु र र र र

थु - पाहिगीर्भिस्तिसृभिरुर्जाम् । = पाहिगीर्भिस्तिसृभिरुर्जाम् ॥

४ २ ४ ५ थू

थू - ज्ञाऽ३वोऽ२ग्नायाइ । = ज्ञावोग्नायाइ ॥

४ ३ थे

थे - यज्ञाऽ५य । = यज्ञाया ॥

४ ५ थै

थै - अभिप्रियाऽ२ । = अभिप्रिया ॥

४ ह

ह- हाऽ३ । = हा ॥

४ २ ३ हा

हा - ताऽ३उयामा । = ताउयामा ॥

४ २ हि

हि - होऽ३वा३४ । = होवा ॥

५ र प र

प - अग्निंदूताम् । = अग्निंदूताम् ॥

५ ५ पा

पा - अग्निंवाऽ६ँ्ए । = अग्निंवाए ॥

५ ४ पि

पि - पुरू । = पुरू ॥

५र र ४ पी र र

पी - आघाय्इहा । = आघायइहा ॥

५ ३ र पु

पु - नारामोइ । = नारामोइ ॥

५र ३ २ पू

पू - षाहमोऽ३इ । = षाहमोइ ॥

५ र ३ र २ १ पे र र

पे - सहोवानन्ता । = सहोवानन्ता ॥

५ र र ४ ५ पै र र
पै - जराबोधोवा । = जराबोधोवा ॥

५ ४ ५ पो
पो - तुविद्युम्नंविभाऽ६ँ॒ । = तुविद्युम्नविभा ॥

५र ४ २ ४ ५र पौ र र
पौ - दूताऽ३म्वोऽ३विश्ववेदसाम् । = दूताम्वोविश्ववेदसाम् ॥

५ ४ २ ४ ५ पम्
पम् - तंगूऽ३र्धाऽ३यासुवर्णरोवा । = तंगूर्धायासुवर्णरोवा ॥

५ र २ ४र ५ ४ ५ पः र र
पः - तरोभाऽ३इर्वोविदद्वसूम् । = तरोभाइर्वोविदद्वसूम् ॥

५ २ ४र ५र फ र र
फ - प्रमँ॒हाऽ३इष्ठायगायता । = प्रमँ॒हाइष्ठायगायता ॥

५र र २ ४ र ५ फा र र र
फा - एह्यूषूऽ३ब्रवाणाऽ६ँ॒ताइ । = एह्यूषूब्रवाणाताइ ॥

५र ४र ५ र ४ फि र र र
फि - रायेअग्नेमाहाइ । = रायेअग्नेमाहाइ ॥

५ ४ ५ र ४र ५ र फी र र र
फी - अग्निमिन्धानोमानासौ । = अग्निमिन्धानोमानासौ ॥

५ ४ ५र ४ ५ ४ फु र
फु - शुक्रन्तेअन्यद्यजताम् । = शुक्रन्तेअन्यजताम् ॥

५ ४ ५ ४र ५र ४ ५र फू र र र
फू - अग्निस्तिग्मेनशोचिषा । = अग्निस्तिग्मेनशोचिषा ॥

५र ४र ५र ४ ४ ५ ४ फे र र र
फे - एनावोअग्निमेऽ५नामासा । = एनावोअग्निमेनामासा ॥

५ ४र ५ ४ ५र ४र ५ र ४ ५ फै र र र र
फै - समेतविश्वाओजसापातिम् । = समेतविश्वाओजसापातिम् ॥

यद्यपि नमत विनत अभिगीत आदि स्वरों का बोध भी वर्गाक्षर स्वरों से ही हो जाता है, परन्तु सौकर्यता हेतु वर्गाक्षर स्वर के साथ-साथ दीर्घ नमत विनत आदि स्वरों को भी अंकित किया है तथा ग्रन्थ में अंकस्वर एवं वर्गाक्षर स्वर दोनों को ही ग्रहण किया है, अत: वर्गाक्षर स्वर प्रत्येक पर्व के अन्तिम अक्षर के अधोभाग में अंकित है ।

मैं प्रातस्स्मरणीय उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य **स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज** के चरण कमलों में प्रणामाञ्जलि अर्पित करता हूँ, जिनके आशीर्वाद तथा परमनुग्रह से यह ग्रन्थ सम्पादित हो सका है । पूज्य गुरुजी प्रो. **युगल किशोर मिश्र जी** (पूर्व कुलपति, ज.रामानन्दाचार्य

राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) तथा प्रो. **श्रीकिशोर मिश्र** (पूर्व सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान्, उज्जैन एवं पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, व्राराणसी) जिनके आशीर्वाद से निरन्तर प्रेरित होकर वेद की उपाधियाँ प्राप्तकर इस ग्रन्थ को सम्पादित कर पाया। वेद भगवान् से जन्म-जन्मान्तरों तक इन गुरुजनों के वात्सल्य में रहने की प्रार्थना करता हूँ। इस ग्रन्थ की पूर्णता में सर्वाधिक योगदान पूज्य गुरुजी **विद्वान् पं. श्री सुब्राय सत्यनारायण भट्ट (हारूरी)** तथा **पं. श्री परमेश्वर गणपति भट्ट जी (नीलकोडु कर्नाटक)** का रहा, जिन्होंने तिगळारी लिपि के इस ग्रन्थ को देवनागरी लिपि में परिवर्तित किया और प्रतिक्षण इस कार्य हेतु मुझे प्रेरित कर अपने पास संग्रहीत ताड़पत्रों की प्रति उपलब्ध कराई। मेरे ज्येष्ठ भ्रातृस्वरूप **पं. श्रीकृष्ण भट्ट पळस्कर जी (परभणी, महाराष्ट्र)** तथा **पं. श्री गिरिजा प्रसाद षडंगी (तिरुपति)** जिनसे मुझे सदैव इस विषय की तकनीकियों के बारे में सहयोग मिला; मैं इनके प्रति प्रणति पूर्वक आभारी हूँ। मेरे प्रिय अन्तेवासी **पं. शम्भुलाल शर्मा, सामवेदाध्यापक, जगद्‌गुरुशंकराचार्य स्वामी-स्वरूपानन्द-सरस्वती-न्याय-वेदान्त-महाविद्यालय, वाराणसी,** ने प्रारम्भ से ही मेरे साथ इस ग्रन्थ की पूर्णता हेतु तन-मन-धन से सहयोग किया। भविष्य में भी इनसे इसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा, इसी आशा के साथ मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। इनके अतिरिक्त महान् विभूति द्वारकाशारदापीठ के यशस्वी मन्त्री **स्वामी श्री सदानन्दसरस्वती जी महाराज** के हम विशेष आभारी हैं जिन्होंने न केवल हमारा उत्साह बढ़ाया अपितु सामवेदीय शारदापीठ से इस ग्रन्थ के सम्पादन हेतु अपना आशीर्वाद भी प्रदान किया। उन्हीं के आशीर्वादात्मिका-दिव्यशक्तिस्वरूपा प्रेरणा से प्रेरित होकर यह ग्रन्थ पूर्णता को प्राप्त हुआ। इनके चरण कमलों में प्रणामाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

यद्यपि इस ग्रन्थ में स्वर अक्षर मात्रा आदि की शुद्धता का पूरा ध्यान रखा गया है, परन्तु ग्रन्थ के प्रथम सम्पादन तथा प्रकाशन होने से यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो विद्वज्जन हमें क्षमा करते हुए उनको अवगत कराने की कृपा करें जिससे आगामी संस्करण में उनको

सुधारा जा सके । अन्त में परमपिता परमेश्वर श्रीकाशी विश्वनाथ तथा माता अन्नपूर्णा से इस ग्रन्थ की सफलता हेतु प्रार्थना करता हूँ ।

सम्पादक
डॉ. विजय कुमार शर्मा
सामवेदाचार्य, एम.ए. (संस्कृत)
सामवेदाध्यापक-
श्रीपट्टाभिरामशास्त्री-वेदमीमांसानुसंधान- केन्द्र
बी. ४/७ ए. हनुमान घाट, वाराणसी ।

विषयानुक्रमणिका

॥ ॐ नमः सामवेदाय ॥

। अथ राणायनीयशाखीयं प्रकृतिगानम् ।

(वेयगाने, ग्रामगेयगानम् ।)

तत्र प्रथममाग्नेयं पर्वः ।

॥ विश्वामित्रो, गायत्री, सविता ॥

२ २र ३क २र १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
ओम् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

३ १ २ ३ १ २
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

। गानम् ।

॥ गायत्रम् ॥ परमेष्ठी प्रजापतिः, गायत्री, सविता ॥

१ १ र र र र —
ओऽ३म् । तत्सवितुर्वरेणियोम् ॥ भार्गोदेवस्यधीमाहीऽ२ ।
क का

१र र २ १ — १ २ ।।।
धियोयोनःप्रचोऽ१२१२ ॥ हिम्आऽ२ ॥ दायो ॥ आऽ३४५॥
छु का क ची

(दीर्घाः६। पर्वाणि६। मात्रा३)।।(कि।।)

(इति प्रकृतिसप्तगानन्तर्भूतं गायत्राख्यं प्रथमं गानं सम्पूर्णम्)

(१-१) ॥ पर्कः । गोतमो, गायत्री, अग्निः ॥

१ ४ २र र १ — १ — १ र २र
ओऽ३म् । ओग्नाइ ॥ आयाहिऽ३वोइतोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ । गृणानोह ।
त छो का का

१ — १ — १ २र १ १ ३ ५र र
व्यादातोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ ॥ नाइहोतासाऽ२३ ॥ त्साऽ२इबाऽ२३४औहोवा ॥
चो का धी वे

३ ५
हीऽ२३४षी ॥ (दी.७ । प.९। मा.९) १ (झो ।१)
दु

(१-२)　　(२) बर्हिष्यम् । (कश्यपो, गायत्री, अग्निः।)

आग्नाआयाहिवी ॥ तयाइ। गृणानोहव्यदाताऽ२३याइ।। निहोतासत्सिबर्हा२३इषी ॥

बर्हाऽ२इषाऽ२३४औहोवा ॥ बर्हीऽ३षीऽ२३४५ ॥

(दी.९। प.६ । मा.६)२(तू.।२)

(१-३)　　(३) पर्कः ॥ (गोतमो, गायत्री, अग्निः।)

आग्नाआयाहि । वाऽ५इतायाइ ॥ गृणानोहव्यादाऽ१ताऽ३ये ॥ निहोताऽ२३४सा ॥

त्साऽ२३इबाऽ३ । हाऽ२३४इषोऽ६ हाइ ॥

(दी.४ । प.६। मा.६)३(तू।३)

(२-१)　　॥ सौपर्णं सुपर्णो; (वैश्वमनसम् । विश्वमना, गायत्री, अग्निः।) ॥

त्वामग्नेयज्ञानाम् । त्वामग्नाइ ॥ यज्ञाना होता । विश्वेषा हाऽ२३इताः ॥

देवेभाऽ२३इर्मा ॥ नुषेजाना । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१२।प.९। मा.६)४(झू।४)

(३-१)　　॥ बृहद्भारद्वाजम् (बृहद्वाग्नेयं,बृहद्वा सौरम् ।) (भरद्वाजो, गायत्री, अग्निः ।) ॥

अग्निन्दूताम् ॥ वृणीमहाइ । होताराऽ२३०वी । श्वावेदसाम् ॥ अस्ययाऽ२३ज्ञा ।

आ । औऽ३होवा ॥ स्यासुक्रतुम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.५)५(कु।५)

(४-१) ॥ (श्रौतर्षाणि त्रीणि) श्रौतर्षम् ॥ त्रयाणां श्रुतर्षिः, गायत्री, अग्निः ॥

अग्निर्वृत्रा ॥ णाऽ२इजाऽ२३४औहोवा । घाऽ२३४नात् । द्रविणस्युर्विपन्यायाऽ२॥

ओइसमिद्धाऽ२३ःशू॥ क्रायाहुतः। इडाऽ२३भाऽ३४३ ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.९। मा.६)६(घू।६)

(४-२)

आग्निरौहोवाहाइ । वृत्राणी ॥ जाङ्घाऽ३नात् । औहोऽ३वाऽ३ । द्रविणाऽ२३४स्यूः।

ओइवोइपान्ययाऽ२॥ समायेऽ३॥ धाऽ२श्शूऽ२३४औहोवा ॥ क्रायाहुताऽ२३४५ः ॥

(दी.४। प.९। मा.७)७(धे।७)

(४-३)

ओग्नीः ॥ वृत्राणिजङ्घनात् । औहौहोऽ२३४वा ॥ द्रविणस्युर्विपन्यया ।

औहौहोऽ२३४वा ॥ समीद्धश्शुक्रया । औहौहोऽ२३४वा ॥ हूऽ५तोऽ६ँहाइ ॥

(दी.४। प.८। मा.३)८(दि।८)

(५-१) औशणानि त्रीणि । औशनम् ॥ (उशना, विराड्गायत्री, अग्निः)

प्रेष्ठंवाः॥ अताऽ२३इथीम् । स्तौषेमित्रम् । इवप्राऽ२३याम् । अग्राइराऽ३थाऽ३म् ॥

नावाऽ२३हाऽ३४३इ ॥ दाऽ२३४योऽ६ँहाइ । (दी.२। प.७। मा.९)९(छो।९)

(५-२) ॥ शैरीषम् ॥ शिरीषो (उशना, गायत्री, अग्निः ।)

४र ५ ४ १ २ १ ३ ५
प्रेष्ठंवः । ओहाइ ॥ अताऽ२३इथीम् । स्तुषाइमित्राऽ३म् । इवाऽ२प्राऽ२३४याम् ॥
ता त कः चा दू
३र २ २र १ १ ४ २ ५
औहोऽ१इ । अग्नेराथाऽ२३म् ॥ नाऽ२३ऽवेऽ३ । दाऽ३४५योऽ६ँ ̖हाइ ॥
वि घी ख चु

(दी.३। प.९। मा.१०)१०(ढौ।१०)

(५-३) ॥ औशनम् ॥ (उशना, विराड्गायत्री, अग्निः ।)

५र र १ र २ १ २
प्रेष्ठंवोहाउ ॥ अतिथाइम् । स्तुषेमित्रमिवप्राऽ२३याम् ॥ अग्रायेऽ३ ॥
प क कः कि
१ ३ ५र र २ १र ३ । । ।
राऽ२थाऽ२३४औहोवा ॥ नावेदियाऽ२३४५म् ।
वे शि

(दी.६। प.६। मा.६)११(कू।११)

(६-१) ॥ सांवर्गम् । (संवर्गः) साकमश्वः, गायत्री, अग्निः ॥

५ र २र १ २र १र २ २ १र र २र १ २ — १ २
त्वन्नोया॥ ग्रेमाहोमिः। पाहोइवीऽ३श्वा। स्याअरातेः॥ उताद्वाऽ१इषाऽ२ः॥ मार्त्यस्य ।
प चो कः का घि का
१ २ १
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
पु कु प

(दी.७। प.९। मा.७)१२(झे।१२)

(६-२) ॥ वार्त्रघ्नम् । साकमश्वः, गायत्री, अग्निः ॥

४र ५र र ४ ५ ५ २र १ २ २ १ २ २ १ २
त्वांत्वन्नोअग्नेमा । होऽ६ँ ̖भाइः ॥ पाहिविश्वाऔऽ३हो । स्याऔऽ३हो । आरातेः ।
ती पा जा कः का
१ २ — १ ३ ५र र ३ । । ।
उताद्वाऽ१इषाऽ२ः । मर्ताऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ स्याऽ२३४५ ॥
घि वे दू

(दी.६। प.८। मा.९)१३(गो।१३)

(७-१) ॥ शौनःशेपे । वत्सः, गायत्री, अग्निः ॥

५र र २ ४ र ५ ५ १ र र — १ २र — १
एह्यूषूऽ३ब्रवाणाऽ६ ँ्इताइ । अग्नइत्थेतरागाऽ२इराः। एभाऽ२इर्वर्द्धा॥
फा कै रै
१ २ १ ५ ५
सयाऽ२३हाऽ३४३इ । दूऽ२३४भोऽ६ ँ्हाइ ॥
वु कृ

(दी.६। प.५। मा.८)१४(डै।१४)

(७-२) ॥ शौनःशेपम् ॥ शौनः शेपः, गायत्री, अग्निः ॥

५र र र ४ ५ १ र २ २ ३ ५
एह्यूषुब्रवौहोणाइताइ ॥ अग्नइत्थेताराऽ१गीऽ३राः । एभिर्वाऽ२३४र्द्धा ॥
पै धै शे
१ २ १ ५ ५
सयाऽ२३ऽहाऽ३४३इ ॥ दूऽ२३४भोऽ६ ँ्हाइ ॥
वु कृ

(दी.४। प.५। मा.६)१५(नू।१५)

(८-१) ॥ वात्से द्वे ॥ वत्सो, गायत्री, अग्निः ॥

५र र १ र २ १ २र १ २ १ २ २
आतेवत्साः ॥ मनोयमत् । पारामात् । चित्साधाऽ२३स्थात् ॥ अग्राइत्वाऽ३०काऽ३ ॥
प का का जा वि
४ ५ ४ ५
मयोवा । गाऽ५इरोऽ६ ँ्हाइ ॥
ता ति

(दी.४। प.७। मा.७)१६(थे।१६)

(८-२) ॥ काण्वम् । कण्वः, गायत्री, अग्निः ॥

४र ५र ४र ५र ४ ५ २ १र र र १
आतेवत्सोमानोयमत् । ऐयाहाइ ॥ पारमाच्चित्सधस्थादैयाऽ२३होइया ॥
वु ता रू
र र र र १ २ र १ २
अग्नेत्वांकामयऐयाऽ२३होइया ॥ गिरा । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
को घ वु
१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.१२। प.८। मा.६)१७(जू।१७)

(९-१) ॥ अग्नेरार्षेयं । गायत्री, अग्निः ॥

त्वामग्नेपूष्कााऽ६ॅ्रादधी ॥ आथर्वा । नाइः । आमाऽ२न्थाऽ२३४ता ॥ मूऽ२३४दृर्ध्नो ॥

वाऽ२३४इश्वा ॥ स्यवोवा । घाऽ५तोऽ६ॅ्हाइ ॥ (दी.५। प.८। मा.४)१८(बी।१८)

(१०-१) ॥ वाध्र्यश्वम् । (वध्र्यश्वोऽनूपो वा) गायत्री, अग्निः ॥

अग्नेविवस्वादाभारो । वाहाइ ॥ अस्मभ्यमूताऽ३याइमाहे । ओ । वाऽ३हाइ ।

ओ । वाऽ३हाइ ॥ दाइवोऽ१हियाऽ२ । ओ । वाऽ३हाइ । ओ । वाऽ३हाऽ३इ ॥

साऽ२इनाऽ२३४औहोवा । दृशेऽ१ ॥ (दी.६। प.१४। मा.९)१९(घो।१९)

एकोनविंशतिः प्रथमः खण्डः ॥१॥

(११-१) ॥ (सांवर्गम्) सांवर्गः । अग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

नामस्तौ ॥ होग्नाइ । ओजसाऽ३इ । गृणाऽ२न्ताऽ२३४इदे । वाकृष्टयाऽ२ः ॥

अमायेऽ३ः ॥ आऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ त्रमर्द्दायाऽ२३४५ ॥

(दी.३। प.८। मा.६)१(ङ्रू।२०)

(१२-१) ॥ वैश्वमनसम् । विश्वमना गायत्र्यग्निः ॥

५र ४ २ ४ ५र २ १र अ ३ ५ १ २
दूताऽ३०वोऽ३विश्वावेदसाम् ॥ हव्यवाहाम् । आमाऽ२र्त्ताऽ२३४याम् ॥ याजिष्ठम् ।
पा र वृ का

२ २ २ १ २ ४ ५ ४
ऋ । जासेऽ३हाइ ॥ गिरा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
क कः र ची ता प

(दी.३। प.१०। मा.६)२(णू।२१)

(१३-१) ॥ श्राभम् । श्राभो गायत्र्यग्निः (इन्द्रः) ॥

५ र १ विर १ २ १ अ — १ २र १ २ १ अ —
उपत्वाजा ॥ मायोऽ२गि । राओइयायूऽ२ः । दाइदिशतीर्हाविष्कृ । ताओइयायूऽ२ः ॥
प कै छु कै छु

२र १र २ ३ २ ४ १ २ १र । । ।
वायोराऽ२३नी ॥ कायाऽ३स्थाऽ५इराऽ६ँ५६ँन् ॥ आश्वाऽ३गावाऽ२३४५ः ॥
जा टो क्रि

(दी.६। प.८। मा.१०)३(गौ।२२)

(१३-२) ॥ श्रौष्टीयम् । (श्रौष्टम्) श्रुष्टो गायत्र्यग्निः ॥

५ र र ५र १ २ १ अ ३ ५
उपत्वाजामाऽ६ँयोगिराः ॥ दाइदिश । ताइः । हावीऽ२ष्काऽ२३४र्त्ताः ॥
पा का क त्रु

५र र र र ४ ५ १ २ ३र ५ ४ ५
वायोरनाहाइकाया ॥ स्थाइरा । औहोऽ२३४वा ॥ ईडा ॥
पै का टू ता

(दी.८। प.८। मा.७)४(डे।२३)

(१४-१) ॥ वैश्वामित्रम् । विश्वामित्रो गायत्र्याग्निः ॥

२ १ ४र ५र १ —१ — २१र १ — १ —
उपात्वाऽ२३ग्नेदिवेदिवाइ ॥ दोषाऽ२वास्ताऽ२ः । धियावयाम् ॥ नामोऽ२भाराऽ२ ॥
छा थि र थि

१र २ १
तायेमाऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.४। प.७। मा.५)५(थु।२४)
पु कु प

(१५-१) ॥ जराबोधीये द्वे । द्वयोरग्निर्गायत्री रुद्रः ॥

जारा । बोधाऽ२बोधाऽ२ । तद्विविड्ढाइ ॥ विशेवाइशेऽ२ ॥ यज्ञाऽ२३ ।
यायाऽ३४औहोवा ॥ स्तोमँ रुद्रायदृशीकाम् ॥ (दी.७। प.७। मा.४)६(छी।२५)

(१५-२) ॥ जराबोधियम् ॥

जराबोधोवा ॥ ताद्विविड्ढाइ । विशाइवाऽ२३इशे । यज्ञियाया । स्तोमाँ रु-
द्राऽ२३या३४ । दृ । शीकोऽ३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.८। मा.४)७(बी।२६)

(१६-१) ॥ मारुतम् । मरुतो गायत्र्यग्निः ॥

प्रातित्याऽ२३श्चारुमध्वराम् ॥ गोपीथा । या । प्राहूयाऽ२३४साइ ॥ मारुद्भिः ।
आ । ग्राआगाहा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१०। मा.५)८(मु।२७)

(१७-१) (भार्गवे द्वे) ॥ वारवंतीयं । द्वयोः भृगुः शुनःशेपो वा, गायत्र्यग्निः ॥

आश्वा । औहोऽ२३४वा । नात्वा । औहोऽ२३४वा ॥ वारवन्तंवन्दध्या । आग्ना ।
औहोऽ२३४वा ॥ नामोभिस्सम्राजन्ताम् ॥ आध्वाराणाम् । औऽ२३होवा ।
होऽ५इ ॥ डा । (दी.७। प.१२। मा.३)९(छि।२८)

(१७-२)

४ ५ ४ ५र ४र ५ ४ २ १ र र २ १र २ १ २
आश्वन्नत्वावारवन्ताम् ॥ वंदध्याग्निन्नमोभाइः ॥ सम्राज । तामाध्वराऽ३४ ।
ता र चो चं
३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २ ३ ५र र ३ ।।।
औहोवा ॥ इहाऽ२३४हाइ । औहोऽ३१२ । याऽ२३४औहोवा ॥ णाऽ२३४५म् ॥
टा गा यी टे टू

(दी.१०। प.९। मा.७)१०(भे।२९)

(१७-३) ॥ वारवन्तीयम् । इन्द्रो, गायत्र्यश्वः ॥

५ र र ४ ५ २ ३ ५ २ १ ५ १ २
अश्वन्नत्वाऔहोहाइ ॥ वारांवाऽ२३४न्ताम् । वंदाध्याऽ२३४हाइ । अग्राइन्नामाऽ३४ ।
पै रो की
३र ४र ५ १ ३ ५ २ ३ ५ २ १र २ १ अ २
औहोवा । इहाऽ२३४हाइ । उहुवाऽ२३४भीः ॥ संम्राज । तामाध्वराऽ३४ ।
टा गा रो चो त्रि
३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २ ५र ५
औहोवा ॥ इहाऽ२३४हाइ । औहोऽ३१२३४ । णाम् । एहियाऽ६ ँहा ।
टा गा ठा त पा
४
ne65F ~[e~ (दी.९। प.१६। मा.१०)११(तौ।३०)
ता प

(१८-१) ॥ सामुद्रे द्वे । समुद्रस्य वासो वा । और्वः, द्वयोरग्निः । गायत्र्यग्निः ॥

५र ४ ३ ५ १ २र — १ — १ २ १
और्वभृगुवत् । ओहाइ ॥ शूऽ२३४चीम् । आप्नवान । वादाऽ२हुवाऽ२इ । हुवाओइ ॥
पि त दू का छु कै
— १ — १ २ १ २ १ २ ।।।
अग्राऽ२इ ँसामूऽ२ ॥ सामुओ ॥ द्रावासासाऽ३१उवा२३४५ ॥
घि कै झू

(दी.२। प.९। मा.९)१२(झो।३१)

(१८-२) (वैधारय ऋषिर्वा)

५र ४ ५ ४ ४ १ २र २ १ २ १
और्वभृगुवच्छूचिम् । एऽ५ । शुचीम् ॥ आप्नवाना । वादाऽ२३हुवाइ । हुवाऽ२३इ ।
पै ता ता का जा चौ
२ ३ २ १ २ २ १ २ ३ २ १ ३ ५र र
हुवाए ॥ अग्राइ ँसाऽ३मू ॥ सामूऽ२३ । सामुएऽ३ । द्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥
चे कः चौ शी वे
२ १ ।।।
ससाऽ३मेऽ२३४५ । (दी.४। प.१२। मा.८)१३(थै।३२)
ज

(१९-१) ॥ असंगम् । (आसंगः) अत्रिर्गायत्र्यग्निः ॥

अग्निमिन्धानोमानासौ । हौहोवाहाइ ॥ धीयँ सचेतमौ । होऽ३हाऽ३ ॥

होऽ२३४र्तियाः ॥ अग्नायेऽ३म् । आऽ२इन्धाऽ२३४औहोवा ॥विवस्वामीऽ२३४५ः ॥

(दी.८। प.८। मा.६)१४(डू।३३)

(२०-१) ॥ निधनकामम् । प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः ॥

आदित्प्रत्लाऽ५स्यरेतसाः ॥ ज्योतिःपश्यन्तिवासाऽ२राम् ॥ पारोयाऽ२दिध्यताइ ॥

दिवि । होइ । होइ । औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ ॥ वा ॥

(दी.८। प.८। मा.७)१५(डे।३४)

पञ्चदशः द्वितीयः खण्डः । इति ग्रामगेयगाने प्रथमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(२१-१) ॥ सैन्धुक्षितानि त्रीणि । त्रयाणां सिंधुक्षिद्गायत्र्यग्निः । स्वारं सैन्धुक्षितम् ॥

अग्निंवोवृधान्ताम् । आध्वाराणाम् । पुरूतामौ । होवाऽ३हाइ ॥ आच्छाऽ२नाप्त्रेऽ२३ ॥

साहोऽ२३४वा । स्वाऽ५तोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.५। प.७। मा.४)१(फी।३५)

(२१-२)

अग्निंवाऽ६ँए ॥ वृधन्ताम् । अध्वराणाम्पुरूतममच्छाऽ२होऽ१इ ॥ नाऽ२३प्त्रे ॥

साहास्वाऽ२३४५ताऽ६ँ५६ँइ ॥ ईऽ२३४ती ॥

(दी.३। प.६। मा.४)२(टी।३६)

(२१-३)   ॥ ऐडं सैंधुक्षितम् ॥

अग्निंवः । ओहाइ ॥ वृधाऽ२३न्ताम् । अध्वराणाम्पुरूऽ१ताऽ३माम् ॥

अच्छानप्त्रोऽ२३४हाइ ॥ साहाऽ३हा । स्वाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.१०। मा.६)३(णू।३७)

(२२-१)   ॥ हरसी द्वे । द्वयोरग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

आग्नाओऽ२३४वा ॥ तिग्मेनाऽ३शो । चाइषाओऽ२३४वा ॥ याँसाओऽ२३४वा ॥

वाइश्वानिया । त्राइणाओऽ२३४वा ॥ अग्निर्नोऽ२वँसतेरायीऽ१म् ॥

(दी.३। प.७। मा.८)४(ठै।३८)

(२२-२)

ओहा । ओग्नीः ॥ ताऽ२३४इग्मे । नाशोचाऽ२३४इषा । यँसाऽ२द्वाऽ२३४इश्वाम् ।

नियत्राऽ२३४इणाम् ॥ अग्निर्नोऽ२ ॥ वँसाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ राऽ२३४यीम् ॥

(दी.३। प.९। मा.९)५(ढो।३९)

(२२-३) ॥ इहवद्वामदेव्यम् । वामदेवो, गायत्र्यग्निः ॥

अग्निस्तिग्मेनशोचिषा । इहा ॥ यऽँ्सद्विश्वंन्यत्रिणाऽ२म् । इहा ॥

अग्निर्नोवँ्सताऽ२इ । इहाऽ३ ॥ राऽ२३४योऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.४। प.७। मा.३)६(थि।४०)

(२३-१) ॥ यामम् । यमो, गायत्र्यग्निः ॥

अग्नाइमृडाऽ२ । माहाँ्आऽ२३४सी ॥ अयआदाऽ२इ । वायुआऽ२३४नाम् ॥

इयेथबाऽ२३ ॥ हिराऽ३साऽ५दाऽ६ँ्५६ँ्म् ॥

(दी.२। प.६। मा.६)७(चू।४१)

(२३-२) ॥ उत्तरयामम् । यमो, गायत्र्यग्निः ॥

अग्नेमृडमाहाऽँ्आसि । ओहाऽ३ओहा ॥ आयाआदेवायुआनम् । ओहाऽ३ओहा।

इयेथाऽ२३बा ॥ हिराऽ३साऽ५दाऽ६ँ्५६ँ्म् ॥

(दी.७। प.६। मा.६)८(चू।४२)

(२४-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

अग्नेराऽ३क्षाणोअँ्हसाः ॥ प्रतिस्मदेवारिषाऽ२३ताः ॥ तापाइष्ठाऽ२३इरा ॥

जारोदाऽ२३हाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ । डा ॥

(दी.५। प.६। मा.६)९(पू.।४३)

(२५-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

५ र २ ४र ५ ४र ५ १ र र र२ १र २ १ २
अग्नेयूऽ३ङ्क्ष्वाहियेतावा ॥ अश्वासोदेवासाधाऽ२३वाः ॥ आरंवाऽ२३हा ॥
१र २ १
तियाशाऽ२३वाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.६। मा.३)१०(टि।४४)

(२६-१) ॥ वैश्वमनसम् । विश्वमना, गायत्र्यग्निः ॥

५ र २ ४ ५ १ २ १ २१२ १ २ ३ ५
नित्वा । होऽ३इ । न । क्षिया ॥ वाइश्पाताइ । द्युमन्तम् । धाइ ।माहेवाऽ२३४याम् ॥
४ ५ २र१२र १ ५ ४ ५
सूवोहाइ ॥ रामग्राओऽ२३४वा । हूऽ५तोऽ६ हाइ ॥

(दी.३। प.११। मा.९)११(टो।४५)

(२७-१) ॥ अग्नेः आर्षेयम् । अग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

५ र र ५ १ — १ — १र — १ —
अग्निर्मूर्द्धादीऽ६ वःककूत् ॥ पातीऽ२ःपार्थीऽ२ । वियाअयाम् ॥ आपाऽ२ राइताऽ२ ॥
१ २ १
सिजिन्वाऽ२३ताऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.७। मा.६)१२(ठू।४६)

(२८-१) ॥ सोमसाम । सोमो, गायत्र्यग्निः ॥

५ र २ १ ५ १ — १ — १ २ १ २
इममूषू ॥ त्वामास्माऽ२३४काम् । सानीऽ२ होइ । गायाऽ२हो । त्रन्नव्याऽ२३ साम् ॥
१ — २ — १ २ १ २ १
आग्नेऽ२होइ । दाइवाऽ२हो ॥ षुप्रावोऽ२३चाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१।प.१०।मा.७) १३ (डे.।४७)

(२९-१) || गौपवनम् | गोपवनो, गायत्र्यग्निः ||

तंत्वागोपा || वानोऽ२गाऽ२३४इरा | जानाइष्ठादा | ग्नायाऽ२ङ्गाऽ२३४इराः ||

सपौवाओऽ२३४वा | कौवाओऽ२३४वा || श्रुधीऽ५हवाम् | होऽ५इ || डा ||

(दी.२| प.९| मा.८)१४(झै|४८)

(३०-१) || सौर्यम् | सूर्यवर्च्चा वा, वसुरोचिर्वा, गायत्र्यग्निः ||

पारियौ | होइवाजा || पाताइःकाऽ१वीऽ२ः | आग्निर्हव्या | नायाक्रमीऽ२त् ||

दधाऽ२३त् || राऽ२त्नाऽ२३४औहोवा || निदाशुषेऽ२३४५ ||

(दी.५| प.८| मा.६)१५(बू|४९)

(३१-१) || सौर्यम् | सूर्यो, गायत्री, सूर्यः ||

उदुत्यम् | ओहाइ || जा | तावेऽ२दाऽ२३४साम् | देवंवहा | तीकेताऽ२३४वाः ||

दाऽ२३४र्शेहाइ || वाइश्वायासू | र्याम् | औऽ२३होवा | होऽ५इ || डा ||

(दी.४| प.१२| मा.८)१६(थै|५०)

(३२-१) || कावम् | कविर्वसुरोचिर्गायत्र्यग्निः || (र्वसुरोचि)

कविमग्नीम् || उपाऽ२३ | स्तूऽ२हाऽ२३४औहोवा | सत्याधर्माणामध्वारे ||

देवाम् || अमीवाचाताऽ२३नाऽ३४३म् | ओऽ२३४५इ || डा ||

(दी.७| प.८| मा.५)१७(जु|५१)

(३३-१)　　॥ काशीतम् कापीतं वा सुमन्दं वा । पारावतो (पारावतिर्वा)*गायत्र्यग्निः ॥

५ र र　२ १　२ ‸　५ र　२१र　२ ‸
शन्नोदेवीः । आभिष्टाऽ२३याऽ३४इ ॥ शन्नोभवा ॥ तुपीताऽ२३याऽ३४इ ॥
प　ञ　प　ञ

५ र　२ १　‸　३　५रर　३　५
शंयोरभी ॥ स्त्रावा । तूऽ२ । नाऽ२३४ । औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
प　र　का　दु　प　दु

(दी.७। प.१०। मा.३)१८(ञ्वि।५२)

(३३-२)　　॥ काशीत्तोत्तरम् । पारावतो, गायत्र्यग्निः ॥

३ २ ‸ १　र५रर　४　५　३ २ ‸ १　र ५
हुवाऽ३होऽ२३४इ । शन्नोदेवीः । आभिष्टयाइ ॥ हुवाऽ३होऽ२३४इ ॥ शन्नोभवा ।
ठा　ता　ता　ठा　ता

४ र ५　३ २ ‸ १　र५　४　५　३ २ ‸ १
तुपीतयाइ ॥ हुवाऽ३होऽ२३४इ । शंयोरभि । स्त्रवन्तुनाः । हुवाऽ३होऽ२ ।
ता　ठा　ता　ता　वी

३　५रर　३　५
वाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
टे　दु

(दी.८। प.१२। मा.८)१९(ठ्वै।५३)

(३४-१)　　॥ मनाज्ये द्वे । द्वयोर्गोतमो (गोरांगिरसो वा) गायत्र्यग्निः ॥

१　२　‸　३ २ ३　५　१र　‸　३ २ ३　५
कस्यानूऽ१नाऽ२म् । पारीणाऽ२३४सी ॥ धियोजिन्वाऽ२ । सिसत्पाऽ२३४ताइ ।
घि　दु　का　तौ

१ २र र १　१ ‸ ३　५र र　२　३　५
गोषातायाऽ२३ ॥ स्याऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ उप् । गीऽ२३४राः ॥
घी　वे　च　दु

(दी.५। प.८। मा.५)२०(बु।५४)

(३४-२)　　॥ गौराङ्गिरसस्य साम, गौतमस्य, मनाज्यं मनाज्योत्तरं वा ॥

२र र　‸ १　२ ३ २　र ‸ ४　२र ३ ५　२र र　१
औहोइहुऽ३वाऽ२३इ । हुवाए । कस्यनूनाऽ३०पाऽ३रीणासि ॥ औहोइहुऽ३वाऽ२३इ ।
छौ　चे　वि　छौ

२ ३ २　र　‸ ४　२ ३ ५　२र र　१　२ ३ २　र र र
हुवाए । धियोजिन्वाऽ३सीऽ३सत्पताइ॥ औहोइहुऽ३वाऽ२३इ। हुवाए । गोषाताया ॥
चे　वि　छौ　च

३ २　४ ‸
स्याताऽ३इगाऽ५इराऽ६ँ५६ँः ॥　　(दी.१२। प.१०। मा.१३)२१(ञि।५५)
टो
एकविंशतिः । तृतीयः खण्डः ॥३॥

(३५-१) ॥ उपहवौ द्वौ । द्वयोर्भरद्वाजो, बृहत्यग्निः ॥

यज्ञायज्ञा ॥ वोअग्रयाऽ३इ । गिराऽ२गिराऽ३४ । हाहोऽ३इ । चादक्षाऽ२३४साइ ।
प्रप्राऽ२वयममृतंजा । तावेऽ१दसाऽ२म् ॥ प्रियम्मित्राम् । नाशँ सिषाम् ॥
एहिया । औहौहोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.१२। मा.८)२२(ठै।५६)

(३५-२)

यज्ञायाज्ञा । होऽ३इ । वोऽ३ग्रायाएऽ३४ । हिया ॥ गिरागिरा । चाऽ२दक्षासाइ।
प्रप्रावायाम् । अमृतंजाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम् ॥ प्रियम्मित्राम् । नाशँ सिषाम् ॥
एहिया । औहोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१४। मा.८)२३(घै।५७)

(३५-३) ॥ श्रौष्टीगवम् । इनुष्टीगुर्बृत्यग्निः ॥

याज्ञायाज्ञाऽ२ । वोआग्रायाऽ२इ ॥ गाइरागाइराऽ२ । चादाक्षासाऽ२इ ।
प्रप्रावायाऽ२म् । अमृतंजाऽ३ । तवेऽ२दाऽ२३४साम् ॥ प्रायाम्माइत्राऽ२म् ॥
नाशाँ साऽ२३इषाऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.११। मा.१२)२४(चा।५८)

(३५-४) ॥ यज्ञायज्ञीयम् । (भरद्वाजः) अग्निर्वैश्वानरो, बृहत्यग्निः ॥

याज्ञाऽ५य । ज्ञाऽ३वोऽ३ग्नायाइ ॥ गाइरागिरा । चाऽ३दाक्षाऽ३साइ ।
प्रप्राऽ२वयममृतम् । जाताऽ२३वा । हिम्माइ ॥ दाऽ३साम् ॥ प्रायम्मित्र-
न्नशाऽ२३ँसिषाउ ॥ वाऽ३४५ ॥

(दी.३। प.१०। मा.७)२५(णे।५९)

(३६-१) ॥ कार्त्तयशम् । कृतयशा, बृहत्यग्निः ॥

पाहिनोऽ३आग्नाएकया ॥ पाहियुता । द्वितायाऽ१याऽ२ । पाहिगीर्भिस्तिसृभिः ।
ऊर्जाम्पाऽ१ताऽ२इ । पाहिचातौऽ३ । होऽ३वा ॥ सृभिर्वाऽ२३साऽ३४३उं ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१०। मा.६)२६(नू।६०)

(३६-२) ॥ नार्मेधम् । नृमेधा, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः ॥

पाहिनोअग्नएकयाऽ६ँए ॥ पा । होइ । उ । ता । द्वितायाऽ३या ।
पाहोऽ२इगाऽ२३४इर्भीः । ताइसृभिः ॥ ऊर्जाम्पाता । औहौहोऽ२३४वा ।
पाऽ२३४हिहाइ ॥ चातासृभा । औहौहोऽ२३४वा ॥ वाऽ२३४साउ ।
एहियाऽ६ँहा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.११। प.१७। मा.१२)२७(खा।६१)

(३६-३) ॥ कार्त्तवेशम् । कृतवेशो, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः ॥

पाहिनोअग्नाए । कायाऽ३ । पाऽ२३४ । हियुतद्विती । याया ॥
पाहिगीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम् । पाऽ३ताइ ॥ पाहोइचाऽ३ताऽ३४ । हाओवा ॥
सृभिर्वसो ॥ ऊपाऽ२३४५ ॥

(दी.११। प.११। मा.६)२८(कृ।६२)

(३७-१) ॥ पृश्निवी द्वे । भरद्वाजो, बृहत्यग्निः ॥

बृहाद्भीऽ२३रग्नेअर्चिभिर्हाउ ॥ शुक्राइणादेवशोचिषा । भराद्वाऽ१जेऽ२३ ।
होवाऽ३हाइ । समिधानः । याविष्ठियाऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥ रेवात्पाऽ१वाऽ२३ ।
होवाऽ३हाइ ॥ कादीदिहि । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७।प.१३।मा.८)२९(जै।६३)

(३७-२) ॥ भरद्वाजो, बृहत्यग्निः ॥

बृहद्भिरग्नेअर्चिभीऽ६ँरे ॥ शुक्राइणादेवशोचिषा । भराद्वाऽ१जेऽ२३ ॥ ओऽ३वा ।
समिधानः । याविष्ठियाऽ२३ । ओऽ३वा ॥ रेवात्पाऽ१वा२३ । ओऽ३वा ॥
कादीदिहि । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७।प.१३।मा.४)३०(जी।६४)

(३८-१) ॥ उरोराङ्गिरसस्य साम । उरुर्बृहत्यग्निः ॥

त्वेआऽ२३ग्नेस्वाहुताहाउ ॥ प्रियासस्सन्तुसूरायः । यन्तारोऽ१याऽ२३४इ ।
माघावानोजाना॥ नाऽ३म्॥ ऊर्वान्दयाऽ२३हा॥ तागोनाऽ२म् । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१०।प.१०।मा.७)३१(मे।६५)

(३९-१) ॥ पौरुमद्गे द्वे । द्वयोर्गोतमो, बृहत्यग्निः ॥

अग्नेजारितर्विश्पातिः । औहोवा । एहिया । हाउ ॥ तपानोदेऽ२वरक्षासः ।
अप्रोषाऽ१इवाऽ२न् । गार्हपताऽ३इ । माहा ँआऽ२३४सी ॥ दिवाः ।
पायौवाओऽ२३४वा ॥ हाऽ३हाइ । दुरोऽ५णयूः । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६।प.१४।मा.१२)३२(घा।६६)

(३९-२)

अग्नेजारितार्वि । श्पातीऽ३ः । ताऽ२३४ । पानोदेवरा । क्षासाः ॥तापानोदेवरक्षसो ।
अप्रोषीऽ३वान् । गृहापाताइ । माहा ँआऽ२३४सी ॥ ओऽ४हा॥ हाहाइ ।
दिवस्पायूऽ२३४५ः ॥ ओऽ४हा । हाहाइ । दुरोणयूऽ२३४५ः । ओऽ४हा ।
हाहाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.९।प.१९।मा.११)३३(धा।६७)

(४०-१) ॥ माण्डवे द्वे । जमदग्निः, द्वयोर्मण्डुबृहत्यग्निः (उषा) ॥

अग्नेविवाहाउ ॥ स्वाऽ३दूषाऽ३साः । चाइत्राऽ३ँहाइ । राधोऽ३हाऽ३इ ।
अमाऽ२र्ताऽ२३४या । आदाऽ१शुषेऽ२ । जातवेदः। वाहातूऽ१वाऽ२म् ॥ अद्याहोइ ।
दाऽ२३इवाँ ॥ ऊषः । बूऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ हुवेवासूऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.१३। मा.११)३४(ज ।६८)

(४०-२) ॥ विदावसुनिधनम् । माण्डवम् ॥

अग्नेविवस्वदुषासाः ॥ चित्रँराधोआमाऽ२र्तिय । आदाऽ१शुषेऽ२ । जातवेदः ।
वाहातूऽ१वाऽ२म् ॥ अद्यादाऽ२३इवाँ ॥ ऊषः । बूऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥
विदावासूऽ२३४५ ॥

(दी.९। प.९। मा.७)३५(धे।६९)

(४१-१) ॥ गाधम् । भरद्वाजो, बृहत्यग्निः ॥

त्वन्नाऽ२३श्चित्रऊत्या ॥ वासोराधा । सिचोदाऽ१याऽ२३ । आस्याराऽ२३४याः ।
त्वामग्ने । राथाइरासाऽ३इ ॥ वीदागाऽ२३४धाम् । तुचाऽ२३हाइ ॥ तुना ।
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.१२। मा.७)३६(छे।७०)

॥ इति ग्रामगेयगाने प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥

(४२-१) ॥ उभयत स्तोभम् गौतमम् । गोतमो, बृहत्यग्निः ॥

५र र १ र २र १ अ ३र २
हाउत्वमित्सप्रथाअसिहाउ ॥ आग्नेत्रातः । ऋताःकावाऽ२३४इः । हाहोइ ।

१र २र १ २र १ र २ ३र २ १ २ ३र २
त्वांविप्रासःसमिधा । नादीदिवाऽ३४ः । हाहोइ ॥ आविवासाऽ३४ । हाहोऽ३॥

२ १ ५ ४ ५
तिवोऽ२३४वा । धाऽ५सोऽ६ँहाइ ॥

(दी.११। प.११। मा.१०)१(कौ।७१)

(४२-२) ॥ गौतमम् । गोतमो, बृहत्यग्निः ॥

५ ५ २ १ २ ३ ५ १ र २र १ अ
त्वंत्वाऽ६ँमै ॥ इत्सप्राऽ३थायासाइ । आऽ२३४सी । आग्नेत्रातः । ऋताःकावाऽ२इः ।

३ ५ १र २र १ २र १ र २ ३ ५
काऽ२३४वीः । त्वांविप्रासःसमिधा । नादीदिवो । दाऽ२३४इवाः॥

१ २र १ २ १र २ १
आविवासाऽ२३हा । तिवेधाऽ२३साऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.१३। म.९)२(डो।७२)

(४३-१) ॥ आयुः साम । अग्निर्बृहत्यग्निः ॥

३र ४र ५ र र ४ ५ २ ३ २ २र १ अ २
आनोअग्नेवायोवृधम् । एऽ३४ । रायाऽ३४५इम्। पावाऽ३काशाँसाऽ२३याम् ।

१र २र १ २र र १ अ १ २ २ ३ २ १
रास्वाचनउपामाते । पूरुस्पृहाऽ२म् ॥ सुनाइताइसूऽ३हाइ ॥ यशस्ताराम् ।

४ ५ ४
औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.११। मा.१२)३(ता।७३)

(४४-१) ॥ हरसी द्वे । द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः ॥

योविश्वाऽ३दायातेवासू ॥ होताऽ२मान्द्रोऽ२ । जनानाम् । माधोऽ२र्नापाऽ२ । त्राप्रथमान्यस्मै ॥ प्रास्तोऽ२मायाऽ२३ ॥ तुवोऽ२३४वा । ग्नाऽ५योऽ६ हाइ ॥

(दी.७। प.८। मा.२)४(जा।७४)

(४४-२)

योविश्वादयतेवसुहाउ ॥ होताऽ२मान्द्रोऽ२ । जनानाम् । ओवा । ओवा । माधोऽ२र्नापाऽ२ । त्राप्रथमान्यस्मै । ओवा । ओवा ॥ प्रास्तोऽ२माया२३॥ तुवोऽ२३४वा । ग्नाऽ५योऽ६ हाइ ॥

(दी.८। प.१२। मा.३)५(ठि।७५)

(४४-३) ॥ दैर्घश्रवसे द्वे । द्वयोर्दीर्घश्रवा, बृहत्यग्निः ॥

योविश्वादयतेवस्वोहाओहाऽ६ ए ॥ होताऽ२मन्द्रोजानाऽ२नाम् । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३एऽ३४ ॥ माधोऽ३४र्नापा ॥ त्राप्राथा । मानायास्माइ । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३ए३४। प्रस्तोऽ३४मायाऽ३ ॥ तुवोऽ२३४वा । ग्नाऽ५योऽ६ हाइ ॥

(दी.१३। प.१२। मा.७)६(ठे।७६)

(४४-४)

५र र र ५ १र र र र र र २ २

योविश्वादयतेवसूऽ६ँ ऽए ॥ होतामन्द्रोजनानाम् ॥ माधोऽ१र्नापौ । वाऽ३२ ॥

पा क धि चे

१र र र २ ३ १२र १ २

त्राप्रथमान्यस्मै ॥ प्रास्तोऽ१मायौ । वाऽ३२ ॥ त्वग्नाये । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।

क धि चे चो चु

१

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

कु प

(दी.१२। प.११। मा.३)७ (चि।७७)

॥ द्वाविंशतिः चतुर्थः खण्डः ॥४॥ दशतिः ॥

(४५-१) ॥ आग्नेये द्वे । द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः ॥

५र र र ४ ५ १ र२ र १ २ — १ २र

एनावोअग्निंनामसा ॥ ऊर्जोनपा । तामाऽ१हुवेऽ२ । प्रायंचेतिष्ठमरतिम् ।

पै का धि का

२ १ २ — १ २ — १ २ १ २

सुवाध्वाऽ१राऽ२म् ॥ विश्वास्याऽ१दूऽ२ ॥ तामामृतम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ ॥

छु छु का चु

१

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

कु प

(दी.६। प.१०। मा.५)८(ङ्ग।७८)

(४५-२)

५र र र र १ र२ र १ २ २ १ २र

एनावोअग्निन्नमसाहाउ ॥ ऊर्जोनपा । तामाऽ१हुवेऽ२३। हाउ । प्रायंचेतिष्ठमरतिम् ।

प का धी च का

२ १ २ २ १ २ २ १ २

सुवाध्वाऽ१राऽ२३म् । हाउ ॥ विश्वास्याऽ१दूऽ२३ । हाउ ॥ तामामृतम् ।

छू च छू च का

१ २ १

इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

चु कु प

(दी.७। प.१३। मा.९)९(जो।७९)

(४५-३) ॥ मनाज्ये द्वे । द्वयोर्गोतमो, बृहत्यग्निः ॥

५र ४र ५र ४ ४ ५ ४ २र १र २र १र २र १ २ १ २
एनावोअग्निमेऽ५नामासा ॥ ऊर्जोनपातमाहुवे । प्राऽ२३याम् । चाइतिष्ठम् ।
फे हु कः का

१ २ १ २ — १ २ — १ २
आरातिम् । सुवाध्वाऽ१राऽ२म् ॥ विश्वास्याऽ१दूऽ२ ॥ तामामृतम् ।
का हु हु का

१ २ १
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
वु कु प

(दी.८। प.११। मा.८)१०(टै।८०)

(४५-४)

५र ४र ५र ४ ५ र र ४ ५ १ र २र १ २ १ २
एनावोअग्निन्नामासो । जोनापोवा ॥ तामाहुवे । प्राऽ२३याम् । चाइतिष्ठमा ।
फी पै का कः का

१ २ १ २ १ २ १ २
राऽ२३तीम् । स्वध्वारम् । विश्वस्याऽ२३दू ॥ तामामृतम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
कः र कः का वु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.७। प.१२। मा.७)११(छे।८१)

(४६-१) ॥ दैवराजम् । रेवराङ् (गौतमः) बृहत्यग्निः ॥

४र र र ४ १ २र १ २र १ २ १ २र १ २
शेषेवनाऽ५इषुमातृषू ॥ सांत्वामर्तासः । इन्धाऽ२३ताइ । आतंद्रोहव्यंवाहा ।
ती वि जा घि

१ अ ३ ५ १ २र १ २ १र २
साइ । हावीऽ२ष्काऽ२३४र्त्ताः ॥ आदिद्देवाइ ॥ षुराजाऽ२३साऽ३४३इ ।
क जु कै जु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.८। प.१०। मा.८)१२(गै।८२)

(४७-१) ॥ गाथिनस्साम । कौशिको, गाधिर्बृहत्यग्निः ॥

अदर्शिगातुवित्तमाऽ६ँ ऽए ॥ यास्मिन्व्रातानियादाधुः । ऊपोषुजाऽ३ । हाऽ३हाइ । तामारियस्यवार्द्धनम् ॥ अग्नाइन्नक्षाऽ३ । हाऽ३हा ॥ तुनोगिरः । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.८)१३(कै।८३)

(४८-१) ॥ बार्हदुक्थे । द्वयोर्बृहदुक्थो, बृहत्यग्निः ॥

अग्निरुक्थाइ ॥ पुरोऽ३हाइताः । ग्रावाणोबा । हिराऽ३ध्वाराइ । ऋचायामिमरुतोब्रह्मणास्पाताऽ२इ । दाइवाऽ२आवाऽ२३ः ॥ वारोऽ२३४वा। णाऽ५योऽ६ँ ऽहाइ ॥

(दीं.६। प.८। मा.९)१४(गो।८४)

(४८-२)

अग्निरुक्थाऔहोहोहाइ ॥ पुरौवाओऽ२३४वा । हिताः । ग्रावाणोबा । हिरौवाओऽ२३४वा । ध्वराइ । ऋचौऽ३हो । यामिमरुतोब्रह्मणास्पाताऽ२इ ॥ दाइवाऽ२आवाऽ२३ः । वारोऽ२३४वा । णाऽ५योऽ६ँ ऽहाइ ॥

(दी.७। प.११। मा.११)१५(चा।८५)

(४९-१) ॥ पौरुमीढम् । पुरुमीढो, बृहत्यग्निः ॥

अग्निमी । डिष्वाऽ३४औहोवा ॥ आवासे । गाथाभिःशी । राशोचाऽ२३इषाम् ।

अग्नि ँरायाइ । पुरुमाऽ२३इढा । श्रुतन्नरो । अग्निःसूऽ२३दी ॥

तायाइच्छाऽ२३४५र्दीऽ६ँ५६ँः ॥ दाक्षाऽ३याऽ२३४५ ॥

(दी.९। प. ११। मा.७)१६(ते।८६)

(५०-१) ॥ कार्णश्रवसम् प्रास्कण्वं वा । कर्णश्रवा, बृहत्यग्निः ॥

श्रुधीऽ३ । श्रूऽ२३४ । धिश्रुत्कर्णावा । ह्निभाइः ॥ देवैरग्नेसायावाऽ२३भीः ।

आसीदतुबर्हिषिमित्रोअर्याऽ२३मा ॥ प्रातर्याऽ२३वाऽ३॥ भाऽ२इराऽ२३४औहोवा ॥

एऽ३ । ध्वाराआ ॥

(दी.१०। प.१०। मा.७)१७(मे।८७)

(५१-१) ॥ दैवोदासम् । दिवोदासो, बृहत्यग्निः ॥

प्रदैवोदासोग्नीः ॥ देवइन्द्रोनामज्मना । अनुमाऽ२३ता । रंपृथिवींविवावृताइ॥

तस्यौनाऽ२३का ॥ स्याशर्मणि । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.९। मा.४)१८(घी।८८)

(५२-१) ॥ सौक्रतवम् । सुक्रतुर्बृहत्यग्निः ॥

अधज्माओवा ॥ धवादाऽ१इवाऽ२ः । बृहतोरोचानाऽ१दधीऽ२ । आ । यौ ।

हौहोऽ३वा । वार्द्धस्वातन्वा । गाइराऽ१ममाऽ२ । आजातासौ । हौहोऽ३वाऽ३४ ॥

हा । हाउवाऽ३ ॥ क्रतोपृणाऽ२३४५ ॥ (दी.९। प.१३। मा.५)१९(दु।८९)

(५३-१) ॥ काण्वे द्वे । द्वयोः कण्वो, बृहत्यग्निः ॥

कायमानोऽ५वनातुवाम् ॥ यन्मातृरा । जागन्नाऽ२३४पाः । नतत्तेअग्नेऽ३ ।

प्रमृषेऽ३हाऽ३इ । निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम् ॥ यदूराऽ२३इसान् ॥ इहाभुवा ।

औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.८। प.११। मा.८)२०(टै। ९०)

(५३-२)

एकाया ॥ मानो । वानातूऽ२३४वाम् । ओइ । तूऽ२३४वाम् । उहुवाहाइ ।

औऽ३होऽ३१इ । यन्मातृरा । जागन्नाऽ२३४पाः । आऽ२३४पाः । उहुवाहाइ ।

औऽ३होऽ३१इ ॥ नातत्ताआ । ग्राऽ३प्रमृषाऽ३इ । निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम् ।

ताऽ२३४नाम् । उहुवाहाइ । औऽ३होऽ३१इ ॥ यदूरेसान् । इहाभूऽ२३४वाः ।

भूऽ२३४वाः । उहुवाहाइ । औऽ३हो३१२ । याऽ२३४औहोवा । ऊऽ२३४पा ॥

(दी.७। पा.१५। मा.२१)२१(ज्वा।९१)

(५४-१) ॥मानवाद्ये द्वे । द्वयोर्मनुबृहत्यग्निः ॥

५ र २ ३ ५ १ २र १अ — र १
नित्वामग्नाइ ॥ मानुर्द्धाऽ२३४धाइ । ज्योतिर्जना । याशाश्वाताऽ२इ । दी । दाइ ।
प शे का घि च क
१ २ १ अ २ १ ३ ५ १ २ १
थाका । ण्वात्रृताजाऽ३ । तऊऽ२क्षाऽ२३४इताः ॥ यन्नमस्याऽ२३ ।
का घी घू घी
१ ३ ५रर ३ ५
ताऽ२इकृऽ२३४औहोवा । ष्टाऽ२३४याः ॥
वे दू

(दी.५। प.१२। मा.११)२२(फा।९२)

(५४-२)

४ र५र ४५ र ४ १र र र २ २
होवाइ । नित्वामग्नेमानुर्दधे । होवाइ ॥ ज्योतिर्जनायशश्वते । दाइदेऽ१थाका ।
त तु त क घि
१ अ र अ ३ ५ २ १ २
ण्वात्रृताजाऽ३१ । ताऊऽ२क्षाऽ२३४इताः । यन्नामाऽ२३स्याऽ३ ॥
गौ ञु जि
१ ३ ५रर ३ ५
ताऽ२इकृऽ२३४औहोवा । ष्टाऽ२३४याः ॥
वे दू

(दी.८। प.१०। मा.१०)२३(णौ।९३)

॥ षोडशपञ्चमः खण्डः ॥ ५॥ दशतिः ॥

(५५-१) ॥ द्रविणम् । अग्निर्बृहत्यग्निः ॥

५र४ २ ४ ५र २र १र २ र१२ १२ —
देवोऽ३वोऽ३द्रविणोदाः ॥ पूर्णांवीवष्ट्वासिचम् । ऊद्वाऽ१सिञ्चाऽ२ ।
पौ छु घि
१ २र १ अ — १ र २र १ २
ध्वामुपवापृणध्वम् ॥ आदिद्वोदेऽ२ ॥ वओहते । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
चो घि का बु
१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.८। प.९। मा.५)२४(द्रु।९४)

(५६-१) ॥ बार्हस्पत्यम् । बृहस्पतिर्बृहत्यग्निः (ब्रह्मणस्पतिर्वा) ॥

५र २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ १ ३ ५
प्रैतूऽ३ब्रह्माणस्पातीः ॥ प्रादाइवियै । तुसूनृताऽ३ । अच्छाऽ२वाऽ२३४इराम् ।
पः चो चौ वू

१ २ १ २ १र ३ ५ १ ३
नरियम्पा । ङ्क्तिराधाऽ१साऽ२३म् ॥ देवाऽ२याऽ२३४ज्ञाम् ॥ नाऽ२याऽ२३४-
का घू वे

५र र ३ ५
औहोवा ॥ तूऽ२३४नाः ॥
वे दू

(दी.४। प.९। मा.८)२५(धै।९५)

(५७-१) ॥ वीङ्कम् । वसिष्ठो बृहत्यग्निः (यूपो वा) ॥

२र र १ ५ १ र र र र र २
ऊर्ध्वऊषुणाऽ३ऊताऽ२३४याइ ॥ तिष्ठादेवोनसविता । ऊर्ध्वोवाऽ२३जा ।
ज क कः

१ २र १अ — र १ — १ — १र २
स्यासानिता । यादांजिमीऽ२ः ॥ वाघाद्गीऽ२ः ॥ वीवीऽ२ ॥ ह्वायामाऽ२३हाऽ३४३इ ।
का घि चो का जु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.१०। प.१०।मा.७)२६(मे।९६)

(५८-१) ॥ विष्पर्धसस्साम । विष्पर्धा बृहत्यग्निः ॥

४ र र र४ १ र २१र र र २ १ २
प्रयोरायाऽ५इनिनीषताइ ॥ मर्तोयस्तेवासोदाशत् । सवीराऽ२३न्धा । ताआग्राउ ।
ती कै कः का

१ र २ १र २
क्थश ँ्सिनम् ॥ त्मनासाऽ२३हा ॥ स्त्रापोषाऽ२३इणाऽ३४३म् ।
र कः जु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.९ । प.९। मा.९)२७(धो।९७)

(५९-१) ॥ ऐतवाध्यम् । ऐतवद्धिर्बृहत्यग्निः ॥

प्रावाः ॥ यहंपुरुऽ२३णाम् । विशांदेवायाताऽ२३इनाम् । अग्निँ्सूक्तेभिर्वचोभि-
वृणीमाऽ२३हाइ ॥ याँ्साऽ२माइदाऽ२न् ॥ यइंधते । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.९। मा.९)२८(झो।९८)

(६०-१) ॥ दोहः साम । दोहो, बृहत्यग्निः ॥

अयमग्निःसुवीर्यस्यहाउ ॥ आइशेहिसौभागस्य । होवाऽ३हाइ । रायईशेस्वपात्या ।
स्यागोऽ१माताऽ२३ः । होवाऽ३हाइ ॥ ईशेहाऽ२३इवृऽ३ । होवाऽ३हा ॥
त्राहाथानाम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१० । प.१२ । मा.९)२९(फो ।९९)

(६१-१) ॥ समन्तानित्रीणि । अग्निर्वसिष्ठो वा बृहत्यग्निः ॥

त्वामग्नेगृहापाताइः ॥ त्वँ्होतानोअध्वराइ । त्वंपोऽ२३ता । वाइश्ववा । रप्राचाइताः ।
औहोऽ३४वाहाइ ॥ य । क्षाइयाऽ२३सीऽ३ । होवाऽ३हाइ ॥ चावाराऽ२३-
याऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.१२। मा.१२)३०(ठा।१००)

(६१-२) ॥ समन्ते द्वे । द्वयोर्वरुणो, बृहत्यग्निः ॥

४ ५ र ४ ४ २ ३ ५ २ ३ ५ १ ३
त्वामग्नेगृ । हाऽ५पतीः ॥ त्वँ्होऽ२३४ता । नोअध्वाऽ२३४राइ । त्वाऽ२म्पो-
ता ती शे शे
५ २ ३ ५ २र १ २ १ ३ ५रर
ऽ२३४ता । विश्वावाऽ२३४रा । प्रचेताऽ३ः ॥ यक्षायेऽ३ ॥ याऽ२साऽ२३४औहोवा ॥
वू से घा कि वे
२ १र ३ । । ।
चावारियाऽ२३४५म् ॥ (दी.५। प.१०। मा.६)३१(मू।१०१)
शि

(६१-३)

५ २ ४र५ ४ ५ १ रर र १ २र १ र २ ३र २
त्वामाऽ३ग्नेगृहापतीः ॥ त्वँ्होतानोअध्वारे । त्वाऽ२३म्पोता । औहोऽ३४इ ।
पः धि कः दु
४र ५र ३र २ १ २र १ २र ३र २ ४र ५र ३र २
औहो । वाहाइ । वाइश्वावा । रप्राचाइताः । औहोऽ३४इ । औहो । वाहाइ ॥
ता व का चो दु ता व
१ २ ३र २ ४र ५र ३र २ १र २
यक्षाइयासा । औहोऽ३४इ । औहो । वाहाइ ॥ चावाराऽ२३याऽ३४३म् ।
का दु ता व पु
१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.२१। प.१८। मा.१४)३२(गी।१०२)
कु प

(६२-१) ॥ वाभ्रम् । वाभ्रो वैखानस आङ्गिग दानवो वा बृहत्यग्निः ॥

५ र र र ४ ५ २ ३ ५ २र१ २ २ १ ३
सखायस्त्वाऔहोहोहाइ ॥ ववृ । माऽ२३४हाइ । देवंमर्ताऽ३हाऽ३ । सऊऽ२ता-
पी च दू जि
५ २१र २ ४ ५ ३ २ २ १ २ ३ ५
ऽ२३४याइ । आपान्नापाऽ३ । तँ्सु । भागौ । वाऽ३हाऽ३इ । सूदँ्साऽ२३४साम् ॥
वू चौ ता व शी वू
२ १ २ १र २ १
सुप्रातूऽ२३तीम् ॥ आनेहाऽ२३साऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
जा णु कु प

(दी.६। प.१४। मा.१०)३३(घौ।१०३)

॥ दश षष्ठः खण्डः ॥६॥ दशतिः ॥

(६३-१) ॥ आजुष्यवाश्वम् ॥ ॥ त्रिष्टुप् श्यावाश्वम् । श्यावाश्वत्रिष्टबग्निः ॥

आजुहोता ॥ हविषामर्जयाऽ२ध्वाउवाऽ२ । निहोतारंगृहपतिन्दधाऽ२इध्वाउवाऽ२३४ ॥ इडाऽ३४स्पादाइ ॥ नमसारातताहाव्याऽ२म् । सापर्याता । याजतंपाऽ२३ । स्तियोवा । आऽ५नोऽ६ ँ ्हाइ ॥

(दी.७। प.९। मा.६)३४(झू।१०४)

(६४-१) ॥ ऋतुषामणी द्वे । द्वयोर्ऋतुर्जगत्यग्निः ॥

ओइ । चित्रइच्छाइशोऽ१स्तरुणाऽ२३ । स्याऽ३वक्षाथाः ॥ ओइ । नयोमाताराऽ१वनुवाऽ२३इ । तीऽ३धातावे ॥ ओइ । अनूधायादाजीजनाऽ२३त् । आऽ३धाचिदा ॥ ओइ । ववक्षत्साद्योऽ१महिदूऽ२३ । तियाऽ३०चाऽ५राऽ६ ँ ्५ऽ६ ँ ्न् ॥ दूत्यंचरन्माहेऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प. १३। मा.१०)३५(बौ।१०५)

(६४-२)

चित्राऽ६ ँ ्ए ॥ एऽ३१२३४ । शिशोस्तारुणस्यवक्षाथाः । क्षाथाः । हिहियाऽ६ ँ ्हाउ । एऽ३१२३४ ॥ नयोमातारावन्वेतिधातावे । तावे । हिहियाऽ६ ँ ्हाउ एऽ३१२३४ । आनूधायदजीजनदधाचिदा । चिदा । हिहियाऽ६ ँ ्हाउ ॥ एऽ३१२३४ । वावक्षत्सद्योमहिदूतियंचारन् । चारन् । हिहियाऽ६ ँ ्हाउ । वा ॥ एऽ३ । ऋतून् ॥

(दी.१६। पं.२०। मा.१०)३६(डौ।१०६)

(६५-१) ॥ यामं (कौत्सं वा) यमस्त्रिष्टुबग्निः (विश्वेदेवाः वा) ॥

३ ५ ३ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १र र
ओऽ४हा । हाहाइ । इदंतए । काऽ३०पारः । ऊताएकाम् ॥ तृतीयेना ।
टा य र रा ची र

१र २ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ र २ ३ ४ ५ ३ ५
ज्योतिषाऽ३ । संविशस्वा ॥ संवेशनाः । तानुवे । चारुरेधी । ओऽ४हा ।
कि ची र र ची टा

३ २ १र र २ १ २ २ ४
हाहाइ । प्रियोदेवा । नाऽ३०पार । माऽ३४३इ । जाऽ३नाऽ५इत्राऽ६ँ५६ँइ ॥
य र रा चै चू

(दी.७। प.१७।मा.१०)३७(छौ।१०७)

(६६-१) ॥ कौत्सम् । कुत्सो जगत्यग्निः, यज्ञसारथिः (अग्निः) ॥

३ २ ३ ५ २ ३ ५ १ २र १ २ १ ३ २ ३ ५
इमँस्तोऽ२३४माम् । अर्हतेऽ२३४जा । तावेदासेऽ३ । होइ ॥ राथामीऽ२३४वा ।
ठौ शै घी क ठौ

२ ३ ५ १ २र १ २ १ ३ २ ३ ५ २ ३ ५
संमाहेऽ२३४मा । मानीषायाऽ३ । होइ ॥ भद्राहीऽ२३४नाः । प्रमातीऽ२३४रा ।
शै घी क ठौ शै

१ २ १ २ १ ३ २ ३ ५ २ ३ ५ १ २ १ २
स्यासँसादेऽ३ । होइ ॥ अग्नाइसाऽ२३४ख्याइ । माराइषाऽ२३४मा । वायंतावाऽ३ ।
घी क ठौ शै घी

२
होऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी.२। प.१७। मा.९)३८(छो।१०८)

(६७-१) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य सामनी द्वे । द्वयोरग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः ॥

५र ४ ५ २ ३ ५ १ २ २ र १र
मूर्द्धोहाइ ॥ नंदाऽ२३४इवाः । अरताइम् । पृथीऽ३व्याः । वैश्वानराम् ।
पै शै क कः रो

२ १ र २ ३ ४ ५ २ १ र अ २ र १
ऋताआ । जातामग्नीम् ॥ कावँसम्राजमतिथाइम् । जानाऽ२३नाम् ॥ आसन्नःपा ।
र ची र ञः र

२ १ २ २ ४
त्राऽ३०जाना । याऽ३४३ । ताऽ३दाऽ५इवाऽ६ँ५६ँः ॥
रा चै चू

(दी.६। प.१३। मा.१४)३९(गी।१०९)

(६७-२)

होवाइ । मूर्द्धोहाइ ॥ नंदाइ । वाऽ३आरा । तिंपृथिव्याः । इहोइहाऽ३ ।

ईऽ३या । वैश्वानराम् । ऋताआ । जातामग्नीम् । इहोइहाऽ३ । ईऽ३या ॥

काँ॒विसम्रा । जाऽ३माति । थिंजानानाम् । इहोइहाऽ३ । ईऽ३या ॥ आसन्नःपा ।

त्राऽ३०जाना । यंतादेवाः । इहोइहाऽ३ । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥

ईऽ२३४५ ॥ (दी.१३। प.२५। मा.१४)४०(र्णी।११०)

॥ इति ग्रामगेयगाने द्वितीयस्यार्धः प्रपाठकः ॥२॥

(६८-१) ॥ आश्वे द्वे । द्वयोरश्वस्त्रिष्टुबग्निः ॥

वित्वत् । ओहाइ ॥ आपोनपर्वतास्यापाऽ२३ष्ठात् । उक्थेभिरग्नेजनयंतादाऽ२३इवाः ॥

तंत्वागिरःसुष्टुतयोवाजायाऽ२३०ती ॥ आजिन्नगाइर्वावाऽ२३हाऽ३ः । जायेऽ३ ।

ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ अश्वाऽ२३४५ः ॥

(दी.१०। प.९। मा.९)१(भो।१११)

(६८-२)

५ ३ २ ३ ४ ५ ४ ५ १र २ १ २ ३ ४ ५
हा । यायाइदिवोहाइ । वित्वत् । आपो । नापर्वा । तस्यपृष्ठात् ॥ हा ।
प दू त क र ची प
३ २ ३ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ २ ३ ४ ५
यायाइदिवोहाइ । उक्थाइ । मिरा । ग्नेऽ३जाना । यंतादेवाः ॥ हा । यायाइदिवोहाइ ।
दू ता क रा ची प दू
४ ५ १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ २ ३ ४ ५ ४ ५
तंत्वा । गिराः । सुष्टुतायः । वाजायंती ॥ हा । यायाइदिवोहाइ । आजीम् ।
ता क र ची प दू ता
१ अ २ १ २ १ ३ ५र र २ १ ।।।
नगाइर्वावाऽ२३हाऽ३ः । जायेऽ३ । ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ अश्वाऽ२३४५ः ॥
घो कि वे छ

(दी.३।प.२५। मा.१९)२(णो।११२)

(६९-१) ॥ वामदेव्यं, रौद्रं वा । रुद्रस्त्रिष्टुबग्निः, (रुद्रः) ॥

४र ५र र ४ ३ २ २ ३ ४ ५ १ २र १ २
आवोराजा ॥ नामध्वाऽ३ । रस्यरुद्राम् । हो । ता । राम् । स । त्ययजाऽ३म् ।
ती टी ची क च क च चा
२ ३ ४ ५ २ १ २ २ ३ ४ ५ १ २ १
रोदासीयोः ॥ अग्निंपु । रा । तनाऽ३इ । त्नोराचित्तात् ॥ हिराण्य । रू ॥
ची रा क चा ची का क
२ १ २ २ ४
पाऽ३मावा । साऽ३४३इ । काऽ३र्णूऽ५ध्वाऽ६ँ५६ँम् ॥
रा चै चू

(दी.४। प.१८। मा.७)३(दे।११३)

(७०-१) वैश्वज्योतिषे द्वे । द्वयोर्विश्वज्योतिस्त्रिष्टुबग्निः, (उषा वा) ॥

३ २ ५र र र ४र ५र ४ ५ ४र ५ ४ ५ ४ ४ ५
इन्धाऽ३१२३४इ । हाउहाउहाउ । राजासामर्योन । मोमीरोमीः । ओमीः ॥
ठा प ते तु ता
३ २ ५र र र ४ ५र ४र ५ ४ ५ ४ ५ ४ ५
यस्याऽ३१२३४ । हाउहाउहाउ । प्रातीकामाहुतंघृ । ताइनाआइना । आइना ॥
ठा प तु तु ता
३ २ ५र र र ४र ५ र र ४ ५ ४ ५ ४ ५
नाराऽ३१२३४ः । हाउहाउहाउ । हव्येभिरीडतेसा । बाधाबाधाः । बाधाः ॥
ठा प पै तु ता
३र २ ५र र र २ १ २ ।।।
आग्राऽ३१२३४इ । हाउहाउहाउ । अग्रमुषसाऽ२३मशाउ । वाऽ३ ॥ चीऽ२३४५ ॥
ठा प जा चा दू

(दी.२१। प.२०। मा.२४)४(ळी।११४)

(७०-२)

हौहोऽ२ । हौहोऽ२ । हौहोइ । इंधेराजासमर्योनाऽ३मोभीऽ२ः । ओभीऽ२ः।
ओभीऽ२ः ॥ यस्यप्रतीकमाहुतंघृऽ३ताइनाऽ२ । आइनाऽ२ । आइनाऽ२ ॥
नरोहव्येभिरीडतेसाऽ३बाधाऽ२ः । बाधाऽ२ः । बाधाऽ२ः । हौहोऽ२ । हौहोऽ२ ।
हौहोइ । आग्निरग्रमुषसाऽ२३मशाउ । वाऽ३ ॥ चीऽ२३४५ ॥

(दी:१३। प.१८। मा.१२)५(ङा।११५)

(७१-१) ॥ यामे द्वे । द्वयोर्यमस्त्रिष्टुबग्निः ॥

प्रकेतुना । बृहाताया । तियग्नाइः । होइहोवाऽ३होइ ॥ आरोदसाइ । वृषाभोरो ।
रावीताइ । होइहोवाऽ३होइ ॥ दिवश्चिदा । तादुपमाम् । उदानाट् ।
होइहोवाऽ३होइ ॥ अपामुपा । स्थेमहिषो । वावर्द्धा । होइहोवाहाऽ३१उ ।
वाऽ२३ ॥ देऽ३ । दिवाऽ२३४५म् ॥ (दी.११। प.१९। मा.१५)६(घु।११६)

(७१-२)

हा । हाऔहोइ । प्राऽ२३४के । तुना । बृहताऽ३ । यातियग्नीः ॥ हा ।
हाऔहोइ । आऽ२३४रो । दसाइ । वृषाभोऽ३ । रोरावीती । हा । हाऔहोइ।
दीऽ२३४वाः । चिदा । ताऽ३दुप । मामुदानट् ॥ हा । हाऔहोइ । आऽ२३४पाम् ।
उपा । स्थेऽ३माहि । षोवावर्द्धा । हा । हाऔहो । वाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ ।
दिवाऽ२३४५म् ॥ (दी.७। प.२९। मा.१६)७(झ्रू।११७)

(७२-१) ॥ मराये द्वे । द्वयोराशिमरायो विराडग्निः ॥

५र र र ४ ५ २ १ २ १ २ १ २ १ २ ३ ४ ५र
हाउहाउहाउ । आग्नीम् । नाराः । नाराः । नाराः । दीऽ३धीति । भिरारण्योः॥
प ता र र र रा ची

र र र ४ ५ २ १ २ १ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । हास्ता । च्युताम् । च्युताम् । च्युताम् । जानाय । तप्राशस्तम्॥
प ता र र र र ची

र र र ४ ५ २ १ २ १ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । दूराइ । दृशाम् । दृशाम् । दृशाम् । गृहाप । तिमथव्युम् ।
प ता र र र र ची

२ ३ । । ।
हाउहाउहाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
प चा दू

(दी.१०। प.२४। मा.२६)८(भ्रू।११८)

(७२-२)

५र र र ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५र र र
हाउहाउहाउ । आग्नीम् । नाराः । दीऽ३धीति । भिरारण्यो । ण्यो । ण्योः ॥
प ता र रा ची प प

र र र ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । हास्ता । च्युताम् । जानाय । तप्राशस्तम् । स्तम् । स्तम् ।
प ता र र ची प प

र र र ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । दूराइ । दृशाम् । गृहापा । तिमाथव्युम् । व्युम् । व्युम् ।
प ता र र ची प प

३ । । ।
हाउहाउहाउ । वा ॥ ईऽ२३४५ ॥
प प दू

(दी.१२। प.२४। मा.२४)९(झ्री।११९)

॥ षोडश सप्तमः । सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः ॥

(७३-१) ॥ श्येनः प्रजापतिर्वा, दीर्घायुष्यं वा । प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्निः, उषा वा ॥

४ ५र ४ १ २ १२र १विर र १ २ २ र १र र २
आबोधीया ॥ ग्नाइःसामिधाजानाऽ२नाम् । प्रताइधेऽ३नूम् ॥ इवायतीमुषासम्।
ती डे कः चो
१ २ २ १विर १र २ १ २र र १र २ र१र २ १ २
यह्वाईऽ३वा । प्रावाऽ२यामुज्जिहानाः ॥ प्रभानाऽ२३वाः ॥ सस्नतेनाकामाच्छा।
कः डे कः छु
१ २ १
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
बु कु प

(दी.१४। प.११। मा.९)१०(तो।१२०)

(७४-१) ॥ वासुक्रं (शुक्रं वा) वसुक्रस्त्रिष्टुबग्निः ॥

४ ५र ४ ५ ४ ३ २ २ ३र ५र २र १र र अ २
प्राभूर्जायंताम् ॥ माहाऽ३४३०विपोधाम् । मूरैरमूरंपुरान्दार्माऽ२३णाम् ॥
ते डा जै
३ २ २ ३र ५ ३ २ २ ३ ५र ४ ५ ४ ५ ५
नायाऽ३४३न्तगीर्भिः । वानाऽ३४३धियंधाः ॥ हारिश्मश्रुन्नवर्मणाऽ६ँ। हाउवा॥
डा डा तू प
२ २ । । ।
धनाऽ३र्चीऽ२३४५म् ॥ (दी.८। प.८। मा.७)११(डे।१२१)
ज

(७५-१) ॥ पौषम् । पूषा त्रिष्टुप्पूषा ॥

५ ४ ५र ४ ५ ४ ५ ५ १ र र र अ २
शुक्रन्तेअन्यद्यजताम् । तआऽ६ँन्यात् ॥ विषुरूपेअहनीद्यौः । इवाऽ२३सी ॥
फु पा क झः
१ र र र २ २ १र २र १ २ १ २ ३ ४ ५
वाइश्वाहिमायाअवसाइ । स्वाधाऽ३वान् ॥ भद्राते । पू । षाऽ३निह । रातिरस्तू ।
क कः चो क रा ची
४
तिराऽ५स्तुहाउवा ॥ (दी.९।११।मा.११)१२(त।१२२)
ता

(७६।१) ॥ कौत्सम् । कुत्सस्त्रिष्टुबग्निः ॥

५ र २ २ ३ ४ ५ ४ ३ ४ ५र र ३ ५
इडामग्नाइ ॥ पुरुदाऽ३ । सँसानिंगोः । शश्वत्तमँहवमाना । यसाऽ२३४धा ।
प चा ची थ दू
१र र २ २ ४ ५ ४ ५ ३ २ २
स्यान्नःसूनुस्तनयः । विजाऽ३वाऽ३ ॥ आग्नेसाताइ ॥ सुमाऽ३४३ ॥ तीऽ३ः ।
क वि तु ठः चा
४र ५ ३ । । ।
भूतुहाउवा ॥ स्माऽ२३४५इ ॥ (दी.६।प.१२।मा.७)१३(खे।१२३)
ता दू

(७७-१) ॥ काश्यपे द्वे । द्वयोः कश्यपस्त्रिष्टबग्निः ॥

४ र ५र र ४ २ १र र र २ १र २
प्रहोताजाताः ॥ माहान्नभोविन्नृषद्माऽ२३सीदात् । आपांविवर्ताइ ॥ दधद्योऽ२३धा ।
ती जा र कः

२ र १र ३ २ १ र २ १ ३ ५र र
याइ । सुतेवयाँ्सियन्ताउ । वा ॥ वासूनिविधि । ताऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥
च जं च का का टे

२ १ ।।।
तनूऽ३पाऽ२३४५ः ॥ (दी.१२। प.११। मा.७)१४(चे।१२४)
ज

(७७-२)

४ र ५र र ४ ५ ४ ५ १ — १ — १ र र अ २
प्रहोताजाताः । उहुवाहाइ ॥ माहाऽ२न्नामोऽ२ । वाइन्नृषद्मासीददपांविवाऽ२३र्ताइ ।
ती पे धि थै

१ २ २ १ २ १ — १ — १ र र र २
आऔऽ३हो । इहा । दाधाऽ२द्योधाऽ२ । याइसुतेवयाँ्सियंतावसूऽ२३नी ।
कः का धि थै

१ २ २ १ २ १२ १ ३ ५र र २ १ ३ ।।।
आऔऽ३हो । इहा ॥ विधातायेऽ३ ॥ तनूऽ२पाऽ२३४औहोवा ॥ हाविष्मातेऽ२३४५ ॥
कः का चौ वे शि

(दी.१०। प.१३। मा.८)१५(बै।१२५)

(७८-१) ॥ घृताचेराङ्गिरसस्य साम । घृताचिस्त्रिष्टुबग्निः, इन्द्रो वा ॥

५ र २ २ ४ ५ २ १ २ १
प्रसम्राजाम् ॥ असुराऽ३ । स्याप्राशस्ताम् । पुँ्सकृष्टाइ । नाऽ३मानु ।
प घा ची र रा

२ ३ ४ ५ २ र २ ३ २ ३ ४ ५ २ १ र २र १ २र र
मादियस्या । इन्द्रस्येवाऽ३४३प्रतावा । सस्कृतानी ॥ वंदद्वारावंदमाना ॥
ची वा ची छु

१ ३ ५र र ३ ५
विवाऽ२ष्टूऽ२३४औहोवा ॥ वीऽ२३४शाः ॥
वे दृ

(दी.८। प.११। मा.५)१६(द्रु।१२६)

(७९-१) ॥ प्रासाहम् । भरद्वाजस्त्रिष्टुबग्निः ॥

अरण्योः ॥ निहितोजाऽ३४३तावेदाः । गर्भाइवेत्सुभृतोगा । भिंणाऽ२३४इमीः॥
दिवेदिवईड्योजागृवाऽ२३ह्वीः ॥ हाऽ२३४वी । ष्माऽ२३४ह्वीः ।
मनुष्येऽ५भिरग्निः । एहियाऽ६ हा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१०। प.११। मा.१०)१७(पौ।१२७)

(८०-१) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्यात्रेर्वा, राक्षोघ्नम् । अग्निस्त्रिष्टुबग्निः ॥

आहा । वोऽ३हा । वोऽ३हा । सानादग्नाइ । मृणासि । यातुधानान् ॥ नत्वारक्षा ।
सीऽ३पृता । नासुजिग्यूः ॥ आनुदहा । साहामू । रान्कायादाः ॥ आहा । वोऽ३हा ।
वोऽ३हा । माताइहेत्याः । मुक्षत । दाऽ३४३इ । वीऽ३याऽ५याऽ६ ५६ः ॥

(दी.५। प.१९। मा.८)१८(भै।१२८)

नव । अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः ॥

(८१-१) ॥ पाथे द्वे । द्वयोः पथोऽनुष्टुबग्निः ॥

आग्नाओऽ२३४वा ॥ ओजिष्ठाऽ३मा । भाराओऽ२३४वा । द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगोऽ३ ॥
ओइ । प्रानाओऽ२३४वा ॥ रायेपानीऽ२यासेऽ३ । ओइ । रात्साओऽ२३४वा ॥
वाजायपन्थाऽ२३४५म् ॥

(दी.६। प.१०। मा.७)१९(डे। १२९)

(८१-२)

अग्रेहाउ ॥ ओजि । ष्ठामाऽ१भारा । औहोऽ२३४वा । द्युम्नमस्मा । भ्यामाध्रीगा ।
औहोऽ२३४वा ॥ प्रनोराये । पानीऽ१यासा । औहोऽ२३४वा । रात्सीऽ२वाजाऽ२ ॥
यापोवाऽ३ओऽ२३४वा ॥ थाऽ५मोऽ६ँहाइ ॥

(दी.७। प.१३। मा.३)२०(जि। १३०)

(८२-१) ॥ बृहदाग्नेयम् । अग्निरनुष्टुबग्निः ॥

यादिवीरोआनुष्यात् । ऐयाऽ३४३ईऽ३४या ॥ अग्निमिन्धीतमौ । होऽ३हाऽ३ ।
होऽ२३४र्तियाः । आजूऽ२ह्वाब्द्धाऽ२३ । व्यमाऽ२नूऽ२३४षाक् ॥ शर्माभा ।
क्षाइ । तादाऽ३हाऽ३इ ॥ वाऽ३ओऽ२३४वा ॥ व्याऽ२३४५म् ।

(दी.६। प.१२। मा.९)२१(खो। १३१)

(८३-१) ॥ यामम् । यमोऽनुष्टुबग्निः ॥

त्वेषास्तेऽ२३धूमऋण्वतिहाउ ॥ दिविसंछुक्राऽ३आताताऽ३ः । सूरोनहीहाउ ॥
द्युतातूवाऽ३म् । कृपापवाहाउ ॥ कारोचाऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.८। मा.९)२२(गो। १३२)

(८४-१) ॥ बृहदाग्नेयम् । अग्निरनुष्टुबग्निः ॥

त्व ँ्हिक्षैतवद्याशाः । ईयइयाहाइ ॥ अग्नाइमि । त्रो । नापत्याऽ२३४साइ ।
आऔऽ३४हो । इयाहाइ । त्वंवि । चा । षाणेऽ२श्राऽ२३४वाः । आऔऽ३४हो ।
इयाहाइ ॥ वासाऽ३उवा ॥ पु । ष्टाइम् । नापुष्याऽ२३४सी । आऔऽ३४हो ।
इयाहा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.१। प.२०। मा.१५)२३(ङु। १३३)

(८५-१) ॥ बृहतश्च कौमुदस्य साम । कुमुद् बृहदनुष्टुबग्निः ॥

प्रातरग्राइःपूऽ ँ्रुप्रियाः ॥ विशास्तावे । ताऽ२३ । आतिथाइः । वाइश्वेयास्मीऽ३न् ।
अमाऽ२र्त्ताऽ२३४याइ ॥ हव्याऽ२३ ँ्होइ । मर्त्ताऽ२३हो ॥ साइंधाऽ२३ताऽ३४३इ ॥
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११। मा.११)२४(टा१३४)

(८६-१) ॥ यद्वाहिष्ठीये द्वे । द्वयोरग्निरनुष्टुबग्निः ॥

यद्वाहिष्ठन्तादा ॥ ग्रयाइ । बृहदर्चविभावाऽ२३साउ । माहीऽ२षाइवाऽ२ ।
त्वद्रयिः ॥ त्वद्वाऽ२३जाः ॥ उदीराऽ२३ताऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
(दी.३। प.९। मा.७)२५(ढे।१३५)

(८६-२) ॥ यद्वाहिष्ठीयोत्तरम् ॥

यद्वाहिष्ठंतादग्नाये । यद्वाहिष्ठोवा ॥ तादग्रयाइ । बृहदाऽ२३र्चा । विभावसाउ।
महिषाऽ२३इवा । त्वद्रयिः ॥ त्वद्वाऽ२३जाः ॥ उदीराऽ२३ताऽ३४३इ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.११। मा.७)२६(पे। १३६)

(८७-१) ॥ विशोविशीयं ऐडं वा । अग्निरनुष्टुबग्निः ॥

५ २ २ २ ५ १र २ १ २ २

विशोविशोहिम्वोऽ६ ॅअतिथाइम् ॥ वाजयन्ताः । पूऽ३रूप्रीऽ३याम् ।

पा क छं

१ विर १ २ १ २ २ १ २ ५ १

अग्निंवोऽ२ । दूराऽ२३याम् । हिंमाइ । वाऽ३चाऽ३ः । स्तूऽ२३४षेहाइ ॥ ओ ।

चो कः क शि कु क

३ २ ३ ५ १ २ २ १ ५र ५

हुवाइ । शूऽ२३४षा ॥ हिंमाइ । स्याऽ३माऽ३ । न्माऽ२३४भाइ । एहियाऽ६ॅहा ।

य दू क शी की पा

४

होऽ५इ ॥ डा ॥

ता प

(दी.७। प.१७। मा.१३)२७(छि। १३७)

(८८-१) ॥ आत्रेये द्वे । द्वयोरत्रिरनुष्टुबग्निः ॥

५ २ १र २ १ २२र१र २ १ २ १

बृहद्वयाः ॥ हिभानाऽ२३वाइ । आर्चादेवा । याअग्राऽ२३याइ । यम्मित्रन्ना ।

प जा कै जा क

अ — १ २ २ ४ ५ ४ ५

प्राशास्तायाऽ२इ ॥ मर्तासोऽ३दाऽ३ ॥ धिरोवा । पूऽ५रोऽ६ॅहाइ ॥

थि वि ता ति

(दी.४। प.९। मा.६)२८(धू।१३८)

(८८-२)

५ २ २ ५ १ २२र २ १ २ १ २

बृहद्वयोहिभानाऽ६ ॅवाइ ॥ आर्चादेवा । याअग्राऽ२३याइ । यम्मित्रन्ना ।

पा का जा का

१ अ — १ २र २ १ २ २ ३र २ २ २ ५र२

प्राशास्तायाऽ२इ ॥ मर्तासोदा ॥ धाइरेऽ१पूरा । औहोवाहाऽ३४औहोवा ॥

का का थि टे

२ १ ।।।

वाऽ३हाऽ२३४५ः ॥

ज

(दी.१२। प.९। म.७)२९(झे।१३९)

(८९-१) ॥ श्रौतर्वणम् । ध्रुतर्वानुष्टुबग्निः । वृत्रहा वा ॥

अगन्मवृ ॥ त्राऽ३हान्ताऽ३मा॒म् । ज्याइष्ठमा । ग्निमानाऽ३वाम् । यस्माऽ२३होइ ।

श्रुतर्वन्नार्क्षाइ ॥ बृहाऽ२३द्धोइ ॥ आनीकयाऽ३१उवायेऽ३ ॥ ध्याऽ२३४ते ॥

(दी.२। प.९। मा.७)३०(झे। १४०)

(९०-१) ॥ इन्द्रस्य प्रियम् । इन्द्रोऽनुष्टुबग्निः ॥

जातःपरेणाऽ३धा । इहा । माणा । इहा । योऽ२३४नीम् । योनिमिंद्राश्चगच्छथः ॥

यत्सवृद्धिःसाऽ३हा । इहा । भुवाः । इहा । योऽ२३४नीम् । योनिमिंद्राश्चगच्छथः ॥

पितायत्कश्याऽ३पा । इहा । स्याग्राइ । इहा । योऽ२३४नीम् । योनिमिंद्राश्चगच्छथः ॥

श्रद्धामातामाऽ३नूः । इहा । कावाइ । इहा । योऽ२३४नीम् ॥

योनिमिंद्राश्चगच्छाथाऽ२३४५ः ॥

(दी.११। प.२४। मा.१२)३१(घा। १४१)

त्रयोदश नवमः । नवमः खण्डः ॥९॥ दशतिः ॥

॥ इति ग्रामगेयगाने द्वितीयः प्रपाठकः ॥

(९१-१) ॥ बार्हस्पत्यम् । बृहस्पतिरनुष्टुबग्निः, विश्वे देवाः वा ॥

सोमँ राजानंवारुणाम् ॥ अग्निमन्वारभामहेऽ३ । होवाऽ३हाइ । आदित्यं-
विष्णुँ सूर्यम् । होवाऽ३हाइ ॥ ब्रह्माणाऽ२३श्चाऽ३ । होवाऽ३हाइ ॥
बृहाऽ३उवाऽ३ ॥ स्पाऽ२३४तीम् ॥

(दी.८। प.९। मा.७)१(ढे। १४२)

(९२-१) ॥ आरूढवदाङ्गिरसं यामं वा । आरूढविदाङ्गिरानुष्टुबग्निः ॥

आरोऽ३हान् । आरोऽ३हान् । आरोऽ३हान् । इतएतउऽ३दारूऽ१हाऽ२न् ॥
दिवःपृष्ठानिऽ३यारूऽ१हाऽ२न् ॥ प्रभूर्जयोयाऽ३थापाऽ१थाऽ२ ॥
उद्यामंगिराऽ३सोयाऽ१यूऽ२ः । आरोऽ३हान् । आरोऽ३हान् । आऽ२३ ।
रोऽ२ । हाऽ२३४ । औहोवा । ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१२। प.१४। मा.१०)२(इवौ। १४३)

(९३-१) ॥ आसिते द्वे । द्वयोरसितोऽनुष्टुबग्निः ॥

रायेअग्नेमाहाइ ॥ त्वा । दानायसमिधीमाऽ२३ही । आइडीऽ२ष्वाहीऽ२ ।माहेवृषान् ॥
द्यावाऽ२होत्राऽ२ ॥ यापोवाऽ३ओऽ२३४वा । थाऽ५इवोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.७। पा.८। मा.७)३(जे। १४४)

(९३-२)

२र१ ४र र र ५ १र र र २ १ २ २

रायायाऽ२३ग्नेमहेत्वाहाउ ॥ दानायसमिधीमाऽ२३हाइ । आइडाइष्वाऽ३हाऽ३इ ।

१ २ ३ ५ १र २ २ २ १ ५ ४ ५

माहेवाऽ२३४र्षान् ॥ द्यावाहोऽ३त्राऽ३ ॥ यापोऽ२३४वा । थाऽ५इवोऽ६ हाइ॥

(दी.८। प.७। मा.८)४(ठै। १४५)

(९४-१) ॥ त्वाष्ट्रीसाम । त्वष्टानुष्टुबग्निः ॥

४ र र ४ १र र र अ — १र

दधन्वेवाऽ५यदीमनू ॥ वोचद्ब्रह्मेतिवेरुतात् । पारिविश्वाऽ२ । निकाव्या ॥

२ ३ ५ २ १ ४ ५ ४

नाइमिश्चाक्रौवा ॥ ईऽ२३४वा । भुवात् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१०। मा.४)५(डी। १४६)

(९५-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्योऽनुष्टुबग्निः, रक्षोहा वा ॥

३ ४५र २ ३ ४ र ५ ५ २१र २ १ ३ २ ३ ५

प्रत्याग्ने । होइ । हरसाहराऽ६ ए ॥ शृणाहिवाऽ२इ । श्वाताऽ३४५: । पाऽ२३४री ॥

२र १र २ १ २र १ २ १ २ १ ५ ३ ५

+यातुधानस्यरक्षासोऽ३ ॥ बाऽ२३लाम् ॥ नियुब्जावोऽ२३४वा ॥ रीऽ२३४याम् ॥

(दी.६। प.१०। मा.६)६(ड्रू। १४७)

(९६-१) ॥ मानवम् । मनुरनुष्टुबग्निः, विश्वेदेवाः वा ॥

४५र ४५४ २१र र २ १र र २

त्वामग्ने । त्वामग्नाइ ॥ वासू रिहा । रुद्रा आऽ२३दी । तिया उता । यजासूऽ२३वा ।

१ २ १२ १ २ १

ध्वारंजनम् ॥ मनुजाऽ२३ताम् ॥ घृतप्रुषम् ॥ इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा॥

(दी.५। प.१२। मा.७)७(फे। १४८)

॥ सप्त दशमः । दशमः खण्डः ॥ १० ॥ दशतिः ॥

(९७-१) ॥ (चौ तानि पञ्च) तौदे द्वे । द्वयोः तोद उष्णिगग्निः ॥

५ ४ २र १र र र २ ४ ५ ४ ५ २र १ २र १ र
पुरु ॥ त्वादाशिवा ँ्वोचायेऽ३ । आरीराग्राइ । तावस्विदा । तोदस्येवशरण-
पि चौ तु र

१ १ २ २ ३ ५र र ३ । । ।
आऽ२३होइ ॥ महाऽ२३होयेऽ३ ॥ स्यो । याऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
रु क घ टे दू

(दी.९। प.९। मा.४)८(धी। १४९)

(९७-२)

५ ४ ५र र ४र ५र २ ३ ५ २ ३ ५
पुरुत्वादाशिवा ँ्वो । चे ॥ आरीराऽ२३४ग्राइ । तावस्वाऽ२३४इदा ॥
फी सौ सौ

४र ३ ४र ५ ३ ५ न २ १ २ २
तोदस्येवशार । णयोऽ२३४हाइ ॥ माऽ३हाऽ३ ॥ हिंमायेऽ३ । स्यो ।
थ दू खू कि च

३ ५र र ३ । । ।
याऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.११। मा.४)९(ट्री। १५०)
टे दू

(९७-३) ॥ दैर्घतमसानि त्रीणि । त्रयाणां दीर्घतमा उष्णिगग्निः ॥

५ ४ ५र र ४र ५र २ १ ५ २ ३ ५
पुरुत्वादाशिवा ँ्वो । चे । चे ॥ आराइराऽ२३४ग्राइ । तावास्वाऽ२३४इदा ॥
फी प प छ सौ

२र १ ५ २ ३ ५ २ ४ २
तोदास्याऽ२३४इवा ॥ शाराणाऽ२३४या । माऽ३हाऽ५स्याऽ६ ँ्५६ ँ् ॥ एऽ३१ ॥
छ सौ चू रा

(दी.५। प.९। मा.४)१०(भी। १५१)

(९७-४)

५ २ ४र ५ ४र र ५ २ १ अ ३ ५ ३ ५
पुरुत्वाऽ३दाशिवा ँ्वोचे ॥ अरिर । ग्राइ । तावाऽ२स्वाऽ२३४इदा ॥ तोऽ२३४दा ।
पः र क त्रु दू

३ ५ २ ३ ५ २ ४
स्याऽ२३४इवा ॥ शाराणाऽ२३४या । माऽ३हाऽ५स्याऽ६ ँ्५६ ँ् ॥
दू सौ चू

(दी.३। प.८। मा.३)११(डि। १५२)

(९७-५)

पुरुत्वाऽ२३दाशिवाँ्वोचेहाउ ॥ हा । औहोऽ३हा । ओऽ२३४वा । आरिरग्रेत-

वास्विदा ॥ हा । औहोऽ३हा । ओऽ२३४वा । तोदस्येवशरणआ ॥ हा ।

औहोऽ३हा । ओऽ२३४वा ॥ एऽ३ । माहास्याऽ२३४५ ॥

(दी.१२। प.१४। मा.२)१२(झा। १५३)

(९८-१) ॥ प्रहितौ द्वौ । द्वयोः श्यावाश्व उष्णिगग्निः ॥

प्रहोत्रेपू ॥ र्वियंवचो । अग्नयाऽ२३इभा । राताबृहात् ॥ विपांज्योऽ२३ती ॥

षिवायेऽ३ । भ्राऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ नावेऽ२धासेऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.८। मा.३)१३(जि। १५४)

(९८-२)

प्रहोत्राऽ३इपूर्वियंवचाः ॥ अग्नायेऽ२भरताऽ३बृ । हाऽ२३त् । विपांज्योताइ ।

षीऽ२३४बि । भ्राताऽ३इ ॥ नाऽ२३वेऽ३ ॥ धाऽ३४५सोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.६। प.८। मा.६)१४(गू। १५५)

(९९-१) ॥ श्रुध्ये द्वे । द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगग्निः ॥

अग्नेवाजाऽ५स्य । गोमतोवा ॥ ईशानःसा । हासोयाहो ॥ अस्माइदेहिजातवेदोमा ।

हाऽ२३इ । श्रावाउवा ॥ श्रूधियाऽ२ । एऽ२३हियाऽ३४३ ॥ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.११। प.११। मा.४)१५(की। १५६)

(९९-२)

अग्नेवाजस्यगोहिम्मतोहोहाइ ॥ ईशानःसा । हासोयाऽ२३४हो ।

आस्मेऽ१दाइहीऽ३। जाता । वेदाऽ३ः ॥ माऽ२३हीऽ३ ॥ श्राऽ३४५वोऽ६ हाइ ॥

(दी.८। प.८। मा.५)१६(ङु। १५७)

(१००-१) ॥ सदः । प्रजापतिरुष्णिगग्निः ॥

अग्नेयजिष्ठोअध्वराऽ६ ए ॥ देवान्देवयाऽ३ताइयाऽ१जाऽ२ । ऊवाऽ३ । ओऽ३वा ॥

होतामंद्रः । विराजाऽ१सीऽ२ ॥ ऊवाऽ३ । ओऽ३वा ॥ आतिस्राऽ२३इधाऽ३४३ः ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.११। मा.७)१७(के। १५८)

(१००-२) ॥ हविर्धाने द्वे । द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगग्निः ॥

अग्ने । इयाऽ३४३ईऽ३४या ॥ यजिष्ठोअध्वराइ । देवान्देवयतेऽ२ । हौहोऽ२ ।

याजाऽ२ । होताऽ२मान्द्रोऽ२ ॥ विराजाऽ३सी ॥ आऽ२ । तियाऽ३४औहोवा ॥

स्त्रीऽ२३४धाः ॥ (दी.७। प.११। मा.५)१८(चु। १५९)

(१००-३)

अग्नाईया । ओवा ॥ यजिष्ठोअध्वराइ । देवान्दाऽ२३इवा । यातेऽ१याजाऽ२॥ होताऽ३उवा ॥ मन्द्रोविऽ३राऽ२३ । जाऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ आतिस्त्रि-धाऽ२३४५: ॥

(दी.६। प.९। मा.७)१९(घे। १६०)

(१०१-१) ॥ आतिथ्यम् । त्वष्टोष्णिगग्निरदितिर्वा ॥

जज्ञानःसा ॥ प्तमातृमाइः । मेधामाऽ२३४शा । सातश्रायाइ । आयाऽ२न्म्रूऽ२३४वाः । रयाऽ२३इणाम् ॥ चिकायेऽ३ ॥ ताऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.४। प.९। मा.७)२०(ध्वे। १६१)

(१०२-१) ॥ आदित्यम् । अदितिरुष्णिगग्निरदितिर्वा ॥

उतस्याऽ३नोदिवामतीः ॥ आदितिरू । तियागाऽ१माऽ२त् ॥ साशंताऽ३ताऽ३ ॥ मां । यः । काराओऽ२३४वा । अपाऽ५त्रिधाः । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१०। मा.६)२१(नू।१६२)

(१०३-१) ॥ वार्कजम्भम् । वृकजम्भो उष्णिगग्निः ॥

ईडाइष्वाऽ२३हिप्रातीवियाम् ॥ याजस्वाजा । तावेदासाऽ२३म् ॥ चारिष्णुधू ॥ माऽ२३४मा । गृभाऽ३इ । ताऽ२शोऽ२३४औहोवा ॥ चीऽ२३४षाम् ॥

(दी.५। प.८। मा.६)२२(बू। १६३)

(१०४-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्य उष्णिगग्निः ॥

नातोवा ॥ स्याऽ२३४मा । यायाचाऽ२३ना । रिपुरीशीतमाऽ३१उवाऽ२३ ।

तीऽ२३४याः ॥ योअग्नायेऽ२दादा । शाहव्यदोऽ२३४वा ॥ ताऽ२३४ये ॥

(दी.६। प.८। मा.३)२३(गि। १६४)

(१०५-१) ॥ सौमक्रतवं बृहदाग्नेयं वा । सोमक्रतुरुष्णिगग्निः ॥

आपत्यंवृजिनम् । रिपूम् । स्तेनाऽ२३४५म् ॥ अग्नाइ । दुराधाऽ२३याऽ३४म्॥

दाविष्ठमस्यसात् । पाताऽ३इ ॥ काऽ२३र्धीऽ३ ॥ सूऽ३४५गोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.२। प.९। मा.८)२४(झै। १६५)

(१०६-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्य उष्णिगग्निः ॥

हाउश्रुष्ट्यग्नेनवस्यमेहाउ ॥ स्तोमास्यावाइ । राविश्पतायेऽ३४ । ऐहीहाउहोवा ।

निमायिनाः । तापासाराऽ२३४ । ऐहीहाउहोवा ॥ क्षासाऽ२३४ः ॥ ऐहीहाउहोवा ॥

दहाएऽ३४ । हियाऽ६ँ्हा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१५। प.१३। मा.१०)२५(बौ। १६६)

अष्टादश एकादशः । एकादशः खण्डः ॥११॥ दशतिः ॥१॥

(१०७-१) ॥ प्रम(ँ)हिष्ठीये द्वे ॥ द्वयोरिन्द्रः, ककुबग्निः ॥

५ २ ‸ ४र ५र २ १ — १र २ ४ ३ ५
प्रम ँ्हाऽ३इष्ठायागायता ॥ ऋताल्नेऽ२ । बृहतेशूक्राऽ३शोऽ३ । चाऽ२३४इषाइ ॥
फ चो ख दृ

२ १ २ २ १ २ ‸ ४ २ ‸ ५
ऊपाऔऽ३हो ॥ स्तोतासोऽ३आऽ३ । ग्राऽ३४५योऽ६ ँ्हाइ ॥
जा ख घु

(दी.३। प.७। मा.६)२६(दू। १६७)

(१०७-२)

४ ५ र ४ ४ २ — — १ २ —
प्रम ँ्हिष्ठाय । गाऽ५याता ॥ ऋताऽ२१ । ल्नेऽ२ । बृहाताऽ१इशूऽ२ । क्र ।
ता ती र का घि च

१र २ १ — १ न २ ‸ २ १ ५
शोचाऽ२३इषाइ ॥ उपा । स्तुतौऽ२ ॥ हुवाइ । होऽ३वाऽ३ । साओऽ२३४वा॥
कः च का क खू छ

४ ५
ग्नाऽ५योऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.२। प.१३। मा.६)२७(जू। १६८)
ति

(१०७-३) ॥ गायत्रीसामासितम् । असितः ककुबग्निः ॥

३ ४ ५र र २ ‸ २ ५ १ र र र २ — —
प्राम ँ्हिष्ठायगा । इयाऽ३४३ईऽ३४या ॥ यतऋताल्नेबृहतेशुक्राशौऽ२ । हौऽ२।
टा थि घि का

१ — १ — १२ ‸ १ २ १ २र १ २
हुवाऽ२इ । चाइषाऽ२इ ॥ उपाऽ३होइ । स्तुताऽ३हो ॥ सोअग्राऽ२३याऽ३४३इ ।
का का को को जु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.११। मा.९)२८(को। १६९)
कु प

(१०७-४) ॥ प्रम ँ्हिष्ठीयम् । इन्द्रः, ककुबग्निः ॥

४ ५ र र ४ ५ १ र२ १ २
प्रम ँ्हिष्ठायगायत । प्रम ँ्हिष्ठोवा ॥ यागायता । ऋताऽ२३ल्नाऽ३४इ ।
ता पै का वी

३र ४ ५र २ २ र र २ र र २
बृहातेशुक्राशो । चाऽ३इषाइ ॥ उपौहोवाऽ३हाइ । स्तुतौहोवाऽ३हाऽ३ ॥
थ चे चो शी

२ १ ५ ४ ५
साओऽ२३४वा । ग्राऽ५योऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.९। प.१०। मा.६)२९(नू। १७०)
छ ति

(१०८-१) ॥ वाजभृद्वाजाभृद्वाजाभर्मीयं वा । भरद्वाजः, ककुबग्निः ॥

प्रासोऽ३हाइ । आग्नेऽ३हाइ ॥ तवाऽ३१उवाऽ२३ । तीऽ२३४भीः । सुवीरा-
भिस्तरतिवाजाकर्मभिः ॥ यास्याऽ३हाइ । त्वाऽ ँसाऽ२३ ॥ ख्यमोवा ।
वाऽ५इथोऽ६ ँहाइ ॥ (दी.३। प.९। मा.८)३०(ढै। १७१)

(१०९-१) ॥ सौभराणि त्रीणि । त्रयाणां सुभरिः, ककुबग्निः ॥

तंगूऽ३र्धाऽ३यासुवर्णरोवा ॥ देवासोदेवमराऽ२ताइन्दाधाऽ२३। हो ।
न्वाऽ२३४इराइ ॥ देवत्राहा । व्यमूऽ३हाऽ३ ॥ हाऽ२इषाऽ२३४औहोवा ॥
ऊऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.८। मा.५)३१(डुं। १७२)

(१०९-२)

तंगूर्धयासुवर्णाराम् ॥ देवासोदाइ । वामाराताऽ२३इम् । दाधन्विराउ । वाऽ३।
देऽ२३४वा ॥ त्राहाऽ२३ । व्यमोवा । हाऽ५इषोऽ६ ँहाइ ॥
(दी.६। प.९। मा.७)३२(घे। १७३)

(१०९-३)

तंगूर्धयास्वौहोर्णाराम् ॥ देवाऽ२सोऽ२३४दे । वमरताऽ२इम् । दाऽ२३४धा ।
न्वाऽ२३४इराइ । हाहोऽ२३४हा ॥ देवाऽ२त्राऽ२३४हा ॥ व्यामूऽ३हाऽ५इ ॥
षाऽ२३४५इ ॥ (दी.५। प.९। मा.७)३३(भे। १७४)

(११०-१) ॥ पक्थस्य सौभरस्य सामनी द्वे । द्वयोः पक्थः ककुबग्निः ॥

मा । नाः ॥ ह्वणीऽ३थाआतिथीऽ३म् । वासूराऽ२३४ग्नीः ॥ पुरौहोवाऽ३हाइ ।
प्रशौहोवाऽ३हाऽ३ ॥ स्ताओऽ२३४वा । आऽ५इषोऽ६ हाइ ॥

(दी.५। प.८। मा.८)३४(बै। १७५)

(११०-२)

मानोहाउ ॥ हाऽ२३४ । णीथाआतिथिम् । वासूराऽ२३४ग्नाइः ॥ पुरौहाहोइ।
प्राशौहाहो ॥ स्ताऽ२३४एषाः । एहियाऽ६ हा । होऽ५इ ॥ डा ॥

सामद्वयेऽपि ''यस्सुहोतास्वध्वरः'' इति पादस्य गानं नास्ति ॥

(दी.७। प.१०। मा.९)३५(जो। १७६)

(१११-१) ॥ दैवानीकं । देवानीकः, ककुबग्निः ॥

भद्रोऽ४नाः । होइ । अग्निराहुताऽ६ ए ॥ भद्राराताइः । सुभगाभाऽ३ । द्रोऽ२-
ध्वाऽ२३४राः ॥ भद्राऊऽ२३ताऽ३ ॥ प्राऽ२३शाऽ३ । स्ताऽ३४५योऽ६ हाइ ॥

(दी.४। प.९। मा.८)३६(धै। १७७)

(११२-१) ॥ गौतमं साध्यं वा । साधिः, ककुबग्निः ॥

याऽ५जि । ष्ठंत्वाऽ३वाऽ३वृमहाइ ॥ देवदेवंत्राहोताऽ२३राम् । आमार्तियम् ॥
आस्यायाज्ञाऽ२३ । स्याऽ२३सूऽ३ । क्राऽ३४५तोऽ६ हाइ ॥

(दी.४। प.७। मा.४)३७(थी। १७८)

(११३-१) ॥ संवर्गः । जमदग्न्युष्णिगग्निः ॥

४ र र ४ २ १र २ १ २ १
तदग्नेद्यू5५म्नम् । आभरोवा ॥ यत्सासाऽ२३हा । सदा२३नाइ । कंचिदत्राऽ२३-
ता पि जा कः
२ १ १ ५र ५ ४
इणाम् ॥ मान्युअनस्यदूऽ२३हो ॥ ढाऽ२३४याम् । एहियाऽ६हुँा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा को की पा ता प

(दी.४। प.१०। मा.६)३८(नू। १७९)

(११४-१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्य उष्णिगग्निः ॥

२ १र ४ ५ १ र २र १ २र १र २ १ २ १ २र
यद्वाऊ२३विश्पातिःशिताः ॥ सुप्रीतोमानुषोविशे ॥ विश्वाइदाऽ२३ग्रीः ॥ प्रातिरक्षा ।
छा रौ कः चि
३ र २ १ २ ४५ ४
सिसेधाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
या ची ता प

(दी.७। प.८। मा.५)३९(जु। १८०)

चतुर्दशद्वादशः, द्वादशः खण्डः ॥ १२॥ दशतिः ॥२॥

॥ इति ग्रामेगेयगाने तृतीयस्यार्धः प्रपाठकः ॥२॥

॥ इति प्रकृतिगाने आग्नेयं पर्व समाप्तम् ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

—*—

॥ अथैन्द्रं पर्व ॥

(११५-१) ॥ मार्गीयवम् । मृगयुर्गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वौहोवा ॥ गायाऽ२ । सुताइसाऽ२३४चा । पुरुहूता । यासात्वाऽ१नाऽ२इ ॥
शंयत् । हा । औऽ३होइ । गाऽ२३४वाइ ॥ नाऽ२शाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ ।
किनेऽ२३४५ ॥ (दी.५। प.१२। मा.६)१(फू। १८१)

(११५-२) ॥ रौद्रे द्वे । द्वयो रुद्रो गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वोगाया ॥ सुताइसचाऽ३ । पूरुऽ२३हूताऽ३४ । हाहोऽ३ । यासत्वाऽ२३४नाइ ॥
शंयद्गाऽ२३वे ॥ नाशौऽ२ । हौऽ२ । हुवोऽ२३४ । वा । काऽ५इनोऽ६ँहाइ ॥

(दी.४।प.११।मा.४)२(ती।१८२)

(११५-३)

तद्वोगायसुतेचाऽ६ँए ॥ पुरुहूतायसात्वने । पुरुहूता । यासात्त्वाऽ२३नाऽ३४इ।
शंयत्। गौवाओऽ२३४वा ॥ नाऽ२३शाऽ३ ॥ काऽ३४५इनोऽ६ँहाइ ॥

(दी.८। प.८। मा.६)३(डू। १८३)

(११५-४) ॥ ईनिधनं मार्गीयवम् ।मार्गीयवो (मृगयुः) गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वोगायसुतेसचाऽ६ँए ॥ पुरुहूतायसत्वनाइ ॥ शंयद्गाऽ२३वे ॥ ऐऽ२होऽ१आ-
ऽ२३इही । नाशाऽ२३ । काऽ२इनाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.७। मा.६)४(र्छू। १८४)

(११६-१) ॥ आश्वम् । अश्वो गायत्रीन्द्रः ॥

यस्तेनूनाऽ५ँ शतक्रताउ ॥ इन्द्रद्युम्नितमोमाऽ२दाः ॥ तेननूनाऽ२३०मा ॥

दाइमाऽ३उवाऽ३ ॥ देऽ२३४५ः ॥ (दी.५। प.५। मा.५)५(मु। १८५)

(११७-१) ॥ एटते द्वे । द्वयोरिटन्वान् गायत्रीन्द्रः ॥

गावः । एगावाः ॥ उपव । दाऽ३ । वाऽ२दाऽ२३४औहोवा । वाऽ२३४टे ॥ महीयाऽ२३४ज्ञा ॥

स्याराऽ३ । स्याऽ२राऽ२३४औहोवा । प्सूऽ२३४दा । उभाकाऽ२३४र्णा ॥

हिराऽ३ । हाऽ२इराऽ२३४औहोवा ॥ ण्याऽ२३४या ॥ (दी.७।प.१४।मा.६)६(झा १८६)

(११७-२)

ओइगाऽ२३४वाः ॥ उपवाऽ३दा । वाटाओऽ२३४वा । माहीयज्ञस्यरप्सुदाऽ३॥

ओऊऽ२३४भा ॥ कार्णाओऽ२३४वा ॥ हिरण्ययाऽ२३४५ ॥

(दी.१। प.७। मा.५)७(खु। १८७)

(११८-१) ॥ श्रौतकक्षे द्वे । द्वयोः श्रुतकक्षो गायत्रीन्द्रः ॥

आराऽ३४म् । अश्वाया । गायाऽ६ँता ॥ श्रूतका । क्षाराङ्गावाइ । आऽ२३४राम् ।

हाऽ३हाइ ॥ इ । द्रास्याऽ२३धा ॥ हिंमायेऽ३ । म्रो । याऽ२३४औहोवा ॥

ईऽ२३४ती ॥ (दी.५। प.१३। मा.५)८(बु। १८८)

(११८-२)

४ ५ ४ ४ ५ र र र ४ ५ १ र २ १ २ १ २ २
आरामश्वायगायता ॥ रमश्वोवा ॥ यागायता । श्रुतका । क्षाऽ२३ । हाऽ३हाऽ३इ ।
तु पै का का कि शि

१ ३ ५ १ २ २ १ २र १ २ ४ ५
आराऽ२ज्ञाऽ२३४वाइ ॥ आरमिन्द्राऽ३ । हाऽ३हा ॥ स्याधाम्ना । औऽ३होवा ।
वू कि चै कै ची

४
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१३। मा.३)९(बि। १८९)
ता प

(११९-१) ॥ तन्वस्य साम । तन्वः,पार्थौ वा गायत्रीन्द्रः ॥

२ १ ४र ५र १ र २ र १ २ — १ २
तामिन्द्राऽ२३०वाजयामसी ॥ माहेवृत्रा । याहान्ताऽ१वेऽ२ ॥ सावार्षाऽ१वाऽ२३ ॥
छा का छु छू

२ १ ५ ४ ५
षाभोऽ२३४वा । भूऽ५वोऽ६ँहाइ ॥ (दी.४। प.६। मा.१)१०(ता। १९०)
छ ति

(११९-२) ॥ दावसुनिधनम् । दावसुगीयत्रीन्द्रः ॥

२ १ ४र र ५ १ र २ र १ २ १ २ २
तामिन्द्राऽ२३०वाजयामसिहाउ ॥ माहेवृत्रा । याहान्ताऽ१वेऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥
छा का छु कः

१ २ १ २ ३ १ १ ३ ५र र २
सावार्षाऽ१वाऽ२३ । होवाऽ३हा ॥ षाभोऽ२३ । भूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥एऽ३ ।
छू कः चौ वे चा

२र १ ३ । । ।
दावासूऽ२३४५ ॥ (दी.७।प.१०।मा.३)११(जि। १९१)
शि

(११९-३) ॥ निवेष्ट्वः । वसिष्ठो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र र ५ २ २ र १ अ — —
तमिन्द्रंवाजयामसीऽ६ँए ॥ महाऽ३हाइ । वृत्राऽ३याहान्तवेऽ२ । ओऽ२ ।
पा चे चु का

— न २ १ २ र १ — — — न २ १ २
ईऽ२ईऽ३या । ओमोवा ॥ सहेवार्षाऽ२ । ओऽ२ । ईऽ२ईऽ३या । ओमोवा ॥
वौ का चो का वौ का

१ ३ ५र र ३ ५
वृषा । भोऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ भूऽ२३४वात् ॥
च का टे टू

(दी.६। प.१४। मा.४)१२(घी। १९२)

(११९-४) ॥ इडानाँ संक्षारः । इडा गायत्रीन्द्रः ॥

औहोइहुवाऽ३होइ । तमिन्द्रंवाऽ३जाऽ३यामसि ॥ औहोइहुवाऽ३होइ । महेवृत्राऽ३याऽ३हन्तावे ॥ औहोइहुवाऽ३होइ । सावार्षाऽ२३४वा ॥ षाभोभुवत्। इडांऽ२३भाऽ३ । एहीडा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१०। प.११। मा.८)१३(पै । १९३)

(१२०-१) ॥ शाय्यातानि त्रीणि । त्रयाणां शय्यातिर्गायत्रीन्द्रः ॥

हाउत्वमिन्द्रा ॥ बालादाधि । हाऽ३उहाउ । सहासोजा । ताओऽ१जासाऽ३ः। हाऽ३उहाउ ॥ त्वाँ सन्वृषाऽ३न् । हाऽ३उहाउ ॥ वृषायेऽ३त् । आऽ२-साऽ२३४औहोवा ॥ वृधेऽ१ ॥

(दी.५। प.११। मा.१२)१४(पा। १९४)

(१२०-२)

त्वमिन्द्रबलादधीऽ६ँए ॥ सहासोजा । ताओऽ१जासः । इयाऽ३होइ । इयायो-ऽ२३४वा ॥ त्वाँ सन्वृषन् । इयाऽ३होइ । इयायोऽ२३४वा ॥ वृषायेऽ३त् । आऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ महेऽ१ ॥

(दी.५। प.११। मा.८)१५(पै । १९५)

(१२०-३)

त्वामिन्द्रबालादाधिसहासाः ॥ जाताऽ२ः । ओजसाऽ२३४ः । इहोइहा ॥ त्वाँ सन्वृषाऽ३४न् । इहोइहा ॥ वृषायेऽ३त् । आऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४हा ॥

(दी.६। प.९। मा.८)१६(चै। १९६)

(१२१-१) ॥ इन्द्राण्याः साम । इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः ॥

यज्ञइन्द्रमवर्द्धाऽ६ँयात् ॥ यद्भूमिम् । व्या । व्यावाऽ२र्त्ताऽ२३४यात् ॥चाऽ२३४क्रा । णाऽ२३४ओ । पाशन्दिवि ॥ चक्राणाओऽ२३ ॥ पाऽ२शाऽ२३४औहोवा ॥ दीऽ२३४वी ॥

(दी.४। प.१०। मा.७)१७(ने। १९७)

(१२२-१) ॥ गौषूक्तम् । गौषूक्तिर्गायत्रीन्द्रः ॥

यादिन्द्राहंयाथौ । हौहोवाहाइ । तुवाम् ॥ ईशीयवास्वाऔऽ२ । हुवाइ । हुवाये। काईऽ२त् ॥ स्तोतामेगोसाखौऽ२ । हुवाइ । हुवाये ॥ सायाऽ२३त् । होऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ अग्निराहुताऽ२३४५ः ॥

(दी.१२। प.१३। मा.१०)१८(जौ। १९८)

(१२२-२) ॥ आश्वसूक्तम् । आश्वसूक्तिर्गायत्रीन्द्रः ॥

आऔहोवाहाइ । यदिन्द्राहाम् ॥ याथा । त्वम् । ऐहीयैहीऽ१ । आइशीय- वास्वाआइकइत् ॥ ऐहीयैहीऽ१ ॥ आऽ२इ । स्तोताऽ२माइगोऽ२ ॥ साखाऽ२३ । साऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ शुक्राआहुताऽ२३४५ः ॥

(दी.१२। प.१२। मा.१४)१९(छी। १९९)

(१२३-१) ॥ गौरीवितम् । गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः ॥

पन्यंपन्यामित् । सोताऽ६ँराः ॥ पन्यंपन्यमित्सोऽ१ताऽ३राः । आ । धावत । मादियाया॥ सोमंवी । राऽ२३. ॥ याशूऽ३राऽ५याऽ६ँ५६ँ ॥ (दी.३। प.९। मा.३)२०(ढि। २००).

(१२४-१) ॥ गाराणि त्रीणि । त्रयाणां गरो गायत्रीन्द्रः ॥

इदंवसाउ ॥ सुतामाऽ२३न्धाः । पिबाऽ२सुपू । णामुदाऽ२३राऽ३४म् ॥ आनाऽ३४-

भायाऽ३इन् ॥ ररोवा । माऽ५तोऽ६ हाइ ॥ (दी.२। प.७। मा.६)२१(छू २०१)

(१२४-२)

इदाऽ३०वासोसुतमन्धाः ॥ पिबासूऽ२३पूऽ३ । णमूऽ२दाऽ२३४राम् ॥

आऽ२३ना ॥ भाऽ२याइन् । राराऽ२३ । हाउवाऽ३ । मातेऽ२३४५ ॥

(दी.३। प.८। मा.५)२२(डु। २०२)

(१२४-३)

इदंवसोसुतमन्धाऽ६ ए ॥ पिबासुपूऽ३र्णामुदारौ । होऽ३वा । पिबासुपूर्णामुदारौ ।

होऽ३वा ॥ आनाभाऽ३यीन् ॥ ररिमाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.१०। मा.३)२३(णि। २०३)

त्रयोविंशतिः, प्रथमः खण्डः ॥१॥ दशतिः ॥ ३ ॥

(१२५-१) ॥ ऐडसौपर्णं वा । त्रयाणां सुपर्णो गायत्रीन्द्रः (सूर्यः) ॥

उद्घेदभ्योवा ॥ श्रूतामाऽ२३४घाम् । वृषाभन्ना । रियाऽ२पाऽ२३४साम् ॥

आऽ२स्ता । राऽ२३मे ॥ षाइसूरिया । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.१०। मा.४)२४(जी। २०४)

(१२५-२) ॥ स्वारसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा ॥

५ र र ५ ४ ३ ४५र १ ३ ५ १ २ २
उद्घेदमिश्रुतामाऽ६ँ्घाम् ॥ वृषाभन्नर्या । हिम् । पाऽ२३४साम् ॥ आस्ताऽ३उवा ॥
पा थ क दू कः
र १ २ १ ५ ४ ५
रामाइ । षिसूऽ२३४वा । राऽ५योऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.४। प.८। मा.६)२५(दू। २०५)
र छ ति

(१२५-३) ॥ विलम्बसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा ॥

४ र५ ४५ ४र५ ४५४ ५ ४ ३४५र २ २ १ ५
उद्घेदामिश्रुतामाघम् । ईयइयाहाइ ॥ वृषाभन्नर्या । हाऽ३हाऽ३इ।पाऽ२३४साम् ॥
तै तु थ शी कु
१ २ २ १ ३ ५र र २ र ३ ।।।
आस्ताऽ३उवाऽ३ ॥ राऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ षिसूरियाऽ२३४५ ॥
वि वे शै

(दी.६। प.८। मा.७)२६(गे। २०६)

(१२६-१) ॥ शाकलम् । शकलो गायत्री, इन्द्रसूर्यौ ॥

४ ४ २१ र २१र २ १ — १ २१२
यदद्यकाऽ५च्चवृत्रहान् ॥ उदगाआमिसूराऽ२३या ॥ सार्वाऽ२म् ॥तादिन्द्रातायेऽ३ ।
ती जै का घी
१ २ ५
हिम् । वाऽ३४५शोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.२। प.६। मा.५)२७(चु। २०७)
क चु

(१२७-१) ॥ आभरद्वसवे द्वे ॥ द्वयोराभरद्वसुर्गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ १ — १ १ ३ ५ १र —
यआहाउ ॥ आनायाऽ२त् । आनायाऽ२३त् । पाराऽ२वाऽ२३४ताः । सुनीतीतूऽ२ ।
ता का कि वू का
१ र १२३ ५ १ — १
सुनीतीतूऽ२३ । वाशंयाऽ२३४दूम् । इन्द्रस्सानाऽ२ः । इन्द्रस्सानाऽ२३ः ॥
कि वू का कि
१ ३ ५र र ३ ५
यूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ साऽ२३४खा ॥
वे दू

(दी.४। प.११। मा.९)२८(तो। २०८)

(१२७-२)

४ र ५ ४ ५ र ५ १ र र २ २ २ १ र २
यआनायत् । परावाऽ६ँ‌ताः ॥ सुनीतीतुर्वाशाऽ१०याऽ३दूम् ॥ इन्द्रस्सनोयुवाऽ१-
ती पा धै
२ २ ३ ५ २ १ २ ५ १ २र
साऽ३खा । इन्द्रोऽ२३४ग्राइ ॥ इन्द्राऔऽ३होऽ२३४ । ग्राइ ॥ आइन्द्रोआ ।
धै शे जी प का
१ ३ ५र र ३ ५
ग्राऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४न्द्राः ॥
का टे दू

(दी.८। प.११। मा.११)२९(टा २०९)

(१२८-१) ॥ तान्वे द्वे । द्वयोस्तन्वो गायत्रीन्द्रः ॥

५र र र ४ ५ १ र २ १र २ ३ २ ३ २
मानइन्द्राभियादाइशाः । सूरोअक्तु । षुवायाऽ२३माऽ३४त् ॥ तुवाऽ३४युजा ॥
पै का जी यू
१ २ १
वानाइमाऽ२३ताऽ३४३त् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.७। मा.८)३०(फै २१०)
जु कु प

(१२८-२)

५र ४ २ ४र ५र २ ३ १ २ ३ ५
मानाऽ३आऽ३इन्द्राभियादिशाः ॥ सूरोआऽ२३४क्तू । षूआयाऽ२३४मात् ॥
पौ शे रौ
१र र न २ १ न २
त्वायुजावानौऽ३हो ॥ मातौऽ२ । हुवाइ । औऽ३होऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥एऽ३।
खु चो क गि चा
१ । । ।
ययूऽ२३४५ः ॥ (दी.५। प.९। मा.८)३१(भै। २११)
कु

॥ इति ग्रामगेयगाने तृतीयः प्रपाठकः ॥ ३ ॥

(१२९-१) ॥ रोहितकूलीये द्वे । द्वयोरिन्द्रो विश्वामित्रो वा गायत्रीन्द्रः ॥

४र ५ ४ २ १ र २ १र २ १ २
एन्द्रासा ॥ नासि ँरयिम् । सजित्वान ँसादासाऽ२३हाम् ॥ वाऽ२३र्षी ।
ती र धै कः
१ र २ २ ५
ष्ठामूतयाऽ३१उवायेऽ३ । भाऽ२३४रा ॥ (दी.४। प.६। मा.३)१(ति । २१२)
क दू

(१२९-२)

एन्द्रसानसाइम् ॥ रयाऽ२इम् । साजित्वान ँसादासाऽ२३हाम् ॥ वार्षीऽ२-

ष्ठामूऽ२३ ॥ तायोऽ२३४वा ॥ भाऽ५रोऽ६ ँहाइ ॥

(दी.४। प.६। मा.६)२(तू। २१३)

(१३०-१) ॥ इन्द्राण्याः सामनी द्वे । द्वयोरिन्द्राणी गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्राम् । इन्द्रंवायाऽ२म् ॥ महा । माहाधानाऽ२इ ॥ इन्द्राम् । इन्द्रमर्भाऽ२इ॥

हवा । हावामाहाऽ२इ ॥ युजाम् । युजंवृत्राऽ२इ ॥ षुवा । षुवज्रिणाऽ२३४३म् ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.२। प.१४। मा.१०)३(झौ। २१४)

(१३०-२)

इन्द्रंवयाम् ॥ महा । माहाधानाऽ२३इ । आऔऽ३हो । इह । इहिवाला ।

ओऽ२३४वा ॥ इन्द्रमर्भाइ ॥ हवा । हावामाहाऽ२३इ । आऔऽ३हो । इह ।

इहिवाला । ओऽ२३४वा ॥ युजंवृत्राइ ॥ षुवा । षुवज्रिणाऽ२३म् । आऔऽ३हो ।

इह । इहिवाला । ओऽ२३४वा ॥ ईऽ२३४हा । (दी.२। प.२२। मा.९)४(छो। २१५)

(१३१-१) ॥ सहस्रबाहवीयम् । इन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

अपिबत्काद्रूऽ६ ँवस्सुताम् ॥ इन्द्राहोऽ२इ । साहाहोऽ२ । स्राबाऽ१हुवेऽ२ ॥

तत्रादाऽ२३दी ॥ ष्टापौऽ२ । हौऽ२ । हुवाऽ२इ । ईऽ३या । सियाम् ।

औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.२। प.१३। मा.५)५(जु। २१६)

(१३२-१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम । धृषन्मरुत्, गायत्रीन्द्रः ॥

२१ ५ १ १ ३ ५र र २ १ विर र
वायमाऽ२३४इन्द्रा ॥ त्वाऽ२३ । याऽ२वाऽ२३४औहोवा । आमिप्रानोऽ२नुमोवृषन् ॥
छ कि वे चो

३ २ १ ३ ५र र ३ ५
विद्वाइतुवाऽ३॥ स्याऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४सो ॥
सी वे दू

(दी.६।प.७।मा.५)६(खु। २१७)

(१३२-२) ॥ अदारसृत् । भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः ॥

५र — १ — १ र — १ — — १
हाउवयमिन्द्रा ॥ त्वाऽ२यावाऽ२ः ॥ अभिप्रनोनुमोऽ२वार्षाऽ२न् ॥ विद्वाऽ२इतू-
प धि धि

— १ १ ३ ५रर २ १ २ र १ २ ३ ।।।
वाऽ२ ॥ स्यानोऽ२३ । वाऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ अस्माम्यंगातुवित्तामाऽ२३४५म् ॥
छु चौ वे जौ

(दी.५। प.७। मा.६)७(फू। २१८)

(१३२-३) ॥ धृषतो मारुतस्य साम । धृषन्मरुत्, गायत्रीन्द्रः ॥

५ १ २ २ १ र २ २ २ ३ ५
वयमिंद्रा ॥ त्वायाऽ३वाः । अभिप्रनोनुमोऽ१वाऽ३र्षान् ॥ विद्वीतूऽ२३४वा ।
प कः यै से

३ ५ ४ ५ ४ ५
ओऽ२३४हाइ ॥ स्यनोवा । वाऽ५सोऽ६ हाइ ॥ (दी.१। प.७। मा.४)८(खी। २१९)
दू ता ति

(१३२-४) ॥ अदारसृती द्वे । द्वयोर्भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र४र५ ४ ५ १ २ २ १ र २ २ २ र ३
वयामौहो । इन्द्रा ॥ त्वायाऽ३वाः । अभिप्रनोनुमोऽ१वाऽ३र्षान् ॥ विद्वीत्वोऽ२३४-
पै ता कः यै

५ १ २ २ १ २ ४ ५ ४
हाइ ॥ स्यानोऽ३हाइ । वासा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
सै कः र ता ता प

(दी.४। प.१०। मा.५)९(नु। २२०)

(१३२-५)

वयामौहोवाहाइ । इन्द्रा । त्वाऔहोवाहाइ । यावाः ॥ आऽ२३भी । प्राऽ२३नो ।

ओइनुमोवाऽ२३र्षान् ॥ वाऽ२३इद्धी । तूऽ२३वाऽ३ ॥ स्याऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥

वाऽ२३४से ॥ (दी.५। प.११। मा.८)१०(पै। २२१)

(१३३-१) ॥ ऐध्मवाहानि-हाराणि वा त्रीणि । त्रयाणामामिध्मवाहो गायत्रीन्द्रः ॥

आघायेअग्निमिन्धाताइ ॥ स्तृणन्तिबर्हिरानुषाक् ॥ येषामिन्द्रोयुवाइहा ॥ ऊवाइ ।

ऊवोऽ२३४ । वा । साऽ५खोऽ६ँहाइ ॥

(दी. ८। प.७ मा.६)११(ठू । २२२)

(१३३-२) ॥ इहवदैध्मवाहम् ॥

आघायाइहा ॥ ग्निमाइ । धाताओऽ२३४वा । ईऽ२३४हा । स्तृणन्तिबर्हिऽ३रा ।

नूषाओऽ२३४वा । ईऽ२३४हा ॥ येषाम् । आइन्द्राओऽ२३४वा ॥ ईऽ२३४हा ॥

युवा । युवाऽ२साऽ२३४खाऽ६ँ५६ँ ॥ ईऽ२३४हा ॥

(दी. ३। प.१३ । मा.७)१२(डे। २२३)

(१३३-३)

औहोआघायाऽ६ँए ॥ ग्निमाइन्धाता । औहोऽ२३४वा । स्तृणंतिबर्हिऽ३रानूषा।

औहोऽ२३४वा ॥ येषामाइंद्रा । औहोऽ२३४वा ॥ युवाऽ३ । साऽ२३४खा ।

उहुवाऽ६ँहाउ । वा ॥ (दी.८। प.। ११। मा.५)१३(ट्ठा २२४)

(१३४-१) ॥ पैल्वस्य वा साम । पैल्वो गायत्रीन्द्रः ॥

भि । ध्योहाइ ॥ वाइश्वाअपा । द्वाइषाओऽ२३४वा ॥ पाराओऽ२३४वा ॥

बाधोजहाइ । मार्द्धाओऽ२३४वा ॥ वासुस्पार्हन्तदाभाराऽ२३४५ ॥

(दी. ४ । प. ८ । मा. ८) १४ (दै । २२५)

द्वाविंशतिर्द्वितीयः खण्डः ॥२॥ दशतिः ॥२॥

(१३५-१) ॥ ऐषम् । इषो गायत्रीन्द्रः (मरुतः) ॥

इहेवाऽ२३शृण्वएषाम् ॥ कशाहस्तेषुयाऽ१द्वाऽ३दान् । नियामंचीऽ३त्राऽ३-

मृआताइ ॥ नियामंचाइ । त्रामाऽ२ओऽ२३४ताइ ॥ एहियाऽ३४ । औहोवा ॥

एहियौहोइ । एहियौहोऽ२३इ । एऽ२३४ही ॥

(दी.१३। प.१०। मा.८)१५(गै।२२६)

(१३६-१) ॥ पौषम् । पूषा गायत्रीन्द्रः, मरुतः ॥

इमाउत्वाविचाक्षते । एऽ३ । सखायाः ॥ इन्द्रसोमाऽ२३इनाः । होइहोवा ॥

पुष्टावाऽ२३न्ताः । होइहोवाऽ३ ॥ याथोऽ२३४वा । पाऽ५शोऽ६ँहाइ ॥

(दी. ४ । प. ९। मा. ८) १६ (धै । २२७)

(१३७-१) ॥ मरुतां संवेशीयम्, सिन्धुषाम वा । मरुतो गायत्रीन्द्रः ॥

समस्यामाऽ२ । न्यावेविशाः ॥ विश्वानामाऽ२ । ताकृष्टयाः ॥ समुद्रायेऽ२ ॥

वासिंधाऽ२३वाऽ३४३ः ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.४ । प. ८। मा. ४) १७ (दी । २२८)

(१३८-१) ॥ हाविष्मते द्वे । द्वयोर्हविष्मान् गायत्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा) ॥

देवा । नाम् । इदाओऽ२३४वा ॥ ओवाओऽ२३४वा । माऽ२३४हात् । तादावृणाइ ।
माहाओऽ२३४वा । वाऽ२३४याम् ॥ वृष्णामस्मा ॥ भ्यामाओऽ२३४वा ॥
ताऽ२३४ये ॥ (दी.५। प.११। मा.८)१८(पै । २२९)

(१३८-२)

हाउदेवानामिदवोमहद्धाउ ॥ तादावृणाऽ३इ । माहेवाऽ२३४याम् । ऐऽ२होऽ१-
आऽ२३इही ॥ वृष्णामाऽ३स्मा ॥ भ्यामूऽ२३ । ताऽ२याऽ२३४औहोवा ॥
हाविष्मातेऽ२३४५ ॥

(दी.८।प ८। मा.७)१९(डे।२३०)

(१३८-३) ॥ हाविष्कृते द्वे । द्वयोर्हविष्कृद्गायत्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा) ॥

देवानामिदवोहाउमाहात् ॥ तादावृणाइ । महाइवाऽ२३याम् ॥ वृष्णाऽ२ँ होऽ१इ ।
आऽ२३स्मा ॥ भ्यामूऽ२३ । ताऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ हाविष्कृतेऽ२३४५ ॥

(दी.८। प८ । मा .७)२०(डे। २३१)

(१३८-४)

देवानामिदवोमाहात् ॥ तादावृणी । माहाइवाऽ२३याम् । वृष्णामाऽ२३स्माऽ३॥
भ्यामूऽ२३४वा । ताऽ५योऽ६ँ हाइ ॥

(दी.७। प.६। मा.४)२१(ची। २३२)

(१३९-१) ॥ काक्षीवतम् । कक्षीवान्, विराड् गायत्रीन्द्र ब्रह्मणस्पतिर्वा ॥

५र २ ४र ५ २ १ २ १ २ १ २ २ ३र २
सोमाऽ३ना ँ्स्वरणाम् ॥ कृणूहिब्रा । ह्मणस्पतायेऽ३ । ओऽ३४ । हाहोइ ॥
फ रो चौ चि य
१ २ ३र २ २ १ ५ ४ ५
कक्षाइवाऽ२३न्ताम् ॥ याऔहोइ । औहोऽ२३४वा । शाऽ५इजोऽ६ ँ्हाइ ॥
कः चे छ ति

(दी.५। प.९। मा.८)२२(मै। २३३)

(१४०-१) ॥ औषसम् । उषो गायत्रीन्द्रः ॥

५र १ — १ — २ १२र१ अ ३ ५ ३ २
बोधन्मनाः ॥ इदाऽ२स्तूनाऽ२ः । वृत्राहाभू । रियाऽ२सूऽ२३४तीः ॥ शृणाऽ३४-
प घि रो ञु
५ ३ २ १ ४ ५ ४
औहो ॥ तुशक्राआ । शि । षाम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
दू या क क कु ता प

(दी.२। प.११। मा.७)२३(चे। २३४)

(१४१-१) ॥ दक्षणिधनमौक्षं । भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सविता वा ॥

५ ४ ५र र ४र ५र ४ २ १ र २ र १र
अद्यानोदेवसवितः । औहोवा ॥ इहश्रुधाइ । प्रजावाऽ२३त्सा । वीःसौभगाम् ॥
पै ति र कः र
र २ १ २ २ १ १ २ १ ।।।
परादूऽ२३ष्वा । होवाऽ३हा ॥ ज्यिँ्सूऽ२३४५वाऽ६ँ्५६ँ् ॥ दाक्षाऽ३याऽ२३४५ ॥
कः कः छी कि

(दी.८। प.९। मा.३)२४(ढि। २३५)

(१४१-२) ॥ मौक्षम् । भरद्वाजो गायत्री सविता ॥

३ २ र र ५ र ४ ५ २ र १ २र १र २ ४ ५
अद्याऽ३४ । नोदेवसा । विताः ॥ प्रजावत्सा । वीःसौभगाम् ॥ पाराऽ३दूष्वा॥
टु ता ता र र कु
२ १ २ १ ३ ५र र २ १ २ र १ २ ३ ।।।
प्रियँ्सुवोवाऽ३ ।ओऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ अस्माभ्यंगातुवित्तामाऽ२३४५म् ॥
चौ का दू प जौ

(दी.९। प.११। मा.३)२५(ति। २३६)

(१४२-१) ॥ भारद्वाजानि त्रीणि । त्रयाणां भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः ॥

कू२३४वस्यवाऽ५र्षभोयुवा ॥ तुविग्रीवोऽ२ । आनानताः ॥ ब्रह्माकाऽ२३स्ताम् ॥

ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही । सापर्याऽ२३ताऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.८। मा.६)२६(ड्रू। २३७)

(१४२-२)

कूवाकूवा ॥ स्यवृषाऽ३भोयुवाऽ३ । ओऽ३४ । हाहोइ । तुविग्रीवोआऽ३नानाताऽ३ः ।

ओऽ३४ । हाहोइ ॥ ब्रह्माऽ२३ ॥ काऽ२स्ताऽ२३४औहोवा ॥ सापर्यातीऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.१०। मा.५)२७(ड्रु। २३८)

(१४२-३)

ऐहीयैही । क्वस्यवृषभोयुवा ॥ ऐहीयैही । तुविग्रीवोअनानताः ॥ ऐहीयैही ।

ब्रह्माकस्तँ्सपर्यती ॥ ऐहीयैही । आऽ२इ ॥ हियाऽ३४औहोवा ॥ आऽ२३४इही ॥

(दी.२३। प.१०। मा.५)२८(णु। २३९)

(१४३-१) ॥ शाक्त्यसामनी द्वे । द्वयोः शाक्त्यो गायत्रीन्द्रः ॥

उपाह्वराइ । गिराऽ२इणाम् ॥ संगामेचा । नदाऽ२इनाम् ॥ धियाविप्रो ।

अजायाता ॥ अयाम् । अयाऽ३१उ । वा२३ ॥ ऊऽ३४पा ॥

(दी.१। प.१०। मा.७)२९(ङ्ये । २४०)

(१४३-२)

३ २ ३ ५ २ १२ ३२ ३२३ ५ २ र १ २
इदामीऽ२३४दाम् । इदामिदाकम् । इदामीऽ२३४दाम् । उपह्वरेगिऽ३राइणाम् ॥
औ जा औ छो
३ २ ३ ५ २ १२ ३ २ ३२३ ५ २ र १ २
इदामीऽ२३४दाम् । इदामिदाकम् । इदामीऽ२३४दाम् । संगमेचनाऽ३दाइनाम् ।
औ जा औ छो
३ २ ३ ५ २ १ २ ३२ ३२३ ५ २र र १ २
इदामीऽ२३४दाम् । इदामिदाकम् । इदामीऽ२३४दाम् । धियाविप्रोआऽ३जायाता ॥
औ जा औ छो
३ २ ३ ५ २ १ २ ३ २ ३ २ ४ १र २ १र
इदामीऽ२३४दाम् । इदामिदाकम् । इदाऽ३माऽ५इदाऽ६ँ५६ँम् ॥ गोष्पादेपूट्॥
औ जा टो कै

(दी.६। प.१६। मा.१९)३०(को। २४१)

(१४४-१) ॥ वार्षन्धरे द्वे । द्वयोर्वृषंधरो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र १ — १ — १ — १ १
प्रसम्राजाम् ॥ चार्षाऽ२णाइनाऽ२म् । आइन्द्राऽ२ँस्तोताऽ२३ । नव्याऽ२-
प धि धी
३ ५ १ — १ ४ ५ ४ ५
ङ्गाऽ२३४इर्भीः ॥ नाराऽ२न्नार्षाऽ२३ ॥ हम्मोवा । हाऽ५इष्ठोऽ६ँहाइ ॥
वू धी ता ति

(दी.१। प.७। मा.८)३१(खै । २४२)

(१४४-२)

४ ५र ४ १ २ २ १ २ २ १ ३
प्रासंम्राजोहाइ ॥ चार्षाणीऽ३नाम् । आइन्द्राँस्तोऽ३ताऽ३ । नव्याऽ२ङ्गाऽ२३४-
ती कः वि
५ ३ २ ३ ५र ३ २ ४ ४
इर्भीः ॥ नारामोइ । नृ । षाहमोऽ३इ ॥ मँहाऽ५इष्ठाम् । होऽ५इ ॥ डा ॥
वू पु ट पू ता ता प

(दी.२। प.१०। मा.१०)३२(जौ। २४३)

(१४४-३) ॥ कुत्सस्य प्रस्तोकौ द्वौ । द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

३ ४ ३र ४ ५ ३ ५ २ १ २ २ १ ५
प्रासंम्राजश्चा । षणाऽ२३४इनाम् ॥ इन्द्राँस्तोऽ३ताऽ३ । नव्याऽ२ङ्गाऽ२३४इर्भीः ॥
ठी दृ गि वू
४५ ४र५ ४ ५ ३ । । ।
नारन्नृषाहंमाऽ५ँहि । आऽ६ँहाउवा ॥ ष्ठाऽ२३४५म् ॥ (दी.२। प.७। मा.६)३३(घ्र। २४४)
तै पा दृ

(१४४-४)

प्रासंम्राजश्चर्षणीनामिन्द्रँ स्तोताना । व्यंगाऽ६ँ इर्मीः ॥ इन्द्रँ स्तोतानव्यंगाऽ२३-
इर्मीऽ३४ः ॥ नारंनृषाहम् । माऽ५ँ हिष्ठाम् ॥ सहमैहैऽ३होऽ२ । याऽ२३४-
औहोवा ॥ मँ हिऽ३ष्ठाऽ२३४५म् ॥ (दी.१२। प.८। मा.८)३४(जै। २४५)

॥ विंशतिस्तृतीयः खण्डः ॥३॥ दशतिः ॥३॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्थस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(१४५-१) ॥ औपगवे द्वे । द्वयोरुपगुर्गायत्रीन्द्रः ॥

अपादुशी ॥ प्रियंधसाः । सुदक्षाऽ२३स्या । प्रहोषिणः ॥ इन्दोराऽ२३इन्द्राः ॥
यावाशाऽ२३इराः । ऐ । हियाऽ२इ । हियाऽ३४औहोवा ॥ एऽ३ । उपाऽ३१२३४५ ॥

(दी.७। प.११। मा.८)१(चै। २४६)

(१४५-२) ॥ औपगवोत्तरं सौश्रवसं वा ॥

अपादूऽ३शिप्रियंधसाः ॥ सुदक्षस्यप्रहोषिणाः । इन्दौऽ२ । हौऽ२ । हुवाऽ२३इ ।
आऽ३४इन्द्रो ॥ यवाशाइराः ॥ ऐ । हाऽ२एऽ२३ । हियाऽ३४औहोवा ॥
एऽ३ । उपाऽ३१२३४५ ॥ (दी.६। प.१२। मा.८)२(खै। २४७)

(१४६-१) ॥ त्वाष्ट्रीसाम । त्वष्टा गायत्रीन्द्रः ॥

इमाउत्वा ॥ पुरूऽ२वासाऽ२उ । अभिप्रनोनवूऽ२र्गाइराऽ२ः ॥ औहोऽ१इ ।
गावोवात्साऽ२३म् ॥ नाऽ२३धेऽ३ । नाऽ३४५वोऽ६ँहाइ ॥

(दी.५। प.७। मा.७)३(फे। २४८)

(१४७-१) ॥ त्वष्टरातिथ्ये द्वे । त्वष्टा गायत्रीन्द्रः (त्वष्टृचन्द्रमसौ वा) ॥

आत्रा ॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३ । होवाऽ२३होइ ॥ नामत्वष्टुरपीचियाउवाऽ२३ ।
होवाऽ२३होइ ॥ इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३ । होवाऽ२३होऽ२ । वाऽ२३४-
औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥ (दी.८। प.९। मा.६)४(द्वू। २४९)

(१४७-२)

हावात्रा ॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३ । होइयाऽ२३ । हाऽ२ऊवाइ ॥ नामत्वष्टुर-
पीचियामियाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया ॥ इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३ ।
होइयाऽ२३ । हाऽ२ऊवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.८। प.१०। मा.१०)५(ण्वौ। २५०)

(१४८-१) ॥ पौषे द्वे । द्वयोः पूषा गायत्रीन्द्र पूषणौ ॥

यदिन्द्रोया ॥ नायाऽ२३त् । ओमोऽ३म् । ओवा । रितोमहीरापाऽ२३ः ।
ओमोऽ३म् । ओवा ॥ वृषावृषाऽ२३ ॥ तामाऽ३४औहोवा ॥तत्रापूषाभुवत्साचाऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.१०। मा.५)६(ञ्जु। २५१)

(१४८-२)

५ र ५ १र — १र १२ ३ ५
यदिन्द्रोअनयद्रिताऽ६ँ ऽए ॥ महीरापाऽ२ः । महीरापाऽ२३ः ॥ वार्षन्ताऽ२३४माः ॥
पा का कि वू

१ २ १ ३ ५र र २ १ ३ १ । ।
तत्रापूषाऽ३ । पूऽ२षाऽ२३४औहोवा ॥ भुवत्साचाऽ२३४५ ॥
कि वे शि

(दी.५। प.७। मा.६)७(फू। २५२)

(१४९-१) ॥ श्यावाश्वे द्वे । द्वयोः श्यावाश्वो विराड् गायत्रीन्द्रः (मरुतो वा) ॥

५र ५ २ १ अ न २ ३ ५
गौर्द्धयाऽ६ँ ऽए ॥ तिमरुताऽ३म् । श्रवास्युर्माऽ३ । तामाघोऽ२३४नाम् ॥
पा चा घी शै

१ अ ३ २ १ ३ ५र र ३ ५
युक्तावाह्वाइः ॥ राथाऽ३ । नाऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
क टी वे द्व

(दी.३। प.८। मा.६)८(ड्वू। २५३)

(१४९-२)

५र ५ २ १ विर १र र विर १ २
गौर्द्धयतिमरुताऽ६ँ ऽमे ॥ श्रवस्युर्माऽ२तामघोनाऽ२म् । उहुवाऽ२३हाइ ॥
पा छु जा

१र २ १ २र १ ४ ५ ४
युक्तावाऽ२३ह्वीः ॥ उहुवाऽ२३हाइ । रथानाम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा जा र कु ता प

(दी.७। प.९। मा.६)९(झू। २५४)

(१५०-१) ॥ सुतँरयिष्ठीये द्वे । द्वयो प्रजापतिर्निचृत् गायत्रीन्द्रः ॥

२१ ४ ५ ४५ २र १ २ र २ १ २ ३ २
उपनोऽ२३हरिभिस्सुतोवा ॥ याहिमदाऽ३नाम्प । ताऽ२३इ ॥ उपानोऽ३ ।
क्षू जा कि शी

२ १ ५ ३ ५ २ १ ४५ ४
हाऽ३ओऽ२३४वा ॥ राऽ२३४इमीः । सुताम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
ण द्व र कु ता प

(दी.२। प.१०। मा.६)१०(ञू। २५५)

(१५०-२)

५ २ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २ २ १२ २
उपनोहाहोहा । राइभीः ॥ सूऽ२३ताम् । याहिमदा । नांपाऽ२३ताइ ॥
पै ता कः का कः

३ २ ३ ५ १ ३ ५२२ २ १ २ १ ।।।
ऊपानोऽ२३४हा ॥ राऽ२इभाऽ२३४औहोवा ॥ सुतँ रायिष्ठाऽ२३४५ः ॥
ठौ वे छे

(दी.६। प.८। मा.७)११(गे। २५६)

(१५१-१) ॥ इष्टाहोत्रीयं अप्सरसो गायत्रीन्द्रः ॥

५ २ ४ ५ १ २ ३ ५ २ १ अ ३ ५
इष्टाहोत्राः ॥ आसृक्षाऽ२३४ता । इन्द्रंवृधा । तोऽ२ध्वाऽ२३४राइ ॥
पै वू र त्रु

१ २ ४ ५ ३ २ ४ २ २ १ २
आच्छाऽ३वोभृ ॥ थामोऽ३जाऽ५साऽ६ँ ५६ँ ॥ एऽ३ । उदधिर्निधीऽ१ः ॥
कु टो त्रा रो

(दी.१। प.८। मा.३)१२(गि। २५७)

(१५२-१) ॥ प्रजापतेर्निधनकामं सिन्धुषाम वा ॥ प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः सूर्यो वा ॥

४ ४ २२१२ २ १ र अ —
अहमिद्धाऽ५इपितुःपराइ ॥ मेधामृतस्यजग्रहा ॥ आहँ सूर्याः ॥ इवाऽ२३४ ।
ती र र त्रि

३२ २ १ २२१२ २२१
हाहोइ ॥ जनि । होइ । होइ । औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ ॥ वा ॥
य क क क छै प

(दी.७। प.१०। मा.८)१३(जै। २५८)

(१५३-१) ॥ रेवत्यः वाजदावर्यो वा । वाजदावर्यो प्रजापतिः गायत्रीन्द्रः ॥

५२ २ १ ३ ५ १ ३ ५ २१ — १
रेवतीर्नाः ॥ सधाऽ२माऽ२३४दाइ । इन्द्राऽ२इसाऽ२३४न्तू । तुविवाऽ२जाः ॥
प वू वू रो

२ — १ २ १ ५ ४ ५
क्षूऽ२३मा ॥ तोऽ२या । भिर्मोऽ२३४वा । दाऽ५इमोऽ६ँ हाइ ॥
कः कै छ ति

(दी.२। प.८। मा.६)१४(जू। २५९)

(१५४-१) ॥ सौमापौषं गोमश्वीयं वा । सोमपूषणावृषी गायत्रीन्द्रः ॥

५र र २ १ २ ३ २ ३ ५ १ र २र र १
सोमःपूषा ॥ चाचाइतातुः । आयायोऽ२३४वा । वाइश्वासाँ सुक्षिती । नाम् ।
प चो ठौ का क

३ २ ३ ५ १ अ २ ४
आयायोऽ२३४वा ॥ दाइवात्राराऽ२३ ॥ थियोऽ३र्हाऽ५इताऽ६ ँ५६ ँ ॥
ठौ घी टो

१र विर १ ३ । । ।
गावोऽ२आश्वाऽ२३४५ः ॥ (दी.७। प.९। मा.८)१५(झै। २६०)
वः

॥ पञ्चदशः, चतुर्थः खण्ड ॥४॥ दशतिः ॥४॥

(१५५-१) ॥ वैतहव्यानि त्रीणि । त्रयाणां वीतहव्योऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

४र ५४र ५र ४ ५ ४ २ १ २ १ २ २ २ १ २
पान्तामावोअन्धासाः ॥ इन्द्रामाभि । प्रागायाताऽ३ । हाऽ३हाइ । विश्वासाहुम्।
तो चो चौ चे चे

१ २ २ २ १ २ २ २ १
शाताक्रातूऽ३म् । हाऽ३हाइ ॥ मँ हाइष्ठंचाऽ३ । हाऽ३हा ॥ षाणाऽ२इ ।
चौ चे चौ चे चो

३ ५र र २ ५
नाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.५। प.१२। मा.९)१६(फ्लो। २६१)
टे रौ

(१५५-२)

४र ५४र ५र४ ५ ४ २ १ २र १ — १ २ १र र
पान्तामावोअन्धसः । इहा ॥ इन्द्रमभाइ । प्रगायाताऽ२ । इहा ॥ विश्वासाहँ-
तै त र चो का

— १ २ — १ २ — १ ३ । । ।
शताऽ२क्रातूम् । इहा ॥ मँ हाऽ२इष्ठंचा । इहा ॥ षाणाऽ२इनाम् ॥ इहाऽ२३४५ ॥
कै का रै का रै गा

(दी.६। प.११। मा.७)१७(के। २६२)

(१५५-३) ॥ ओकोनिधनं वैतहव्यम् ॥

पाऽ५न्तम् । आऽ३वोऽ३अन्धासाः ॥ आइन्द्रामभाइ । प्रागाऽ२याऽ२३४ता ।
विश्वाऽ२सा२३४हाम् ॥ शाऽ३ताक्राऽ३तूम् ॥ मँहिष्ठंचर्ष । णायेऽ३ ।
नाऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ ओऽ३काऽ२३४५ः ॥

(दी.२। प.१०। मा.९)१८(ञो। २६३)

(१५६-१) ॥ शाक्त्यानि षट्, शाक्त्ये सामनी द्वे । षण्णां शाक्त्यो गायत्रीन्द्रः ॥

प्रवइन्द्राऽ२ । यामादाऽ२३४नाम् । प्रवाऽ२इन्द्रा । औऽ३हो । याऽ२३४मा ॥
दाऽ३नाम् ॥ हाराऽ२अश्वा । औऽ३हो । याऽ२३४गा ॥ याऽ३ता ॥
साखाऽ२यास्सो । औऽ३होऽ३ । मापोऽ२३४वा ॥ आऽ५ल्नोऽ६ँहाइ ॥

(दी. नास्ति। प.१४। मा.६)१९(लू। २६४)

(१५६-२)

प्रवाऽ२इन्द्रा । औऽ३हो । याऽ२३४मा । दाऽ३नाम् ॥ हराऽ२अश्वा । औऽ३हो ।
याऽ२३४गा ॥ याऽ३ता । साखाऽ२यास्सो । औऽ३होऽ३ ॥ मापोऽ२३४वा ।
आऽ५ल्नोऽ६ँहाइ ॥ (दी.नास्ति। प.१२।मा.४)२०(वी। २६५)

(१५६-३) ॥ गौरीविते द्वे ॥

१ न २ न २ १ र न २ न २ ३ ५ २ २
प्रवाईऽ३या । ईऽ३या । इन्द्रोईऽ३या । ईऽ३या । याऽ२३४मा । दाऽ३नाम् ॥
खु खु खु खु दू चे
न २ न २ १ र न २ न २ ३ ५ २ २
हराईऽ३या । ईऽ३या । आश्वोई३या । ईऽ३या । याऽ२३४गा । याऽ३ता ॥
खु खु खु खु दू चे
२ न २ न २ १ र न २ न २ १ ५
सखाईऽ३या । ईऽ३या । यास्सोईऽ३या । ईऽ३याऽ३ ॥ मापोऽ२३४वा ।
खु खु खु खू कु
४ ५
आऽ५ल्नोऽ६हाइ ॥ (दी.३। प.१८। मा.८)२१(डै। २६६)
ति

(१५६-४)

२ र १ — १ र २ ३ ५ २ २ र १ १ र २
प्रवौहोवाऽ२ । इन्द्रौहोवा । याऽ२३४मा । दाऽ३नाम् ॥ हरौहोवाऽ२ । आश्वौहोवा ।
चो का दू चे चो का
३ ५ २ २ र १ — १ र २ १ ५
याऽ२३४गा । याऽ३ता ॥ सखौहोवाऽ२ । यास्सौहोवाऽ३ ॥ मापोऽ२३४वा ।
दू चे चो कि कु
४ ५
आऽ५ल्नोऽ६ँहाइ ॥ (दी.६। प.१२। मा.२)२२(खा।२६७)
ति

(१५६-५) ॥ शाक्त्यं साम् ॥

२ र १ २ २ १ र २ २ ३ ५ २ २
प्रवोदाऽ३दा । औऽ३हो । इन्द्रोददा । औऽ३हो । याऽ२३४मा । दाऽ३नाम् ।
रा चे क चे दू चे
१ २ २ १ र २ २ ३ ५ २ २
हरिदाऽ३दा । औऽ३हो । आश्वोददा । औऽ३हो । याऽ२३४गा । याऽ३ता ॥
रा चे क चे दू चे
१ २ २ १ र २ २ १ ५
सखिदाऽ३दा । औऽ३हो । यास्सोददा । औऽ३होऽ३ ॥ मापोऽ२३४वा ।
रा चे क शी कु
४ ५
आऽ५ल्नोऽ६ँहाइ ॥ (दी.४। प.१८। मा.२)२३(दा। २६८)
ति

(१५६-६) ॥ गौरीवितम् ॥

४ ५ ४ २ रर र १ २ — र १ २ —
प्रावः । प्रावाः ॥ इन्द्रायेन्द्रा । यमादाऽ१नाऽ२म् । हराइहरियश्वा । यगायाऽ१ताऽ२ ॥
ता पि च घि च घि
१र २ १ ५ ४ ५
सखायाऽ२३स्सोऽ३ ॥ मापोऽ२३४वा । आ५ल्नोऽ६ँहाइ ॥ (दी.५। प.९। मा.५)२४(धु। २६९)
जि कु ति

(१५७-१) ॥ काण्वे द्वे । द्वयोः कण्वो गायत्रीन्द्रः ॥

वयंवायाम् ॥ ऊऽ२३४त्वा । तादीदाऽ२३४र्थाः । इन्द्रत्वायन्तः । सखाऽ२३४याः॥

कण्वाऽ३१२३४ः ॥ उक्थेभिर्जरन्ते । एहियाऽ६ँहा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१०। मा.६)२५(नू । २७०)

(१५७-२)

वयामूऽ३त्वातदिदर्थाः ॥ ऐहिहाऽ२इ । वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तस्साखा-

ऽ२३याः ॥ काऽ२३४ण्वाः ॥ ऊ । क्थाइ । मिर्जोऽ२३४५वा ॥ रन्ताऽ३याऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.८। मा.६)२६(बू। २७१)

(१५८-१) ॥ गौरीविते द्वे । द्वयोर्गौरीवितो गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रायमद्वानाइ ॥ सुताम् । इन्द्रायमद्वनेसुताम् । पाराइष्टोऽ२३भा । तुनोगिरो ॥

अर्कमाऽ२३र्चा ॥ तुकाराऽ२३वाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.९। मा.६)२७(भू। २७२)

(१५८-२)

इन्द्रायमद्वनेहाउ ॥ ओइसूऽ३ताम् । परिष्टो । भा । तुनोऽ२३हाइ । गाइराऽ२ः ।

परिष्टोमा । तूनोऽ२३हाइ ॥ गाइराऽ२ः ॥ अर्कोऽ२३म् ॥ आऽ२र्चा२३४औहोवा ॥

एऽ३ । तुकाऽ३रवाऽ२३४५ः ॥ (दी.६। प.१३। मा.१२)२८(गा। २७३)

(१५८-३) ॥ श्रौतकक्षम् । श्रुतकक्षो गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५र ४५ र ४ ५ र ४ ५ २ १ २ २ १ २र १
इन्द्रायामद्वनेसुतम् । इन्द्रायमोवा ॥ द्वाऽ३नाइसूऽ३ताम् । परिष्टो । भाऽ२३।
ते पै छं का कि

२ २ १ ३ ५ १ २ २ २ १र
हाऽ३हाऽ३ । तूनोऽ२गाऽ२३४इराः ॥ आर्कमर्चाऽ३ । हाऽ३हा ॥ तुकाराऽ२३-
सी चू कि चे

२ १
वाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
पु कु प

(दी.५। प.१२। मा.७)२९(फे। २७४)

(१५९-१) ॥ सौमित्रे द्वे । द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः ॥

५ २ १र २ १ २ १रर २ १ २ ३ ५
अयंतआ । द्रासोमो । होवाऽ३होइ । निपूतोआऽ३ । धीबर्हाऽ२३४इषी ॥
प र कौ चौ चू

१ २र १ १ ३ ५र र ३ ५
आइहीमस्याऽ२३ ॥ द्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ पीऽ२३४बा ॥
घी वै दू

(दी.६। प.८। मा.६)३०(गू। २७५)

(१५९-२)

५ ५ १ र र — १ — र — १
अयंतइन्द्रसोऽ४माः ॥ निपूतोअधिबाऽ२र्हाइषीऽ२ । ऐहोऽ२इमास्या ॥
पै घि रै

२ र १ — १ र २ ५
द्रवापाइबाऽ२ । आइहीमस्याद्रवाऽ३१उवाऽ२३ ॥ पीऽ२३४बा ॥
चो झ दू

(दी.५। प.६। मा.८)३१(पै । २७६)

(१५९-३) ॥ इहवद्दैवोदासम् । दिवोदासो गायत्रीन्द्रः ॥

४ ३ ४ ३ ५ १ र ५र ४ ५ ४ ५ १ र र २ १ २
आयंताइन्द्रासोऽ४मः । नाऽ२३४इ । पूतोआधिबर्हिषी ॥ निपूतोआधिबर्हाऽ२३इषी ॥
थि की तै रै

र १ २ १र ३ ५
ऐहोइमाऽ२३स्या ॥ द्रावापाऽ२३४५इबाऽ६ँ५६ँ ॥ ईऽ२३४हा ॥
जा छी दू

(दी.६।प.७मा.८)३२(खै । २७७)

(१६०-१) ॥ शांकरवर्णम् । शांकरवर्णो गायत्रीन्द्रः (प्रजापतिर्वा) ॥

४५ २१ २२१ २१२र १ — १२ २ ५
सूरू ॥ पाकृत्लुमूतायाइ । सुदुघाम् । इवगोऽ२ । दुहयाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३४पा ॥
ता रो चो का ड ची
२१र २ १ २ २ ५
जुहूमाऽ२३सी ॥ द्यविद्यवियाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३२३४पा ॥
जा ड शे

(दी.३। प.९। मा.४)३३(द्ली ।२७८)

(१६०-२) ॥ (रैणवम् । रेणुर्गायत्रीन्द्रः प्रजापतिर्वा) ॥

५र र २ १ — — १२र १ — १२र रर३र२
सुरुहाहाउ ॥ पाकृत्लुमूऽ२तायाऽ२इ । सुदुघाम् । इवगोऽ२ । दुहे । ऐहीयैहीऽ१ ॥
प डु चो का का रि
२ — — १ — १ — १ २र र ३र २
जुहौऽ२ । हौऽ२ । हुवाऽ२इ । मासीऽ२ ॥ द्यविद्यवि ॥ ऐहीयैहीऽ१ ॥
चो का का का क रि

(दी.१०। प.१२। मा.४)३४(फी । २७९)

(१६०-३) ॥ औदले द्वे, उदलःवीकम्, वीं को गायत्रीन्द्रः (प्रजापतिर्वा) ॥

२र १ ५ १ र २ — १ र
सुरुपकृत्लूऽ३मूताऽ२३४याइ ॥ ओइसुरुपकृत्लूमू१तायाऽ२इ । ओइसुदुघामि-
ज धि
२ — १र ३ २ ३ ५ ४ ५ १ — १ —
वागोऽ१दुहाऽ२इ । जुहूमसाऽ२इ । द्याविद्याऽ२३४वी । ऐही ॥ जूहूऽ२मासीऽ२ ॥
धि का ठौ ता धि
२ १ ४ ५र ४ ५र ५ २ २ १ । । ।
द्याविद्या । वीवीऽ२३ । आऔहोइ । आऔहोऽ६ँवा ॥ एऽ३ । द्यविऽ३ईऽ२३४५ ॥
र कि ता ति चा

(दी.६। प. ।१३। मा.१०)३५(गौ । २८०)

(१६०-४) ॥ औदलम् । उदलो गायत्रीन्द्रः (प्रजापतिर्वा) ॥

४ ५र ४ १ — १ २१र२ १२३ ५ ४५र४
सुरुपकृ ॥ त्लूमूऽ२तायाइ । सुदुघामीऽ३ । वागोदूऽ२३४हाइ ॥ सुदुघामा ॥
ती कै चौ चू ती
१ — १ २१र २ १ ४ २ ५
वागोऽ२दुहाइ । जुहूमाऽ२३सीऽ३ । द्याऽ२३वीऽ३ । द्याऽ३४५वोऽ६ँहाइ ॥
कै जि ख चू

इति ग्रामे गेयगाने चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ (दी.४। प.९। मा.४)३६(धी । २८१)

(१६१-१) ॥ आर्षभानि सैन्धुक्षितानि वा वाभ्राश्वानि वा त्रीणि । त्रयाणामृषभो गायत्रीन्द्रः ॥

आभित्वावृषभासुताइ ॥ सूतँ्सृजा । मिपाइताऽ१याऽ२इ ॥ तृम्पावाऽ१याऽ२ ॥

श्नुहाऽ३१उवायेऽ३ ॥ माऽ२३४दाम् ॥ (दी.३। प.६। मा.५)१(दु ।२८२)

(१६१-२)

अभित्वावृषभासुतेअभ्याहाउ ॥ त्वावृऽ३षाभाऽ१सूताऽ२इ । सूत ँ्सृजा ।

मिपाइताऽ१याऽ२इ ॥ तृम्पाऽ३होइ । वियाऽ३हो ॥ श्नुहीमाऽ२३दाऽ३४३म् ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी. ७। प.९। मा.८)२(झै ।२८३)

(१६१-३)

आभित्वावृषभासुते । सुतँ्सृजोवा ॥ मिपीतायाऽ२इ । सुतँ्सृजामि । पीताऽ२३-

याइ ॥ त्राऽ२३म्पाऽ३ ॥ वाऽ२याऽ२३४औहोवा । श्नुंहींमादाऽ२३४५म् ॥

(दी.७। प.८। मा.४)३(दी । २८४)

(१६२-१) ॥ कौत्से पाञ्चवाजे वा दाशवाजे वा द्वे, ऐडकात्सम् । द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

याहीन्द्राऽ२३ । चामांसेषुवाईया ॥ सोमश्चामूषुतेसुतः । सोमश्चमू । षुताइसूऽ२३ताः ॥

पाइबेऽ३व्हाइ । आस्याऽ३हाइ ॥ त्वामीशाऽ२३इषाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.१०। मा.१०)४(जौ ।२८५)

(१६२-२) ॥ स्वार कौत्सम् ॥

५ र ५र १र र २ २ २ र २ १
यइन्द्रचामाऽ६ँ॒सेषुवा ॥ सोमश्चमूषुताऽ१इसूऽ३ताः । सोमश्चमूऽ३ । षूऽ३ताइ-
पा धै चा
२ २ १ र ३ ५ ३ २ ४
सूऽ३ताः॥ आऽ२३इ । पिबेदस्योऽ२३४ हाइ ॥ त्वामाऽ३इशाऽ५इषाऽ६ँ॒५६ँ॒इ ॥
छं कि शे टे

(दी. ६।प.७। मा.१०)५(खौ ।२८६)

(१६३-१) ॥ सौमेधानि, पूर्वतियानि वा पौर्वातिथानि वा त्रीणि । त्रयाणां सुमेधा गायत्रीन्द्रः॥

४र ५र र र ४ ५ ४ १र र २र र र र १र २ २ १ ५
योगेयोगेतवस्ताराम् ॥ वाजेवाजेहवामहे ॥ साखायाऽ२३ईऽ३ ॥ द्रामूऽ२३४वा ।
ते का जि छ
४ ५
ताऽ५योऽ६ँ॒हाइ ॥ (दी.११। प.५।मा.३)६(ङि।२८७)
ति

(१६३-२)

५र र र र ५ १र विर १र विर १ विर १ २ २
योगेयोगेतवस्ताऽ६ँ॒राम् ॥ वाजेऽ२वाजेऽ२हावाऽ२माहेंऽ३ । होवाऽ३हाइ ॥
पा कः
१ — १ १ २ २ २ १ १ ३ ५र र
साखाऽ२याईऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥ द्रामूऽ२३ । ताऽ२याऽ२३५औहोवा ॥
घी कः चौ वे
२ ५
ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.११।प.८। मा.५)७(ग्लु ।२८८)
शे

(१६३-३) ॥ सौमेधम् ॥

५र र र र र र ४ ५ १ र २र र — १ २
योगेयोगेतवाहाउस्ताराम् ॥ वाजेवाजे । हावाऽ२माहाइ । हूवाइ । औऽ३हो-
पे का र क
५ १ २र १ — १ २ ५ ३ र २ १
ऽ२३४वा । साखायाइ । द्रमूऽ२तायाइ । हूवाइ । औऽ३होऽ२३४वा ॥ सखायाआ ॥
शे कै कै क शे
१ — न २ १ । । ।
हूवाऽ२इ । औऽ३होऽ२३४५वाऽ६ँ॒५६ँ॒॥ द्रमूऽ३तयेऽ२३४५ ॥
का गि ज

(दी.११। प.१३। मा.९)८(गो ।२८९)

(१६४-१) ॥ दैवातिथं मैधातिथं वा । देवातिथिर्गायत्रीन्द्रः ॥

आतूऽ३४ । एतानि । षीदाऽ६ँ ता ॥ इंद्रामभाइ । प्रगायता । साखायस्तोमा । वा । औऽ३हो ॥ ववाऽ२हाऽ२३४साः ॥ हायाइ । साखायस्तोम । वा । औऽ३हो ॥ हिम्माऽ२३ । हाऽ३४५सोऽ६ँ हाइ ॥ (दी.९। प.१५। मा.४)९(नी। २९०)

त्रिंशत् पञ्चमः खण्डः ॥५॥ दशतिः ॥५॥

(१६५-१) ॥ आंगिरसं माधुछन्दसम् वा । मधुछन्दा, वर्धमाना, गायत्रीन्द्रः ॥

इदाऽ६ँ मे ॥ हियाऽ३नूओऽ१जासाऽ२ । सूतँ राधा । नाम्पाऽ१ताऽ२इ । पिबातुक-स्यागिर्वाणाऽ२३४ः ॥ पिबाऽ३४तुवाऽ३ ॥ स्याऽ२गाऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४णाः॥ (दी.३। प.८। मा.५)१०(डु ।२९१)

(१६५-२) ॥ कौञ्चम् । कौंचो, वर्धमाना, गायत्रीन्द्रः ॥

इदँ हियाऽ४औहो ॥ नूऽ३ओजाऽ२३४सा । सूतँ राधा । नाऽ३२म् । पाऽ२३४ताइ ॥ पिबातुवस्याऽ२३ । ग । वाहाइ ॥ वाऽ२३४णाः । एहियाऽ६ँ हा । होऽ५इ ॥ डा॥ (दी. २। प.१२। मा.७)११(छे ।२९२)

(१६५-३) ॥आंगिरसं घृतश्चुन्निधनं प्राजापत्यं माधुच्छन्दसं वा । प्रजापति र्वर्धमाना गायत्रीन्द्रः॥

इदँ ह्यनूऽ६ँ ओजसा ॥ सुतँ राधा । नाम्पातौ । होवाऽ३हाइ । पिबातुव । स्यागाइर्वाणौ । होवाऽ३हाइ ॥ पिबातुवौ । होवाऽ३हा ॥ स्यागायेऽ३ः । वाऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ घृतश्चुताऽ२३४५ः ॥ (दी.९। प.१२। मा.७)१२(थे ।२९३)

(१६६-१) ॥ वाम्राणि प्रैयमेधानि वा त्रीणि । त्रयाणां वम्रो गायत्रीन्द्रः ॥

महा ँइन्द्राः ॥ पुरश्चनो । माऽ१हीऽ२त्वामाऽ२ । स्तुवा । व्रिणाइ ॥
द्यौऽ२र्नाप्राऽ२ । थिनाशाऽ२३वाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१। प.९। मा.५)१३(घु । २९४)

(१६६-२)

महाहा ँइन्द्राः ॥ पूऽ३राश्चाऽ३नो । महाऽ२इत्वाऽ२३४मा । स्तुवौऽ३हौऽ३ ।
हवाऽ५व्रिणाइ । द्यौर्नप्रा । थिनाशावाऽ२३ः ॥ द्यौऽ२र्न्नाऽ२३४प्रा । थिनौऽ३-
हौऽ३ । हवोवा । शाऽ५वोऽ६ ँहाइ ॥ (दी३। प.११।मा.६)१४(दू ।२९५)

(१६६-३)

महा ँइन्द्राऽ५ःपुरश्चनाः ॥ माहित्वाऽ३२३२३मा ।स्तुवव्राऽ३२३२३इणाइ ॥
द्यौर्न्नाऽ३२३२३प्रा ॥ थिनाशावाऽ३२३२३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.७। मा.६)१५(दू ।२९६)

(१६७-१) ॥ गौरीविते द्वे । द्वयोर्गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः ॥

आतूनआ ॥ द्रक्षुमाऽ२३न्ताम् । चाइत्रंग्राभाऽ२३ ँहाइ । संगृऽ२भाया । महाहस्तो-
ऽ२३४हाइ । दक्षाऽ२इणाइना ॥ महाऽ२३ ॥ हाऽ२स्ताऽ२३४औहोवा ॥
दक्षिणेऽ३नाऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.९। मा.८)१६(घै ।२९७)

(१६७-२)

आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम् ॥ चित्राऽ२ङ्ग्राऽ२३४भाम् । संगृभाऽ२३४या ॥ माऽ३-

हाऽ३ ॥ हाऽ२स्ताऽ२३४औहोवा ॥ दक्षिणेनाऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.६। मा.४)१७(पी ।२९८)

(१६७-३) ॥ आपाले वा आकूपारे वा द्वे । द्वयोराकूपारो गायत्रीन्द्रः ॥

आतूनाइ । द्रक्षुमाऽ६ँ्न्ताम् ॥ चित्रंग्राभँ्संगृभाऽ२या । चित्रंग्राभँ्सम् । गृ ।

औऽ३होइ । भाऽ२३४या ॥ ऐहोइ । महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ ॥ औहो ।

वाहोऽ२३४वा । णाऽ५इनोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.९। प.१२। मा.८)१८(थै । २९९)

(१६७-४)

आतूनइन्द्रक्षुमाऽ६ँ्न्ताम् ॥ चित्रंग्राभँ्संगृभाया । चित्रंग्राभँ्सम् । गृऽ२ ।

ईऽ२३४हा । भाऽ२३४या ॥ ऐहोइ । महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ ॥ औहो ।

वाहोऽ२३४वा । णाऽ५इनोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.१०। प.११। मा.७)१९(पे । ३००)

(१६८-१) ॥ धुरोःसामनी द्वे । द्वयोर्धुरो गायत्रीन्द्रः ॥

आमीआमी ॥ प्रगोऽ३पातिंगिराऽ२ । इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२३४इ ॥ सूनूऽ३ँ्होइ ।

सत्योऽ२३४हा ॥ स्याऽ२सा२३४औहोवा ॥ पतिइमेऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.६। मा.४)१७(थी।३०१)

(१६८-२)

आमीआमी ॥ प्रगो । पातिंगिरा । इन्द्राम् । अर्चायाऽ२३४था । हिम्ऽ३हिम्ऽ३ ।

आ२३४इविदाइ ॥ सूनुँ्सत्यस्यासा ॥ हिम्ऽ३हिम्ऽ३ । ओ२३४वा ॥

पा५तो६ँ्हाइ ॥ (दी.१।प.११।मा.९)२१(को ।३०२)

(१६८-३) ॥ महागौरीवितं गौरीवितं वा । शाक्त्यः गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः ॥

अभि । प्रगोऽ३ । पतिंगिरा ॥ इन्द्रमर्चयथाविदाऽ२३इ । सूनुँ्सत्याऽ३१२३ ।

स्यसाऽ५त्पताइम् ॥ सूनुँ्सत्याऽ३१२३ ॥ स्यसोवा । पाऽ५तोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.१। प.९। मा.४)२२(घी । ३०३)

(१६९-१) ॥ वाचस्सामनी द्वे । द्वयोर्वाक् गायत्रीन्द्रः ॥

कयानश्वी ॥ त्रआभूऽ३वात् । ऊताइस । दा । वार्द्धःसाऽ२३४खा ॥ कयाशा-

ऽ३चीऽ३ ॥ ष्ठाऽ२३याऽ३ । वाऽ३४५र्तोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.२। प.८। मा.४)२३(जी । ३०४)

(१६९-२)

होवाइ । होवाइकयानश्वी ॥ त्राआभूऽ३वाऽ३४त् ॥ होवाइ । होवाऊतीसदा ॥

वृधास्साऽ३खाऽ३४ ॥ होवाइ । होवाइकयाशचाइ ॥ ष्ठाया । वाऽ२र्त्ताऽ२३४-

औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥ (दी.१९। प.११। मा.१०)२४(त्वौ । ३०५)

(१६९-३) ॥ महावामदेव्यं वामदेव्यं वा । वामदेवो गायत्रीन्द्रः ॥

३ र ४ २ ४र ५ १ र २ १र २ १ २ र २
काऽ५या । नश्चाऽ३इत्राऽ३आमुवात् ॥ ऊ । तीसादावृधस्सा । खा । औऽ३होहाइ ।
टा पौ क गो क चे
१ २ ३ र २ १ — १ प २
कयाऽ२३शचाइ ॥ ष्ठयौहोऽ३ । हिंमाऽ२ । वाऽ२र्तोऽ३५हाइ ॥
कः टी का खि

(दी.६। प.१०। मा.६)२५(ञू । ३०६)

(१७०-१) ॥ इन्द्रस्य सत्रासाहीये, अजितस्य आजितीवा द्वे । द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

५ २ र १ — १र र २ — १र
त्यमुवाः ॥ सत्रासाहाऽ२म् । विश्वासुगीर्षूआऽ१याताऽ२म् । आच्याऽ२३ ॥
प चो धि कि
१ ३ ५र र २ १ । । ।
वाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ सियूऽ३तयेऽ२३४५ ॥
वे ज

(दी.६। प.६। मा.५)२६(कु । ३०७)

(१७०-२)

२ ५ र ४र५ ५ १ र र र — १ — १
त्याऽ३४म् । उवस्सत्रासाहाम् । ओऽ६ वा ॥ विश्वासुगीर्ष्वायाऽ२ताम् । आऽ२च्या ।
धि तु पा कै कै
२ १ न २र ३र २ १ ५ ५
वाऽ२३या ॥ सियौऽ३हो । वाहाऽ३४३इ ॥ ताऽ२३४योऽ६ हाइ ।
कः खु ठः कू

(दी.७। प.९। मा.५)२७(झु । ३०८)

(१७१-१) ॥ वामदेव्यम् । वामदेवो गायत्रीन्द्रः (मेधाः) ॥

४ ५ १ अ २ ३ ५ १ २ ३ ५ १
सादा ॥ सस्पताइमादभूता । ओऽ२३४वा । प्रायाओऽ२३४वा ॥ आइन्द्रा ।
ता धि दू वू क
२ ३ २ १ विर १र २र ३ । । ।
स्याकामाऽ२३४५याऽ६ ५६ म् ॥ सानिंमेऽ२धामयासिषाऽ२३४५म् ॥
वै जौ

(दी.३। प.७। मा.५)२८(डु । ३०९)

(१७२-१) ॥ अश्विनोःसाम । अश्विनौ गायत्रीन्द्रः ॥

हाइ । आप्सूदाऽ२३४क्षाः । (द्विः) । येतेपंथाआऽ३धोदिवाऽ२३४५ः ॥ हाइ । आप्सूदाऽ२३४क्षाः । (द्विः) । येभिर्व्यश्वाऽ३माइरायाऽ२३४५ः ॥ हाइ । उताश्रो-ऽ२३४षा ॥ तुनोऽ२३ । भूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४ती ॥

(दी.६। प.१३। मा.१२)२९(गा । ३१०)

(१७३-१) ॥ गौतमस्य भद्रं । गोतमो गायत्रीन्द्रः ॥

भद्रंभाद्राम् ॥ नाआभाऽ२३राऽ३ ॥ आइषामूर्जाम् ॥ शातक्राऽ२३ताऽ३उ ॥ यादिन्द्रामॄ ॥ डाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ सीऽ२३४नाः ॥

(दी.३। प.७। मा.७)३०(ठे । ३११)

(१७४-१) ॥ अश्विनोः साम सोम साम वा । अश्विनौ गायत्रीन्द्रः ॥

अस्तिसोमोआयँ सुतः । अ । स्त्येआस्ती ॥ सोमोआयँ सुतःपिबन्त्यस्यामा । रुतोऽ२३४हाइ ॥ उतस्वराऽ५जोवा ॥ श्वाऽ५इनोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.४। प.७। मा.७)३१(थे । ३१२)

॥ द्वाविंशतिः, षष्ठः खण्डः ॥६॥ दशतिः ॥८॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये द्वितीये गाने बहुसामाख्यम् ॥

॥ द्वितीयं तन्त्रं सम्पूर्णम् ॥

(१७५-१) ॥ त्वाष्ट्री साम । त्वष्टा गायत्रीन्द्रः ॥

५र — १ — १ २र १ २ —
ईङ्खयन्तीः ॥ आपाऽ२स्यूवाऽ२ः । आइन्द्रंजातम् । ऊपाऽ१साताऽ२इ ॥
प छु का धि

१र २ १ २ २
वन्वानाऽ२३साः ॥ सुवीरियाऽ३१उवाऽ२३ ॥ वृधेऽ१ ॥
जा झी र

(दी.३। प.७। मा.७)३२(ठे । ३१३)

(१७६-१) ॥ गोधा साम । गोधा गायत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा ॥

५ र २ १ २ १ न २ ५ र २ १
नकिदेवाः ॥ इनाइ । इनीमासाऽ३इ । मासीऽ३या ॥ नकियायो ॥ पाया ।
प र कि खु प र

२ १ न २ ५ २ १ २
पयामासाऽ३इ । मासीऽ३या ॥ मन्त्रश्रुत्याम् ॥ चारा । चरामासाऽ३इ ।
कि खु प र कि

१ न २
मासीऽ३या ॥ (दी.२। प.१२। मा.६)३३(छू । ३१४)
खु

(१७७-१) ॥ सवितुस्साम । सविता गायत्री सविता ॥

४र ५र र ४ २ १ र २ १र ३ २ २ १
दोषोआगात् ॥ बृहद्गाया । द्युमद्गाऽ२३मान् । आथर्वाणाऽ३ ॥ स्तुहि ।
ती र कः खू र

न २ ३र २ ४ ५ ४ ५
औऽ३होऽ३४इ ॥ देवाऽ३म् । सवोवा । ताऽ५रोऽ६ँ हाइ ॥
खो टी ता ति

(दी.६। प.९। मा.६)३४(घू । ३१५)

(१७८-१) ॥ उषसस्साम । उषा गायत्र्यश्विनौ (सविता) ॥

५र र १ र २ र १ २ १ २ २ १र २
एषोउषाः ॥ आपूर्विया । व्युच्छति । होवाऽ३हाइ । प्रियादाऽ२३इवाऽ३४ः ॥
प का का कः जी

३ २ ३र २ २ १ ५ ४ ५
स्तुषाऽ३४इवामाऽ१ ॥ श्विनोऽ२३४वा । बृऽ५होऽ६ँ हाइ ॥
यै छ ति

(दी.६। प.८। मा.७)३५(गे । ३१६)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चस्यार्धः प्रपाठकः ॥

(१७९-१) ॥ त्वष्टुरातिथ्ये द्वे । द्वयोस्त्वष्टा गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रोदधीचोअस्थभिरियाऽ२ईऽ३या ॥ वृत्राण्यप्रतिष्कुतइयाऽ२ईऽ३या ॥

जाघाननवतीर्नवइयाऽ२ ॥ ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी. ८। प.७। मा.५)१(ठ्वु ।३१७)

(१७९-२)

इन्द्रोदधाइ ॥ चोअस्थाऽ२३४भीः । वृत्राणिया । प्रातिष्कुताः ॥ जाघानाऽ२३ना ॥

वतीर्नावा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.९। मा.५)२(भु । ३१८)

(१८०-१) ॥ पौषम् । पूषा गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रेहिमाहाउ । त्सीऽ३आन्धाऽ३साः । वाइश्वेभिस्सोऽ२३हाऽ३ । मापर्वा-

ऽ२३४भीः । महाँऽ२३ ॥ आऽ२भा२३४औहोवा ॥ ष्टिरोजासाऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.७। मा.६)३(खू । ३१९)

(१८१-१) ॥ इन्द्रस्य मायम् वा । इन्द्रो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा वा ॥

आतूऔहो । (द्विः) । नाइन्द्रावृत्राऽ२३४हान् । अस्माकामार्द्धम् । आगाऽ२३ही।

गाहीऽ२ ॥ माहाऽ२न्माहीऽ२३ ॥ भिरूऽ२३४वा । ताऽ५इभोऽ६ँहाइ ॥

(दी.१०। प.९ । मा.७)४(भे । ३२०)

(१८२-१) ॥ इन्द्रस्य सांवर्ते द्वे । द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

हा । हाउवाऽ३ । ओजस्तदस्यतित्विषेऽ२३४ ॥ हा । हाउवा । उभेयत्समवर्तोया-

ऽ२३४त् ॥ हा । हाउवाऽ३ । इन्द्रश्चर्मेऽ२वारोदासीऽ२३४५ ॥

(दी.४। प.९। मा.४)५(धी । ३२१)

(१८२-२)

ओजस्तदाऽ५स्यतित्विषाइ ॥ उभेयत्समवर्तयादाऽ१इन्द्राऽ२३ः ॥ चाऽ२र्मा-

ऽ२३४औहोवा ॥ वारोदासीऽ२३४५ ॥

(दी.५प.४।मा.४)६(भी ।३२२)

(१८३-१) ॥ शौनः शेषम्,च्यावनं वा । शुनः शेपो गायत्रीन्द्रः ॥

आयाऽ५मु । ताऽ३इसाऽ३मातासाइ ॥ कापोतइ । वागार्भाऽ१धीऽ२म् ॥

वाचाऽ२स्ताच्चीऽ२३त् ॥ नाओऽ२३४वा । हाऽ५सोऽ६ँहाइ ॥

(दी.२। प.७। मा.७)७(छे । ३२३)

(१८४-१) ॥ प्रतीचीनेडं काशीतम् । काशीतो गायत्रीन्द्रो वायुर्वा ॥

वातआवातु । भाऽ५इषाजाम् ॥ शाम्भुमयः । भुनोहृदाऽ२३४इ । हाहोइ ॥

प्रणआयूँषीऽ३ता ॥ रिषात् । औऽ२३होवा ॥ ईडा ॥

(दी.५। प.९। मा.८)८(भै । ३२४)

॥ द्वादश, सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः॥९॥

(१८५-१) ॥ सौमित्रम् । सुमित्रो गायत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा ॥

४ ५ ४ ५र ४ १ र र २ १ २
यँ रक्षन्तिप्राचेतासाः ॥ वरुणोमित्रोअर्याऽ२३मा ॥ न । काइस्साऽ२३दा ॥
ते कः क कः
१ २ १ ३ ५र र ३ ५
हिंमायेऽ३ । भ्याऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ जाऽ२३४नाः ॥
कि वै दू

(दी.५। प.७। मा.५)९(फु । ३२५)

(१८६-१) ॥ श्यावाश्वे द्वे । द्वयो श्यावाश्वोः गायत्रीन्द्रः ॥

५ ४र ५र ४ ५र ४ २ र १ २ १ २ १र
गव्योषुणोयाथापुरा ॥ अश्वयोतरथा । यावरिवस्या ॥ म । होमाऽ२॥
फु र कै च का
३र २ ५र र ३ ५
होनाऽ३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
टे दू

(दी.८। प.७। मा.१)१०(ठव ।३२६)

(१८६-२)

५ र र र ५ २ १ २ १ १
गव्योषुणोयथापुराऽ६ँ ए ॥ अश्वयोऽ१त । रथाऽ२ । या ॥ वारिवाऽ२स्या ॥
पा रा का क रै
२ १र ३ ५र र ३
माहो । महोऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
र वै दू

(दी.६। प.८ । मा.२)११(ग्रा ।३२७)

(१८७-१) ॥ शैखण्डिनम् । शिखण्डी गायत्रीन्द्रः ॥

५र २ १ र २ २ ३र न २ २ १ ३
इमास्तई ॥ द्रापृश्नयोघृतंदूऽ३हा । औहोऽ३हाऽ३ । हाऽ३इ । ताआऽ२शा-
प जा डु च
५ ३र २ ३ २ २ १ ५ ४ ५
ऽ२३४इराम् ॥ एनाऽ३४मृताऽ३ ॥ स्यापोऽ२३४वा । प्यूऽ५षोऽ६ँ हाइ ॥
वु ड छ ति

(दी.४। प.८। मा.६)१२(दू ।३२८)

(१८८-१) ॥ वैतहव्यम् । वीतहव्यो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र र ५ १ २ २ ३ ५ १ २
अयाधियाचगव्याऽ६ ँ्या ॥ पुरुणाऽ३ । मन्पूऽ२३४रू । ष्टूतौ । वाऽ३२ ॥
पा कि शे का चे

२ र र २र ३ २ १ र विर १र २ १ ५ ४ ५
यत्सोमेऽ३सोमाआ ॥ यात्सोमेऽ२सो । माओऽ२३४वा । भूऽ५वोऽ६ ँ्हाइ ॥
शं कै छ ति

(दी.८। प.९। मा.३)१३(ढि ।३२९)

(१८९-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सरस्वती वा ॥

५र र ४५ २ १ २ — १ र २ र १ २ —
पावकान्नईया ॥ सारास्वाऽ१तीऽ२ । वाजेभिर्वा । जिनाइवाऽ१तीऽ२ ॥
पै छु का छु

१ १ ३ ५र र २ १र ३ । । ।
यज्ञाऽ२३म् ॥ वाऽ२ष्टूऽ२३४औहोवा ॥ धियावासूऽ२३४५: ॥
कि वे शि

(दी.७। प.७। मा.५)१४(छु ।३३०)

(१९०-१) ॥ आरुणस्य वैतहव्यस्य साम, सौभरं वा । अरुणो वीतहव्यः गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ ४ ५ ४ ५ २र १ २ — १ र २ १ २
काइमम् । उहुवाहाइ ॥ नाहुऽ३षाइषूऽ१वाऽ२ । आइन्द्र ँ्सोम । स्यातार्पाऽ१-
ती पै बु का

— १ विर १ २र १ २ — १ विर १ २र १
याऽ२त् । सानोऽ२वासू । नियाभाऽ१राऽ२त् ॥ सानोऽ२वासूनि ॥ आऽ२३ ।
छु घि छु घि कि

२ १र २ १र २
भाराउवा ॥ आगाहियेहिताइमेऽ१ ॥
य गो

(दी. ८। प.११। मा.९)१५(टो ।३३१)

(१९१-१) ॥ सौभरम् । सुभरिर्गायत्रीन्द्रः ॥

५र र २ १ २ — १ — १ २ १ २
आयाहिसू ॥ षुमाहाऽ१इतेऽ२ । हाइतेऽ२ । आइंद्रसोमम् । पिबाइमम् ।
प छु का का चो

१ २ ३र २ १ २ १र २ १
पिबाआऽ१इमाऽ२म् ॥ एदंबर्हाइः ॥ सादोमाऽ२३मा३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
छु या जु कु प

(दी.४। पा.१०। मा.१२)१६(ना।३३२)

(१९२-१) ॥ पाष्ठौहे द्वे । द्वयोः पष्ठवाड् गायत्रीन्द्रः (मित्रावरुणोऽर्यमा) ॥

माहाइत्राऽ२३४इणाम् ॥ अवाऽ२रस्तू। द्युक्षंमाऽ२३४इत्रा ॥ स्याऽ२र्यम्णाः ॥
दुराधाऽ२३४र्षाम् ॥ वारौहोऽ२३४ । वा । णाऽ५स्योऽ६ हाइ ॥

(दी.१। प.८। मा.७)१७(गे ।३३३.)

(१९२-२)

महित्रीणामवरस्तूऽ६ ए ॥ द्युक्षंमित्रस्यार्यम्णाः ॥ दुराधाऽ२३र्षाम् ॥ वारौहोऽ२ ।
हिंमाऽ२ । ण । स्योऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ हाओवा । ओवाऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.१०। मा.५)१८(जु ।३३४)

(१९३-१) ॥ धुरासाकमश्वम् । साकमश्वो गायत्रीन्द्रः ॥

त्वावतोऽ३ । हौऽ३होऽ३१इ ॥ पुरुवसोऽ३ । हौऽ३होऽ३१इ ॥ वयमिन्द्राऽ३ ।
हौऽ३होऽ३१इ ॥ प्रणेताऽ३ः । हौऽ३होऽ३१इ ॥ स्मसिस्थाताऽ३ः । हौऽ३हो३१इ ॥
हरीणाऽ३म् । हौऽ३होऽ३१२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५।प.१३। मा.९)१९(बो ।३३५)

॥ एकादश, अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः ॥१०॥

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥

(१९४-१) ॥ यामम् । यमो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र र ४ ५ २ १र २ १र २र १ २
उत्वामन्दन्तुसोहोमाः । कृणौहो । ष्वारौहो । धाअद्रिवाः ॥ अ । वब्राऽ२३ह्मा॥
वै र र र क कः

१ — १ — न २ २ १ ३ ५र र २
द्विषाऽ२ः । हाऽ२इ । औऽ३होऽ३१येऽ३ । जाऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ ।
का का गू वै चा

१ ।।।
ययूऽ२३४५ः ॥ (दी.७। प.१२। मा.७)२०(छे ।३३६)
कु

(१९५-१) ॥ आंगिरसं हरिश्रीनिधनम् । अंगिरा गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ र ४ ५ ४ ५ ४ १ — १ र र र २ १ —
गिर्वणपाहिनःसुतम् । गिर्वणःपा ॥ हिनःसुताऽ२म् । मधोर्धाराभिराहोऽ२ ।
ते ती का धि

१ २ १ २ १ २ १ ३ ५र र
ज्यासेऽ२३ । हाउवा ॥ इन्द्रात्वाऽ२३दा ॥ तामायेऽ३त् । याऽ२शाऽ२३४औहोवा ॥
कि च कः चौ वै

२ १ ।।।
हरिऽ३श्रीऽ२३४५ः ॥
ज

(दी.६।प.१०। मा.६)२१(ङू ।३३७)

(१९६-१) ॥ वैरूपम् । विरूपो गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ २ २ ३ ४ ५ २ र १ २ ३ २र १
सादा ॥ वइन्द्राऽ३ः ॥ चर्कृषादा । उपोनुसाऽ३ः । सापर्यन् ॥ नादेवाऽ२३ः॥
ता चा ची चा का टौ

२ २ २ ४
वृताऽ३४३ः । शूऽ३४३ । राऽ३आऽ५इन्द्राऽ६ँ५६ँः ॥
ठः वै चू

(दी.२। प.९। मा.९)२२(झो । ३३८)

(१९७-१) || आसितं सिन्धुषाम् वा । असितो गायत्रीन्द्रः ||

५र र ५ २ १ २ १ २ २ १ २ १ २
आत्वाविशंत्विन्दाऽ६ँ्वाः । सामुद्रामिवसिन्धवः । सामुद्रमि । वासिन्धाऽ२३वाः।
पा घु र जा

१ र र २ र १र २ १ २
नत्वामिन्द्रातिरिच्यते || नत्वामाऽ२३इन्द्रा || तिरिच्याऽ२३ताऽ३४३इ ।
का जा जु

१
ओऽ२३४५इ || डा ||
कु प

(दी.६। प.९। मा.६)२३(घू । ३३९)

(१९८-१) || यमस्य इन्द्रस्य वा अर्कः (अर्कम्) । यमो गायत्रीन्द्रः ||

५ ३ २र ३ ४र ५ २ १२ १ २ १ २ २ २
इन्द्रामिद्गाथिनोबृहात् || इन्द्रामर्काइ । मिरर्किणाः || इन्द्रंवाणीऽ३ः । हाऽ३हाइ ||
पौ रो र कि चे

४ ४
अनूऽ५षता । होऽ५इ || डा ||
ता ता प

(दी.२। प.८ मा.६)२४(जू ।३४०)

(१९९-१) || सौमित्रे द्वे । द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः, ऋभुर्वा ||

४ ५ ४र ५ र ४ २ १ ३ २ ३ ५
इन्द्राइषेददातुनः । ओहाइ || ऋभु । क्षणाऽ२म् । ऋभुँ्राऽ२३४यीम् ।
तु त चे का ठौ

२ र ३ २ २र १र २ १ ५ ४ ५
वाजीददातुवाऽ३ || वाजीददा || तुवोऽ२३४वा । जाऽ५इनोऽ६ँ्हाइ ||
शी र छ ति

(दी.६। प.९। मा.७)२५(घे ।३४१)

(१९९-२)

५ र र ५ २ १ २ २ १ २
इन्द्रइषेददातुनाऽ६ँ्ए || ऋभुक्षणाम् । भूऽ२१२३म् । रायीऽ३४३म् || वाऽ२३जी ||
पा चो घी कः कः

१ ४ ५ ४ ५
दादाऽ२ओऽ२३ । तुवोवा । जाऽ५इनोऽ६ँ्हाइ ||
घू ता ति

(दी.२। प.८। मा.७)२६(जे । ३४२)

(२००-१) ॥ इन्द्रस्याभङ्करम् । इन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रोअंगा ॥ माहद्धाऽ२३याम् । आभीषदा । पाचुच्याऽ२३वाऽ३४त् ॥ साहा-
ऽ३४इस्थिराऽ३ः॥ वीचोऽ२३४वा । षाऽ५णोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.२। प.७। मा.६)२७(छू ।३४३)

(२०१-१) ॥ त्वाष्ट्री साम । त्वष्टा गायत्रीन्द्रः ॥

इमाउत्वा ॥ सुताइसुताइ । नक्षन्ताऽ२३इगीऽ३४ः । वानः । गाऽ३इराः ॥
गावोवाऽ३त्साऽ३म् ॥ नाधोऽ२३४वा । नाऽ५वोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.२। प.८। मा.१०)२८(जौ ।३४४)

(२०२-१) ॥ पौषम् । पूषा गायत्रीन्द्रः, इन्द्रापूषणौ धा ॥

इन्द्रानुपू । षाणावाऽ२३याम् । साख्याय । सुवस्ताऽ२३याइ ॥ हूवेऽ२मावाऽ२३ ।
जासोऽ२३४वा । ताऽ५योऽ६ँ हाइ ॥ (दी.३। प.७ । मा.३)२९(ठि । ३४५)

(२०३-१) ॥ इन्द्राण्याःसाम । इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः ॥

न । क्येनाकी ॥ आइन्द्रत्वदुत्तराम् । नज्यायोऽ२ । अस्ताऽ२३इवृ ।
हिम्ऽ३हिम् । त्राऽ२३४हान् ॥ नक्ये । वंयाऽ२३था ॥ हिम्ऽ३हिम्ऽ३४३ ।
तूऽ३४५वोऽ६ँ हाइ ॥ (दी.३। प.११। मा.९)३०(टो । ३४६)

एकादश, नवमः खण्डः ॥९॥ दशतिः ॥१॥

(२०४-१) ॥ श्यावाश्वं तारणं वा । श्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः ॥

५ १ २ १र २ २ १ २ ३ ५
तरणिंवाः ॥ जनाऽ२३नाम् । त्रादंवाजाऽ३हाऽ३ । स्यागोमाऽ२३४ताः ॥
प कः जि वृ
२ १र २ ४ ४
सामानाऽ२३मू ॥ प्रशाऽ५ँ सिषाम् । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा ता ता प

(दी.२। प.८। मा.५)३१(जु ।३४७)

(२०५-१) ॥ वैरूपम् । विरूपो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र ५र १ — १ — र १ २
असृग्रमाइन्द्राऽ६ँ तेगिराः ॥ प्रातीऽ२त्वामूऽ२त् । अहा । सता ॥ साऽ१जो-
पा छु च क
— १ — — १ २ १
ऽ२षावाऽ२ ॥ षाभाऽ२म्पातिम् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
छु छु कु प

(दी.३। प.८। मा.५)३२(ङु ।३४८)

(२०६-१) ॥ सौमित्रम् कौत्सं वा । सुमित्रो गायत्रीन्द्र ॥

४ र र ४ १ विर १ २ १र २ १र र २ १ २ १
सुनीथोघाऽ५समर्तियाः ॥ यम्मरुतोऽ२यमर्यामा । मित्रास्पांत्यद्रुहः ॥ ऊ ।
ती गो छु क
२र — १ २ १ ३ । । ।
ऊ । वाहाऽ३१उवाऽ२ । आतिद्विषाऽ२३४५ः ॥
क छो वः

(दी.७। प.७। मा.४)३३(छी ३४९)

(२०७-१) ॥ तौभम् । तुभो गायत्रीन्द्रः ॥

२र र र र ३ ५ ५ २ र र ४ २ ३ ५ २र र र
औहोवाऔहोऽ२३४वा । ओऽ६ँ हा । यद्वीडावीऽ३न्द्राऽ३यत्स्थिराइ ॥ औहोवा-
शे पा पि
र ३ ५ ५ २ र ४ २र ३ ५ २र र र र ३ ५
औहोऽ२३४वा । ओऽ६ँ हा । यत्पर्शानेऽ३पाऽ३रामृतम् ॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा ।
शे पा षि शे
५ २ र ४ २र ३ ५ २र र र र र ३ ५ ५
ओऽ६ँ हा । वसुस्पार्हाऽ३न्ताऽ३दाभरा ॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा । ओऽ६ँ हा।
पा बि शे पा
४
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.२२। प.१३। मा.७)३४(जे ।३५०)
ता प

(२०८-१) ॥ श्रौतम् । श्रुतो गायत्रीन्द्रः ॥

५ ४ १र २ १ २ र १ २
श्रुताम् ॥ वोवृत्रहन्तमाम् । प्रशर्द्धश्चर्षाणाऽ२३इनाम् ॥ आशाइषाऽ२३इरा ॥
पि क चै जा
३ र २ १ २ ४ ५ ४
धसेमाहा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ ड़ा ॥
या ची ता प

(दी.३। प.८। मां.७)३५(डे। ३५१)

इति ग्रामे गेयगाने पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥

(२०९-१) ॥ आभीशवम् । अभीशुर्गायत्रीन्द्रः ॥

५ र २ १ २र १र २ १ २ २ १ २
अरंतइन्द्रश्रवसेए । ए ॥ गामाइमाशूरत्वावाताऽ३ः । होवाऽ३हाइ ॥ अराँशाऽ१-
प प छू कः
१ २ २ १ २ १
क्राऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥ पाराइमाऽ२३णाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
ची कः पु कु प

(दी.३। प.९। मा.९)१(डो ।३५२)

(२१०-१) ॥ पौषम् । पूषा गायत्रीन्द्रः ॥

५र र३ २ ३ ४५ १र २ २ २ ३ ५
धानावन्तंकारंभिणाम् ॥ अपूपवन्तामूऽ१क्थीऽ३नाम् ॥ इन्द्राप्राऽ२३४ताः ।
पौ चै चो
३ ५ ४ ५ ४ ५
ओऽ२३४हाइ ॥ जुषोवा । स्वाऽ५नोऽ६ँहाइ ॥
दू ता ति

(दी.३। प.६। मा.५)२(दु ।३५३)

(२११-१) ॥ इन्द्रस्य क्षुरपवि । इन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

५ ४र र५र ४ ५ ४ १ २ १ अ ३ ५ १
आपांफेनेननामुचेः ॥ शिराइ । द्रोत् ॥ आवाऽ२र्त्ताऽ२३४याः ॥ वाइश्वाऽ२३ः॥
फु का क त्रु कि
१ ३ ५र र २ १ ३ । । ।
याऽ२दा२३४औहोवा ॥ जयस्पृधाऽ२३४५ः ॥
वे शि

(दी.५। प.७। मा.८)३(फै ।३५४)

(२१२-१) ॥ सौमित्रे द्वे । सुमित्रो गायत्रीन्द्रः ॥

इमेतआ ॥ द्रासोमाः । होवाऽ३होइ । सुतासोयेऽ३ । चासोतूऽ२३४वाः ॥
तेऽ४षाम् । हाऽ३हाइ ॥ मात्स्वप्राभूऽ२३४वा । वाऽ५सोऽ६ँहाइ ॥

(दी. ५।प्र९। मा. ७) ४(भे ।३५५)

(२१३-१)

तुभ्यँहाउ ॥ सुता१सस्सोमाः । स्तीर्णंबाऽ२३र्हीः । विभाऽ२होऽ१इ । वाऽ२३साउ ॥
स्तोताऽ३उवाऽ३ ॥ भ्यआऽ२इ । द्रामृऽ३४औहोवा ॥ डाऽ२३४या ॥

(दी.६। प.९। मा.९)५(घो ।३५६)

दशः दशमः खण्डः ॥१०॥ दशतिः ॥२॥

(२१४-१) ॥ कौत्से द्वे । कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

आवइन्द्राम् ॥ कृविंयथा । वाजयाऽ२३न्ताः । शाताक्रतुम् ॥ मँहिष्ठाऽ२३ँसी ।
चायाऽ३उवाऽ३इ ॥ दूऽ२३४भीः ॥ (दी.२। प.७। मा.७)६(छो ३५७)

(२१५-१)

अतश्चिदिंद्रनउपाऽ६ँए ॥ आयाहिशा । तावाजाऽ२३याऽ३४ ॥ इषाऽ३४साहाऽ३ ॥
स्त्रावोऽ२३४वा । जाऽ५योऽ६ँहाइ ॥ (दी.२। प.६। मा.३)७(चि । ३५८)

(२१६-१) ॥ औषसम् । उषा गायत्रीन्द्रः ॥

५र २ १र २ १ ३ ५
आबुन्दंवृ ॥ त्राहाद । दाइ । जातःपृच्छाऽ३त् । विमाऽ२ताऽ२३४राम् ॥
प र क कि बृ

२ १ २ १ २र १ २ १
काउग्राऽ२३ःके ॥ हाश्रृण्विरे । इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
जा का वु कु प

(दी.३। प.१०। मा.५)८(णु । ३५९)

(२१७-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः ॥

५ ५र १ — १ — र १ २ — १
बृबदुक्थँ्हाऽ६ँ्वामहाइ ॥ सार्प्राऽ२काराऽ२ । स्नमू । तयाइ ॥ साऽ१धाऽ२ःका-
पा छु च क

२ १ ५ ४ ५
र्ण्वाऽ२३ । तामोऽ२३४वा । वाऽ५सोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.२। प.७। मा.३)९(छि ।३६०)
छू छ ति

(२१८-१) ॥ कौत्सं । कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

५ र ४र५र४५ ४ २ १र २ १ २ १२ १र
ऋजुनीतीनोवरुणः । इहा ॥ मित्रोनयतिविद्वाऽ२३न्त्साः । इहा ॥ अर्यमादा-
पी त चै का

२ १२ १ न २ ५
ऽ२३इवाइ । इहा ॥ सजोषाऽ३उवाऽ३ ॥ ईऽ२३४हा ॥
जा का खु दू

(दी.५। प.८। मा.५)१०(बु ।३६१)

(२१९-१) ॥ औषसम् । उषा गायत्रीन्द्रः, अश्विनौ वा ॥

२र १र ४र ५ २ १ २ १ २ १र २
दूरादीऽ२३हेवायत्सताः ॥ अरुणप्सुराशिश्वाऽ२३इतात् ॥ विभानूऽ२३०वी ॥
छ जै जा

१ र २ १ २ १
श्वाथातनत् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
का वु कु प

(दी.५। प.७। मा.५)११(फु ।३६२)

(२२०-१) ॥ मित्रावरुणयोः संयोजनम् । मित्रावरुणौ गायत्रीन्द्रः, मित्रावरुणौ ॥

आनोमित्रा । वरुणाऽ३ । औहोवाऽ२३४ ॥ घृतैर्गव्यूतिमु । क्षाताऽ३म् ।

औहोवाऽ२ । माध्वाराजाऽ२ँसिसूऽ३ । औहोवाऽ२ ॥ क्रतू । इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.११।प.१२। मा.२)१२(खा। ३६३)

(२२१-१) ॥ ऋतुषाम । ऋतवो गायत्रीन्द्रो मरुतो वा ॥

उदुत्येसूनाऽ६ँवोगिराः ॥ काष्ठाय । ज्ञाइ । षुवाऽ२त्नाऽ२३४ता ॥ वाश्राआ-

ऽ२३भीऽ३ ॥ ज्रूऽ२३याऽ३ । ताऽ३४५वोऽ६ँहाइ ॥

(दी.६। प.७। मा.४)१३(खी ।३६४)

(२२२-१) ॥ विष्णोः साम । विष्णुर्निचुत् गायत्री विष्णुः ॥

इदाऽ६ँमे ॥ विष्णुऽ२ः । विचाक्राऽ२३४माइ । त्राइधानि । दाधाइपाऽ१दाऽ२म् ॥

समूऽ२होऽ१ । ढाऽ२३माऽ३ ॥ स्याऽ२पाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । सुलेऽ१ ॥

(दी.३। प.१०। मा.५)१४(णु ।३६५)

॥ नव, एकादशः खण्डः ॥११॥ दशतिः ॥३॥

(२२३-१) ॥ कौत्सम् । कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

अतीहिमा ॥ न्युषाऽ२वाइणाऽ२म् । सुषुवाँसाऽ२म् । होइ । ऊपैऽ१रायाऽ२ ॥

अस्याराताऽ२३उ ॥ सूऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ पीऽ२३४बा ॥

(दी.४। प.८। मा.६)१५(दू ।३६६)

(२२४-१) ॥ काश्यपम्, आप्लरसं वा । कश्यपो गात्रीन्द्रः ॥

३ ४३४२५ र ३ २ १ ५रर ४ ५र २ १
कादुप्राचेतासे । माहाऽ३इ ॥ वाऽ२३४चो । देवाहाउ । वचोदेवा । याशस्याऽ२३-
ठी टी की प ता

२ ३ २ ३ २ २ १ ५ ४ ५
ताऽ३४इ ॥ तादाऽ३४इद्धियाऽ३॥ स्यावोऽ२३४वा । धाऽ५नोऽ६ँ हाइ ॥
जी ड छ ति

(दी.५। प.९। मा.५)१६(भु ।३६७)

(२२५-१) ॥ बार्हदुक्थे द्वे । द्वयोर्बृहदुक्थो गायत्रीन्द्रः ॥

५ ४ ५ ४ २ १र र र २ १र र २ १र २
उक्थंचानोहाइ ॥ शस्यमानाम् । नागोराऽ२३यीः । आचिकेता ॥नागायाऽ२३त्राम् ॥
पि र कः क जा.

र १ ३ ५र र ३ ५
गी । यमाऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
च वे द्व

(दी.९। प.८। मा.५)१७(द्वु ।३६८)

(२२६-१)

५ २ १ २ १ २ ३ ५ १र २
इन्द्रउक्थाइ ॥ भिर्मान्दाइष्ठोऽ३ । वाजानाऽ२३४श्रा । वाजापतिः ॥
प चौ खो का

१ ३ ५ १र विर १ २ ४ ५ ४
हराऽ२इवाऽ२३४न्त्सू । तानाऽ२ँ सा । खा ॥ औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
पू कै क ची ता प

(दी.३। प.१०। मा.६)१८(णू। ३६९)

(२२७-१) ॥ कौत्सम् । कुत्सो गायत्रीन्द्रः ॥

४र ५र ४ १ २ १ २ २ १र विर १र २र १ २
आयाही ॥ उपानस्सुतम् ॥ होवाऽ३हाइ । वाजेऽ२भिर्माह्वणीयथाऽ३ः । होवाऽ३-
ती कै कः घी

२ १र २ १ १ २ १ ३ ५रर
हाइ ॥ माहा ँ इवायुवाऽ२३ । होवाऽ३हाऽ३इ ॥ जाऽ२नाऽ२३४ओहोवा ॥
कः छू वि वे

३ ५
ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.९। प.९। मा.७)१९(ध्ले । ३७०)
से

(२२८-१) ॥ कौत्से द्वे । द्वयोः कुत्सो भुरिग् गायत्रीन्द्रः ॥

ओऽ२होऽ१इ । कादावासो । स्तोत्राऽ३म् । हर्याताआ ॥ ओऽ२होऽ१इ ।
आवश्माशा । रुधादूऽ२३४वाः ॥ ओऽ२होऽ१इ । दीर्घँ सुतम् ॥ वाताऽ३४३।
पीऽ३याऽ५याऽ६ँ५६ँ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.१२। मा.७)२०(फ्रे । ३७१)

(२२८-२)

कादाऽ३४औहोवा । वसो । स्तोत्राऽ३म् । हर्याताआ ॥ आवाऽ३४ । औहोवा।
श्मशाऽ२ । रुधादूऽ२३४वाः ॥ दीर्घाऽ३४औहोवा । सुताऽ२३म् ॥ वाताऽ३४३ ।
पीऽ३याऽ५याऽ६ँ५६ँ॥ (दी.८। प.१२। मा.६)२१(दू । ३७२)

(२२९-१) ॥ और्ध्व सद्मनम् । ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः ॥

ब्राह्मणादी ॥ द्रराधसाः । पिबासोमाऽ२म् । ऋतुँ रनू ॥ तवेदाँ साऽ२३ ॥
ख्याऽ२३माऽ३ । स्ताऽ३४५र्तोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.६। प.७। मा.३)२२(खि । ३७३)

(२३०-१) ॥ और्ध्वसद्मनम् । ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः ॥

वायंघातेआपिस्मासाइ ॥ स्तोतारइन्द्रगिर्वणाः । ववाऽ२३होइ ॥ तूवान्नोजीऽ२।
ववाऽ२३हो ॥ न्वासोऽ२३ । माऽ२पाऽ२२४औहोवा ॥ एऽ३ । उपाऽ२३४५॥

(दी.६। प.९। मा.६)२३(घू । ३७४)

(२३१-१) ॥ अभीपादस्य औदलस्य साम । उदलो निचृत् गायत्रीन्द्रः ॥

एन्द्रपृक्षुकासुचीऽ६ँदे ॥ नृम्णाम् । तनूषुऽ३धाइहाऽ१इनाऽ२ः ॥ सात्राजिदु ॥

ग्रापौऽ२३ँसियाउ । वाऽ३ ॥ ऊऽ३४पा ॥ (दी.४। प.७। मा.५)२४(थ्यु । ३७५)

(२३२-१) आमहीयवं उक्थ्यामहीयवम् वा । अमहीयुर्गायत्रीन्द्रः ॥

एवाहोऽ३असिवीरयूः ॥ एवाशूऽ१राऽ२ः । उताऽ२३स्थिराः ॥ आंइवातेरा ॥

धियाऽ२३म्मनाउ । वाऽ३ ॥ स्तौषेऽ३४५ ॥ (दी.७। प.७। मा.६)२५(छू ।३७६)

॥ एकादशः द्वादशः खण्डः ॥१२॥ दशतिः ॥४॥

इति द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

—*—

॥ इत्यैन्द्राख्ये तृतीये गाने एकसामाख्यं तृतीयं तन्त्रं संपूर्णम् ॥

(२३३-१) ॥ भरद्वाजस्यार्कौ द्वौ । द्वयोर्भरद्वाजो बृहतीन्द्र ईशानेन्द्रौ वा ॥

अभित्वाशू ॥ रानोनुमाऽ२ः । ओइनूऽ३माः । आदुग्धाइ । वाधाइनावाऽ२ः ।

ओइनाऽ३वाः । आइशानमस्यजगतः । सुवार्दृशम् । आर्दृऽ३शाम् ॥ आइशानमि ॥

द्रातास्थूषः । आऽ२३ । स्थूऽ२ । षाऽ२३४ । औहोवा ॥ स्थुषःस्थुषाऽ२३४५ः ॥

(दी.६। प.१६। मा.१५)२६(कु । ३७७)

(२३३-२)

अभित्वाऽ३शूरानोनुमाः ॥ आदुग्धाइव । धाइनाऽ२३वाः । आइशानमस्याजगा।
ताः । सूवाऽ२र्दृऽ२३४शाम् ॥ ईशानाऽ२३मी ॥ द्रातास्थुषः । इडाऽ२३माऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.११। मा.९)२७(को । ३७८)

(२३४-१) ॥ इन्द्रस्य भारद्वाजे द्वे । द्वयोर्भरद्वाजो बृहतीन्द्रः ॥

त्वामिद्धी । हवाऽ२माहे । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा । सातौवाज।
स्याऽ३काऽ२रावः । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा ॥ त्वांवृत्राइषुइ ।
द्रासाऽ२त्पातिम् । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा ॥ नरस्त्वांकाष्ठा ।
सूआऽ२र्वातः । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.१७। प.२०। मा.१०)२८(त्र्लौ । ३७९)

(२३४-२)

त्वामिद्धिहवामहे । सातौवजोवा ॥ स्याकाऽ१रावाऽ२ः । त्वांवृत्राइषुइन्द्रसत् ।
पातीन्नाराऽ२ः ॥ त्वांकाऽ२३ष्ठा ॥ सुअर्वाऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५ ॥ डा ॥

(दी८। प.९। मा.८)२९(ढै । ३८०)

(२३५-१) ॥ सान्नते द्वे । द्वयोः सन्नतिर्बृहतीन्द्रः ॥

अमिप्रवाः ॥ सुराधाऽ२३साम् । इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२३४इ । योजाऽ३४रितॄ ।

भ्योमघवापूरूऽ१वासूऽ२ः ॥ सहाऽ२३ ॥ स्राऽ२इणाऽ२३४औहोवा ॥

वाशिक्षातीऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.८। मा.६)३०(गू । ३८१)

(२३५-२)

अभाइप्रावाऽ२ः । सुराधाऽ२३४साम् ॥ इन्द्रामार्चाऽ२३ । याऽ२थाऽ२३४औहोवा ।

वीऽ२३४दे । योजारितृभ्योमाघावाऽ२पुरूवासुः ॥ सहा ॥ स्रेणेवऽ३शायेऽ३ ।

क्षाऽ२ताऽ२४औहोवा । सुभूऽ३तयेऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.१०। मा.६)३१(मू । ३८२)

(२३५-३) ॥ श्यैताम् । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

आमिप्रावस्सुरा । धासाऽ३४औहोवा ॥ आइन्द्रामर्च । याथाविदाऽ२३४इ ॥ ओऽ६हा ।

योजारितृभ्यः । माघाऽ२३वा । पुरूऽ२ । वाऽ२३४सूः ॥ साहस्रेणाइवाऽ३शा॥

हिम्मायेऽ३। क्षाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४सू ॥

(दी.७। प.१३। मा.७)३२(जे । ३८३)

(२३६-१) ॥ प्रजापतेर्नाविकम् । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

तंवः । एदास्माम् ॥ ऋतीषाहम् । हाऽ२इ । आऔऽ३हो । इहा । वासोर्मन्दानमन्ध-
साऽ३ः । हाऽ२इ । आऔऽ३हो । इहा । अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेनावाऽ२ः ।
हाऽ२इ । आऔऽ३हो । इहा ॥ इन्द्रम् । हाऽ२इ । आऔऽ३हो । इहा ।
गीर्भाइः । नाऽ२३४औहोवा ॥ वामाहेऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.२१। मा.१७)३३(पे । ३८४)

(२३६-२) ॥ अभीवर्तः, प्रजापतिः, बृहतीन्द्रः ॥

तंवोऽ३दाऽ३स्मामृतीषहोवा ॥ वासोर्मन्दा । नामान्धाऽ१साऽ२ः । आभिवत्सा-
ऽ३१२३४म् । नस्वासारे । षुधाइनाऽ१वाऽ२ः ॥ इन्द्राँ्गाऽ१इर्मीऽ२ः ॥नावाऽ३ ।
माऽ२३४५ ॥ हाऽ२३४५इ ॥ (दी.४। प.१०। मा.७)३४(ने । ३८५)

(२३६-३) ॥ भागम् । भगो बृहतीन्द्रः ॥

तंवोदस्मामृती । षाहाओऽ२३४वा ॥ वासोर्मन्दानमन्धासाऽ२ः । आभिवत्सन्नस्व-
सरेषूधेऽ१नावाऽ२ः । ओऽ३वा ॥ इन्द्रंगाऽऽ२३४इर्मीः ॥ नावामाऽ२३४५-
हाऽ६ँ्५६ँ्इ ॥ भगाऽ३याऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.८। मा.६)३५(गू । ३८६)

(२३६-४) ॥ अभीवर्तं इन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

तंवोदस्मामृती । षाहाऽ३म् । वा२३४ । सोर्मन्दानम । धासाः ॥ अभिवत्सन्नस्वसरेषु-
ऽ३धाइ । नाऽ२३वाः ॥ इन्द्रंगीर्भाइर्न्नाऽ३वा ॥ हिम्ऽ३हिम्ऽ३ । हिम्ऽ३हिम् ।
नवानावोऽ२३४वा । माऽ५होऽ६ँहाइ ॥

(दी.६।प.१२। मा.१०)३६(खौ ।३८७)

(२३६-५) ॥ नौधसम् । नोधा बृहतीन्द्रः ॥

ता२३४म् । वोदस्ममृती । षाहाम् ॥ वासोर्मन्दा । नाऽ३मान्धाऽ३साः ।
आऽ२३भी । वात्सन्ना । स्वासा । राइ । षूधेनाऽ२३४वाः ॥ आऽ२३इन्द्राम् ॥
गाइभिर्नावोऽ२३४वा ॥ माऽ२३४हे ॥ (दी.३। प.१३। मा.८)३७(डै । ३८८)

॥ इति ग्रामगेय गाने षष्ठस्यार्धः प्रपाठकः ॥

(२३७-१) ॥ लौशे द्वे । द्वयोर्लुशो बृहतीन्द्रः ॥

तारो ॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३ । वाऽ२३४सूम् । इन्द्राऽ२ँसाबाधाऊतयेऽ२ ।
बृहात् । बृहाऽ३१उ । वाऽ२ । गायन्तस्सुतासोमेअध्वारे ॥ हुवेभाऽ२३राम् ॥
नाकारिणम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.११। प.१३। मा.१०)१(गौ । ३८९)

(२३७-२)

४ ५   १ र २   ५   १ विर   १र २ र १विर
तारो ॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३ । वाऽ२३४सूम् । इन्द्राऽ२ँसाबाधाऊतायेऽ२ ।
ता   ङ   दू   के
१ २   —   १   —   र १   २१र   २   १ र २
बृहाद्गाऽ१याऽ२ । तास्सुतसोऽ२ । मेअध्वराइ ॥ हुवेमाऽ२३राम् ॥ नाकारिणम् ।
छु   का   र   जा   का
१   २   १
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
वु   कु   प

(दी.८। प.१२। मा.९)२(ठो । ३९०)

(२३७-३) ॥ धानाके द्वे । द्वयोर्धानाको बृहतीन्द्रः ॥

५ र   र   ४ ५   २   र   १ २   —
तरोभिर्वोविदद्वासूम् ॥ इन्द्राम् । इन्द्र ँसबाधऽ३ऊताऽ१याऽ२इ ॥ बृहात् ।
पै   च   पु   च
र   र   १ २   —   र   र
बृहद्गायन्तस्सुतसोमाऽ३आध्वाऽ१राऽ२इ ॥ हुवाइ । हुवेभरन्नकारिणम् ।
पु   च   च
१   २
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु   कु   प

(दी.७। प.१०। मा.१०)३(औ ।३९१)

(२३७-४) ॥ क्षुल्लककालेयं वा ॥

५ र   र   ५   २   १   ३   ५   २१
तरोभिर्वोविदाऽ४द्वासूम् ॥ इन्द्र ँसबाऽ३ । धऊऽ२ताऽ२३४याइ । बृहात् ।
पै   चा   पू   र
२   —   १र   २   १२र र   १र   २१र   २
बृहाऽ३१उ । वाऽ२ । गायन्तस्सुतसोमेअध्वरे ॥ हुवेहोइभाऽ२३राम् ॥
रा   का   गो   जा
१ र २   १   २   २
नाकारिणम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४इ ॥ डा ॥
का   वु   कु   प

(दी.८। प.१२। मा.१०)४(ठौ । ३९२)

(२३७-५) ॥ कालेयानि त्रीणि । त्रयाणां कलिः बृहतीन्द्रः ॥

तरोऽ२३मिर्वो । विदाऽ५द्वसूम् ॥ इन्द्रँ सबाऽ३धाऊऽ१तायाऽ३इ । ओऽ३४वा ।

ओऽ२३४वा । बृहद्गायन्तस्सुतसोऽ३माआध्वाराऽ३इ । ओऽ३४वा । ओऽ२३४वा ॥

हुवाइभराम् ॥ नाकारीऽ२३४इणाम् । ओऽ२३४वा । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.१३। मा.१०)५(डौ । ३९३)

(२३७-६)

तरोमिर्वोऽ२ । विदद्वाऽ२३४सूम् ॥ इन्द्रँ सबाऽ३धाऊऽ१तायाऽ२इ । औऽ३हो-

ऽ३वा । औऽ३होऽ३वा । बृहद्गायन्तस्सुतसोऽ३माआध्वाराऽ२इ । औऽ३होऽ३वा ॥

औऽ३होऽ३वा । हुवाइभाऽ१राऽ२म् । औऽ३होऽ३वा । औऽ३होऽ३वा ॥ नाकारिणम् ।

इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१५। मा.९)६(मो । ३९४)

(२३७-७)

तरोभाऽ३इर्वोविदद्वासूम् ॥ इन्द्रा सावा । धऊतायाऽ२३इ । बृहद्गायाऽ३ ।

ताऽ२३४ः । सुतासोमेअ । ध्वाऽ३राइ ॥ हुवाइभारौ । वाऽ३४३ओऽ३४वा ॥

नकाऽ५रिणाम् । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.६ । प.१२। मा.११)७(ख । ३९५)

(२३८-१) ॥ ऐषिरे द्वे । द्वयोरिषिरो बृहतीन्द्रः ॥

तरणिरीत् ॥ सिषाऽ३साती । वाजाम्पुराम् । धियायुजा । आवाऽ३आइंद्राम्॥

पुरुहूताम् । नमेगाइरा ॥ नाइमीऽ३न्त्ताष्टे ॥ वासुद्रुवाऽ२३४५म् ॥

(दी.५। प.९। मा.९)८(भो । ३९६)

(२३८-२)

तराहाउ ॥ णिरित्सिऽ३षासाति । हयाइ । हयाइ । वाजंपुरम् ॥ धियायूजौ।

होवाऽ३हाइ ॥ आवइन्द्रंपुरुहूतम् । नमाइगाइरौ । होवाऽ३हाइ ॥ नेमिंतष्टेवा-

ऽ३सा ॥ औऽ३होवाहाऽ३४औहोवा ॥ उप् । द्रूऽ२३४वाम् ॥

(दी.१२। प.१४। मा.१३)९(झि । ३९७)

(२३८-३) ॥ गौशृंगे द्वे । द्वयोर्गोशृंगो बृहतीन्द्रः ॥

ताराणिरित्सिषा । साऽ३ती । वाजंपुरंध्यायुजा ॥ वाजंपुरंध्यायुजा । वआऽ२३इन्द्रा-

ऽ३४म् । पुरुहूतंनामे । गाऽ३इरा ॥ नेमाइन्त्ताऽ२३ष्टे ॥ वसुद्रुवम् । इडाऽ२३-

भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.१२। मा.७)१०(थे । ३९८)

(२३८-४)

ताराणिरित्सिषा । सातीऽ३ । वाऽ२३४ । जंपूरंधिया । युजा ॥ वाजंपुरध्यायु-

जावइन्द्रंपुरुहूतन्नमाऽ२इगाइराऽ२ । हाऽ२ऊऊवाइ ॥ नेमिंतष्टेवसोवाऽ३ओ-

ऽ२३४वा ॥ द्रूऽ५वोऽ६हाइ ॥ (दी.८। प.९। मा.८)११(ढै । ३९९)

(२३९-१) ॥ पृष्ठम् । पृष्ठोबृहतीन्द्रः ॥

पिबाऽ३सुतस्यरसिनाः ॥ मत्स्वानइन्द्रगोमताऽ२३होइया । आपिर्नोबोधि-

सधामाद्येवृधाऽ२३होइया ॥ अस्मा॑ँआऽ२३वा ॥ तुताइधाऽ२३याऽ३४३ः ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.८। प.७। मा.८)१२(ठै । ४००)

(२३९-२) ॥ शौल्कम् । शुल्को बृहतीन्द्रः । अभीवर्तौ द्वौ । द्वयोर्जमदग्निः ॥

पिबासुतस्यरसिनोहाउ ॥ मत्स्वानइन्द्रागोमाऽ२तः । हाओऽ२३४वा ॥

आपिर्नोबोधिसधमादियेवाऽ२र्द्धे । हाओऽ२३४वा ॥ अस्मा॑ँअवन्तुतेधाऽ२याः ।

हाओऽ२३४वा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.१२। प.८। मा.८)१३(ग्रै । ४०१)

(२३९-३) ॥ जमदग्नेरभीवर्तः । जमदग्निर्बृहतीन्द्रः ॥

पिबासुतस्यरसिनोमत्स्वाहाउ ॥ नाऽ२ः । इन्द्राऽ२गोमताऽ२३ः । हाउ ।

आपिर्न्नोऽ२बो । धिसाधामाऽ२ । दियेवृधाऽ२३ । हाउ । आस्मा॑ँआवाऽ२३ ।

हा ॥ तुतेऽ३होऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ धियाऊऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.१३। मा.८)१४(बै । ४०२)

(२४०-१) ॥ कौल्मलबर्हिषे द्वे । द्वयोः कुल्मलबर्हिर्बृहतीन्द्रः ॥

तुवाऽ३॑ँहोऽ३एहिचेरवाइ ॥ विदाभगंवसूऽ२त्तायाऽ२३४इ । उद्वावृषस्वमघावान् ॥

ऐहोइ ॥ गाऽ२विष्टयाइ ॥ उदिन्द्राश्वमोवाऽ३ओऽ२३४वा । ष्टाऽ५योऽ६॑ँहाइ ॥

(दी.६। प.७। मा.८)१५(खै । ४०३)

(२४०-२)

त्वँ ह्येहिचेराऽ६ँ वाइ । विदाभगंवसूत्ताऽ१याऽ२३४इ । उद्वावृषस्व । माऽ५घवान् ॥

आइहियाइ । गविष्टायाऽ२इ ॥ उदिन्द्राऽ२अश्वमी ।ओऽ३१म् । ओऽ२३४वा ।

ष्टाऽ५योऽ६ँ हाइ ॥ (दी.४। प.१०। मा.९)१६(नो । ४०४)

(२४१-१) ॥ वसिष्ठस्यजनित्रे द्वे । द्वयोर्वैसिष्ठो बृहतीन्द्रः (मरुतः) ॥

नहिवाऽ३श्चारमंचना ॥ हुवेहोऽ२इ । वसिष्ठःपराइमाँ सताऽ२इ । अस्माकमद्य-

मरुताऽ२ः । सुताइसाऽ२३४चा ॥ वाइश्वेऽ३होइ । पिबाऽ३हो ॥ तुकाऽ२३ ।

माऽ२इनाऽ२३४औहोवा ॥ जानित्राऽ२३४५म् ॥

(दी.३। प.१०।मा.१०)१७(णौ।४०५)

(२४१-२)

नाहिवाश्चरामम् । चानाऽ३ । वसिष्ठाः ॥ होइ । होइ । पराइमाँ सताऽ२३४इ।

अस्माकामद्यमरुताः । सुताऽ३इसाचा ॥ वाइश्वेपिबन्तुकौऽ३ । होऽ३१येऽ३ ॥

माऽ२इनाऽ२३४औहोवा ॥ जनिऽ३त्राऽ२३४५म् ॥

(दी. ४। प.१२। मा.१२)१८(था । ४०६)

(२४२-१) ॥ मैधातिथं दैवातिथं वा । मेधातिथिर्बृहतीन्द्रः ॥

५र ४ ५ ३ २ ४ ५ १ र — १ २ २
माचिदन्यदोहाइ ॥ विशाऽ३ ँ्साता । सखायाऽ२होऽ१इ । माऔऽ३हो ॥
पै दृ को कः

१ २ १ २ १ र र २ २ १ २ १ २
राइषाउवा । ण्याताउवा ॥ इन्द्रमित्स्तोतावृषणाऔऽ३हो॥ साचाउवा । सूताउवा ॥
का का कः का का

१ २ २ १ २र १ ३र ५ ४ ५
मुहुरुक्थाऔऽ३हो । चाशा । औहो । वाहोऽ२३४वा । साऽ५तोऽ६ ँ्हाइ ॥
कः र र दृ ति

(दी.६। प.१४। मा.११)१९(घ । ४०७)

एकत्रिंशत्प्रथमः खण्डः ॥१॥ दशतिः ॥५॥

॥ तृतीयस्य प्रथमोऽर्धः ॥

(२४३-१) ॥ वैखानसम् । वैखानसा बृहतीन्द्रः ॥

५ २ ४ ५ ४र ५ २ १ २र १ २ ३र २ १ २ ३र २
नकिष्टाऽ३०कर्मणानशात् ॥ यश्चाकारा । सादावृधाऽ२३म् । सादावृधाम् ।
पः रो ध्रै च

२ १ २ १ २र ३ २ १ अ विर १ २ ३ २ १ २ १
इन्द्राञ्ञाया । ध्रैर्विश्वागू । तामाऽ२र्भ्वासाऽ२३म् । तामृभ्वसाम् ॥ आधार्ष्टन्धा ।
रो रि जे चे रो

२ ३र २ १ २ ३र २ १
ष्णुमोजसाऽ२३ ॥ ष्णुमोजसाऽ३४३ ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
ध्रै सू कु प

(दी.८। प.१३। मा.६)२०(डू । ४०८)

(२४३-२) ॥ पौरुहन्मनं प्राकर्ष वा । पुरुहन्मा बृहतीन्द्रः ॥

३ ४ ३ ४ ५र २ ५ २ ४ ५ ४र ५ १ — १ —
नाकिष्टंकर्मणानशात् । होऽ३४इ । यश्चाकाऽ३रासादावृधाम् ॥आइन्द्राऽ२न्नायाऽ२ ।
ठी धि पः धि

१र र अ — १ — २ ५र ४ ५
ध्रैर्विश्वगूर्तामृभ्वासाऽ२म् ॥ अधाऽ२होऽ१ । ष्टाऽ२३न्धृऽ३४ ॥ हाओवा ॥
धि कै वी पै

२ १र ३ । । ।
ष्णुमोजासाऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.९। मा.६)२१(घू । ४०९)
सी

(२४४-१) ॥ सात्यम् । सत्यो बृहतीन्द्रः ॥

५ २ ४ ५ ४ ५ १ — १ — २ १ २ १ २ २
यत्रऋताऽ३इचीदाभिश्रिषाः ॥ पूराऽ२जात्रूऽ२ । भ्यआतृदाऽ३ः । होवाऽ३हाइ ।
पः धि थौ कः

१ — १ — १ २ १ विर २ १ २ १ २ २ १
सान्धाऽ२तासाऽ२म् । धाइंमाघावाऽ२पुरूवासुः । होवाऽ३हाइ ॥ नाइष्काऽ२-
धि छे कः

१ — १२ १ ३ ५२ २ ३ ५
र्तावीऽ२ ॥ ह्रुतंपुनः । हो । वाऽ२ । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
धि चो क का टु प टू

(दी.५। प.१४। मा.१२)२२(भ्वा । ४१०)

(२४५-१) ॥ भारद्वाजानि चत्वारि, भारद्वाजम् । चतुर्णां भरद्वाजो बृहतीन्द्रः ॥

५२ २ २ १ २ — १ २ २२ २ १ २ —
आत्वासहा ॥ स्त्रामाशाऽ१ताऽ२म् । यूक्तारथेहिरण्यये । ब्रह्मायूऽ१जाऽ२ः ।
प छु का धि

१ २ १ २ — १ २ १ ३ ५२ २
हारायइ । द्राकाइशाऽ१इनाऽ२ः ॥ वहान्तूऽ१सोऽ२३ ॥ माऽ२पाऽ२३४औहोवा ॥
का छु घी वे

३ ५
ताऽ२३४ये ॥ (दी.७। प.९। मा.७)२३(झे । ४११)
टू

(२४५-२) ॥ भारद्वाजं, कण्वंबृहद्वा । कण्वो बृहतीन्द्रः ॥

५२ २ २ २ ५ २ १ २ ३२ २ १ २ २२ २
औहोआत्वासहाऽ६ँ्ए ॥ स्त्रामाशाऽ१ताऽ२३४म् । हाहोइ । यूक्तारथेहिरण्यये।
पा छे य का

१ २ ३२ २ १ २ १ २ ३२ २
ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३४ः । हाहोइ । हारायइ । द्राकाइशाऽ१इनाऽ२३४ः। हाहोइ॥
छु य का छे य

१ २ ३२ २ ३ २ १ ५ ५
वहान्तूऽ१सोऽ२३४ । हाहो ॥ मापीऽ३ । ताऽ२३४याइ । उहुवाऽ६ँहाउ ॥वा ॥
घु य टी की पा प

(दी.११। प.१५। मा.१३)२४(ञि । ४१२)

(२४५-३) ॥ भारद्वाजे द्वे । द्वयोर्भारद्वाजो बृहतीन्द्रः ॥

४र ५र ४ ५ ४र ५ ४ २ १र २ १ २ १ २ २ १ —
आत्वासाहास्रामाशतमा ॥ युक्तारथेहिरण्यये । ब्रह्मयुजोहरयइन्द्राकेहोऽ२इ ।
ते रो छु

१ २ १ २ ३र २ १ ^ ३ २
शाइनाऽ२३ः । हाउवा ॥ वहन्तुसोमापीहोऽ३ । हिंमाऽ२ ॥ तायाऽ३इ ।
कि च वि का टी

१ ५ ३ । । ।
ओऽ२३४वा ॥ ऊऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१०। मा.६)२५(ढूं । ४१३)
कु टू

(२४५-४)

३र ४र ३ ४ ५र ३ २ ३र ४र ५ २ १ २ १ प ३ ५
आत्वासहस्रामा । शाताम् । आत्वासहा ॥ स्रामाशातम् । आऽ२इहिया२३४हाइ।
ठी य टा चो यू

१ र २र १ २ १ प ३ ५ १ २
यूक्तारथेहिरण्यये । ब्रह्मायूऽ१जा२३ः । आऽ२इहियाऽ२३४हाइ । हारायइ ।
का घि वू का

१ २ १ प ३ ५ १ २
द्राकाइशाऽ१इना२३ः । आऽ२इहियाऽ२३४हाइ ॥ वहान्तूऽ१सोऽ२३ ।
छू वू घी

१ प ३ ५ २ १र २ १
आऽ२इहियाऽ२३४हाइ ॥ मापीताऽ२३याऽ३४३इ ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
यू जु कु प

(दी. ९। प.१६। मा.१७)२६(ते । ४१४)

(२४६-१) ॥ अग्नेर्वाम्राणि त्रीणि । त्रयाणां वम्रो बृहतीन्द्रः ॥

५र र २ र र र १ २ ४ ५ ४ ५
आमन्द्रैरा ॥ द्रहरिभाइर्याहिमयूराऽ३रोमाभाऽ३इः । मात्वाकाइचीत् ।
प छौ तु

२ ३ ५ २ र १ २ १ — १ १ ^ ३
नियेमूऽ२३४रीत् । नपाशिनाः ॥ अतिधान्वेऽ२ ॥ वातँऽ२३ । आऽ२इहा-
शै र चो चौ

५र र ३ ५
ऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४याः ॥ (दी.७। प.९। मा.१०)२७(ज्ञौ । ४१५)
वे टू

(२४६-२)

आमन्द्रैरिन्द्रा । हाऽ५रिभाइः ॥ याहिमयूरारोमभाइः । मात्वाकाऽ२३इचीत् ।
नाइयेमुरीत् । नापाशाऽ२३इनाः ॥ आताइधाऽ२३न्वे ॥ वातँ्ऽ२३ । आऽ२इहा-
ऽ२३४औहोवा ॥ वयोऽ३भीऽ२३४५ः ॥ (दी.१०। प.१०। मा.१४)२८(मी । ४१६)

(२४६-३)

आमन्द्रैरिन्द्रा । हाऽ५रिभीः ॥ याहिमयूररोमभाउ । वाऽ२ । मात्वाऽ२ ।
केचिन्नियेमुरिन्नापाशिनाउ । वाऽ२ ॥ आतीऽ२ ॥ धन्वेवाताऽ३१उवाऽ२३ ॥
ईऽ२३४ही ॥ (दी.८। प.१०। मा.४)२९(णी । ४१७)

(२४७-१) ॥ गुङ्गो सामः, गौङ्गवम् वा । अग्निर्बृहतीन्द्रः ॥

त्वामाऽ३०गाप्राशा ँ्सिषाः ॥ दाइवाऽ२ः । शविष्ठामाऽ३ । तायाम् ।
नत्वदन्योमघवाऽ२३नाऽ२ ॥ स्तिमाऽ३र्डाइता ॥ आइन्द्राब्रा । वा । औऽ३हो॥
मितोऽ२३४वा । वाऽ५चोऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.१। प.११। मा.७)३०(के । ४१८)

(२४८-१) ॥ इन्द्रस्य यशश्चत्वारि सामानि । इन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

त्वामिन्द्रा ॥ याशाः । असाइ । ऋजीषीशवासः । पताइः ॥ त्वंवृत्राणीऽ३ह ँ्सिया ।
प्रतीनाएऽ२ । कइत्पूरूऽ२ ॥ आनूऽ२होऽ१ ॥ ताश्च । षाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥
धाऽ२३४र्त्तीः ॥ (दी.७। प.१२। मा.९)३१(छो । ४१९)

(२४८-२) ॥ साध्रम् । सध्रो बृहतीन्द्रः ॥

त्वामाऽ३इन्द्रायाशाअसाइ ॥ ऋजाइषीशाऽ२ । वासाऽ३४५ः । पाऽ२३४तीः ।

त्वंवृत्राणिहँ्स्यप्रातीन्येकाइत्पु । रू ॥ आनाओ२३४वा । ताश्चाओऽ२३४वा ॥

षणाऽ५इधृतीः । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.११। मा.१२)३२(पा । ४२०)

(२४८-३) ॥ (समीचीनं) साध्रम् वा । सध्रो बृहतीन्द्रः ॥

हाउत्वमिन्द्रा ॥ याशाआऽ२३४सीऽ६ँ् । हाउ । ऋजाइषीऽ२३४शा । वासस्पा-

ऽ२३४तीऽ६ँ्ः । हाउ । त्वंवृत्रा । णीहँ्सिया । हाउ । प्रतीनाऽ२३४ए ।

काइत्पूऽ२३४रूऽ६ँ् । हाउ ॥ अनुत्ताऽ२३४श्चाऽ६ँ् । हाउ ॥ षाऽ२णा-

ऽ२३४औहोवा ॥ धाऽ२३४र्त्तीः ॥

(दी.४। प.१६। मा.१३)३३(ति । ४२१)

(२४८-४) ॥ (प्राचीनं) यशसी द्वे । द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

हाउत्वमिन्द्रा ॥ याशाआसि । होइ । होइ । होयेऽ३४ । हाउहाउहाउ ॥

ऋजीषीशवासस्पातिः । होइ । होइ । होयेऽ३४ । हाउहाउहाउ ॥

त्वंवृत्राणिहँ्स्यप्रातीन्येकाइत्पुरू । होइ । होइ । होयेऽ३४ । हाउहाउहाउ ॥

अनूत्तश्चर्षणीधृतिः । होइ । होइ । होयेऽ३४ । हाउहाउहाउवा ॥ सुवर्माहाऽ२३४५ः ॥

(दी.८। प.२२। मा.२६)३४(दू । ४२२)

(२४८-५)

होत्वमिन्द्रा ॥ याशाआसि । होयेऽ३ । होऽ२३४५ । ऋजीषीशवासस्पातिः । होयेऽ३ । होऽ२३४५ । त्वंवृत्राणिहँ्स्यप्रातीन्येकाइत्पूरू । होयेऽ३ । होऽ२३४५ ॥ अनूतश्चर्षणीधृतिः । होयेऽ३ । होऽ२३४वाऽ६ँ्। हाउवा ॥ सुवर्मयाऽ२३४५ः ॥

(दी.८। प.१५। मा.६)३५(णू । ४२३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥

(२४९-१) ॥ यौक्तस्रुचम् । युक्तस्रुक् बृहतीन्द्रः ॥

इन्द्रामिद्देवता । तयाइ । इन्द्रंप्रयातियध्वाऽ२३राइ । आइन्द्राऽ२म् । समीकेव-निनोहावामाऽ२३हाइ ॥ आइन्द्राऽ२म् ॥ धानस्यासोऽ२३४वा ॥ ताऽ२३४ये ॥

(दी. ५। प.८। मा.७)१(बे । ४२४)

(२५०-१) ॥ आत्राणि त्रीणि, वासिष्ठानि वा । त्रयाणां अत्रिर्बृहतीन्द्रः ॥

५ ४र ५ र र र ४ ५ ४ ४ १ २ ३ र २ १ २र ३ २ ३ २
इमाउत्वापुरूवसोगीरः । एऽ५ । गिराः ॥ वार्द्धन्तुयामामाऽ२३ । पावाकावर्णाः।
फी ता त डी शां
१ २ २ न २ ३ २ १ र र २ —
शुचयोवीऽ३पा । हिम्ऽ३हिम् । चाऽ२३४इताः ॥ अभिस्तोमैरानौऽ२ ॥
कः खू दू घु
१ न २ १ २ ४ ५ ४
हुवाइ । होऽ३वा । षाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
क खु र ची ता प

(दी.८। प.१५। मा.१०)२(णौ । ४२५)

(२५०-२)

५ र र र र १ र २ १ २ ३ र २र १ १ ३ ५
इमाउत्वापुरूवसोहाउ ॥ गिरोवर्द्धा । तूयाऽ१ममाऽ२ । इहाहाहोइ ।इहोऽ२३४वा ।
प का धि या गा
२र १ २र १ २ ३ र २र १ १ ३ ५ २ १ १ र र
पावाकावर्णाःशुचायः । इहाहाहोइ । इहोऽ२३४वा ॥ विपश्चि । तो । अभिस्तोमैः ।
छु या गा र क क
३ र २र १ १ ३ ५ २ १ १ ३ ५र र ३ ५
इहाहाहोइ । इहोऽ२३४वा । आनूऽ२३ । षाऽ२ताऽ२३४ओहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥
या गा चौ- वे दू

(दी.१७। प.१६ । मा.८)३(च्वै । ४२६)

(२५०-३)

४ ३र ४ ५र र ३ २ १ र ५ ४र ५ २र १ २र
इमाउत्वापुरू । वासाऽ३उ । गाऽ२३४इ । रोवर्द्धन्तुयाः । मामा ॥ पावाकावर्णाः-
थ टी की ती ता
१ २र १ २ २ १ २ २ २ १ र र — १
शुचायोविपश्चि । ता । औऽ३हो । आऔऽ३हो ॥ अभिस्तोमैरानौऽ२ ॥ हुवाइ।
रो क चे कः छु क
न २ १ २ ४ ५ ४
होऽ३वा । षाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
खु र ची ता प

(दी.१०। प.१६। मा.७)४(पे । ४२७)

(२५१-१) ॥ वासिष्ठानि त्रीणि, आत्राणि वा । त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः ॥

५ र २र१ २ ३ ५ २र१र २ २ ३
उदुत्येमा ॥ धूमत्तमाऽ२३ः । गाइरस्तोऽ२३४मा । साईरतायेऽ३ । सात्राजा-
प चौ शे चौ

५ २ ३ ५ २र १र २ ३ ५
ऽ२३४इताः । धानासाऽ२३४आ । क्षीतोतयाऽ२३ः ॥ वाजायाऽ२३४न्ताः ॥
शे शे चौ शे

३ २ ४
राथाऽ३आऽ५इवाऽ६ँ५६ँ ॥ (दी.६। प.९। मा.१०)५(घौ । ४२८)
टो

(२५१-२)

४ र ४ १ र र — १ — र १ र —१र
उदुत्येमाऽ५धुमत्तमाः ॥ गिरस्तोमासआऽ२इराताऽ२इ ।सत्राजितोधनाऽ२साआ ॥
ती धि रै

२ र १ — १र र २ ५
क्षितोतायाऽ२ः ॥ वाजयन्तोराथाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ२३४वा ॥
चौ क्त दू

(दी.९। प.६। मा.७)६(ते । ४२९)

(२५१-३)

३ ।।। ३४३र ४ ५ ३ ५ १ — १ —
हिँऽ२३४५ । उदुत्येमधूमा । तमोऽ२३४हाइ ॥ गाइराऽ२स्तोमाऽ२ ।
दू ठि दू धि

३ २ ३ ५ २ र १ विर १र २र ३ ।।।
साआऽ३४५इ । राऽ२३४ते । सत्राजितोऽ२धनसाअक्षितोतायाऽ२३४५ः ॥
दू दू जौ

३ ।।। ४र ३ ४र ५र ३ ५ २र १ २र १ २र १
हिँऽ२३४५ । वाजायन्तोराथाः । इवोऽ२३४हाइ ॥ वाजयन्तोराथाइ । वा।
दू थ दू घु क

२ ४ ५ ४
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
चि ता प

(दी.११। प.१५। मा.१०)७(डौ । ४३०)

(२५२-१) ॥ गौतमस्य मनाज्ये, गोराङ्गिरसस्य सामनी वा द्वे । द्वयोर्गोतमो बृहतीन्द्रः ॥

याथागौऽ२३रोअपाकृताम् ॥ तृष्यन्नेतियावेराऽ२३इणाम् । आपित्वेनःप्रपित्वेतूयामागा-

ऽ२३ही ॥ कण्वेऽ२षूसूऽ२३ ॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा ॥ पीऽ२३४बा ॥

(दी.१२। प.६। मा.५)८(चु । ४३१)

(२५२-२)

ओवाओऽ२३४वा । याथा ॥ गौरोआऽ३पाकृतम् । ओऽ३४ । हाहोइ ।

तृष्यन्नेतियाऽ३वाइरीणम् । ओऽ३४ । हाहोइ । आऽ२३४पी । त्वेनःप्रपित्वेतूयामा-

ऽ१गाहि । ओऽ३४ । हाहोइ ॥ कण्वेऽ२षूसूऽ२३ ॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा ॥

पिबाऽ३ईऽ२३४५ ॥ (दी.११। प.१५। मा.१०)९(ञौ । ४३२)

पंचविंश,द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशति ॥६॥

(२५३-१) ॥ इन्द्रस्य हारणानि, हारायणानि वा, त्रीणि त्रयाणामिन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

शग्ध्यूषू ॥ शाचाइपाताइ । ईऽ२३४न्द्रा । विश्वाभीऽ३रूतिभाइः । भाऽ२३४गाम् ।

नहित्वायशाऽ३साम्वासू । वीऽ२३४दाम् ॥ आनूऽ२३ । शूऽ२राऽ२३४औहोवा ॥

चाराऽ२मासीऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.१०। मा.७)१०(ङे । ४३३)

(२५३-२)

शग्ध्यूष्वौहोऽ५इशाचीपाताइ ॥ आइन्द्रविश्वाभिरूतिभिः । भगान्नाऽ३ही।
त्वायशसाम् । वासूऽ३हाइ ॥ वाइदाऽ२म् ॥ अनुशूरचरोवाऽ३ओऽ२३४वा ।
माऽ५सोऽ६हाइ ॥

(दी.७। प.८। मा.१०)११(जौ । ४३४)

(२५३-३)

शग्ध्यूषुशाची । पाताइ । शग्ध्यूषू ॥ शाचाइपाते । आऽ२इहिमाऽ२३४हाः ।
आइन्द्राविश्वा । भिरूतीभिः । आऽ२इहिमाऽ२३४हाः । भागन्नहित्वायशसम् ।
वासूविदम् । आऽ२इहिमाऽ२३४हाः ॥ अनूशूऽ१राऽ२३ । आऽ२इहिमा-
ऽ२३४हाः ॥ चारामाऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७।प.१६। मा.१६)१२(चू । ४३५)

(२५४-१) ॥ वाम्राणि त्रीणि । त्रयाणां वम्रो बृहतीन्द्रः ॥

याहोइ । ईऽ२३४न्द्रा ॥ मुजाऽ३आमाऽ१राऽ२ः । सुवाऽ२३हा । वाँ असुऽ३राइमा-
ऽ१याऽ२ः । स्तोताऽ३हा । रमिन्मघवन्नस्यावार्द्धायाऽ२ ॥ याइचाऽ३हाइ ॥ त्वेवृक्तबर्हा-
ऽ२३इषाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११। मा.११)१३(ट । ४३६)

(२५४-२)

याइन्द्रभुजआभाऽ६ँ रा: ॥ सुवर्वाँ आ । सुरेऽ२भाऽ२३४या: । हा । औहोऽ२३४हा ।
स्तोतारामाइत् । माघवन्ना । स्यावाऽ२र्द्धाऽ२३४या । हा । औहोऽ२३४हा ॥
येचत्वाऽ२३इवृऽ३ । हा । औहोऽ२३४हा । क्तबर्हाऽ२३इषाऽ३४३: ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.९ । प. १६। मा.११)१४(त । ४३७)

(२५४-३)

याइन्द्राभुजआभर: । उहुवाहाइ ॥ सुवर्वा ँअसुरेभ्य: । उहुवाऽ२३हाइ ॥
स्तोतारमिन्माघवन्ना । स्यावार्द्धायाऽ२ । उहुवाऽ२३हाइ ॥ येचत्वाऽ२३इवृ ।
उहुवाऽ२३हा ॥ क्तबर्हाऽ२३इषाऽ३४३: । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.१२। मा.१२)१५(छा । ४३८)

(२५५-१) ॥ वरुणसामानि त्रीणि । त्रयाणां वरुणो बृहतीविश्वेदेवा: ॥

प्रमित्रायप्राहाउ ॥ आऽ२र्यम्णाइ । सचाऽ२हो । थियौऽ२ । हुवाइ । आर्तावसाउ ।
वराऽ२हो । थियौऽ२ । हुवाइ । वरुणेछा । दीयंवचा: ॥ स्तोत्राऽ२ँ होइ ॥
राजौऽ२ । हुवा । षूगायाताऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा ॥

(दी.१०। प.१६। मा.८)१६(प्यै । ४३९)

(२५५-२)

प्रमित्रायप्रौहोवा ॥ आर्यम्णा । औहोऽ३४इ । औहोऽ३वा । साचाथ्यम् ।ऋतावासा ।
औहोऽ३४इ । औहोऽ३वा । वारुथ्येवरुणेछा । दियाम्वाचा । औहोऽ३४इ ।
औहोऽ३वा ॥ स्तोत्र ँ्राजा । औहोऽ३४इ । औहोऽ३वा ॥ षूगायाता । औहोऽ३४इ ।
औहोऽ३वाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१६।प.२०।मा.७)१७(ङे। ४४०)

(२५५-३)

प्रमित्रायप्रार्यम्णोवा । ओवा ॥ साचाथ्यम् । ऋतावाऽ१साऽ२ऽउ । वाऽ२३रू ।
थाऽ२३याइ । वरुणेछा । दायाऽ२३ ँ्हाइ । वचोऽ३आ । स्तोत्र ँ्राजसुगायता ।
स्तोऽ२३त्राम् ॥ राजासुगौऽ३ । होऽ३१२३४ । वा । याऽ५तोऽ६ ँ्हाइ ॥

(दी.६। प.१५। मा.७)१८(ङे। ४४१)

(२५६-१) ॥ प्रजापतेः वषट्कारणिधनम् । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

आभित्वापूर्वपीताये । अभित्वाऽ३पूर्वपीतयाइ ॥ इन्द्रस्तोमेभिऽ३रायावाऽ२ः ।
भिरायाऽ१वाऽ२३ः । ओमोऽ३वा ॥ समीचीनासऋभवःसाऽ३मास्वाराऽ२न् ।
सामास्वाऽ१राऽ२३न् । ओमोऽ३वा ॥ रुद्रागृणन्ताऽ३पूर्वियाऽ२म् । तापूर्वाऽ१-
याऽ२३म् । ओम् । ओऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१७। प.१५। मा.९)१९(ञ्वो । ४४२)

(२५७-१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम, मारुतम् वा । मारुतो बृहतीन्द्रः ॥

प्रावाइन्द्रायबृहते । प्रावाः ॥ इन्द्रायाऽ३बृहाऽ१तेऽ२३ । ओमोऽ३वा । मरुतोब्रह्मा-

ऽ३आर्चाऽ१ताऽ२३ । ओमोऽ३वा । वृत्रँ्हाना । तिवृ । त्राहाऽ२३ । ओमोऽ३वा ।

शाताक्रातुः ॥ वाऽ२३४प्रे ॥ णाशाऽ३ । हाऽ३हा । तपाऽ५वर्णा । होऽ५इ ॥डा ॥

(दी.७। प.१७। मा.५)२०(छु । ४४३)

(२५८-१) ॥ संश्रवसः, विश्रवसः, सत्यश्रवसः, श्रवसो वा, सैँशानानि चत्वारि सामानि । चतुर्णामिन्द्रो बृहती मरुतः ॥

सान्त्वाहिन्वा । तिधाइताइभीऽ३ः । ताऽ२इ ॥ भाऽ२३४ । औहोवा ॥

सँ्श्रवसेऽ३ ॥ (दा १) ॥ सांत्वारिणा । तिधाइताइभीऽ३ः । ताऽ२इ ।

भाऽ२३४ । औहोवा ॥ विश्रवसेऽ३ ॥ (दा२) ॥ सांत्वातता । क्षुद्धाइताइभीऽ३ः।

ताऽ२इ । भाऽ२३४ । औहोवा ॥ सत्यश्रवसेऽ३ ॥ (दा ३) ॥

(दी. ९। प.१८ । मा.१२)२१(दा । ४४४)

(२५८-२) ॥ इन्द्रस्य वाय्यानां वा ॥

१ र २ १ २ — १ — र १ २ —
सान्त्वाशिशा । तिधाइताऽ१इभीऽ२ः ॥ ताइभीऽ२ः । बृहदिन्द्रायाऽ३गायाऽ१ताऽ२ ।
का छु का पु
१ — र १ २ — १ — २र र
याताऽ२ ॥ मरुतोवृत्राऽ३हान्ताऽ१माऽ२म् ॥ तामाऽ२म् । येनज्योतिरजनयन्नृऽ३-
का पु का
१ २ — १ — र र र १२ — — १ २
तावाऽ१र्द्धाऽ२ः । वार्द्धाऽ२ः ॥ देवंदेवायाऽ३जागृऽ१वीऽ२ । गृवीऽ२ ।सान्त्वाशिशा।
पु का पु का का
१ २ १ ३ ५र र १ ३ ।।।
तिधाइताइभीऽ३ः । ताऽ२इ । भाऽ२३४ । औहोवा ॥ श्रवासेऽ२३४५ ।
चौ का टु प गा

(दी.११ । प. १७ । मा. १३)२२(खि । ४४५)

(२५९-१) ॥ वाम्रे द्वे । द्वयोर्वाम्रो बृहतीन्द्रः (सूर्य) ॥

२ १ २ २ १ २ — १ २ २
इन्द्राऔऽ३हो ॥ क्रतुन्नाऽ३आभाऽ१राऽ२ । पिताऔऽ३हो ।
जा पु जा
र १ २ — १ २ २ र र१ २ —
पुत्रेभिऽ३योयाऽ१थाऽ२ । शिक्षाऔऽ३हो । णोअस्मिन्पुरुहूतयामाऽ१नीऽ२ ॥
पु जा पु
१र १ ३ ५र र २ र १ ३ ।।।
जीवाऽ२३ः ॥ ज्योऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ अशीमाहीऽ२३३५ ॥
कि वे शि

(दी.७। प.९। मा.७)२३(झे । ४४६)

(२५९-२) ॥ क्रतु वासिष्ठम् ॥

४ र ४ २१र २ १र र २ १ २र
इन्द्रक्रतूऽ५न्नआभरा ॥ पितापुत्रेभियोयथा । शिक्षाणोऽ२३आ । स्माइन्पुरुहू ।
ती रो कः का
१ २ — १ — १ — १ २ ५ २र १र
तयामाऽ१नीऽ२ । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ । औऽ३होऽ२३४वा ॥ जीवाज्यो-
छु का का क से
२ १र २ १
ऽ२३तीः ॥ आशीमाऽ२३हाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
जा जु कु प

(दी. ८। प.१३। मा.७)२४(डे । ४४७)

(२५९-३) ॥ वासिष्ठम् । वासिष्ठो बृहतीन्द्रः (सूर्यः) ॥

३ ४ ३ ४ ५ र ३ २ ३ ५ र २ ४र ५ ४र ५ ३ । । ।
इन्द्रक्रातुन्नआ । भाराओऽ२३४वा ॥ पितापूऽ३त्रेभियोयथा । हिँ२३४५ ।
ठी ठौ पः टू

४ ३र ४ ३र ४ ५ १ ५ ४ ५ ४ ५ ३ ४ ५ र र १
पितापुत्रेभियः । याथाऽ२३४हाइ । शाइक्षाणोआ । स्मान्पुरुहूतया । मानो-
थि कु तु टा

५ ४ ५ ४ ५ २ १ ५ ४ ५
ऽ२३४हाइ । जीवाज्योतीः ॥ आशोऽ२३४वा । माऽ५होऽ६ँहाइ ॥
कु तु छ ति

(दी.८ । प.१२ । मा. १०)२५(ठौ । ४४८)

(२६०-१) ॥ आङ्गिगस्य स्वपसः सामनी द्वे । आङ्गिगस्यस्वंपसिः बृहतीन्द्रः ॥

५र १ २ २ १ रं २ २ २ १ र र २
मानइन्द्रा ॥ परावाऽ२३र्णाक् । भवानःसधामाऽ१दीऽ३याइ ॥ त्वन्नऊतीत्वमिन्नआपी-
प कः थै

२ १र र २ २ ५
ऽ३याम् ॥ मानइन्द्रपरावृणाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३४पा ॥
थै डै चि

(दी.६। प.६। मा.८)२६(क्यै ।४४९)

(२६०-२)

३र ४ ५ ४ ५र ३ २ ३र ४ ५ २ १र २ १ विर
मानाइन्द्रपारा । वृणाक् । मानाइन्द्रा ॥ पारावाऽ२३र्णाक् । भावाऽ२नःसा ।
टू य टा जा का

१र २ १ र — १ — १र २र १ २
धामादाऽ२३याइ । त्वन्नऊतीऽ२ । त्वमिन्नाऽ२आपियाम् ॥ मानाआऽ२३इन्द्रा ॥
जा का कै जा

१र २ १
पारावाऽ२३र्णा३४३क् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ।
जु कु प

(दी.१०। प.१२। मा.१२)२७(फा। ४५०)

(२६१-१) ॥ आष्कारणिधनं काण्वम् । कण्वो बृहतीन्द्रः ॥

वयंघाऽ३त्वासुतावन्ताः ॥ आपोनवृ । क्ताबाऽ२३र्हिषाउ । वाऽ३२ । पावित्रस्या ।
प्रस्त्रावाणाइ । षुवृत्राऽ२३४हान् ॥ पाऽ२३री ॥ स्तोतारः । आसाऽ२३४५-
ताऽ६ँ५६ँइ ॥ आऽ२३४५ष् ॥ (दी.६।प.११।मा.७)२८(के।४५१)

(२६१-२) ॥ महावैष्टंभम् । विष्टम्भो बृहतीन्द्रः ॥

औहोवा । वायंघत्वासुतावन्तः । औहोवा ॥ औहोइ । आपोनवृक्तबर्हिषाः ।
पवाइत्राऽ३स्या । प्रस्त्रवणेषुवाऽ१र्त्राऽ३हान् । औहोऽ३१इ । औहोइ ॥ परिस्तो-
तारआसते । पराइस्तोऽ३ता ॥ रआसाता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१७। प.१५। मा.११)२९(ञ । ४५२)

(२६१-३) ॥ अभिनिधनं काण्वम् । कण्वो बृहतीन्द्रः ॥

औहोहोहाइ । आइही । वायाम् ॥ घाऽ२३४त्वा । सूतावाऽ२३४न्ताः ।
आपोनाऽ२३४वृ । क्ताबर्हिषाः । ऐहोइ । आऽ२३४इही । पावित्राऽ२३४स्या ।
प्रास्त्रावाऽ२३४णे । षूवृत्रहान् । ऐहोइ । आऽ२३४इही ॥ पारिस्तोऽ२३४ता ॥
राआऽ३साऽ५ताऽ६ँ५६ँइ । आऽ२३४भी ॥

(दी.५। प.१७। मा.१३)३०(फा । ४५३)

(२६१-४) ॥ महावैष्टंभम् । विष्टंभो बृहतीन्द्रः ॥

वायंघत्वोहाइ । सुतावन्तोवा ॥ आपोनवृ । क्ताबार्हाऽ१इषाऽ२३ः । होवाऽ३हाइ ।
पावित्रस्यप्रस्त्रवणे । षुवार्त्राऽ१हा२३न् । होवाऽ३हाइ । पराइस्तोऽ१ताऽ२३ ।
होवाऽ३हा । राआऽ२३ ॥ साऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ दीऽ२३४शाः ॥

(दी.५। प.१३। मा.१०)३१(बौ । ४५४)

(२६२-१) ॥ श्नौष्टीगवम् । श्नुष्टीगुर्बृतीन्द्रः ॥

ओहाइ । यादिन्द्राना । हुषीषूऽ६ँवा ॥ ओजोऽ२नाम्र्णाऽ२म् । चकृष्टि । षू ।
ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२ । हाऽ२ऊऊवाइ । याऽ१द्वाऽ२पाञ्चाऽ२ । क्षितीनाम् ।
ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२ । हाऽ२ऊऊवाइ । द्युम्नामाभा । रा । ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२।
हाऽ२ऊऊवाइ ॥ साऽ१त्राऽ२वाइश्वाऽ२ । निपौँसि । या । ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२ ।
हाऽ२ऊऊवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.९। प.२३। मा.२४)३२(द्वी । ४५५)

॥ त्रयोविंशतिस्तृतीयः खण्डः ॥३॥ दशतिः ॥७॥

(२६३-१) ॥ इन्द्रस्य वृषकम् । इन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

५ ४ ५ ४र ४ १ र र — १र अ
सत्यामित्थावृ । षाऽ५इदसाइ ॥ वृषजूतिर्नोविताऽ२ । वृषाह्युग्राश्शृण्विषाऽ२इ ।
फि ति का घि

र १ २ १ २ १
परावाताइ । वृषोऽ२३र्वा ॥ वाताइश्रूऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
र कः जु कु प

(दी.५। प.९। मा.७)३३(भे । ४५६)

॥ इति ग्रामे गेय गाने सप्तमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(२६४-१) ॥ द्यौते द्वे, द्वैगते वा द्वयोः द्विगद्बृहतीन्द्रः ॥

५ २ ४ ५ ४र ५ १ २र १ २ — ३ २ न
यच्छक्राऽ३सीपारावती ॥ यादर्वाव । तिवार्त्राऽ१हाऽ२न् । आताऽ३ः । हौऽ३-
पः का घु टी

२ २ १र र २ — १ १ ३
होऽ३वा । त्त्वागीर्भिर्द्युगदिन्द्राकेऽ१शिभीऽ२ः ॥ सुताऽ२३ ॥ वाऽ२ँआऽ२३४-
खे घि कि

५र र २ १ विर ३ । । ।
औहोवा ॥ एऽ३ । विवाऽ२सातीऽ२३४५ ॥
वे चा यू

(दी.७। प.१०। मा.५)१(जु । ४५७)

(२६४-२)

४ ५ ४र ५ र ४ ५ ४ २र १ अ ३ २ ३र २
यच्छक्रासिपरावातियादोहाइ ॥ र्वावऽ३ताइवृत्राहाऽ२३४न् । आताऽ३४स्त्वागाइ ।
तो ज यू

१ २ १ २ — १ १ ३ ५र र
भाइर्द्युगादि । द्राकेऽ१शिभीऽ२ः ॥ सुताऽ२३ ॥ वाऽ२ँआऽ२३४औहोवा ॥
का घि कि वे

१ विर ३ । । ।
विवाऽ२सातीऽ२३४५ ॥
यू

(दी.७। प.८। मा.८)२(जै । ४५८)

(२६५-१) ॥ कार्तयशं कार्तवेशं वा । कृतयशा बृहतीन्द्रः ॥

आभिवोवीरमन्धासाः ॥ मदेषुऽ३गायाऽ२ । गिरामाहाऽ३ । वीचेताऽ२३४साम् ॥
इन्द्रन्नामा ॥ श्रूत्यँ्शाकाऽ२३इ । नाऽ२३४औहोवा । वचोऊपाऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.८। मा.५)३(डु । ४५९)

(२६६-१) ॥ इन्द्रस्य शरणम् । इन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

इन्द्रत्रिधाऽ५तुशरणाम् ॥ त्रिवरूथँ्सूवस्तयाइ । छर्दिर्याऽ२३च्छा । माघावद्भ्यः ।
चामाह्याऽ२३श्चा ॥ यावयाऽ२३दी ॥ द्यूमेऽ२मिया ॥ औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.१०। मा.४)४(जी । ४६०)

(२६७-१) ॥ श्रायन्तीयम् । बृहतीन्द्रः प्रजापतिः सूर्यः ॥

श्रायन्तइवसूऽ४रायाम् ॥ विश्वाऽ२इदिन्द्राऽ२ । स्यमाऽ२क्षाता । वासूनिजातोजानिमा ।
नियोजाऽ१साऽ२ ॥ प्रातिभागन्नादीऽ२धिमाः । प्राऽ२३ती ॥ भागान्नाऽ३दा । हिम् ।
धीमाऽ३ः । ओऽ२३४वा ॥ हेऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.१२। मा.६)५(ठू ।४६१)

(२६८-१) ॥ वाम्रम् आक्षीलं वा । वाम्रो बृहतीन्द्रः ॥

नासीमादेवाआ । हाऽ३हाऽ३इ । पाऽ२३४ । तत्पतोवा ॥ इषँ्होऽ२इ ।दीर्घाहोऽ२ । योमार्तायाऽ२ः । आइतग्वाचित् । याआइताशो । यूयाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा । जाताऽ२इ ॥ आइन्द्रोऽ२हारीऽ२ ॥ यूयोऽ२३ । जाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.७। प.१६। मा.१२)६(च्ला । ४६२)

(२६९-१) ॥ शाक्राणि वा वैयश्वानि वा, त्रीणि । त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः ॥

आनः । एविश्वा ॥ सुहाव्याऽ२म् । आइन्द्रँ्सम । त्सूभूऽ१षाता । ऊऽ२३४पा । हाऽ३हाइ । ब्रह्माणिसवना । निवृत्राहान् ॥ परामाऽ२३ज्याः । आर्चाऽ३हाइ॥ षामा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.१५। मा.८)७(णै । ४६३)

(२६९-२)

आनोविश्वासुहाहाव्याम् ॥ इन्द्रँ्समत्सुभूषतो । पब्राऽ२३ह्मा । णीसवना । निवृत्रहान् ॥ पारामाऽ२३ज्याः । आर्चाऽ३हाइ ॥ षामा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.५)८(कु । ४६४)

(२६९-३)

आनोविश्वासुहाव्याम् ॥ इन्द्राम् । समत्सुभूषता । उपाब्राऽ१ह्माऽ२ । णिसवनानि-वृत्रहन् ॥ पारामाऽ१ज्याऽ२ः ॥ ऋचीषाऽ२३माऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.९। मा.५)९(घु । ४६५)

(२७०-१) ॥ प्रजापतेर्निधनकामम् । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

तवेदिन्द्राऽ५वामंवसू ॥ त्वंपुष्यसिमध्यामम् । सात्रावाऽ२३४इश्वा । स्यापरमस्य-राजसि ॥ नाकिष्ट्वाऽ२३४गो । षूवृण्वाऽ२३ताइ । होवाऽ३होइ । हो ।वाहाऽ३१उवाऽ२३४५ ॥

(दी.३। प.९।मा.५)१०(ढु । ४६६)

(२७१-१) ॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि, वसिष्ठस्य वा । त्रयाणां इन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

क्वेयथा ॥ कुवेदासाऽ२इ । औहोऽ२ । औहोइ । औऽ३होऽ२३४वा ।
पुरुत्राचाइत् । हितेमानाऽ२ः । औहोऽ२ । औहोइ । औऽ३होऽ२३४वा ।
अलर्षियू । ध्माखजकृऽ२त् । औहोऽ२ । औहोइ । औऽ३होऽ२३४वा ॥
पुरन्दरा । प्रगायात्राऽ२ः । औहोऽ२ । औहोइ । औऽ३होऽ२३४वा ॥ आगाऽ३ ।
साऽ२इषूऽ२३४औहोवा ॥ सुशँ्साऽ२३४५ः ॥

(दी.१२। प.२३। मा.१३)११(जि । ४६७)

(२७१-२)

कूवाकूवा ॥ याथा । कुवेदसाइ । ऊवाइ । औऽ३होऽ२३४५ । पुरुत्राचाइत् ।
हितेमनाः । ऊवाइ । औऽ३होऽ२३४५ । अलर्षियू । ध्माखजकृत् । ऊवाइ ।
औऽ३होऽ२३४५ ॥ पुरन्दरा । प्रगायात्राः । ऊवाइ । औऽ३होऽ२३४५ ॥
आगाऽ३ । साऽ२इषूऽ२३४औहोवा ॥ सुशाऽ३ँसाऽ२३४५ः ॥

(दी.७। प.२०। मा.१३)१२(ञि । ४६८)

(२७१-३)

क्वेयथकूऽ३वाइदाऽ२३४सी ॥ पुरुत्राचित् । हिताइमाऽ२३नाः । आलार्षि ।
युध्माखजकृऽ३त् । हाउवा ॥ पुरन्दाऽ२३रा । प्रगायात्राऽ२ः ॥ आगाऽ२३ ।
साऽ२इषूऽ२३४औहोवा ॥ प्सूऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.११। मा.९)१३(पो । ४६९)

(२७२-१) ॥ ऐन्द्राणि वासिष्ठानि वा, त्रीणि । त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः ॥

वयमेनाम् ॥ आऽ२इदाऽ२३४औहोवा । हीऽ२३४याः । अपीपेमेहवज्रिणम् ।
तास्माऽ२ऊवाऽ२ । द्यसवनाइ । सूतांभाराऽ२ । आनूनाऽ२३म्भू ॥ षातश्रुते ।
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.९। प.१२। मा.८)१४(थै । ४७०)

(२७२-२)

५ र १ —१ २ १र २र १र ३ २र १

वयमेनाम् ॥ इदाऽ२हायाः । आपौहोइ । पेमौहोइ । इ । हावज्रिणाम् ॥

२ र १ २र १ २र १ २र १र २ १र २र १ २

तस्माउवा । द्यासवनाइ । सूतंभरा ॥ आनौहो । नंभौहो ॥ षातश्रुताऽ३१-

२ ५

उवाऽ२३ ॥ ऊऽ३४पा ॥

(दी.१२। प.१३। मा.८)१५(ज्यै । ४७१)

(२७२-३)

४ ३ ४र ५ र ३ २ ३ ५ ४ ५ २ १ — १ र र र अ —

वायामेनामिदा । हियाओ२३४वा । इयाहाइ ॥ हूवेहोऽ२इ ।अपीपेमेहावाज्रिणाऽ२म् ।

१ र अ — न २ र १र ५

तस्माउवद्यसवनाइ । सूतांभाराऽ२ । ईऽ३या ॥ आनूनाऽ२३४म्भू ॥

२ १ २ १ । । ।

षाताश्रूऽ२३४५ताऽ६ ५६ इ । श्रवाऽ३साऽ२३४५इ ॥

(दी.८। प.११। मा.८)१६(टै । ४७२)

सप्तदश चतुर्थः खण्डः ॥४॥ दशतिः ॥८॥

(२७३-१) ॥ पौरुहन्मनम् । पुरुहन्मा विराट् बृहतीन्द्रः ॥

५र र २ ४ ५ ४ ५ १ र २ र १ २ — १ —

योराजाऽ३चर्षणाइनाम् ॥ यातारथे । भिराध्राऽ१इगूऽ२ः । ध्राइगूऽ२ः ।

१ २ १ २ १ २ १ २ ३ ५ १ २ र १

वाइश्वासाऽ३म् । तरुताऽ३ । तरुताऽ३ । पार्त्तानाऽ२३४नाम् ॥ ज्याइष्ठंयोवा ।

२ ३ ५ ४ ४

त्राहागाऽ२३४र्णाइ ॥ त्रहाऽ५गृणाइ ॥ होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१३। मा.१३)१७(बि । ४७३)

(२७३-२) || प्राकर्षम् । प्रकर्षो बृहतीन्द्रः ||

३र र ४र ५ ३ २ ५ १र र र २ १ २ १ र र र

योराजाचा । षाणाऽ२३४इनाम् || यातारथेभिरध्राऽ२३इगूः । विश्वासान्तरुता-

टा दू थै

२ १ २ १ २ १ २ १ ५ ४ ५

पृतनाऽ२३नाम् || ज्याऽ२३इष्ठाम् || योवृत्राहोवाऽ३ओऽ३३४वा । गाऽ५र्णोऽ६हाँइ ||

कः कः गं ति

(दी.९। प.७। मा.९)१८(थो । ४७४)

(२७४-१) || इन्द्रस्याभयङ्करम् । इन्द्रो बृहतीन्द्रः ||

५ २ ४ ५४र ५ १ र र २ १ २ १ २ १र

यताआऽ३इन्द्राभयामहाइ || ततोनोआभायंकाऽ२३र्धी । मघवञ्छग्धितवतन्नाऊ-

पः थै

२ १ २ १ र २ १ २

ताऽ२३याइ || विद्वाइषोऽ२३वी || मार्द्धोजहि । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।

थै जा का वु

१

ओऽ२३४५इ || डा ||

कु प

(दी.५। प.८। मा.८)१९(वै । ४७५)

(२७५-१) || कावषे द्वे । कवषो बृहतीन्द्रः (वास्तोष्पति;) ||

५र र २ १ १ २ ३ ५ १ २ र १र विर १ र र र

वास्तोष्पताइ । ध्रुवा । स्थूणाओऽ२३४वा । अँसत्रँसोम्यानाऽ२म् । द्रप्सःपुरांभेत्ता-

प र वू घि

२ ३ १ विर

शश्वताऽ२३इनाम् || आऽ२३४इन्द्राः || मुनीऽ२ । नाऽ३१उवाऽ२३ ||

जा दू का छौ

५

साऽ२३४खा ||

दू

(दी.९। प.९। मा.८)२०(धै । ४७६)

(२७५-२)

३र ४र ५र र ३र २ १ ५ र ४र ५ २ १ र र र

वास्तोष्पतेध्रुवा । स्थूणाऽ३ । आऽ२३४ । सत्रँसो । म्यानाम् || द्रप्सःपुरांभेत्ता-

टा टी की ता ता

२ १ २ १ विर १ ५ ३ ५

शश्वताऽ२३इनाम् || आऽ२इन्द्राः || मुनीऽ२ । नोऽ२३४वा || साऽ२३४खा ||

जा कः का कु दू

(दी. ११। प.१०। मा.५)२१(ड्डु । ४७७)

(२७६-१) ॥ सूर्यसाम । सूर्यो बृहती सूर्यः ॥

५ २ ४ ५र १ र २ १ २ ३ ४र ३र ४
बण्माहाँ ऽ३आसिसूर्या ॥ बाडादित्य । माहाँ आऽ१साऽ२३४इ । माहस्तेसातोमाहि-
फ का छे
३र ४५ २ २ १र २ २१ ५ ४ ५
मापानि । ष्टाऽ३मा ॥ मह्नादाऽ२३इवाऽ३ ॥ माहोऽ२३४वा । आऽ५सोऽ६हाँ इ ॥
थु चे जा छ ति

(दी.६। प.८। मा.५)२२(गु । ४७८)

(२७७-१) ॥ वैश्वदेवे, आनूपे, वाध्त्र्यश्वे वा द्वे । आनूपो बृहतीन्द्रः ॥

४ ५ ४ ५ २ र १ २ — १ र २ १ २ —
आश्वीआश्वी ॥ रथीसूऽ३रूपाऽ१ईऽ२त् । गोमाँ यदि । द्रातेऽ१साखाऽ२ ।
तु पु का घि
— १ — १ र २१र २ १ २ २
श्वात्राऽ२भाजाऽ२ । वयसासाचातेसाऽ२३दा ॥ चन्द्राइर्याऽ३तीऽ३ ॥
घि दै वि
१ ४ २ ५
साऽ२३भाऽ३म् । ऊऽ३४५पोऽ६ँ हाइ ॥
ख चु

(दी. ४। प.९। मा:६)२३(धू. । ४७९)

(२७७-२)

५ र र र ५ १र र र १ — १
अश्वीरथीसुरुपाऽ६ँ ईत् । गोमाँ यदिन्द्रतेसखाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया ।
पा घ
२र १र र र र र १ — १ २ —
श्वात्राभाजावयसासचतेसदाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया ॥ चन्द्राइर्याऽ१तीऽ२ ॥
रे घि
१ र २ १ २ १
साभामुप । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
का वु कु प

(दी. १३। प.८। मा.८)२४(डै । ४८०)

(२७८-१) ॥ वैरूपम् । विरूपो बृहन्तीन्द्रः (सूर्यः) ॥

यद्यावाऽ२३इन्द्रातेशताम् ॥ शातंभूमीरुतस्यूऽ२ः । नत्वावज्रिन्त्सहस्त्रँ सूर्याअनूऽ२ ॥

नाजाऽ२तामाऽ२३ ॥ ष्टारो२३४वा । दाऽ५सोऽ६ँहाइ ॥

(दी.७। प.६। मा.५)२५(चु । ४८१)

(२७९-१) ॥ नैपातिथे द्वे । द्वयोर्निपातिथिर्बृहतीन्द्रः ॥

यादिन्द्रप्रागपाक् ॥ उदाक् । न्यग्वाहूयासेनृभाऽ२इः । सिमापुरूनृषूतोआ ।

सियानावाऽ२इ । आसीऽ२प्राशाऽ२ ॥ धतोवाऽ३ओऽ२३४वा । र्वाऽ५शोऽ६ँहाइ ॥

(दी.८। प.८। मा.८)२६(डै । ४८२)

(२७९-२)

यदिन्द्रप्रागपागुदाऽ६ँगे ॥ नायग्वाहू । यासाइनृभीऽ३ः । हा । औहोऽ२३४हा।

सिमाऽ२पुरूनृषूतोआ । सियानावेऽ२३ । हा । औहोऽ२३४हा ॥ असाइप्राशाऽ३ ।

हा । औहोऽ२३४हा ॥ धाऽ२तूऽ२३४औहोवा ॥ र्वाऽ२३४शे ॥

(दी.१३। प.१४। मा.५)२७(द्रु । ४८३)

(२८०-१) ॥ कौमुदस्य बृहतः सामनी द्वे । द्वयोः कुमुदो बृहत् बृहतीन्द्रः ॥

कस्तमिन्द्रा ॥ त्वाऽ२वासाऽ२उ । आमर्त्योदधर्षताइ । श्रद्धाहाइतेऽ२ । माघवन्पा ।

रियाइदाऽ१इवीऽ२ ॥ वाजीवाजाऽ२म् ॥ सिषाऽ२३ । साऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥

ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.८। प.१०। मा.७)२८(क्ले । ४८४)

(२८०-२)

कस्तामिन्द्रत्वा । वासाऽ३उ । आऽ२३४ । मर्त्योदधा । षाताइ ॥ श्रद्धाहाइतेऽ२ । माघवन्पा । रियाइ । दाइवाओऽ२३४वा । ऊऽ२३४पा । वाजीवाजाऽ२म् ॥ सिषाऽ२३ । साऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ।

(दी.८। प.१४। मा.८)२९(द्वै । ४८५)

(२८१-१) ॥ वाचस्साम । वाक् बृहती इन्द्राग्नी ॥

इन्द्राग्नीअपादियाऽ६ँमे ॥ पूर्वागाऽ२त् । पद्वताइभाऽ१याऽ२ः । हित्वाशिरो-ऽ२जिह्वयारा । रापाच्चाराऽ२त् ॥ त्रिँशत्पदा ॥ नियाऽ२३ । क्राऽ२माऽ२३४-औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.१०।प.९।मा.६)३०(भ्लू । ४८६)

(२८२-१) ॥ वाम्रे द्वे । द्वयोर्वम्रो बृहतीन्द्रः ॥

इन्द्रानेदीयएदि । हाइ । मिताम । धा ॥ भिरूतिभिः ॥ आशन्ताऽ२३मा । शन्तमाभिराभिष्टिभिः । आस्वाऽ२३पे ॥ स्वाऔऽ३होऽ३ । पिभिरोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.११। मा.६)३१(दू । ४८७)

(२८२-२)

इन्द्रानेदीयएदि । हाइ । मितामे । धा । भिरूतिभाइः ॥ आशन्तमशन्तमाऽ२भाइः ।

आभिष्टिभिः ॥ आस्वाऽ२पाइस्वाऽ२३ ॥ हाऽ३ । पिभिरोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.११। मा.९)३२(टो । ४८८)

॥ षोडश पञ्चमः खण्डः ॥५॥ दशतिः ॥९॥

(२८३-१) ॥ प्रहितौ द्वौ, वासुके वा । द्वयोर्गौरीवितिर्बृहतीन्द्रः ॥

इतऊती ॥ वोऽ३ओजाऽ३राम् । औऽ३होऽ३वा ॥ प्रहेतारमप्राहीऽ३ताम् ।

औऽ३होऽ३वा । आशुंजेतारऽ३ँ्हाइताऽ३राम् । औऽ३होऽ३वा । राथाइतममतूर्ता-

ऽ२३४न्तू ॥ ग्रियाऽ३ । वाऽ२र्द्धा२३४औहोवा ॥ स्तुषेऽ१ ॥

(दी.९। प.११। मा.८)३३(तै । ४८९)

(२८३-२)

इतऊतीवोअजाऽ६ँ्राम् ॥ प्रहेतारमप्रहितमुहुवाऽ२३होइ । आशुञेतारँ्हाइता-

रमुहुवाऽ२३हो ॥ रथी । तमाऽ२म् । आतूर्ताऽ२३४न्तू ॥ ग्रियाऽ३ ।

वाऽ२र्द्धाऽ२३४औहोवा ॥ स्तौऽ३षाऽ२३४५इ ॥

(दी.१२। प.९। मा.८)३४(झै । ४९०)

(२८४-१) ॥ आत्रे द्वे । द्वयोरत्रिर्बृहतीन्द्रः ॥

मोषुत्वावा ॥ घाताऽ२३४५ः । चाऽ२३४ना । आरेअस्मन्निरीऽ२रमन् ।
आराऽ१त्ताद्वाऽ२ । साधामादाऽ२म् । नाआगहि ॥ आइहावासाऽ२न् ॥ ऊपाश्रुधि ।
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१२। मा.८)३५(खै । ४९१)

(२८४-२)

मोषुत्वावाघतश्चनाऽ६ऽँए ॥ आरेअस्मन्निरीरमाऽ२न् । हाऽ२ऊऊवाऽ२इ । ऊ।
आरात्ताद्वासधमादाऽ२म् । हाऽ२ऊऊवाऽ२इ । ऊऽ२ । नाआगाऽ२३४ही ॥
आइहा । वासौवाओऽ२३४वा ॥ उपश्रूऽ२३धाऽ३४३इ । ओ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.११। प.१३। मा.१५)३६(गु । ४९२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥

(२८५-१) ॥ गौरीविते द्वे । द्वयोर्गौरीविर्बृहतीन्द्रः ॥

सुनोतसोमपाव्नाऽ६ऽँए ॥ सोममिन्द्राऽ२३ । होवाऽ३हा । यावज्राऽ२३इणाइ ।
पचतापक्ताइरवसेकृ । णू । ध्वाऽ१मीऽ२३द्धाइ ॥ पृ । णान् । आइत्पृऽ३हा ॥
णाताइमाऽ२३याऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१३। मा.१०)१(गौ । ४९३)

(२८५-२)

सुनोतासोमपा । आव्नाओऽ२३४वा । इयाहाइ ॥ सोममिन्द्राऽ२ । हुवेऽ२ । हुवेऽ२हो । यावाग्रिणाऽ२इ । पचतापक्ताइरवसेकृ । णू । ध्वाऽ१मीऽ२३द्धाइ॥ पृ । णान् । आइत्पृऽ३हा ॥ णाताइमाऽ२३याऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.१६। मा.१०)२(चौ । ४९४)

(२८६-१) ॥ वामदेव्यम् । वामदेवो बृहतीन्द्रः ॥

यःसत्राहाविचर्षणिः । इन्द्रन्ताऽ३ हूँमाहेवायाम् ॥ इन्द्रन्त हूँमाहेवाऽ२३याम् । सहस्रमन्योतुविनृम्णासत्पाऽ२३ताइ ॥ भावासाऽ२३मा ॥ त्सूनोवृधे । इडा-ऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१०। प.९। मा.५)३(भु । ४९५)

(२८७-१) ॥ अश्विनोः साम । अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ) ॥

शचीभिर्नाऽ५ःशचीवसू ॥ दिवानक्तंदिशस्यताम् । मावाऽ२म् । रातिरुपद-सात्कादाचना ॥ आस्माऽ२त् ॥ रातिःकादोऽ२३४वा । चाऽ५नोऽ६ हूँाइ ॥

(दी.५। प.७। मा०४)४(फी ।४९६)

(२८८-१) ॥ वसिष्ठस्य पञ्चाणि त्रीणि । त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रावरुणः ॥

५ र १ ‸ ३ ५र र ३ ५ २र १र २र १ २
यदाकदा ॥ चाऽ२माऽ२३४औहोवा । दूऽ२३४षे । स्तोताजारेतामर्तियाऽ३ः ।
प वे दू छू

१ २ १ अ ३ २ ३ २ १ २र १
आदिद्वन्दे । तावारुणाऽ२३४म् । वीपाऽ३४गिरा ॥ धार्त्तारांवीऽ२३ ॥
का घु यू घी

१ ‸ ३ ५र र ३ । । ।
व्राऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ नाऽ२३४५म् ॥
वे दू

(दी.९। प.१०। मा.५)५(नु । ४९७)

(२८८-२)

५ र र र १ — १ — १ र २
यदाकदाचमाहाउ ॥ दूषाऽ२इस्तोताऽ२ । जराइ । तामर्तियाः । आदिद्वन्दा ।
प घि च र का

३र न २ २ १ ‸ ३ ५ २ र १ र २‸
औहोऽ३हाऽ३ । हाइ । तावाऽ२रूऽ२३४णाम् । विपागिरा ॥ धर्त्तारंव्या ।
डु च वू र का

३र न २ २ १ र २र १ २ १
औहोऽ३हाऽ३ । हाइ ॥ व्रातानाम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
डु च का वु कु प

(दी. १०। प.१६। मा.९)६(पो । ४९८)

(२८८-३)

४ ३ ५ ३ ५ र ३ २ ४ ५ २ १ २
यादाऽ४क । दाऽ४चमी । दुषाऽ३इ । स्तोता ॥ जराइ । तामार्त्तायाऽ३ः ।
थे टा टी ता च चौ

१ २ १ ‸ ३ ५ र ३ २ ‸ ३ ५
आदाइद्वन्दाऽ३इ । तावाऽ२रूऽ२३४णाम् ॥ विपा । गिरौवाओऽ२३४वा ।
कि वू प ठौ

र ३ २ ‸ ३ ५ ४ ४
धर्त्ता । रंव्यौवाओऽ२३४वा ॥ व्रताऽ५नाम् । होऽ५इ ॥ डा ॥
प ठौ ता ता प

(दी.३। प.१५। मा.१०)७(णौ । ४९९)

(२८९-१) ॥ सौभरे द्वे । सौभरिर्बृहतीन्द्रः ॥

४र ५ र .४ २ १र २ १ र २ र १र २
पाहिगाआ ॥ धासोमाऽ२३दाइ । आइन्द्रायामे । धियाताऽ२३इथाइ ।
ती जा का जा
१ २र १ २र १ अ — १ २ २ २ १ ५
यःसंमिश्लोहरियोर्यः । हाइराण्यायाऽ२ः । आइन्द्रोवाऽ३ग्रीऽ३ ॥ हिरोऽ२३४वा ।
गो धि वि छ
४ ५
ण्याऽ५योऽ६ँ्हाइ ॥
ति

(दी.८।प.९।मा.१०)८(ढौ ।५००)

(२८९-२)

५र ४ ५ २र १र २ १ र २ र १र २
पा । ह्येपाही ॥ गाअन्धसोमाऽ२३दाइ । आइन्द्रायामे । धियाताऽ२३इथाइ ।
प ता जा का जा
१ विर १ र अ — १ २ २
यस्संमिश्लोऽ२हरियोर्यः । हाइराण्यायाऽ२ः ॥ आइन्द्रोवाऽ३ग्रीऽ३ ॥
कै धि वि
२ १ ४ ५
हिरोऽ२३४वा । ण्याऽ५योऽ६ँ्हाइ ॥
छ ति

(दी.८। प.१०। मा.१०)९(णौ । ५०१)

(२९०-१) ॥ इन्द्रस्य वैयश्वम् । व्यश्वो बृहतीन्द्रः ॥

५ १ विर १र १ २ २
उभय ँ्शृणवच्चनाऽ६ ँ्ए ॥ आइन्द्रोऽ२अर्वागिदंवचाऽ२३ः । होवाऽ३हाइ ।
पा घी कः
१र २र १विर १ २ २ ३ ५ २ १र
सत्राचियामाघावाऽ२न् । सो । मापाऽ३हाइ । ताऽ२३४याइ ॥ धियाशविष्ठ-
छु क कः दू
१ २ १ ४ ५ ४
आऽ२३होइ ॥ गामात् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
रु र कु ता प

(दी.६। प.१२। मा.१२)१०(खा । ५०२)

(२९१-१) ॥ इन्द्रस्य सहस्रायुतीये, प्रजापतेर्महोविशीये वा द्वे । (इन्द्रोवा)

५ र ४ ५ २ ३ ५ २ र र १ २ ४ ५
महेचनोवा ॥ त्वाअद्राऽ२३४इवाः । पराशुल्का । याऽ३दायासाऽ३इ । नासा।
पै शे च छौ ता

३ २ १ र २ र १ २ ४ ५ ३र २ १ ४
हस्राऽ३ । यानायुता । यावाज्राइवोऽ३ ॥ नाशा । तायाऽ३ ॥ शाऽ२३ताऽ३।
टी का चौ ता टी ख

२ ५
माऽ३४५घोऽ६ँहाइ ॥
चु

(दी.६। प.१२। मा.६)११(खू । ५०३)

(२९१-२)

५ र २ ४ ५र ४ ५ १ र २ र १ २ — १ —
महेचाऽ३नत्वाअद्रिवाः ॥ पाराशुल्का । यादायाऽ१साऽ२इ । नसहस्राऽ२ ।
पः का छु का

१ र र अ — १ २ १ १ ३ ५र र
यनायुतायावाज्रिवाऽ२ः ॥ नाशाताऽ२३या ॥ शाताऽ२३ । माऽ२घाऽ२३४औहोवा ॥
घि जा चौ वे

३ ५र २
माहोविशेऽ१ ॥ (दी.९। प.९। मा.५)१२(धु । ५०४)
रो

(२९२-१) ॥ इन्द्राण्यास्साम । इन्द्राणी बृहतीन्द्रः ॥

४ ५र र र ४ ५ ३ २ ३ ५ २ १ २ २ ३ ५
वस्याँइन्द्रासिमे । हाउपितूः । उताम्राऽ२३४तूः । आमूआतौ३ । वाओऽ२३४वा ।
ता ता ठौ चौ शे

२र १ २ २ ३ ५ २ १ २ २ ३ ५
माताचामौ३ । वाओऽ२३४वा । छदयथः । साऽ३मावासौ३ । वाओऽ२३४वा॥
चौ शे च छौ शे

२ १ २ २ ३ ५ २ १ ५ ४ ५
वासूत्वानौ३ । वाओऽ२३४वा ॥ यारोऽ२३४वा। धाऽ५सोऽ६ँहाइ ॥
चौ शे छ ति

(दी.४। प.१४। मा.१०)१३(घौ । ५०५)

सप्तदश षष्ठः खण्डः ॥६॥ दशतिः ॥१०॥

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥

(२९३-१) ॥ सौभरम् । सुभरिर्बृहतीन्द्रः ॥

इमाऽ३४इ । इमइ । द्रायसुन्वाऽ६ँ्इराइ ॥ सोमासोदध्याशिराः । ताँ्आमदायव-
ज्रहस्तपीतायाइ ॥ हराऽ२३हो । भ्याऽयाऽ२३हो ॥ हियोऽ२३ । काऽ२-
आऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१२। प.१०। मा०९)१४(ज्वो । ५०६)

(२९४-१) ॥ गार्त्समदम् । गृत्समदो बृहतीन्द्रः ॥

इमइन्द्राऽ५मदायताइ ॥ सोमाश्चिकित्रउक्थिनाः । माऽ१धोऽ२ःपापाऽ२ ।
नउपनोगिराःशाऽ१र्णूऽ२ ॥ रास्वस्तोऽ२३त्रा ॥ यागिर्वाऽ२३णाऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.८। मा.७)१५(बे । ५०७)

(२९५-१) ॥ वाचस्साम । वाग्बृहतीन्द्रः ॥

आत्वद्यासाऽ६ँ्बर्दुघाम् ॥ हुवाइगाऽ२यत्रावेऽ२पसम् । आइन्द्राम्धेऽ३नूम् । सुदुघाम् ।
आ । नीयाऽ२माऽ२३४इषाम् ॥ उरुधाऽ२३राम् ॥ आरंकाऽ२३र्ता३४३म् ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१०। मा.११)१६(म । ५०८)

(२९६-१) ॥ बार्हदुक्थम् बृहदुक्थो बृहतीन्द्रः ॥

४ ५र ४ ४ १ २ १र २ १ अ —
नत्वाबृहा । तोऽ५द्रायाः ॥ वरन्तइन्द्रावीडाऽ२३वाः । याच्छिक्षासीऽ२ ।
ती ती चै घि

१ अ — १र २ १र २
स्तूवाताइमाऽ२ । वातेवसू ॥ नकिष्टाऽ२३दा ॥ मिनाताऽ२३इताऽ३४३इ ।
घि र कः जु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कु प

(दी. ४। प.१०। मा.७)१७(ने । ५०९)

(२९७-१) ॥ नैपातिथम्, वाशम् वा । निपातिथिर्बृहतीन्द्रः ॥

५ र र २ १ २ — १ २ — १ र
कईम्वेदा ॥ सूताइसाऽ१चाऽ२ । पिबन्तंकद्वायोऽ१दाधाऽ२इ । आयंयःपुरोविभि-
प छु घि

२ — १र २ १ ३ ५र र
नत्ताओऽ१जासाऽ२ ॥ मन्दानाऽ२३ःशीऽ३ ॥ प्राऽ२याऽ२३४औहोवा ॥
छु जि वे

३ ५
धाऽ२३४साः ॥
दू

(दी.६। प.७। मा.६)१८(ख् । ५१०)

(२९८-१) ॥ तौरश्रवसम् । तुरश्रवा बृहतीन्द्रः ॥

२ १ ४र र ५ २र र १ २ १ २
यादिन्द्राऽ२३शासोअव्रताम् ॥ च्यावयास । दाऽ३सास्पारौ । वाऽ३२ । अस्माकामौ ।
छ च छो चै चो

१ २ १ २ १ २
वाऽ३२ । शुंमाघवन् । पुरुस्पृहौ । वाऽ३२ ॥ वासाव्यायौ । वाऽ३२३ ॥
चै का चो चे चो चै

२ १ ५ ४ ५
धीबोऽ२३४वा । हाऽ५योऽ६ँहाइ ॥
छ ति

(दी.४। प.१३। मा.४)१९(दी । ५११)

(२९९-१) ॥ त्वाष्ट्र्यास्साम । त्वाष्ट्री बृहतीन्द्रो विश्वेदेवाः ॥

त्वष्टाऽ३४ । नोदैवियम् ॥ वाचाः ॥ पर्जन्योब्रह्माणस्पाऽ२३तीः । पुत्रैर्भ्रातृभि-
रदितिर्न्नूपातूऽ२३नाः ॥ दुष्टाराऽ२३न्त्रा ॥ माणंवाऽ२३चाऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.९। मा.६)२०(धू। ५१२)

(३००-१) ॥ अदितेः साम । अदितिर्बृहतीन्द्रः ॥

कदाचनस्ताऽ६ ँरीरसाइ ॥ नेन्द्रासाऽ२३४श्चा । साइदाशूऽ२३४षाइ ।
ऊपोपेन्नुमघवन्भूयाइत् । हाऽ२इनूऽ२३४ताइ ॥ दानंदाऽ२३४इवा ॥
स्यापोऽ२३४वा । च्याऽ५तोऽ६ ँहाइ ॥

(दी.६। प.८। मा.९)२१(गो। ५१३)

(३०१-१) ॥ आजीगर्तम् । अजीगर्तिर्बृहतीन्द्रः ॥

आइहीऽ२ । आइहिहाइ । युंक्ष्वाहिवाऽ३र्त्राऽ३हन्तामा ॥ हारीइन्द्रा ।
पारावाऽ१ताऽ२३४ः । अर्वाऽ३४चीनाः । माघवन्त्सो । मपाइताऽ१याऽ२३४इ ॥
उग्राऽ३४ऋष्वाऽ३इ ॥ मिरूऽ२३४वा । गाऽ५होऽ६ ँहाइ ॥

(दी.४ । प.११। मा.११)२२(त । ५१४)

(३०२-१) ॥ माधुच्छन्दसम् । मधुच्छन्दा बृहतीन्द्रः ॥

३र ४ ५र २ ३ ४र ५ ५ २ १ २ १ २ ३ ५
त्वामिदा । होइ । हियोनराऽ६ँ ऽ ए ॥ आपाइप्यन्वा । ज्राइन्भूर्णाऽ२३४याः ।
टा च टि रो यू

१ २ १र २र १ २ ३र२ ३र२ १ २ ३र२ ३र२
सइन्द्रस्तोमवाहसः । इहाश्रूधा । औहोऽ३४वाहाइ ॥ उपास्वासा । औहोऽ३४वाहा ॥
धि चो यू चो यू

१र २ १
रामागाऽ२३हाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
णु कु प

(दी.१०। प.१३। मा.१०)२३(बौ । ५१५)

दश सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः ॥१॥

(३०३-१) ॥ उषसस्साम । उषा बृहतीन्द्रः उषा ॥

२ १ ३ २ १ ३ २ १ २ १ २ १ ३ २
प्राताइ । इहा । आइ । इहा । उवद । शिऽ३आयाती । आयाती ॥ उच्छा । इहा ।
र य क य च छो का र य

१ ३ २ र १ अ — १ अ — १ ३ २ १
आ । इहा । तीदु । हीऽ३तादीवाऽ२ः । आदिवाऽ२ः ॥ अपो । इहा । ओ ।
क य च बु धि र य क

३ २ १ र २ र १ अ — १ अ — र १ ३ २ १
इहा । माहीवृणुतेच । क्षुषातामाऽ२ः । आतामाऽ२ः ॥ ज्योताइ । इहा । आइ।
य का छु धि र य क

३ २ र १ अ — १ अ १
इहा । कृणो । तिऽ३सूनारीऽ२ । ओनारीऽ२३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
य च बु चं कु प

(दी.५। प.३०। मा.१०)२४(मौ । ५१६)

(३०४-१) ॥ अश्विनोः साम । अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा) ॥

२ र र ३ ५र २ र र ३ ५र २ र र र
इमाउवांदिविष्टयाऽ२३४ऐही ॥ उस्राहवन्तेअश्विनाऽ२३४ऐही ॥ अयंवामह्वेवसे-
सै सै

र ३ ५र २ ३ ५र ४
शचीवसूऽ२३४ऐही ॥ विशंविशँ ऽ हिगच्छाथाऽ२३४ऐही । होऽ५इ ॥ डा ॥
सै सै ता प

(दी.१२। प.६। मा.७)२५(चे । ५१७)

(३०५-१) ॥ अश्विनोः संयोजनम् । अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा) ॥

कुष्ठःकोवामश्विनाआ ॥ तापानोदे । वामार्तायाऽ३ः । होवाऽ३हाऽ३४इ ।
घ्नाताऽ३४वामाऽ१ । श्नायाऽ३ । होवाऽ३हाऽ३४इ । क्षापाऽ३४माणाः ।
आ ँशूनाऽ३ । होवाऽ३हाऽ३४इ ॥ इत्थाऽ३४मुवाऽ३त् ॥ उवाऽ२न् ।
याथाऽ३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥ (दी.१०। प.१४। मा.९)२६(भ्वो । ५१८)

(३०६-१) ॥ अश्विनोः साम । अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा) ॥

आयाऽ३४म् । अयंवाम । धुमत्ताऽ६ ँमाः ॥ सुतःसोमोऽ२दिविष्टिषु । ओऽ३हा।
ओऽ३हाऽ३४ । ओहा । तामश्विनापिबतंतिरोआह्नियम् । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३४ ।
ओहा ॥ धत्ता ँराऽ१त्नाऽ२ । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३४ । ओहा ॥ निदाऽ२३ ।
शूऽ२षाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१०। प.१८। मा.५)२७(ब्बु । ५१९)

(३०७-१) ॥ सोमसाम । सोमो बृहतीन्द्रः (सोमो वा) ॥

आत्वासोमा ॥ स्य । गल्दाऽ२याऽ२३४औहोवा । सादाऽ२याचन्नहंजियाऽ२३ ।
भूर्णाओऽ२३४वा । मृगन्नसनेषुचुक्रुधम् ॥ काईशाऽ२३नाम् ॥ नायाचिषत् ।
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१०। प.११। मा.७)२८(पे । ५२०)

(३०८-१) ॥ आजमायवम् । अजमायुर्बृहतीन्द्रः ॥

अध्वर्योद्राऽ५वयातुवाम् ॥ सोममिन्द्राऽ२ः । पिपासाऽ१तीऽ२ । उपोऽ२नूनंयुयुजेवृ ।

षाणाऽ१हारीऽ२ ॥ आचाजाऽ२३गा ॥ मवृत्राहा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.१०। मा.३)२९(ञि । ५२१)

(३०९-१) ॥ समुद्रप्रैयमेधम् । प्रियमेधा बृहतीन्द्रः ॥

अभीषतस्तदाहाउ ॥ भरा । इन्द्रज्यायःकानीयाऽ२३साः । पुरूवसुर्हिमघवन्-

बाभूवाऽ२३इथा ॥ भराइभाऽ२३रे ॥ चाहव्यः । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.९। मा.६)३०(घू । ५२२)

(३१०-१) ॥ वैरूपे द्वे । द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः ॥

यादिन्द्राऽ२३यावतस्तुवाम् ॥ एतावदहमीशीया । स्तोताराऽ२३मीत् । दाधिषे।

रादावाऽ१साऽ२उ ॥ नापापाऽ२३४त्वा ॥ यारौवाओऽ२३४वा । साऽ५इषोऽ६हाइ ॥

(दी.९ । प.८। मा.६)३१(दू । ५२३)

(३१०-२)

यादिन्द्रायावतस्तुवाम् ॥ आइताऽ३ । वादाऽ३हामी । शायाऽ३२ । स्तोता-

रामीऽ२३त् । दधिषेरदा । वासाऽ३२उ ॥ नापापात्वाऽ२३ ॥ यारौवाओ-

ऽ२३४वा । साऽ५इषोऽ६हाइ ॥ (दी.४। प.१०। मा.७)३२(ने । ५२४)

(३११-१) ॥ वैश्वदेवम् । विश्वेदेवा बृहतीन्द्रः ॥

४ ५ ४ ५ र ४ ५ १ २ र १ २ —
त्वामिन्द्रोहाइ । प्रतूर्तिष्वोवा ॥ आभिविश्वाः । आसाइस्पाऽ१र्द्धाऽ२ः ।
ती पै का छु

१ २ र र १ २ — १ २ — ३ २ १
आशस्तिहाजनितावृ । त्रातूराऽ१साऽ२इ ॥ त्वान्तूऽ१र्याऽ२ ॥ तरुष्यता ।
का घि घि या

२ ४ ५ ४
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
ची ता प

(दी. ४ । प.११। मा.६)३३(तू । ५२५)

(३१२-१) ॥ पुरीषम् । अथर्वा बृहतीन्द्रः ॥

५ र र ५ २ १ विर १ अ २र न २
प्रयोरिरिक्षओजसाऽ६ँ ए ॥ दिवःसादोऽ२भ्यस्परि । नत्वावीव्या । औहोऽ३वा।
पा रो कै चै

१ २र न २ १र २ १ २
चा । रजः । औहोऽ३वाइ । द्रापार्थिवाम् ॥ अतिवाऽ२३इश्वाम् ॥ वावाक्षिथा।
क क चै र कः का

१ २ १
इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
यु कु प

(दी.६। प.१३। मां.८)३४(गै । ५२६)

एकादश अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः ॥२॥(इति वार्हतमैन्द्रम् ॥)

(३१३-१) ॥ प्राकर्षम् । प्रकर्ष त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२ र र २ ३ ५ १ र २ ३ ४ ५ २र र २
असौहोवाऽ३हाइ । वीऽ२३४दे । वांगोत्रः । जीकामन्धाः ॥ नियौहोवाऽ३हा ।
चै टू क ची चै

३ ५ १ २ ३ ४ ५ २र र र २ २ ३ ५
स्मीऽ२३४नी । द्रोजानु । षेमुवोचा । बोधौहोवाऽ३हाइ । माऽ२३४सी ।
टू क ची चै टू

१ २ ३ ४ ५ २र र र २ ३ ५ २ १ २
त्वाहारि । अश्वायज्ञैः ॥ बोधौहोवाऽ३हाइ । नाऽ२३४स्तो । मामन्धा । सोऽ३४३ ।
क ची चै टू र चै

२ ४
माऽ३दाऽ५इषूऽ६ँ ५६ँ ॥ (दी. ११ । प. १७। मा.७)३५(खे । ५२७)
चू

(३१३-२) ॥ निहवः निहवम् वा ॥ वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

१ २ १ २ ३र २ ३ ५ २ र र र
आइहीऽ३ । आइही । एहिया । ओऽ२३४वा । हाइ । असाविदेवंगोऋ-
कि का य दू च

र १ २ १ २ ३ २ ३ ५ २ र
जीकाऽ३मान्धाऽ३ः । आन्धाः । अन्धा । ओऽ२३४वा । हाइ ॥ न्यस्मिन्निन्द्रो-
छौ का य दू च

र १ २ १ २ ३र २ ३ ५ २ र र र
जनुषेमूऽ३वोचाऽ३ । वोचा । वोचा । ओऽ२३४वा । हाइ ॥ बोधामसित्वा-
छौ का य दू च

१ २ १ २ ३ २ ३ ५ २ र र र
हर्यश्वाऽ३याज्ञैऽ३ः । याज्ञैः । यज्ञा । ओऽ२३४वा । हाइ ॥ बोधानस्तोम-
छौ का य दू च

र १ २ १ २ ३र २ ३ ५ २ १ २
मन्धसोमाऽ३दाइषूऽ३ । आइषू । एषुवा । ओऽ२३४वा । हाइ । आइहीऽ३ ।
छौ का य दू का कि

१ २ ३र २ ३ ५ २ ५र र ३ ।।।
आइही । एहिया । ओऽ२३४वा । हाऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
का य दू चि प दू

(दी.१९। प.३२। मा.१६)३६(थू । ५२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गानेऽष्टमस्यार्धः प्रपाठकः ॥

(३१४-१) ॥ योनिनी द्वे द्वयोर्गृत्समदःत्रिष्टुबिन्द्रः ॥

४ ५ १ २ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ १ २
योनीः । तआइ । द्राऽ३सादा । नाआकारी ॥ तामा । नृभाइः । पुरुहूऽ३ ।
ता क रा ची ता क कि

२ ३ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ १
ताप्रायाही ॥ आसाः । यथा । नोऽ३आवि । तावृधश्चीत् ॥ दादाः । वसू ।
ची ता क रा ची रा क

२ १ २ २ ४
नीऽ३माम । दाऽ३४३ः । चाऽ३सोऽ५माऽ६ँ५६ँइः ॥
रा चै घू

(दी. नास्ति । प.१७। मा.१३)१(यि । ५२९)

(३१४-२)

योनिष्टाआइ । द्रासदानाइ । होवा ॥ आका३ । राइतामानृभीः । होवा । पू

रुहूऽ३ । ताप्रायाही । होवा । आसोयाथा । नोअविता । होवा ॥ वार्ध्राऽ३ः ।

चाइद्वादोवसू । होवा ॥ नाइमामादः । चासोमैः । होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.२१। मा.१२)२(का । ५३०)

(३१५-१) ॥ औरुक्षये द्वे । द्वयोरुरुक्षयस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

आदर्दारुत् । समसृजोविखानि । त्वामर्णाऽ२३४वान् । बद्बधाना̐अराम्णाः ।

माहान्ताऽ२३४मी । द्रपर्वतंवियाद्वाः । सृजाद्धाऽ२३४राः । आवायद्दान ।

वाऽ२३न्हाऽ३४३न् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.११। मा.८)३(पै । ५३१)

(३१५-२)

आदर्दारुत्सामासृजाः ॥ विखानि । त्वमर्णवान्बद्बधाना̐आराऽ२३म्णाः ।

माहान्तमिन्द्रपर्वतंवियाऽ२३द्वाः ॥ सृजाद्धाऽ२ः ॥आवाऽ२यद्दान । वाऽ२न् ।

या२३४औहोवा । हाऽ२३४५न् । (दी.१०। प.९। मा.७)४(भे । ५३२)

(३१६-१) पार्थे द्वे । द्वयोः (पृथी वैन्यः) पार्थस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

सूष्वाणासाः ॥ इन्द्रस्तु३ । मसित्वा । सानिष्यन्तश्चित्तुविनृ । म्णवाऽ२३४जाम् ।

आनः । भाराओऽ२३४वा । सुवितंयस्याको । ना ॥ तानात्माना । सहिया ।

माऽ३४३ । तूऽ३वोऽ५ताऽ६̐५६̐ः॥ (दी.३।प.१३। मा.५)५(डु । ५३३)

(३१६-२)

ओऽ३होऽ३होइ । सूऽ२३४ष्वा । णासाः । इन्द्रस्तु ३ । मसित्वा ॥ ओऽ३होऽ३होइ । साऽ२३४नी । ष्यन्ताः । चीऽ३त्तूवि । नृम्णावाजाम् ॥ ओऽ३होऽ३होइ । आऽ२३४ना । भरा । सुविताऽ३म् । यस्याकोना ॥ ओऽ३होऽ३होइ । ताऽ२३४ना । त्मना । सहिया । माऽ३४३ । तूऽ३वोऽ५ताऽ६ँ५६ँ: ॥ (दी.२। प.२१। मा.१०)६(चौ । ५३४)

(३१७-१) ॥ सौपर्णे द्वे । द्वयोः सुपर्णस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

जगृह्मातेदक्षिणमोहाओहाऽ६ँएे ॥ इन्द्राहाऽ२३स्ताम् । वसूयवो । वसुपाऽ३ । ताइवासू । नाम् । ओऽ३ । हा । ओऽ३ । हाऽ३ए ॥ विद्माहित्वा । गोपतीऽ३म् । शूरागो । नाम् । ओऽ३ । हा । ओऽ३ । हाऽ३ए ॥ अस्मभ्यंचाइ । त्राऽ३०वृषा । णँरायिम् । दाः । ओऽ३ । हा । ओऽ३ । हाऽ३ए । रयाइन्दाऽ३उवाऽ३ । ऊऽ३४पा। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ । वा ॥ ईऽ२३४५ । (दी.११ । प.३१। मा.१७)७(को ५३५)

(३१७-२)

जगृह्मातेदाक्षिणम् । औहौहोवाहाइ ॥ इन्द्राहाऽ२३४स्ताम् । वसूयवो । वसुपाऽ३ । ताइवासू । नौ । वाओऽ२३४वा । हाऽ३हाइ ॥ विद्माहित्वा । गोपतीऽ३म् । शुरागो । नौ । वाओऽ२३४वा । हाऽ३हाइ । अस्मभ्यंचाइ । त्राऽ३०वृषा । णँरायिम् । दौ । वाओ२३४वा । हाऽ३हाऽ३४ । औहोवा । ईऽ२३४५ ॥

(दी.९। प.२३। मा.१२)८(द्रा । ५३६)

(३१७-३) ॥ वात्सप्राणि त्रीणि । त्रयाणां वत्सप्रिस्त्रिष्टुबिन्द्रः । तृतीयं महावात्सप्रम् ॥

होईऽ२ । होईऽ२ । होईऽ२ । जगृह्माातेदाक्षिणम् । इन्द्राहास्ताऽ२म् । हास्ताऽ२म् ।

हास्ताऽ२म् ॥ वसूयावोऽ२वसुप । तेवासूनाऽ२म् । सूनाऽ२म् । सूना२म् ।

विद्माहित्वागोपातिम् । शूरागोनाऽ२म् । गोनाऽ२म् । गोनाऽ२म् ॥ अस्मभ्यंचित्रंवृषा ।

णँ्रयाइन्दाऽ२ः । आइन्दाऽ२ः । आइन्दाऽ२ः । होईऽ२ । होईऽ२ । होयाऽ२ ।

वाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी. ११। प.२४। मा.२३)९(घ्रि । ५३७)

(३१७-४)

आऔहोइ । आऔहोइ । आऔहोऽ६ँवा । औऽ३होइ । औऽ३होइ । औऽ२३होवा ।

जगृह्माताइ । दक्षिणाऽ३म् । इन्द्राहास्ताम् । द्रहास्तम् । द्रहास्ताम् ॥ वसूयवो ।

वसुपाऽ३ । ताइवासूनाम् । वसूनाम् । वसूनाम् ॥ विद्माहित्वा । गोपतीऽ३म् ।

शूरागोनाम् । रगोनाम् । रगोनाम् ॥ अस्मभ्यंचाइ । त्राऽ३०वृषा । णँ्रयिन्दाः ।

रयिन्दाः । रयिन्दाः । आऔहोइ । आऔहोइ । आऔहोऽ६ँवा । औऽ३होइ ।

औऽ३होइ । औऽ३होवाऽ३४ । औहोवा । ईऽ२३४५ ॥

(दी.१४। प.३४। मा.३१)१०(घ्र । ५३८)

(३१७-५) ॥ महावात्सप्रोत्तरम् ॥

हाउहाउहाउ । ओ । होहोवा । (द्वेत्रिः) । जगृह्माताइ । दक्षिणाऽ३म् । इन्द्राहास्ताम् । द्रहस्तम् । द्रहास्ताम् ॥ वसूयवो । वसूपाऽ३ । ताइवासूनाम्। वसूनाम् । वसूनाम् ॥ विद्माहित्वा । गोपतीऽ३म् । शूरागोनाम् । रगोनाम् । रगोनाम् ॥ अस्मभ्यंचाइ । त्राऽ३म्वृषा । णँ्रायिन्दाः । रयिन्दाः । रयिन्दाः। हाउहाउहाउ । ओ । होहोवा । ओ । होहोवा । ओ । हो । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ।

(दी.१२। प.३८। मा.२३)११(ज्रि । ५३९)

(३१८-१) ॥ गौरीवितम् । गौरीवितस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

इन्द्रन्नाऽ२३४रो । नेमाधाऽ२३४इता । हावन्ताऽ२३इ ॥ यत्पाराऽ२३४याः । यूनाजाऽ२४३ताइ । धियास्ताऽ२३ः। शूरोनाऽ२३४र्षा । ताश्रावाऽ२३४साः । चाकामाऽ२३इ । आगोमाऽ२३४ती । व्रजाइभाऽ२३४जे । त्वन्नाऽ३२उवाऽ३ । एऽ३ । ऊपाऽ२३४५ ॥ (दी. नास्ति । प.१४। मा.९)१२(लो । ५४०)

(३१९-१) ॥ वैदन्वतम् । विदन्वाँस्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा) ॥

वयोहाहाउ ॥ सूपर्णाउपसेदुराइन्द्रम् । प्रियमेधाऋषयोनाधामाऽ२३नाः। अपत्ध्वान्त-मूर्णुहिपूर्धिचाऽ२३क्षूः ॥ मुमुग्धि । औऽ३होऽ३इ ॥ आऽ२१ । स्माऽ३न्निधा । येऽ३४३ । वाऽ३बाऽ५द्धाऽ६ँ्५६ँ्न् ॥ (दी.१०। प.१०। मा.९)१३(मो । ५४१)

(३२०-१) ॥ यामम् । यमस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥ (यमो वा) ॥

आऽ२याम् । आयायम् । औऽ३होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२ । नाकेसुपार्णमुपया-
त्पातन्ताम् । पातन्तम् । औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ । ऊऽ२ ॥ आऽ२याम् ।
आयायम् । औऽ३होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२ । हृदावेनान्तोअभ्यचाक्षातत्त्वा ।
क्षातत्वौऽ३ । होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२ ॥ आऽ२याम् । आयायम् । औऽ३होऽ३इ ।
आऽ२इ । ऊऽ२ ॥ हिरण्यपाक्षंवरुणास्यदूताम् । स्यादूतम् । औऽ३होऽ३इ ।
आऽ२इ । ऊऽ२ । आऽ२याम् । आयायम् । औऽ३होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२ ।
यमस्ययोनौशकुनांभुरण्यूम् । भुरण्युम् । औऽ३होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२इ ।
आऽ२याम् । आयायम् । औऽ३होऽ३इ । आऽ२इ । ऊऽ२ । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥
एऽ३ । दिवम् (द्वे-द्विः) । एऽ३ । दिवाऽ२३४५म् ।

(दी.१४। प.५२। मा.३९)१४(थो । ५४२)

(३२१-१) ॥ ऋतसामनी द्वे । ऋतस्त्रिष्टुबिन्द्रः (बृहस्पतिर्वा) ॥

ब्रह्मा । ब्राऽ२३ह्मा । जज्ञानंप्रथमंपूरास्तात् । विसाइ । वाऽ२३इसी ।
मतःसुरुचोवेनाआवः ॥ सबू । साऽ२३बू । ध्नियाउपमाअस्यवाइष्ठाः ॥ सताः ।
साऽ२३ताः । चयोनिमसतश्चवाइवाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१४। मा.१४)१५(घी । ५४३)

(३२१-२)

हुवेऽ३हाऽ३इ । हुवेऽ३हाऽ३इ । हिषाऽ३या । ब्रह्माजज्ञा । नाऽ३०प्राथा ।
मम्पुरस्तात् ॥ विसीमताः । सुरुचः । वेनाआवाः ॥ साबुध्नियाः । उपामाः ।
अस्यविष्ठाः ॥ सातश्चयो । नीऽ३मासा । ताश्चविवाः । हुवेऽ३हाऽ३इ । हुवेऽ३हाऽ३इ ।
हि । षाऽ२ः । आऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । ऋतममृतम् । एऽ३ ।
ऋतममृतम् । एऽ३ । ऋतममृताऽ२३४५म् ॥

(दी.४। प.२७। मा.१७)१६(थे । ५४४)

(३२२-१) ॥ वारवन्तीयम् । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

अपूर्व्याऔहोहोहाइ । पुरुतऽ३ । मानियस्मै । माहेवीरा । । याऽ३तावा । साइतुराया ।
विरप्शि । नाइवज्रिणे । शाऽ३४३न्तामानि ॥ वाचाँसिया । स्माऽ३इस्थावि ।
रायातक्षूः ॥ स्थविरायतक्षुः । स्थवि । राऽ३४३ । याऽ३ताऽ५क्षूऽ६ँ५६ँः ॥
स्थविरायतक्षूऽ२३४५ः ॥ (दी.१०। प.१७। मा.९)१७(फो । ५४५)

॥ एकोनविंशति नवमः खण्डः ॥९॥ दशतिः ॥३॥

(३२३-१) ॥ क्षुरपविणी द्वे । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्राबृहस्पती वा) ॥

अवद्राऽ२३४प्साः । आँ॒शूमाऽ२३४तीम् । आतीऽ३ । ष्ठाऽ२३४५त् ॥ ईयाना-
ऽ२३४ःकृ । ष्णोदाशाऽ२३४भीः । साहाऽ३ । स्राऽ२३४५इः ॥ आवत्ता-
ऽ२३४मी । द्रःशाचीऽ२३४या । धामाऽ३ । ताऽ२३४५म् । आपास्नीऽ२३४ही ।
तिंनृमाऽ२३४णाः । अधाऽ२द्राऽ२३४औहोवा ॥ अधाऽ३द्रा२३४५ः ॥

(दी.२। प.१६। मा.१०)१८(चौ । ५४६)

(३२३-२)

अवद्रप्साऽ६ँ॒ए । आँ॒शुमातीमातिष्ठाऽ२३त् । ईयानःकृष्णाः । दाशाभिःसाहस्रा-
ऽ२३इः ॥ आवत्तामिन्द्राः । शाचियाधामन्ताऽ२३म् ॥ अपास्नीहितीम् । नृमणाऽ२३ः ।
अधाऽ५द्राः । होऽ५इ ॥ डा । (दी.५। प.११। मा.११)१९(प । ५४७)

(३२३-३) ॥ स्यौमरश्मे द्वे । स्युमरश्मिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

आवद्रप्सोअ ँ॒शुमातीम् । औऽ३होऽ३४इ । औहोवा ॥ आतीऽ३ष्ठात् ।
औऽ३होऽ३४इ । औहोवा । ईयानःकृष्णाः । औऽ३होऽ३४इ । औहोवा ।
दाश । भाइःसहस्रैः । औऽ३होऽ३४इ । औहोवा । आवत्तामिन्द्राः । औऽ३होऽ३४इ ।
औहोवा । शाचि । याधामन्ताम् । औऽ३होऽ३४इ । औहोवा ॥ आपास्नीहितीम् ।
औऽ३होऽ३४इ । औहोवा । नृमाऽ२णाऽ२३४औहोवा । अधाऽ३द्राऽ२३४५ः ॥

(दी.२१। प.२५। मा.१८)२०(डै । ५४८)

(३२३-४)

३४ ३र ४ ५ ४ ५र २ २ ४ १
आवद्रप्सोअँ्शुमतीम् । एऽ३ । औऽ३होऽ५वा ॥ आताऽ२३४५इष्ठाऽ६ँ्५६ँत् ।
ठे चा चि के
२र र १ २ १र २ १ २ १ २र १र २ १ २ ३ ४ ५
ईयानःकृष्णोदशाभिस्साहस्रैः ॥ आवत्तम् । आइ । द्राऽ३ःशाचि । याधामंताम्॥
सि क क रा ची
४ ५ ४र ५ ४ ५र ४ ५ २ १ । । ।
आपस्नीहितिंनृमणाः । ओवा । अधद्राऽ३आऽ२३४५ ॥
तै ता ज

(दी.९। प.१२। मा.१०)२१(थौ । ५४९)

(३२४-१) ॥ द्यौताने, धृषतो मारुतस्य सामनी वा द्वे । द्युतानस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२ न २ न २ २ १ २ १ र २ ३ ४ ५
हाऽ३ । ओऽ३हाऽ३ । ओऽ३हाऽ३ । हाइ । वृत्रस्यत्वा । श्वसाथात् । ईषामाणाः ॥
चा खू खू च र र ची
२ १र र २ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३र ४ ५
विश्वेदेवाः । अजहूऽ३ः । येसाखायाः ॥ मारुद्भिराइ । द्राऽ३साखि । यन्तेअस्तू ॥
र कि ची र रा ची
२ १र र २ १ २ ३ ४ ५ २ न २ न २
आथेमावाइ । श्वाऽ३ःपूता । नाजायासी । हाऽ३ । ओऽ३हाऽ३ । ओऽ३हाऽ३।
र रा ची चा खू खू
२ ५र र १ २ । । ।
हाऽ३४ । औहोवा ॥ आऔऽ३होऽ२३४५ ॥
चि प वू

(दी.८ । प.२२। मा.१०)२२(ठौ । ५५०)

(३२४-२)

१ २ २ १ २ २ ३र ५ २ २ १ २ १ र
होयेऽ३ । हायायेऽ३ । हाया । औहोऽ२३४वा । हाइ । वृत्रस्यत्वा । श्वासाथात्।
कि चौ या टू च र र
२ ३ ४ ५ २ १र र २ २ ३ ४ ५ २ १ २ १
ईषामाणाः ॥ विश्वेदेवाः । अजहूऽ३ः । येसाखायाः ॥ मारुद्भिराइ । द्राऽ३साखि ।
ची र कि ची र रा
२ ३र ४ ५ २ १र र २ १ २ ३ ४ ५ १ २ २ १ २
यन्तेअस्तू ॥ आथेमावाइ । श्वाऽ३ःपूता । नाजायासी । होयेऽ३ । हायायेऽ३ ।
ची र रा ची कि चौ
२ ३र ५ २ ५र र १ २ २ १ २ । । ।
हाया । औहोऽ२३४वा । हाऽ३४ । औहोवा ॥ आऔऽ३हो । आऔऽ३होऽ२३४५॥
या टू चि प कः वू

(दी.१०। प.२५। मा.११)२३(म । ५५१)

(३२५-१) ॥ सोमसामनी । द्वयोः सोमस्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा) ॥

४ ५ १ अ २ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ १ अ
वीधूम् । दद्रादाद्रा । णाऽ३ँ सामा । नाइबाहूनाम् ॥ यूवा । नँ सानाँ सा ।
ता कै रा ची ता कै

२ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ १ अ २ १र २ ३ ४ ५
ताऽ३म्पालि । तोजागारा ॥ देवा । स्यपास्यापा । श्याऽ३कावि । यंमाहित्वा ॥
रा ची ता कै रा ची

४ ५ १ अ २ १ २ २ ४
आद्या । ममामामा । राऽ३साहि । याऽ३४३ः । साऽ३माऽ५नाऽ६ँ५६ँ ॥
ता कै रा चै चू

(दी.१। प.१७ । वि.४)२४(खी । ५५२)

(३२५-२)

२ २ ५ ३ ।।। २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हिँऽ३ । आऽ३४ । हिँ । हिँऽ२३४५ । विधुन्दद्रा । णाऽ३ँ सामा । नाइबाहूनाम् ॥
चा चि प दू र रा ची

२ १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १ २ १र २ ३ ४ ५
यूवानँ सा । ताऽ३म्पालि । तोजागारा ॥ देवस्यपा । श्याऽ३कावि । यंमाहित्वा ॥
र रा ची र रा ची

२ २ ५ ३ ।।। २ १र २ १ २
हिँऽ३ । आऽ३४ । हिँ । हिँ२३४५ । अद्याममा । राऽ३साहि । याऽ३४३ः ।
चा चि प दू र रा चै

२ ४
साऽ३माऽ५नाऽ६ँ५६ँ ॥
चू

(दी.४। प.२१। मा.३)२५(ति । ५५३)

(३२६-१) ॥ इन्द्रवज्रे द्वे । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५र र ४ २ १ २ १ र२ १र २र ३ ५र र ४ १ २र
औहोइतुवाम् । हत्यत्सप्तभ्योजायमानाऽ२३४ः ॥ औहोआशा । त्रुभ्योअभवः-
पि घः पि

१ २ ३ ५र र र ४ १र र २ १र २ ३ ५र र ४
शत्रुरिन्द्राऽ२३४ ॥ औहोइगूढे । द्यावापृथिवीअन्वाविन्दाऽ२३४ः । औहोइविभू ।
घौ पि चौ पि

१ २र १ २र र १ ३ ।।।
मद्भ्योभुवनेभ्योरणंधाऽ२३४५ः ॥
विव

(दी.१९। प.८। मा.१०)२६(दौ । ५५४)

(३२६-२)

४ ५ ३ २ ३ ५ २ १ २र १र २र १ २ १ ३ ।।।
त्वोहाइ । हत्यौवाओऽ२३४वा । सप्तभ्योजायमा । नोवाऽ३ । ओवाऽ३४५ ॥
ता ठौ छु कि गा

५ ४ ५ ३ २ ३ ५ १ २ १ २ १ २ १ ३ ।।।
आशोहाइ । त्रुभ्यौवाओऽ२३४वा । अभावःशत्रुरि । द्रोवाऽ३ । ओवाऽ३४५ ॥
पै ठौ धि कि गा

५र ४ ५ २ ३ ५ २ १र २ १ २ १ ३ ।।।
गूढोहाइ । द्यौवाओऽ२३४वा । पृथिवीअन्वावि । दोवाऽ३ । ओवाऽ३४५ ॥
पै शै चो कि गा

५ ४ ५ ३ २ ३ ५ १ २र १ २ १ ३ ।।। ४
विमोहाइ । मह्यौवाओऽ२३४वा। भुवाने । म्योवाऽ३ । ओवाऽ३४५ । रणाऽ५न्धाः ।
पै ठौ का कि गा ता

४
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.२३। मा.११)२७(ग । ५५५)
ता प

(३२७-१) ॥ (ऋषिप्रमाणपदगणिते अर्द्धवेयः) सूर्यवर्चसो भृष्टिमतः सामनी द्वे भृष्टिमांस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

४ ५ १ र २ १ २ १र २ १ २
मेडीम् ॥ नत्वावज्रिणंभृष्टिमाऽ२३न्ताम् । पुरुधस्मानंवृषभँ स्थिराऽ२३प्स्नूम् ।
ता पै जै

१र अ २ १ २ १ १ ३
कारोष्वर्यस्तरुषाइर्दुवाऽ२३स्यूः ॥ आइन्द्रद्युक्षम् ॥ वृत्राऽ२३ । हाऽ२णा-
जै कै कि

५र र २ १ ।।।
ऽ२३४औहोवा ॥ गृणीऽ३षेऽ२३४५ ॥
वे ज

(दी.५। प.८। मा.८)२८(बै । ५५६)

(३२७-२)

४र ५ ४ २ ५ १ २ १ २ ५
मेडिन्नत्वा ॥ वाऽ३४औहो । ज्राइ । णंभार्ष्टाइमौ । वाऽ३२३४ । ताम् ।
ति ची क चो शु प

३ २ ५ २ १र २ १ २ ५ ३ २
पूराऽ३४औहो । धस्मानंवृ । षाभँ स्थाइरौ । वाऽ३२३४ । प्स्नूम् ॥ कारा-
दू र चो शु प

५ २ १ २ ५ ३ २ ५
ऽ३४औहो । षिअर्यस्ता । रुषाइर्दूवौ । वाऽ३२३४ । स्यूः ॥ इंद्राऽ३४औहो ।
दू र का शु प दू

२ १ १ ३ ५र र २ र ३ ।।।
द्युक्षम् । वृत्राऽ२३ । हाऽ२णा२३४औहोवा । गृणीषेऽ२३४५ । ।
र कि वे शे

(दी.५।प.२१। मा.१४)२९(पी । ५५७)

(३२८-१) ॥ अंकुशौ द्वौ (वसिष्ठौ) । वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५ ४ १ र२र र १ २ २ १ २ १ २ ३ ५
प्रावाः ॥ माहेमहेवृधे । भराधूऽ३वाम् । प्राचाइतासाइ । प्रासूमाऽ२३४तीम् ॥
पि का कः रो वू
१ ३ ५ १ २ १ २ २ १
कृणुध्वम् । इहाऽ२वाऽ२३४इशाः ॥ पूऽ२३वींः । प्रचा । राऽ२३चा । षाणाइ ।
क वू कः क कः र
१ २ ४ ५ ४
प्रा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
क ची ता प

(दी.३ । प.१५। मा.११)३०(ण । ५५८)

(३२८-२)

३ ।।। २ र ३ ५ ३ २ २ ३ ५
हिँ ऽ२३४५ । प्रवोमहाइमाऽ२३४हे । वृधाऽ३४३इ । भाराऽ२३४त्ध्वाम् ।
दू शे ठः शे
३ ।।। २ र ३ ५ ३ २ २ ३ ५
हिँ ऽ२३४५ । प्रचेतासाइप्राऽ२३४सू । माताऽ३४३इम् । कृणूऽ२३४त्ध्वाम् ॥
दू शे ठः शे
३ ।।। २ र ३ ५ ३ २ २ ३ ५
हिँ ऽ२३४५ । विशःपूर्वाइःप्राऽ२३४चा । राचाऽ३४३ । षाणाऽ२३४इप्राः ॥
दू शे ठः शे
३ ।।। र र४५ ५ ३ ।।।
हिँ ऽ२३४५ । हाउहौहोवाऽ६ँ । हाउवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
दू पा प दू

(दी.५। प.१६। मा.१२)३१(प्रा । ५५९)

(३२९-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५ ४ ५र ४५र ४ २ १ र र२१ २ १ र र
शुनँ हुवेमामाघावानामिन्द्राम् ॥ अस्मिन्भरेनृतमंवाजासा२३ताउ । शृण्वन्तमुग्रमूतये-
फू जै
२ १ २ १ २ १ २ २ १ २
सामाऽ२३त्सू ॥ घ्न । तंवाऽ२३त्राऽ३ । होवाऽ३हा ॥ णिसंजितम् ।
जै क वि कः चो
१ २ १ २ २ १
धनाऽ२३नीऽ३ । होवाऽ३हाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
वि वू कु प

(दी. ६ । प. ११। मा.५)३२(कु । ५६०)

(३३०-१) ॥ वैश्वदेवम् । विश्वेदेवास्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

१ २र १ २ १ग २ २ १ २ १र २ ३ ४ ५
दिवया । ओवा । औऽ३होऽ३वा । उदुब्रह्मा । णीऽ३ऐरा । तश्रावस्या ॥
का का खू र रा ची
२ १ २ १ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ २ ३ ४ ५
इन्द्रँ्समा । यैऽ३माहा । यावासिष्ठा ॥ आयोविश्वा । नीऽ३श्रावा । सातताना॥
र रा ची र रा ची
१ २र १ २ १ग २ २ १ र २ १र २
दिवया । ओवा । औऽ३होऽ३वा । उपश्रोता । माईवा । तोऽ३४३ ।
का का खू र र चै
२ ४
वाऽ३चाऽ५ँ्साऽ६ँ्५६ँ्इ ॥ (दी.७। प०१९। मा.३)३३(झि । ५६१)
चू

(३३१-१) ॥ पुरीषम् । अथर्वा त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५ ४ ५ र ४ र ५ ४ २ १र र २ १ २ १र
चक्रंयदस्याप्सुवानिषत्ताम् ॥ ऊतोतदस्मैमध्विच्चच्छाऽ२३द्यात् । पृथिव्याम-
फु जै
२ १ २ १ र २ १ २र १र २र १ २
तिषितंयादूऽ२३धाः ॥ पयोगोऽ२३षू । आदाधाओषधीषु । इडाऽ२३भाऽ३४३।
जै कः धि वु
१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.८। मा.५)३४(दु । ५६२)
कु प

सप्तदश दशमः खण्डः ॥१०॥ दशति ॥४॥

इति ग्रामे गेय गानेऽष्टमः प्रपाठकः ॥८॥

(३३२-१) ॥ तार्क्ष्यसामनी द्वे । तार्क्ष्यस्त्रिष्टुबिन्द्रः (तार्क्ष्यो वा) ॥

५ र २र १ ।।। २र र ३ ५ र ३र २ १ २
त्यमूषू ॥ वाजि । नाऽ२३४५म् । देवजूताऽ२३४म् । सहोवानंता । रुताऽ३ ।
प च कु शु पे चा
२ ३ ४ ५ २ ३ ५ २ २ ३र ५ २ १
रँ्राथानाम् ॥ अरिष्टानाऽ२३४इमीम् । पृतनाऽ३४३जामाशुम् ॥ स्वस्ता।
ची शो थि र
र २ ३ २ २ ४
याइ॥ तार्क्ष्यमिहाऽ३४३ । हूऽ३वाऽ५इमाऽ६ँ्५६ँ् ॥
क वु चू

(दी.८। प.१३। मा.८)१(डै । ५६३)

(३३२-२)

ईयइयाऽ३हाइ । त्यमूषुवाजिनाऽ३न्देऽ३वजूतम् ॥ ईऽ४यइया । हाऽ२३४५इ ।
सहोवानंता । रुताऽ३ । रँ्राथानाम् ॥ ईयइयाऽ३हाइ । अरिष्टाऽ३ । नाइ।
मीऽ३म्पृता । नाजामाशुम् । ईऽ४यइया । हाऽ२३४५इ । स्वस्ता । याइ ।
ताक्ष्यामिहाऽ३४३ । हूऽ३वाऽ५इमाऽ६ँ्५६ँ् ॥

(दी.१०। प.१८। मा.१४)२(बी । ५६४)

(३३३-१) ॥ इन्द्रस्य त्रातम् । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

त्रातारमिन्द्रमविता । रामीऽ२३न्द्राम् ॥ हवेहवेसुहवँ्शू । रामीऽ२३न्द्राम् ॥
हुवाइनुशक्रंपुरुहू । तामीऽ२३न्द्राम् ॥ इदँ्ह । वाइः । माघावा । वाऽ३४३इ।
तूऽ३वाऽ५इन्द्राऽ६ँ्५६ँ्ः ॥

(दी.५। प.११। मा.९)३(पो । ५६५)

(३३४-१) ॥ वार्त्रतुरम् । वृत्रतुरस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

यजामहोवा ॥ आइन्द्रंवज्रा । दक्षाऽ२३इणाम् । हरीणाँ्रथ्यंवि ।
व्रताऽ२३नाम् । प्रश्मश्रुभिर्दोधुवत् । ऊ । ध्वाधामूऽ२३४वात् ॥ विसाइ । ना ।
भिर्भयमानाऽ२३ः ॥ वाऽ२३इराऽ३ । धाऽ३४५सोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.४। प.१३। मा.१०)४(दौ । ५६६)

(३३५-१) ॥ मारूतस्य धृषतः सामनी द्वे । द्वयोः धृषत्रिष्टुबिन्द्रः ॥

सत्रा । हाणाऽ३४औहोवा ॥ दाधृषिन्तू । म्रमिन्द्राओऽ२३४वा । माहामापारं-
वृषाभ ँ्सुवज्राऽ२३म् ॥ हन्ताऽ२योऽ२३४वृ ॥ त्रा ँ्सानि । तोऽ३४३ ।
ताऽ३वाऽ५जाऽ६ ँ५६ ँ्म् । दातामाघानिमाघावाऽ२सुराधाऽ२३४५ः ॥

(दी.११। प.१०। मा.५)५(ङु । ५६७)

(३३५-२)

सत्राहाणंदाधृषिम् । तूऽ३४३म्म्रामिन्द्रम् ॥ माहामापारंवृषाभ ँ्सूवज्राऽ२३म् ॥
हन्तायोऽ२३४वृ ॥ त्रा ँ्सानि । तोऽ३४३ । ताऽ३वाऽ५जाऽ६ ँ्५६ ँ्म् ॥दातामाघा-
निमाघावाऽ२सुराधाऽ२३४५ः ॥

(दी.९। प.८। मा.५)६(दु । ५६८)

(३३६-१) ॥ आत्रम् । अत्रिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

योनोवनुष्यन्नाभिदा । तिमाऽ३२३४र्ताः ॥ उगणावामन्यमानस्तुरोऽ२३वा।
क्षिधीयुधाशवसावातामाऽ२३इन्द्रा ॥ अभाइष्याऽ३मा ॥ वृषामाऽ३णाऽ३ः ।
त्वोऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी. १० । प.९। मा.६)७(भू । ५६९)

(३३७-१) ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ गार्त्समदे वा द्वे । द्वयोः गृत्समदस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५र र २ २ ३ ४ ५ १ र २ १ र
हाउयँ ॒वृत्रेषू । क्षितायाऽ३ः । स्पर्द्धमानाः । धमानाऽ३ः । ईऽ२३४यइया ॥
प चा ची कि की

५र र २ २ ३ ४ ५ १ २ १ र
हाउयँ ॒युक्तेषु । तुरायऽ३ । तोहवन्ताइ । हवन्ताऽ३इ । ईऽ२३४यइया ॥
प चा ची कि की

५र र ४ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ र
हाउयँ ॒शूरसा । ताऽ३उयामा । पामुपज्मान् । उपज्माऽ३न् । ईऽ२३४यइया ॥
प हा ची कि की

५र र ४ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १
हाउयंविप्रासाः । वाऽ३जाया । ताइसाइन्द्राः । सइन्द्राऽ३ः । ईऽ२३४य ।
प हा ची कि की

५ ५ ३ १ १ १
इयाऽ६ँ ॒। हाउवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.१२। प.२३। मा.२२)८(व्रा । ५७०)
पा प दू

(३३७-२)

५ र र र २ २ ३ ४ ५ १र २र १वि १
यँ ॒यँ ॒या । हाउयँ ॒वृत्रेषू । क्षितायाऽ३ः । स्पर्द्धामानाः । धमानाः । यँ ॒यँ ॒यऽ२०याम् ॥
प प चा ची का रा

५ र र र २ २ ३ ४ ५ १ २र १ वि १
यँ ॒यँ ॒या । हाउयँ ॒युक्तेषू । तुरायऽ३ । तोहावंताइ । हवन्ते । यँ ॒यँ ॒यऽ२०याम् ॥
प प चा ची का रो

५ र र र ४ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ वि १
यँ ॒यँ ॒या । हाउयँ ॒शूरसा । ताऽ३उयाम । पामुपज्मान् । उपाज्मन् । यँ ॒यँ ॒यऽ२०याम् ॥
प प हा ची का रो

५ र र र ४ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १वि १
यँ ॒यँ ॒या । हाउयविप्रासाः । वाऽ३जाया । ताइसइन्द्राः । सइन्द्रः । यँ ॒यँ ॒यऽ२०याम् ।
प प हा ची का रो

५ ५ ३ १ १ १
यँ ॒यँ ॒याऽ६ँ ॒। हाउवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.१५। प.२७। मा.१२)९(फ्रा । ५७१)
पा प दू

(३३८-१) ॥ वैश्वामित्रम् । विश्वामित्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्रापर्वतौ वा) ॥

४ ५ २र १ र र ३ २ २ ५ ४र ५
इन्द्राहाउ । हाहोइ । पर्वताबृहतारथाऽ२इनाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा ॥ वामीर्हाउ ।
ता र वि ची ता

२र १ र ३ २ २ ५ ४र ५ २र १
हाहोइ । इषआवहतँ ॒सुवाऽ२इराउवाऽ३ । ऊऽ३४पा ॥ वीतँ ॒हाउ । हाहोइ ।
र वि ची ता र

र र ३ २ २ ५ ४ ५ २र १
हव्यान्यध्वरेषुदाऽ२इवाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा । वर्द्धाहाउ । हाहो ।
वि ची ता र

र र र ३ २ २ ५
थांगीर्भिरिडयामदाऽ२न्ताउवाऽ३ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.१४। प.१६। मा.१५)१०(त्लु । ५७२)
वि रो

(३३९-१) ॥ सावित्राणि षट्सामानि षण्णां सविता त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाऽ३ । हाइ । इन्द्रायगाइ । राऽ३आनि । शीतासर्गाः ॥१॥ असाउ । असाउ । इन्द्रायगाइ । राऽ३आनि । शीतासर्गाः । २ । कुवा । कुवा । इन्द्रायगाइ । राऽ३आनि । शीतासर्गाः । ३ । अयाम् । अयाम् । आपःप्रैरा । याऽ३त्सागा। रस्याबुध्नात् । ४ । अविदाऽ३त् । अविदत् । योअक्षेणाइ । वाऽ३चक्रि । यौशाचीमीः । ५ । इहाऽ२३ । ईऽ३४हा । विष्वक्तस्ता । भाऽ३पृथि ।वीऽ३४३म्। ऊऽ३ताऽ५ह्याऽ६ॅ˷५६ॅ˷म् ॥ (दी.६।प.३१।मा.२२)११(का । ५७३)

(एवं षट् सामानि)

(३४०-१) ॥ कुतीपादस्य वैरूपस्य साम । विरूपस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

आत्वासाखायःसख्याववृत्यूः ॥ तिरःपुरूचिदर्णवांजगाऽ२म्यौ । हौहोऽ३वा । पितुर्न्नपातमादधीतवाऽ२इधौ । हौहोऽ३वा । अस्मिन्क्षयेप्रतरांदीदियाऽ२नौ । हौहोऽ३वा । औहोऽ२ । इहाऽ२३४५ ॥ (दी.१९।प.९।मा.२)१२(धा । ५७४)

(३४१-१) ॥ आमहीयवम् । अमहीयुस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

कोअद्ययुङ्क्तेधुरिगाऋतस्याऽ६ॅ˷ए ॥ शिमीवतोभामिनोदुर्हृणाऽ२३यून् ॥ आसन्नेषामप्सुवाहोमायोऽ२३भून् । यएषांभृत्यामृणधत्सजाइवाऽ३उवाऽ३ ॥ ऊऽ३४पा ॥ (दी.१५। प.५। मा.८)१३(म्यैं । ५७५)

॥ त्रयोदश एकादशः खण्डः ॥११॥ दशतिः ॥५॥

॥ इति त्रैष्टुभमैन्द्रम् ॥

(३४२-१) ॥ शैखण्डिने द्वे द्वयोः शिखण्ड्यनुष्टुबिन्द्रः ॥

३र २ ३ २ र ५ २ २ ३ २ ३ २
गायाऽ३१ । तित्वाऽ३१२३४ । गाया । त्राऽ३इणाः ॥ अर्चाऽ३१ । तिया-
वि ठा ता चे वि ठा

५ २ २ ३ २ ३ २ ५
ऽ३१२३४ । कामा । र्काऽ३इणाः ॥ ब्रह्माऽ३१ । णस्त्वाऽ३१२३४ । शाता ।
ता चे वि ठा ता

२ २ ३ २ ३ २ ४ ४
क्राऽ३ताउ ॥ उद्वाऽ३१ । शामाऽ३१२३इ । वयाऽ५इमिराइ । होऽ५इ ॥ डा ॥
चे वि ठ ता ता प

(दी.२। प.१७। मा.९)१४(छो । ५७६)

(३४२-२)

५र ४ ५ ३र २ ३ ५ १ २ २ २
गायन्तित्वोहाइ ॥ गायात्रीऽ२३४णाः । अर्चन्त्यर्कामाऽ१र्कीऽ३णाः ।
चै ठौ चै

३ ५ ३ २ ३ ५ १र र २ २ २
अर्चन्तियोऽ२३४हा । कामार्कीऽ२३४णाः ॥ ब्रह्माणस्त्वाशाताऽ१क्राऽ३तो ।
सो ठौ चै

र ३ ३ २ ३ ५ १ २ २ २
ब्रह्माणस्त्वोऽ२३४हाइ ॥ शाताक्राऽ२३४ताउ । उद्वँ्शमिवायाऽ१इमीऽ३रे ।
सो ठै चै

२ ३ ५ ३ २ ४
उद्वँ्शामोऽ२३४हाइ । वायाऽ३इमाऽ५इराऽ६ँ्५६ँ्इ ॥
सो टो

(दी.५। प.११। मा.११)१५(प । ५७७)

(३४२-३) उद्वँ्शीयम् । विश्वेदेवानुष्टुबिन्द्रः ।

४र ५ र र ४ ५ ४ १ २ १र —
गायन्तित्वागायात्रिणाआ ॥ अर्चन्त्यर्कमर्काऽ२३इणाः । ब्रह्माणस्त्वाऽ२होऽ१इ ।
ते कः रो

२ १ २ २ २ ३ ५
शतक्राऽ२३ताउ । उद्वँ्शमिवायाऽ१इमीऽ३रे ॥ उद्वँ्शाऽ२३४मी ॥
कः चै ळै

१ न २ १ प २
वायाऽ३२उवाऽ३ । उप् । माऽ२इरोऽ३५हाइ ॥
खु च खि

(दी.४। प.९। मा.१०)१६(धौ। ५७८)

(३४३-१) ॥ शैखण्डिनानि त्रीणि । त्रयाणां शिखण्ड्यनुष्टुबिन्द्रः ॥

इन्द्रंविश्वाः ॥ आवीऽ२वृधान् । सामुद्रव्या । चासंगिराः । राथीतमाऽ३१उवाऽ२ । राथाइनाऽ२म् ॥ वाजानाऽ२३ँसात् ॥ पार्तिंपतिम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११। मा.९)१७(टो। ५७९)

(३४३-२)

ओइन्द्रंविश्वाः ॥ अवी । वृधान् । साऽ१मूऽ२द्राव्याऽ२ । चसम् । गिराः ॥ राऽ१थीऽ२तामाऽ२म् । राथी । नाम् ॥ वाजाऽ२नाँसाऽ२त् ॥ पार्तिंपाऽ२३ती-ऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.२। प.१३। मा.१०)१८(जौ। ५८०)

(३४३-३)

इन्द्रंविश्वाआवीवृधन् । सामूद्राऽ२३४व्या ॥ चाऽ३सांगीऽ३राः । राथीतामाऽ२म् । ऊऽ२। हाऽ२इ । ऊऽ२ । राथाइनाम् ॥ वाजानाँसाऽ२ । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ ॥ पार्तिंपाऽ२३तीऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१५। मा.१०)१९(मौ। ५८१)

(३४३) ॥ आष्टाद्रंष्टे द्वे । द्वयोरष्टादंष्ट्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इन्द्रंविश्वाआवीवृधन् । ऐयाहाइ ॥ सामूद्राऽ१व्याऽ२ । चासांगाऽ१इराऽ२३ः।
ऐयाऽ२३हाइ॥ राथाइताऽ१माऽ२म् । राथाइनाऽ२३म् । ऐयाऽ२३हाइ ॥
वाजानाऽ१ँसाऽ२त् । पाताइंपाऽ१तीऽ२३म् । ऐयाऽ२३हाऽ३४३इ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा । (दी.६।प.१३।मा.१६)२०(गू।५८२)

(३४३-५)

इन्द्रंविश्वाआवीवृधन्नैयादौ । होऽ६ँवा ॥ समुद्राव्यचसम् । गाइराऽ२३ः।ऐयाऽ२३त् ।
औऽ२३होवा ॥ राथाइतामँर । थाइनाऽ२३म् । ऐयाऽ२३त् । औऽ२३होवा ॥
वाजानाँसत्पातिम् । पातीऽ२३म् । ऐयाऽ२३त् । औऽ२३होवाऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१४। प.१६। मा.१३)२१(ति। ५८३)

(३४३-६) ॥ महावैश्वामित्रे द्वे । द्वयोः विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

हयाइ । हयाऽ३ । ओहाओहा । (त्रीणि-त्रिः)। इन्द्रंविश्वाः । आवीवार्द्धाऽ२न् ॥
समुद्रव्या । चासंगाइराऽ२ः ॥ रथीतमम् । राथाइनाऽ२म् ॥ वाजानाँसात् ।
पातिंपातीऽ२म् । हयाइ । हयाऽ३ । ओहाओहा ॥ (त्रीणि-त्रिः)। होऽ४इडा ।
होऽ४इडा । होऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.३०। मा.२४)२२(मी । ५८४)

(३४३-७)

२ १ २ २ १ २ ।।। ३ ।।। १ ३ ४र ५ र
हयायेऽ३ । हयायेऽ३ । हयाऽ२३४५ । हिँऽ२३४५ । आऽ२३४इ । द्रंविश्वाअवी।
चौ चौ दू दू की थ

३ २ १ ३ ४ ५ ३ २ १ ३र ४ ५ र
वृधाऽ३न् ॥ साऽ२३४ । मुद्रव्यचसम् । गिराऽ३ः ॥ राऽ२३४ । थीताम्ँराथी ।
टी की थ टी की टा

२ १ र र ३ ४ ५ ३ २ २ १ २ २ १ २
नाऽ३म् ॥ वाऽ२३४ । जानाँसत्पातिम् । पाताऽ३इम् । हायायेऽ३ । हायायेऽ३ ।
चा की थ टी चौ चौ

।।। ३ ।।। ३ ५ ३ ५ ३
हायाऽ२३४५ । हिँऽ२३४५ ॥ होऽ४इडा । होऽ४इडा । होऽ२३४५इ ॥ डा ॥
दू दू ता ता दू प

(दी.६। प.२४। मा.१२)२३(घा । ५८५)

(३४४-१) ॥ वसिष्ठस्य प्रियाणि चत्वारि । वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

२१ ५ २१ ३ ५र र १र २१विर १ २
इममाऽ२३४इन्द्रा ॥ सूतम् । पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा । ज्येष्ठमामाऽ२र्तियंमादम् ।
छ र वे डे

र १ १ ३ ५र र १र विर १ २
शुक्रा ॥ स्यत्वामीऽ३युाऽ२३ ॥ क्षाऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ धाराऽ२ऋतस्य-
च छी वे

१र ३ ।।।
सादनेऽ२३४५ ॥ (दी.१०। प.८। मा.७)२४(बे । ५८६)
वि

(३४४-२) ॥ गौतमम् । गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

५ ३ २ ३४ ५ २र १ २ १ २ १ ३ २ ३र ५
इममिन्द्रसुतंपिबा ॥ ज्येष्ठामामा । र्तियंमदाऽ२म् । शुक्रा । औहोऽ२३४वा ।
पौ चो चो य दू

२ र १ २ ३र २ ३र ५ ३ २ ३र ५ ४
स्यत्वाभ्याक्षरन् ॥ धारा । औहोऽ२३४वा । ऋता । औहोऽ२३४वा ॥ स्यसा-
चौ य दू य दू

ऽ५दनाइ । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.१३। मा.४)२५(गी । ५८७)
ता ता प

(३४४-३) ॥ वसिष्ठस्य प्रिये द्वे । द्वयोर्वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

४ ४ २र १अ १— १— १
इममिन्द्राऽ५सुतंपिबा ॥ ज्येष्ठममाऽ३र्त्तायाम्मादाऽ२म् । औऽ२ । हौऽ२। हुवाइ।
ती पु का का क
२ ५ २ र १अ — १— १— १
औऽ३होऽ२३४वा । शुक्रस्यत्वाऽ३भायाक्षाराऽ२न् । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ ।
शे पु का का क
२ ५ १२ — १— १— १
औऽ३होऽ२३४वा ॥ धाराऽ१ऋताऽ२ । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ ।
शे घि का का क
२ ५ २ १र २ १
औऽ३होऽ२३४वा ॥ स्यासादाऽ२३नाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
दू जु कु प

(दी.३। प.१९। मा.८)२६(ढै । ५८८)

(३४४-४) ॥ वसिष्ठस्यप्रियम् ॥

२ १ ४ ५ ४ ५ ४ ५ २ १अ — १ २
इममीऽ२३ । द्रासुतंपिबा । ज्येष्ठाम् ॥ अमाऽ३र्त्तायांमादाऽ२म् । शुक्रास्यत्वाऽ३ ।
चौ तु ता पु चौ
१ ३ ५ १ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
भियाऽ२क्षाऽ२३४रान् ॥ धाराओऽ२३४वा । आर्त्ताओऽ२३४वा ॥ स्यसाऽ५-
वू वू वू
४
दनाइ । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी. नास्ति । प.११। मा.७)२७(हे । ५८९)
ता ता प

(३४५-१) ॥ वीं कानिचत्वारि, वीङ्के द्वे । द्वयोः । गृत्समदोनुष्टुबिन्द्रः ॥

४ ५ ४ २ १ १ र ५र २
यादिन्द्रोहाइ ॥ चित्रमइहानाऽ२३ । आऽ२३४ । स्तित्वादा । हाऽ३इ ।
ति चौ की ता चा
२ १ १ ३ ४र ५ २ १
तमद्राइवाऽ२३ः ॥ राऽ२३४ । धस्तन्नोविदा । हाऽ३ । वा । साउ ॥
चौ की थ चा क क
र २ २ ५
उभयाहाऽ२३ ॥ स्तियाउवाऽ३४३ । भाऽ३४५रोऽ६ँहाइ ॥
कि ठ चू

(दी.४। प.१४। मा.८)२८(धै । ५९०)

(३४५-२)

५ २ ४ ५ ३ ५ १ २ २ २ १·२
यदिन्द्रचित्रमौहोवा ॥ हाऽ२३४ना । अस्तित्वादातमोवाऽ३ । ओवा ।
३ ५ १२ २ २ १ २ ३ ५
द्राऽ२३४इवाः ॥ राधस्तन्नोविदोवाऽ३ । ओवा । वाऽ२३४साउ ॥
१ २ २ .१ २ २ ५
उभयाहस्तियोवाऽ३ । ओवाऽ३४३ । भाऽ३४५रोऽ६ँहाइ ॥

(दी.६। प.११। मा.४)२९(की । ५९१)

(३४५-३) ॥ आकूपारं वा । अकूपारोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

२ १ ४ ५ २ ३ ५ १ — १२ २ १
यादिन्द्राऽ२३चित्रा । माइहाऽ२३४ना ॥ अस्ताऽ२इत्वादा । तमद्राइवो ।
२२ १ — १ २ १ १ ४
राधस्तान्नाऽ२ः । विदद्वसाउ ॥ उभयाहाऽ२३ ॥ स्ताऽ२३याऽ३ ।
२ ५
भाऽ३४रोऽ६ँहाइ ॥ (दी.२। प.९। मा.६)३०(झू । ५९२)

(३४५-४) ॥ वींकम् ॥

३ ४ ५ ३ २ ४ ५ १२ २ २ २
यादिन्द्रचित्रमइ । हानाऽ३ । आस्ती ॥ त्वादातमद्रिवाः ॥ राधस्ताऽ२३न्नाः ।
१ — १ २ १ १ २
वीवीऽ२ । दद्वसाउ ॥ उभयाऽ२३हा ॥ स्तायाऽ२३ । भाऽ२३राऽ३४३ ।
१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.१२। मा.५)३१(ठु । ५९३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(३४६-१) ॥ तैरश्च्ये द्वे । द्वयोः तिरश्च्यनुष्टुबिन्द्रः ॥

श्रुधी ॥ हावाऽ२ँ्हावाऽ२म् । तिरश्चियाः । इन्द्रयाऽ२३स्त्वा । सापौऽ३हो ।
र्यातीऽ३या ॥ सुवीर्यस्यगोमताः ॥ रायास्पूऽ२३र्द्धी ॥ माहाँ्ऽ२३ । आसिया-
ऽ३४३ ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी. ३ । प.१२। मा.४)१(ठी । ५९४)

(३४६-२)

श्रुधीहा३वंतिरश्चियाः ॥ इन्द्रायस्त्वा । सापर्यातायेऽ३४ । सुवी । रिया ।
स्याऽ२३४गो । माताऽ२ः ॥ रायास्पूर्द्धीऽ३ । हाऽ३हाइ ॥ महाँ्ऽ५असी ।
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.२। प.१२। मा.५)२(छु । ५९५)

(३४७-१) ॥ महावैश्वामित्रम् । विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः सूर्यो वा ॥

आसाविसोमाइन्द्रते । शाविष्ठाऽ२३४धृ ॥ ष्णोऽ३आगाऽ३ही । आत्वापृणाऽ२३-
हाऽ३ । त्त्कुईऽ२न्द्राऽ२३४याम् ॥ रजाः । सूर्यौवाओऽ२३४वा ॥ नराऽ५श्मिभीः ॥
होऽ५इ । डा ॥ (दी.४। प.१०। मा.८)३(नै । ५९६)

(३४८-१) ॥ काण्वे द्वे । द्वयोः कण्वोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

एन्द्राऽ३याहिहरिभाइः ॥ उपाकण्वाऽ३ । स्यासुष्टूऽ२३४तीम् । दिवोअमूऽ३ ।
ष्याशासाऽ२३४ताः ॥ दाइवँ्ययाऽ३१उवाऽ२३ ॥ दाऽ२३इवाऽ३ ।
वाऽ३४५सोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.३। प.८। मा.९)४(डो ।५९७)

(३४८-२)

एन्द्रायाहिहरिभीः । उहुवाहाइ ॥ उपकण्वास्यसुष्टूतिम् । उहुवाऽ२३हाइ । दिवोआमूऽ३ । ष्याशासाऽ२३४ताः ॥ दाइवँ्ययाउ । वाऽ३ ॥ देऽ२३४वा । वसोऽ५हा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.१२। मा.९)५(ठों । ५९८)

(३४९-१) ॥ वैश्वामित्रम् । विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

आत्वागाऽ३इरोराथीरिवा ॥ अस्थुःसुतेऽ३षूगीर्वाणाऽ३ः । ओऽ३४वा । ओऽ२३४वा ॥ अभित्वासाऽ३मानूऽ१षाताऽ३ । ओऽ२३४वा । ओऽ२३४वा ॥ गावोवाऽ३त्साऽ३म् ॥ नाधोऽ२३४वा । नाऽ५वोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.७। प.१०। मा.४)६(जी । ५९९)

(३५०-१) ॥ शुद्धाशुद्धीये द्वे (पदान्त निधनंशुद्धाशुद्धीयम्) । द्वयोः इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

एतोन्विन्द्रँ्स्तवामा । शुद्धँ्शुद्धेनासाऽ२३म्ना । शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वाऽ२३ँ्साम् ॥ शुद्धैराऽ२३शीऽ३ ॥ र्वाऽ२न् । मामाऽ३४औहोवा ॥ तूऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.७। मा.३)७(फि । ६००)

(३५०-२) ॥ ऐडँशुद्धाशुद्धीयम् ॥

एतोन्विन्द्र ँ्स्तवाऽ६ँ्मा ॥ शुद्ध ँ्शूद्धे । न । साम्नाऽ२ ॥ शुद्धाइरूऽ३क्थाऽ३इः । वावाऽ२र्ध्वाऽ२३४ँ्साम् । शुद्धैराऽ२३शी ॥ र्वान्मामत्तु । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.४। प.११। मा.५)८(तु । ६०१)

(३५१-१) ॥ रयिष्ठे द्वे । द्वयोः गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

५र र र ३ ५ १र र २ १र १
योरयिंवोरयाहाउ ॥ ताऽ२३४माः । योद्युम्नैर्द्युम्नावात्तमः । सोमःसुतःसआऽ२३होइ ।
प दू का को
अ — १ र १ २
द्राताऽ२इ । अस्तिस्वधापताऽ२३होयेऽ३ ॥ मदोऽ२३४५इ ॥ डा ॥
का ख दू प

(दी.७। प.८ मा.७)९(जे । ६०२)

(३५१-२)

३र ४ ३ ४र ५ ३ ५ ३र ४ ३र ४ ५ ३ ५ ३र ४ ३ ४ ५
योरायिंवोरायि । तमोऽ२३४हाइ ॥ योद्युम्नैर्द्युम्नावा । तमोऽ२३४हाइ ॥ सोमःसुतःसाइ ।
ठी दू ठी दू ठी
३ ५ ३ ४ ५ र र ३ ५ ४
द्रतोऽ२३४हाइ ॥ अस्तिस्वधापते । मदोऽ२३४हा । होऽ५इ ॥ डा ॥
दू टा दू ता प

(दी.७। प.१०। मा.५)१०(जु । ६०३)

अष्टाविंशति द्वादशः खण्डः ॥१२॥ दशतिः ॥६॥

इति तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

—*—

(३५२-१) ॥ कौल्मल बर्हिषे द्वे । द्वयोः कुल्मबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

५ र र १ २ २ १ २र १ २ २ २ २
प्रत्यस्मैपिपाहाउ ॥ आइषाऽ३ताइ । वाइश्वानिवाइ । दूषेऽ३हाऽ३इ । भाऽ३रा ।
प कः कै वि चै
१ विर १ २ २ २ २ १ १ ३
आराऽ२०गामा ॥ याजाऽ३हाऽ३ । ग्माऽ३याइ ॥ अपाऽ२३ । श्वाऽ२दाऽ२३४-
कै वि चै कि
५र र १ विर ३ । । ।
औहोवा ॥ ध्वानेऽ२नाराऽ२३४५ः ॥ (दी.७। प.११। मा.९)११(चो । ६०४)
वे ३

(३५२-२)

प्रत्यस्मैपीऽ६ँ॒पीषताइ ॥ वाइश्वानिवाइ । दूषेभाराऽ२ । आराऽ२०गामा ।यजग्मा ।

याइ ॥ अपश्चादध्वनाऽ२३होइ ॥ नारा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.६)१२(कू । ६०५)

(३५२-३) ॥ नानदम् । इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

प्रत्यस्मैपिपी । षाताऽ३इ । वाऽ२३४इ । श्वानिविदुषे । भारा ॥ अरंगामायाजा।

ग्मयोऽ२३४हाइ ॥ आपश्चादा ॥ ध्वानोऽ२३४वा । नाऽ५रोऽ६ँ॒हाइ ॥

(दी.५। प.१०। मा.४)१३(मौ । ६०६)

(३५३-१) ॥ शाकपूतम् । शाकपूतिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

आनोवयोवयःशाऽ६ ँ॒याम् ॥ महान्तंगह्वराऽ२३४इष्ठाम् । महान्तंपूर्विना-

ऽ२३४इष्ठाम् । उग्रंवाऽ२३चाः ॥ आपाऽ३वाऽ५धाऽ६ँ॒५६ँ॒इः ॥

(दी.६। प.५ मा.८)१४(ङै । ६०७)

(३५४-१) ॥ कौल्मल बर्हिषे द्वे । द्वयोः कुल्मबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

आत्वारथंयथौहोवा ॥ तायाइसूऽ२३४म्रा । यवर्त्तयामसितुविकूर्मीम् । आऽ२३४र्ती ।

षाहम् ॥ आइन्द्राऽ३ँ॒शावी । ष्ठसत्पाऽ२३तीऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.९। मा.६)१५(धू । ६०८)

(३५४-२)

आत्वाराथंयाथो । तायाइ । आत्वारथाम् ॥ याथोताया । औहोऽ२३४वा ।
ईऽ२३४हा । सुम्नायवर्त्ताऽ३यामासि । औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा ।
तुविकूर्म्मिमृऽ३ताइषाहम् । औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा ॥ इन्द्र ँ् शविष्ठाऽ३-
सात्पातिम् । औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४५वाऽ६ ँ्५६ ँ् ॥ ईऽ२३४हा ॥

(दी.११। प.१६। मा.८)१६(कै । ६०९)

(३५५-१) ॥ मधुश्चुन्निधनम् । प्रजापतिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

सपूर्व्योमहोनाऽ६ ँ्मे ॥ वेनःक्रतुऽ३भाइरानाजेऽ३ । हाऽ३हा । औऽ३होऽ३वा।
आइहीऽ२ । यस्यद्वाराऽ३मानुःपिताऽ३ । हाऽ३हा । औऽ३होऽ३वा। आइहीऽ२ ॥
दाइवेषुधाऽ३ । हाऽ३हाइ । औऽ३होऽ३वा । आइहीऽ२ ॥ याआऽ२३ ।
नाऽ२जाऽ२३४औहोवा ॥ मधुश्चुताऽ२३४५ः ॥

(दी.१०। प.१६। मा.९)१७(पो । ६१०)

(३५६-१) ॥ उषसस्साम । उषानुष्टुबिन्द्रः मरुतो वा ॥

यादीवाहन्त्याशवाः । य । द्येयादी ॥ ओइवहन्ताआऽ१शावाऽ२ः । ओइभ्राजमाना-
रथाइषूऽ१वाऽ२ । ओइपिबन्तोमदिरांमाऽ१धूऽ२ ॥ ओइ । तत्रश्रवा ँ्सिकोवा-
ऽ३ओऽ२३४वा ॥ ण्वाऽ५तोऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.७। प.९। मा.१०)१८(झौ । ६११)

(३५७-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

त्यामुवोआ । प्राहा । हाऽ२३४णाम् । गृणीषेशवसः । पताइम् । आइन्द्राऽ०वाइश्वा ।

साहाऽ३ँ होयेऽ३४ । नारामोऽ३इ ॥ शाचिष्ठाऽ२३४०वी ॥ श्वावाऽ३होऽ२३४।

वा । दाऽ५सोऽ६ँ हाइ ॥ (दी.३ । प.१२ । मा.९)१९(ठो । ६१२)

(३५८-१) ॥ (दधिक्रम्) दधिक्राव्णम् । अग्निरनुष्टुबिन्द्रःदधिका वा ॥

ओहाइ । दधिक्राव्णोअकारिषम् । ओहाइ ॥ ओहाइ । जिष्णोरश्वस्यवाजिना-

ऽ२३होइ । सुरभिनोमुखाकाऽ२३रात् ॥ प्रनाऽ२३होइ । आयूऽ२३हो ॥ षितारा-

ऽ२३इषाऽ३४३त् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.११। मा.११)२०(त । ६१३)

(३५९-१) ॥ मारुतम् । मरुतोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

पुरांभिन्दुर्युवाकवीः ॥ अमितौजाआजायाऽ२३ता । आइन्द्रोविश्वाऽ३ । स्याकर्मा-

ऽ२३४णाः ॥ धर्त्ता । वाज्रौवाओऽ२३४वा ॥ पुरुऽ५ष्टुताः । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.९। मा.७)२१(घे । ६१४)

॥ एकादश प्रथमः खण्डः ॥१॥ दशतिः ॥७॥

(३६०-१) ॥ वामदेव्यम् । वामदेवोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

प्रप्रवस्त्रिष्टुभमिषमोहाओहाऽ६ँ ए ॥ वन्दद्वीरा । यआइन्दावेऽ२ । ओऽ३हा ।

ओऽ३हाऽ३ए । धियावोमेधासाऽ१ताऽ३याइ । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३ए ॥

पुरांधीऽ३याऽ३ ॥ विवोऽ२३४वा । साऽ५तोऽ६ँ हाइ ॥ (दी.६। प.११। मा.८)२२(कै । ६१५)

(३६१-१) ॥ काश्यपम् । कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

कश्यपस्यसुवर्विदाऽ६ऍए ॥ यावाहुस्सा । युजावाऽ१इतीऽ२३४ । यायोर्विश्वमापि।
व्राताऽ३म् । यज्ञान्धीऽ३राः ॥ निचाऽ२३ । आऽ२याऽ२३३४औहोवा ॥
ऊऽ२३४पा ॥ (दी.४। प.९। मा.५)२३(ध्वु । ६१६)

(३६२-१) ॥ प्रैयमेधम् । प्रियमेधानुष्टुबिन्द्रः ॥

अर्चतप्रार्च्चतानाऽ२३४राः ॥ प्रियमेधाऽ३सोऽ३अर्चाता । अर्चन्तुपूऽ२३-
त्राऽ३काउता ॥ पुरमिद्धाऽ२३ ॥ ष्णुवाऽ३र्च्चाऽ५ताऽ६ँ५६ँ ॥

(दी.३। प.५। मा.३)२४(णि । ६१७)

(३६३-१) ॥ बार्हदुक्थम् । बृहदुक्थोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

उक्थमिन्द्रा ॥ याशँसाऽ२३याम् । वार्द्धानंपु । रुनिःषाऽ२३इधाइ । शक्रोया-
ऽ३थाऽ३ । सूतेषूऽ२३४नाः ॥ रारणाऽ२३त्सा ॥ खियाइषूऽ२३चाऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१। प.१०। मा.६)२५(ङू । ६१८)

(३६४-१) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य सामनी द्वे । द्वयोरग्निरनुष्टुबग्निरिन्द्रो वैश्वानरो वा ॥

विश्वानरा ॥ स्यावाऽ२स्पातीऽ२म् । आनानत । स्याशावाऽ१साऽ२ः । एवैश्वा।
चर्षाणाऽ२इनाम् ॥ ऊऽ२ती ॥ हुवाइरा । थाऽ२३४नोऽ६ँहाइ ॥

(दी.४।प.९। मा.६)२६(धू । ६१९)

(३६४-२)

विश्वा ऽ३४ । नरस्यवौ । होस्पातीम् ॥ आनानता ऽ३ । स्याशावा ऽ२३४साः ।
एवैश्वा । चर्षणा ऽ२३४इनाम् ॥ ऊतीहुवाइरा ॥ था ऽ२३४नो ऽ६ँ ्हाइ ॥

(दी.६।प.९। मा.६)२७(घू । ६२०)

(३६५-१) ॥ शाकपूते द्वे । द्वयोः शाकपूतिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

साघायस्ता ऽ३इ । ए । दिवोनरा ऽ३ः । ए ॥ धियामर्त्ता ऽ३ । ए । स्याशमता ऽ३ः ।
ए ॥ ऊताइसबृ ऽ३ । ए । हातोदिवा ऽ३ः । ए । द्विषोअँ ्हा ऽ३ः । ए । नातारति ।
इडा ऽ२३भा ऽ३४३ । ओ ऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.१८। मा.८)२८(गै । ६२१)

(३६५-२)

सघायस्ताइ ॥ दिवोनराः । धियामार्त्ता ऽ२ । स्यशमताः ॥ ऊतीसाबृ ऽ२ ।
हतोदिवाः ॥ द्विषोआँ ्हा ऽ२ः ॥ नातारति । इडा ऽ२३भा ऽ३४३ । ओ ऽ२३४५इ ॥
डा ॥ (दी.७। प.११ । मा.७)२९(चे । ६२२)

(३६६-१) ॥ वरुणान्याः साम । वरुणान्यनुष्टुबिन्द्रः ॥

विभोष्टइन्द्रराधा ऽ६ँ ्साः ॥ विभ्वीरा ऽ२तिःशातक्रतो । शाता ऽ२क्राताउ ॥
आथानोविश्वचर्षणे । श्वाचा ऽ२र्षाणाइ ॥ द्युम्न ँ ्सुदत्रम ँ ्हय । त्रामा ऽ३ ँ ्हा-
ऽ५या ऽ६ँ ्५६ँ ्॥

(दी.८। प.७। मा.४)३०(ठी । ६२३)

(३६७-१) ॥ उषसम्, औषसम् वा । उषानुष्टुबिन्द्रः उषा वा ॥

वयाश्चाऽ३इत्तेपातत्रिणाः ॥ द्विपाच्चतुष्पादर्जुनायेऽ३ । ऊषःप्रारान् । ऋतुँ रनु ॥

दिवोआन्तेऽ२३ ॥ भाऽ२३याऽ३ः । पाऽ३४५रोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.५। प.७। मा.६)३१(फू । ६२४)

(३६८-१) ॥ देवानां रुचिः रोचनम् वा । रुचिरनुष्टुबिन्द्रः विश्वेदेवा वा ॥

अमीयेदेवास्थाना ॥ मध्यआरोचनेदिवाः । कद्वऋताम् ॥ कदमार्त्ताऽ२म् ॥

काप्रत्नावाआहूऽ२३तीऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१०। प.७। मा.८)३२(फै। ६२५)

(३६९-१) ॥ ऋक् साम्नोः सामनी द्वे । द्वयोः ऋगनुष्टुबिन्द्रः ॥

ऋचँ सामयजा ॥ महाइ । याभ्यांकर्माणिकृण्वाऽ२३ताइ । वितेसदासि-

राजाऽ२३ताः ॥ यज्ञंदाऽ२३इवे ॥ षूवाक्षतः । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.९। मा.६)३३(घू । ६२६)

(३६९-२) ॥ साम्नः साम । सामानुष्टुबिन्द्रः ॥

ऋचँ साऽ३मायाजामहाइ ॥ याभ्यांकर्मा । णिकार्ण्वाऽ१ताऽ२इ । ण्वाताऽ२इ ।

वाइतेसदा । सिराजाऽ१ताऽ२ः । जाताऽ२ः ॥ यज्ञांदाऽ१इवेऽ२ । षूवाक्षतः ।

इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.४। प.१२। मा.९)३४(थो । ६२७)

॥ त्रयोदश द्वितीयः खण्डः ॥२॥ दशतिः ॥८॥

॥ इत्यानुष्टुभमैन्द्रम् ॥

(३७०-१) ॥ त्रैशोकम् । त्रिशोको जगतीन्द्रः ॥

विश्वोहाइ ॥ पूतनाअभिभू । तारन्नाराः.। साजूस्ततक्षुराइन्द्रंजजनूः । चराजासो-
ऽ२३४हाइ । क्रत्वौहोइ । वारौहोइ । स्थेमन्याऽ२मूऽ२३४रीम् ॥ उतोहाइ ॥
उग्रामोऽ२३४जी । ष्ठंताराऽ२३४साम् । होइ । ताराऽ३४ । स्विनम् । ओऽ६ वा ॥
ओइदीऽ२३४वा ॥ (दी.७। प.१६। मा.१४)३५(ची । ६२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमः प्रपाठकः ॥९॥

(३७१-१) ॥ शैखण्डिने द्वे । द्वयोः शिखण्डी जगतीन्द्रः ॥

श्रत्तेऽ३होइ । दाधाऽ३होऽ२३४ । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ ॥ आहाऽ३न्होइ ।
यद्दाऽ३होऽ२३४ । स्युन्नर्यंविवेः । आपाआपाः ॥ उभेऽ३होइ । यत्त्वाऽ३होऽ२३४ ।
रोदसीधावताम् । आनूआनू ॥ भ्यासाऽ३द्धोइ । तेशूऽ३होऽ२३४ । ष्मात्पृथिवीचिद ।
द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाआ । औहोवाऽ६ । हाउवा । ईऽ२३४५ ॥

(दी.११। प.२०। मा.१४)१(ड्री । ६२९)

(३७१-२)

श्रत्ताऽ३१इ । दाधाऽ३१२३४ । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ ॥ आहाऽ३१न्।
यद्दाऽ३१२३४ । स्युन्नर्यंविवेः । आपाआपाः ॥ उभाऽ३१इ । यत्वाऽ३१२३४ ।
रोदासीधावताम् । आनूआनू ॥ भ्यासाऽ३१त् । तेशूऽ३१२३४ । ष्मात्पृथिवीचिदा ।
द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाए । हियाऽ६ँहा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.९ । प.२०। मा.१४)२(नी । ६३०)

(३७१-३) ॥ अत्रेर्विवर्तौ द्वौ । द्वयोरत्रिर्जगतीन्द्रः ॥

अयोऽ२३४वा । आयायोऽ२३४वा । श्रात्ताइ । दाऽ२३४धा । मिप्रथमायमा ।
न्यावाइन्यावाइ ॥ अयोऽ२३४वा । आयायोऽ२३४वा । आहान् । याऽ२३४द्दा।
स्युन्नर्यंविवेः । आपाआपाः ॥ अयोऽ२३४वा । आयायोऽ२३४वा । ऊभाइ ।
याऽ२३४त्वा । रोदसीधावताम् । आनूआनू ॥ अयोऽ२३४वा । आयायोऽ२३४वा ।
भ्यासात् । ताऽ२३४इशु । ष्मात्पृथिवीचिदा । द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ।
हाउवा ॥ द्रिवऔहोऽ३हिँऽ१ ॥ (दी.१३। प.२८। मा.१६)३(डू । ६३१)

(३७१-४)

३ ५ ३ २ ३ ५ ४ ५ १ २ ५ ४र५ ४ ५ ४ ५
इयोऽ२३४वा । इयायोऽ२३४वा । श्रात्ताइ । दाऽ२३४धा । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ॥
हू तौ ता की पै तु
३ ५ ३ २ ३ ५ ४ ५ १ ५ ४ ५ ४र ४ ५ ४ ५
इयोऽ२३४वा । इयायोऽ२३४वा । आहान् । याऽ२३४द्दा । स्युन्नर्यंववेः । आपाआपाः ॥
हू तौ ता की फि तु
३ ५ ३ २ ३ ५ ४ ५ १ २ २५ २ ४र५ २ ४ ५ ४ ५
इयोऽ२३४वा । इयायोऽ२३४वा । ऊमाइ । याऽ२३४त्वा । रोदसीधावताम् । आनूआनू॥
हू तौ ता की तु तु
३ ५ ३ २ ३ ५ ४ ५ १ ५र ४र५ ४ ५ ४ ५
इयोऽ२३४वा । इयायोऽ२३४वा । श्यासात् । ताऽ२३४इशु । ष्मात्पृथिवीचिदा । द्रिवोद्रिवाः ॥
हू तौ ता की पै तु
४ ५ ४ ५र र ५ २ २
द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ॒ । हाउवा ॥ द्रिवइहोऽ३हिँ॒ऽ१ ॥ (दी.१२। प.२८। मा.१६)४(जू। ६३२)
ती पा प रि

(३७१-५) ॥ महासावेतसे द्वे । द्वयोः वेतसो जगतीन्द्रः ॥

१ २ ४ ५ १ २ ५ ४र५ ४ ५ ४ ५
आऽ२३याऽ३म् । श्रात्ताइ । दाऽ२३४धा । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ ॥
वि ता की पै तु
१ २ ४ ५ १ ५ ४ ५ ४र ५ ४ ५ १
आऽ२३याऽ३म् । आहान् । याऽ२३४द्दा । स्युन्नर्यंविवेः । आपाआपाः ॥ आऽ२३-
वि ता की फि तु
२ ४ ५ १ २ २ ५ २ ४र ५ २ ४ ५ ४ ५ १ २
याऽ३म् । ऊमाइ । याऽ२३४त्वा । रोदसीधावताम् । आनूआनू ॥ आऽ२३याऽ३म् ।
वि ता की तु तु वि
४ ५ १ २ ५ ४र५. ४ ५ ४ ५ ४ ५ ४ ५र र
श्यासात् । ताऽ२३४इशु । ष्मात्पृथिवीचिदा । द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ॒।
ता की पै तु ती पा
५ २ १ ।।।
हाउवा ॥ द्रिवोऽ३द्रिवाऽ२३४५ः ॥ (दी.१२ । प.२४। मा.२०)५(झौ । ६३३)
प जा

(३७१-६)

२ ४ ५ १ २ ५ ४र५ ४ ५ ४ ५
अयँ॒याऽ३ः । श्रात्ताइ । दाधाऽ३१२३४ । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ ॥
चा ता त्रा तु तु
२ ५ १ २ ५ ४र ५ ४ ५ २
अयँ॒याऽ३ः । आहान् । याद्दाऽ३१२३४ । स्युन्नर्यंविवेः । आपाआपाः ॥ अय ँ॒याऽ३ः ।
चा ता त्रा ती तु चा
४ ५ १ २ ४र ५ २४र५ र ४ ५ ४ ५ २ ४ ५
ऊमाइ । यात्वाऽ३१२३४ । रोदसीधावताम् । आनूआनू । अयँ॒याऽ३ः । श्यासात् ।
ता त्रा तु तु चा ता
१ २ २ ५ ४र ५ ४ ५ ४ ५ ४ ५ ४ ५र र
ताइशूऽ३१२३४ । ष्मात्पृथिवीचिदा । द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ॒।
त्रा तु तु ती पा
५ २ १ ।।।
हाउवा ॥ द्रिवाऽ३ईऽ२३४५ ॥ (दी.१०। प.२४। मा.२०)६(भौ । ६३४)
प जा

(३७१-७) ॥ महोशैरीषे द्वे । द्वयोः शिरीषो जगतीन्द्रः ॥

औहोहोहाइ । श्रात्ताइ ॥ दाऽ२३४धा । मीप्राथाऽ२३४मा । यमन्याऽ२३४वे ।

यमन्याऽ२३४वाइ । आहाऽ३१२न्याऽ२३४द्दा । स्युन्नारीऽ२३४याम् ।

विवेराऽ२३४पो । विवेराऽ२३४पाः ॥ उभाऽ३१२इयाऽ२३४त्वा ।रोदासीऽ२३४धा ।

वतामाऽ२३४नू । वतामाऽ२३४नू ॥ भ्यासाऽ३१२त्ताऽ२३४इशू । ष्मात्पृथी-

ऽ२३४वी । चिदद्रीऽ२३४वाः । चिदद्राऽ२३४इवाः ॥ द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ ।

हाउवा ॥ एऽ३ । द्रिवइहाऽ२३४५ ॥ (दी.३। प.२३। मा.१४)७(डी । ६३५)

(३७१-८)

श्रत्ताऔहोहोहाइ ॥ दाधाऽ३१२३४ । मिप्रथमायमा । न्यावाइन्यावाइ । अहाऔहो-

होहाइ । याद्दाऽ३१२३४ । स्युन्नर्यविवेः । आपाआपाः ॥ उभाऔहोहोहाइ ।

यात्वाऽ३१२३४ । रोदसीधावताम् । आनूआनू ॥ भ्यसाऔहोहोहाइ ।

ताइशूऽ३१२३४ । ष्मात्पृथिवीचिदा । द्रिवोद्रिवाः । द्रिवाआ । औहोवाऽ६ँ ।

हाउवा ॥ द्रिवएऽ३द्रिवाऽ२३४५ः ॥ (दी.१८। प.२०। मा.२१)८(ण । ६३६)

(३७२-१) ॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि । त्रयाणां इन्द्रो जगतीन्द्रः ॥

४ ५ १ र र २ १ २ १ ३र २
समाहाउ ॥ आइतविश्वाओजसाऽ३ । पतिमाऽ३इ । दिवाऽ२३४ः । हाहोइ ।
ता कि कि की य
२ १ २ — १र २ १ २ ३र २ १ अ —
याआइकाऽ१ईऽ२त् । भूरातिथिः । जनाऽ२३नाऽ३४म् । हाहोइ । सापूर्वियाऽ२ः ।
छु का यी य छु
१र २र १ २ ३र २ १ २ — १ २र र
नूतानमा । जिगाऽ२३इषाऽ३४न् । हाहोइ ॥ तंवार्त्ताऽ१नीऽ२ः ॥ अनुवावृते।
का वी य छु का
१ २ २ २
आयेऽ३ । कायाउवाऽ३ ॥ वृधेऽ१ । (दी.१०। प.१८। मा.१९)९(बो । ६३७)
कि टी र

(३७२-२)

५ ४र ५ ४ ५र ४र ५ र ४ ५ ४ ५ १ २र १ — १न २ २
सामेतविश्वाओजसापातिम् । एपातीम् ॥ दिवया । हौऽ२ । हौऽ३होऽ३वा ।
फै ता का का खे
न २ १ २ — १र २ १ २ १ —
ईऽ३या । याआइकाऽ१इऽ२त् । भूरातिथिः । जनाऽ२३नाम् । हौऽ२ ।
खु छु का कः का
१न २ २ न २ १अ — १र २ र १ २
हौऽ३होऽ३वा । ईऽ३या । सापूर्वियाऽ२ः। नूतानमा । जिगाऽ२३इषान् ।
खे खु छु का कः
१ — १न २ २ न २ १ २ — १ २र र १ २
हौऽ२ । हौऽ३होऽ३वा । ईऽ३या ॥ तंवार्त्ताऽ१नीऽ२ः । अनुवावृते । आयेऽ३।
का खे खु छु का कि
२ २
कायाउवाऽ३ ॥ महेऽ१ ॥ (दी.१०। प.२३। मा.१४)१०(बी ।६३८)
टी र

(३७२-३)

५ ४र ५ ४ ५र ४र ५ र ४ ५ ४ ५ १ २ — १ — १न २ २
सामेताविश्वाओजसापातिम् । एपातीम् ॥ दाइवाऽ१याऽ२ । औऽ२ । हौऽ३होऽ३वा ।
फै ता धि का खे
१ २ १ २ — १र २ १ २ १ —
ओमोवा । याआइकाऽ१ईऽ२त् । भूरातिथिः । जनाऽ२३नाम् । औऽ२ ।
का छु का कः का
१न २ २ १ २ १ २ — १र २ र १ २
हौऽ३होऽ३वा । ओमोवा । सापूर्वाऽ१याऽ२ः । नूतानमा । जिगाऽ२३इषान् ।
खे का छु का कः
१ — १न २ २ १ २ १ २ — १ २र र १ २
औऽ२ । हौऽ३होऽ३वा । ओमोवा ॥ तंवार्त्ताऽ१नीऽ२ः॥ अनुवावृते । आयेऽ३ ।
का खे का छु का कि
२ १ ३ । । ।
कायाउवाऽ३ ॥ धर्माणेऽ२३४५ ॥ (दी.९। प.२३। मा.१५)११(दु । ६३९)
टी गा

(३७३-१) ॥ वैरूपाणि त्रीणि । त्रयाणां इन्द्रो जगतीन्द्रः ॥

५र २१र — १ — १र र र — १ —
इमेतआ ॥ द्रातेवयंपुरुऽ२ष्टूताऽ२ । येत्वारभ्यचरामसिप्रभूऽ२वासाऽ२उ ।
प छु धि

१ र र — १ — २र१र — १
नहित्वदन्योगिर्वणोगिराऽ२ःसाघाऽ२त् ॥ क्षोणीरिवप्रतितद्धर्यनोऽ२वाचाऽ२ः ॥
धि छु

३ २ ३ ५ ४
वाचाओऽ२३४वा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.८। मा.६)१२(दू । ६४०)
ठौ ता प

(३७३-२)

५र २१र २ १ २ — १ — १ र २ र
इमेतआ ॥ द्रातेवयंपुरु । ष्टुता । याऽ१इत्वाऽ२राभ्याऽ२ । चारामसिप्रभू ।
प चो क छु क्यू

१ २ — १ — १ २ र १ २ —
वसाउ । नाऽ१हीऽ२त्वादाऽ२न् । योगिर्वणोगिरः । सघात् ॥ क्षोऽ१णीऽ२-
क छु कै क

१ — १ २ १ २ १र २ १
राइवाऽ२ ॥ प्रातिताद्धा । र्यानोवाऽ२३चाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
छु धि णु कु प

(दी.६। प.१४। मा.९)१३(घो । ६४१)

(३७३-३)

२१र ४ ५४र५४५ ४५ १र र — १र ४ २र३ ५
इमेताऽ२३इन्द्रातेवायंपुरुष्टुतोवा ॥ येत्वाराभ्याऽ२ । चरामसीऽ२३प्राऽ३भूवासाउ ।
कै का क्यू

२ १ — १र ४ २ ३ ५ १र र — १
नहित्वादाऽ२न् । योगिर्वणोऽ२३गीऽ३रःसाघात् ॥ क्षोणीरिवाऽ२ ॥प्रतितद्धाऽ२३ ।
चो क्यू का कि

४ ४
र्यनोऽ५वचाः । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.१०। मा.६)१४(नू । ६४२)
ता ता प

(३७४-१) ॥ बार्हदुक्थम् । बृहदुक्थो जगतीन्द्रः ॥

५ र २ १ र २ १ २ १ र र २ १र २ १अ —
चर्षणीधृतँ्हाउ ॥माघावानामुक्थाऽ२३याम् । इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्यनूषाऽ२३ता। वावृधानाऽ२म्।
प जै थै धि

१ अ १ ३ ५ १ — १ २ १
पूरुहूताऽ२३म् । सुवाऽ२र्क्ताऽ२३४इभीः । अमाऽ२र्त्तियाम् ॥ जारामाणाऽ२३म् ।
धि वू कै चौ

१ ४ २ ५
दाऽ२३इवेऽ३। दाऽ३४५इवोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.५। प.१०। मा.११)१५(म । ६४३)
ख यु

(३७५-१) ॥ त्रासदस्यवे द्वे । द्वयोस्त्रसदस्युर्जगतीन्द्रः ॥

अच्छावइन्द्रंमतयःसुवर्युवाऽ६ँ ए ॥ सध्रीचीर्विश्वाउशतीरनूऽ२षाताऽ२ । परिष्वजन्त-
जनयोयथाऽ२पातीऽ२म् ॥ मर्यन्नाऽ२३शू ॥ ध्युम्मा । घवाऽ२ । नामूऽ३४औहोवा ॥
तयाऽ३ईऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.८। मा.६)१६(डू । ६४४)

(३७५-२)

आऽ२३४ । च्छावइन्द्रंमा । तायाः । सूवर्युवाऽ२३ः । साऽ२३४ । ध्रीचीर्विश्वाउ ।
शातीः । आनूषताऽ२३ ॥ पाऽ२३४ । रिष्वाजन्तजा । नायाः ।याथापताऽ२३इम् ॥
माऽ२३४ । र्यन्नशुन्ध्युम्मा । घावा । नामूतयाऽ३१उ ॥ वाऽ२३४५ ॥

(दी.११। प.१७। मा.९)१७(खो । ६४५)

(३७६-१) ॥ जागतसोमसाम । सोमो जगतीन्द्रः ॥

अमित्याऽ३म्मेषंपुरुहू ॥ तमृग्मायाऽ२म् । इन्द्रंगीर्भाइः । मदतावस्वऽ३आर्णावम् ।
ओऽ३४ । हाहोइ ॥ यस्यद्यावोनविचरन्तिऽ३मानुषम् । ओऽ३४ । हाहोइ ॥
भुजेमँहिष्ठमभिविप्रमर्चत । दुराऽ२ । तिनाऽ३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१०। प.१३। मा.९)१८(ब्वो । ६४६)

(३७७-१) ॥ सौभरम् । सुभरिर्जगतीन्द्रः ॥

त्यँ सूऽ३मेषंमहया ॥ सुवर्वाइदाऽ२म् । शतंयस्यसुभुवस्साकऽ३माइराऽ१ताऽ२इ । अत्यन्नवाजँ हवनस्याऽ३दाँ राऽ१थाऽ२म् ॥ आइन्द्रंववृत्यामा ॥ वसायेऽ३ । सूऽ२वृऽ२३४औहोवा ॥ त्तीऽ२३४भीः ॥ (दी.६। प.८। मा.८)१९(गै । ६४७)

(३७८-१) ॥ जागतं वरुणसामनी द्वे । द्वयोर्वरुणो जगतीद्यावापृथिव्यौ ॥

घृतावा । ताऽ३इभुवनानाम् । अभिश्रिया ॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशसाऽ२३होइ। द्यावापृथिवीवरुणा । स्याधर्मणाऽ२३ । होइ ॥ विष्काभाऽ२३इते ॥ आजरे । भूरि । रायेऽ३ । तासाउवाऽ३ ॥ एऽ३ । इन्दुस्समुद्रमुर्वियाविभातीऽ२३४५ ॥

(दी.१४।प.१४। मा.६)२०(धू । ६४८)

(३७८-२)

घृतवतीभुवनानाम् । भाऽ५इश्रिया ॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशाऽ२सा । द्यावा-पृथिवीवरुणा । स्याधर्मणा ॥ वाइष्काभिताइ ॥ आजारेऽ२भूरि । रायेऽ३ । तासाउवा३ ॥ इन्दुस्सामुद्रमुर्वियाविभातीऽ२३४५ ॥

(दी.१५। प.१०। मा.४)२१(मी । ६४९)

(३७९-१) ॥ श्येनः । इन्द्रो जगतीन्द्रः ॥

उभेयादिन्द्रारोदासाइ ॥ आऽ२३पा । प्राथउषाऽ३१उवाऽ२३ । इवाआ ।
माहान्तन्त्वामाहाइनाम् ॥ संम्रौऽ३हो ॥ जंचर्षणाऽ३१उवायेऽ३ । नाऽ३मा ।
देवीजनित्रियाजीऽ१जानाऽ२त् ॥ भद्रौऽ३हो ॥ जानित्रियजाऽ३१उवाऽ२३ ॥
एऽ३ । जनदाऽ३२ ॥ (दी.६। प.१३। मा.९)२२(गो । ६५०)

(३८०-१) ॥ वैरूपम् । विरूपो जगतीन्द्रो मरुत्त्वान् ॥

प्रमंदाऽ२३४इने ॥ पितुमदाऽ३र्च्चाऽ३तावाचाः । यःकाऽ३ओऽ२३४वा । ष्णगर्भा-
निराहन्नृजिश्वनाऽ३ । अवस्याऽ२३४वाः । वृषाणंवा । व्रादक्षाऽ२३४इणाम् ॥
मारौवाओऽ२३४वा ॥ त्वन्त ँ्सख्यायहुवाऽ५इमहाउ ॥ वा ॥

(दी.३। प.१०। मा.९)२३(णो । ६५१)

॥ चतुर्विंशति तृतीयः खण्डः ॥३॥ दशतिः ॥९॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये तृतीयेगाने अनुष्टुभाख्यम् ॥

॥ षष्ठं तन्त्रं संपूर्णम् ॥

(३८१-१) ॥ क्रोशम् । इन्द्र उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्रा ॥ सुतेषुसोमे । षु । होईऽ२ । हो । वाहोइ । क्रतुंपुनीषउक्थियाम् ।
विदाइवाऽ१र्द्धाऽ२३ ॥ स्याऽ३दाक्षाऽ३स्या ॥ महाऽ२३ ँ्हिषाऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५ । प.१२। मा.७)२४(फे । ६५२)

(३८१-२) ॥ अनुक्रोशम् । इन्द्र उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्राऽ३होइ । हावेऽ३होइ ॥ सुतेषुसोमेषुक्रतुम्पुनीषउक्थियाम् ॥ विदाइवा-
ऽ१र्द्धाऽ२ ॥ स्यदक्षस्या । माऽ३हाँ हि ॥ षाऽ२३४५ः ॥

(दी.५ । प.७। मा.६)२५(फू ६५३)

(३८१-३) ॥ कौत्सम् । कुत्स उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्रसुतेषुसोमेषू ॥ क्रतूऽ२०पुनाइ । षउक्थियाम् । विदेवार्द्धाऽ२ । स्यदक्षस्या ॥
महाँ हाइषाऽ२ः ॥ महाऽ२३ँ हिषाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४ । प.९। मा.७)२६(धे । ६५४)

(३८२-१) ॥ दैवोदासे द्वे । द्वयोः दिवोदास उष्णिगिन्द्रः ॥

हाउतमूवभी ॥ प्रगायता । हाउ । पुरुहूऽ२३४ताम् । पुरुष्टुताम् । हाउ ॥
इन्द्रंगाऽ२३४इर्भीः ॥ तावाइषाऽ२३माऽ३४ । हाउ । विवाऽ३साऽ५-
ताऽ६ँ ५६ँ ॥ दीऽ२३४वी ॥ (दी.६।प.११। मा.९)२७(को । ६५५)

(३८२-२)

ताऽ४मूवभी । होइ । प्रागायताऽ६ँ ए । पुरुहूऽ३ताम् । पुरुष्टूऽ३ताऽ३म् ।
पूरूऽ२ष्टुऽ२३४ताम् । इन्द्रांगीऽ३र्भाइः । तावाइषाऽ३मा । विवासाऽ३ताऽ३ ।
विवाऽ२साऽ२३४ता । आइन्द्राऽ३४म् । गीर्भाऽ३इः । तविषम् । आ ॥
विवाऽ२३हाऽ३ ॥ साताओऽ२३४वा ॥ ऊऽ२३४५ ॥ (दी.३। प. १७। मा.१४)२८(ठीं । ६५६)

(३८२-३) ॥ ओकोनिधनं प्रहितोः संयोजने द्वे । द्वयोः प्रहितिरुष्णिगिन्द्रः ॥

तामूऽ३आभिप्रगायता ॥ पुरु । हूतंपुरुऽ२ष्टूताऽ२म् । इन्द्राऽ२०गाइर्भीऽ२ः ।

ताविषाऽ२३४मा ॥ विवाऽ२३ ॥ साऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ ओऽ२३४काः ॥

(दी.४। प.८। मा.६)२९(दू । ६५७)

(३८२-४)

तामूऽ३आभिप्रगायतेदाम् ॥ पुरु । हूतंपुरुऽ२ष्टूताऽ२म् । आइन्द्रंगीर्भिस्तविषमा ।

विवासाऽ१ताऽ२ । आइन्द्रंगाऽ३४५इ । भाऽ२३४५इः ॥ तावाइषाऽ२३माऽ३।

वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ सतएऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.१०। मा.१२)३०(जा । ६५८)

(३८३-१) ॥ हारिवर्णानि चत्वारि । चतुर्णां हरिवर्णं उष्णिगिन्द्रः ॥

तंतेऽ५मदम् । गृणीऽ५मसि ॥ वृषा । णंपृक्षुसासाऽ२हाइम् । उलोका ।

कृत्नुमद्राइ । वोहाऽ२३रीऽ३ ॥ श्राऽ२३याऽ३४३म् । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.१०। मा०६)३१(णू । ६५९)

(३८३-२)

ताऽ४न्ते । होइ । मदंगृणीमसी६ ए ॥ वृषाहोऽ२ । णंपृक्षूसाऽ१साहीऽ२म् ।

उलोककृत्नुमद्रिवोहाऽ१रीऽ२ ॥ श्रियाम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.३। प.१०। मा.५)३२(णु । ६६०)

(३८३-३)

तंतेमदंगृणीमसीऽ६ँ ए ॥ वृषाऔऽ३होऽ३४ । णंपृक्षुसासाहीम् । उलाऔऽ३होऽ३४ ।

काकृत्नुमद्रिवाः ॥ हारोऽ२३४वा ॥ श्राऽ५योऽ६ँ हाइ ॥

(दी.३। प.७। मा.६)३३(वू । ६६१)

(३८३-४)

तंतेमदाऽ५०गृणीमसाइ ॥ वार्षाणंपृ । क्षुसासाऽ३हीऽ३म् । होवाऽ३हाइ ।

उलोकाऽ३कृऽ३ । होवाऽ३हा ॥ त्नुमाऽ२३ । द्राऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥

हरिश्रियाऽ२३४५म् ॥

(दी.४। प.९। मा.६)३४(धू । ६६२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने दशमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

॥ त्रैतानि चत्वारि त्रित उष्णिगिन्द्रः ॥

(३८४-१)

यत्सोममिन्द्रविष्णावी ॥ यद्वाघत्रितआप्तियाइ । यद्वामरुत्सुमाऽ३न्दासो-

ऽ२३४हाइ ॥ साऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । दुभीऽ२३४५ः ॥

(दी.६। प.६। मा.५)१(कु । ६६३)

(३८४-२)

यत्सोममाऽ५इन्द्रविष्णवाइ ॥ यद्वाघत्रितआप्ताऽ२याइ ॥ यद्वामाऽ२रुत्सुमा ॥
दासायेऽ३ । साऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ दूऽ२३४भीः ॥

(दी.६। प.६। मा.६)२(कू । ६६४)

(३८४-३)

हाओहायत्सोममा ॥ द्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ ष्णाऽ२३४वी । यद्वाऽ२घत्रित-
आऽ२प्तिये । यद्वामरुत्सुमाऽ२३हो । दासाऽ२इ ॥ समाऽ२३होयेऽ३ ॥
दुभिरोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी. १०। प.९। मा.५)३(भु । ६६५)

(३८४-४)

औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा । यत्सोममीऽ३न्द्राऽ३विष्णावाइ ॥ औहोऽ३१इ ।
औऽ२होऽ२३४वा । यद्वाघत्रीऽ३ताऽ३आप्तियाइ ॥ औहोऽ३१इ ।
औऽ२होऽ२३४वा । यद्वामरुऽ३त्सूऽ३मंदासाइ ॥ औहोऽ३१इ ।
औऽ२होऽ२३४५वा६ँ५६ँ ॥ समिन्दुभीऽ२३४५ः ॥

(दी.८ । प.१२। मा.९)४(ठो । ६६६)

(३८५-१) ॥ सुराधसम् । सुराधस उष्णिगिन्द्रः ॥

एदुमाधोः । मदा३२इन्ता२३४राम् ॥ सिञ्चाध्वर्योअन्धसा२ः । धा२३४साः ॥
एवाहिवीरस्तवता२इ । वा२३४ताइ ॥ सादा३वा५र्द्धा६ँ५६ँः ॥

(दी.७ । प.७। मा.९)५(छो । ६६७)

(३८५-२) ॥ प्रराधसम् । प्रराधस उष्णिगिन्द्रः ॥

एदुमधौहो५र्मदिन्तराम् ॥ सिञ्चाहो२इ । अध्वर्योआंधासा२ः ॥ आइवा१-
हिवी२ ॥ रा२स्तवताइ । सदावृ । धा । औ३होवा । हो५इ ॥ डा ॥

(दी. ३। प.१०।मा.७)६(णे । ६६८)

(३८६-१) ॥ विकल्पमारुतम् । मरुत उष्णिगिन्द्रः ॥

ए५न्दुमि । द्रा३या३सिञ्चता ॥ पिबा२तिसोम्यंमाधु । प्राराधा२३ँसी ॥
चोदयताइमा३ही ॥ त्वाना । औ३होवा । हो५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.९ । मा.२)७(धा । ६६९)

(३८७-१) ॥ वैश्वमनसम् । विश्वमना उष्णिगिन्द्रः ॥

एतोन्विद्रँस्तवा६ँमा ॥ साखायस्स्तो२ । मिया३४५म् । नरमाकृष्टीर्यो-
विश्वाआमि ॥ आ । स्तियाये ॥ काई२दा२३४औहोवा ॥ ऊ२३४५॥

(दी.९। प.८। मा.४)८(र्दी । ६७०)

(३८८-१) ॥ सौमित्राणि त्रीणि । त्रयाणां सुमित्र उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्रायसा ॥ मागायत । वाइप्राऽ१याबृऽ२ । हातेबृहत् ॥ ब्राह्माकृतेऽ२ ॥

विपाऽ२३ः । चाऽ२इताऽ३४औहोवा ॥ पनस्यवेऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.८। मा.५)९(बु. ६७१)

(३८८-२)

इन्द्राऽ३४ । यसाम । गायाऽ६ँ्ता ॥ वाइप्रायबृऽ२ । हाताऽ३४५इ । बृऽ२३४हात् ।

ब्रह्मकृतेऽ२विपश्चितेऽ२ ॥ ओयेऽ३ । पाऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ स्याऽ२३४वे ॥

(दी.७। प.१०। मा.४)१०(त्री । ६७२)

(३८८-३)

औहौहोइ । औऽ३होऽ३इ । ओऽ३२३४५वाऽ६ँ्५६ँ् ॥ इन्द्राऽ२यसामगायता॥

विप्राऽ२यबृहतेबृहात् ॥ ब्रह्मकृतेऽ२विपश्चितेऽ२ । औहौहोइ । औऽ३होऽ३इ ।

ओऽ३२३४वाऽ६ँ्५६ँ् ॥ एऽ३ । पनस्यवेऽ२३४५ ॥

(दी.११। प.११। मा.५)११(कु । ६७३)

(३८९-१) ॥ त्रैककुभानि त्रीणि । त्रिककुबुष्णिग्वस्वीशानेन्द्रः ॥

यएकइदिहाहाऊ ॥ विदयताइ । वसुमाऽ२३र्त्ता । यादाशुषाइ । ईशानोऽ२३आ ॥

प्रातिष्कुताऽ३१वाऽ२३। ईऽ२३४न्द्राः । अंगा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.९)१२(को । ६७४)

(३८९-२)

याऽ२३४ए । काऽ२३४ईत् ॥ वीदायाऽ२३४ताइ । वासुमर्त्ताऽ२३हाऽ३ ।
यादाशूऽ२३४षाइ । आइशानोआ । प्रताऽ२३हाइ ॥ ष्कूऽ२३४ताः ॥ आइन्द्रोआ ।
गाऽ२ । याऽ२३४औहोवा । ईऽ२३न्द्राः ॥

(दी.५। प.१२। मा.१३)१३(फि। ६७५)

(३८९-३)

यएकइद्विदायाऽ६ ँताइ ॥ वासुमर्त्तायाऽ३दा । हिम् । शूऽ२३४षाइ ।
आइशानोअप्रातिष्कुतः । आइशा । नोअप्राताइ ॥ ष्कूऽ२३४ताः ॥ आइन्द्रोआ।
गाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४न्द्राः ॥

(दी.९। प.१२। मा.१६)१४(थू । ६७६)

(३९०-१) ॥ औक्ष्णोरन्ध्राणि-नियानानि वा त्रीणि । त्रयाणामुक्ष्णोरंध्रोउष्णिगिन्द्रः ॥

सखायआहाउ ॥ शिषाऽ३महेहाउ । ब्रह्माऽ३इन्द्राहाउ । यावज्रिणाइ ।
स्तूषऊषूऽ३हाइ । वोनृतमाऽ२३हा ॥ याधाऽ२३ ॥ ष्णाऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥
ऊऽ२३४पा ॥

(दी.४। प.९। मा.९)१५(ध्वो । ६७७)

(३९०-२)

साखायआशिषाम । हाइ । ब्रह्मेन्द्रायवज्रिणोवा ॥ आइतीऽ३वाऽ३ । होवाऽ३हाऽ३ ।
हाइ । स्तुषऊषूऽ२३४ । वोहोहाइ ॥ नार्त्ताऽ३माऽ३ । होवाऽ३हाऽ३ । हा ॥
याधाऽ२३ ॥ ष्णाऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.१४। मा.७)१६(द्रे । ६७८)

(३९०-३)

साऽ४खायः । आशिषा । माऽ३हाइ । ब्रह्मेन्द्रायवज्रिणो । हाइ ॥
स्तुषऊषुवोऽ३नार्त्तामा । याऽ२३४धू । हाऽ३हाइ । वोनार्त्तामा । याऽ२३४धू ।
हाऽ३हाइ ॥ ष्णवाऽ३इ । औऽ३हो । औहोवा ॥ ष्णवाऽ३इ । औऽ३हो ।
औहोवाऽ३४ । औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.१४। प.१९। मा.७)१७(ध्ले । ६७९)

॥ अष्टाविंशति चतुर्थः खण्डः ॥ दशतिः ॥१०॥

॥ इति द्वितीयोऽर्धः, चतुर्थः प्रपाठकश्च समाप्तः ॥

(३९१-१) ॥ प्रयस्वम्, प्रयस्वद्वा । प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः ॥

हाउगृणाइ ॥ तादाऽ३इन्द्राताइ । शावाऽ२३१२३ः । उपाऽ३मान्दे । वातातयाइ ।

यद्व ँसाऽ२३इवा । त्रामोऽ३जासा ॥ शाची ॥ पाते । औऽ२३होवाऽ३४ ।

औहोवा ॥ द्यूऽ२३४भीः ॥ (दी.५। प.१२। मा.८)१८(फै । ६८०)

(३९१-२) ॥ आक्षारम् । प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः ॥

गृणे । तादाऽ३४ । औहोऽ५इन्द्रतेशवाः ॥ उपमांदेवाताताऽ२३याऽ३४इ ॥

यद्वाऽ३४ ँसिवा ॥ त्रमोजसा । शाऽ३चीपा ॥ ताऽ२३४५इ ॥

(दी. ८। प.८। मा.४)१९(डी । ६८१)

(३९१-३) ॥ प्रयस्वम्, प्रयस्वद्वा । प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः ॥

गृणेतदौहोऽ५इन्द्रतेशवाः ॥ उपमान्देऽ२वाताऽ२तये । उपमांदे । वाताताऽ२३याइ ॥

यद्व ँसिवृ । त्रमोऽ२३जसाऊ । वाऽ३ । शाऽ२३४ची । पाऽ२३४ताइ ।

होऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१०। प.११। मा.६)२०(पू । ६८२)

(३९२-१) ॥ दैवोदासानि चत्वारि । चतुर्णां दिवोदास उष्णिगिन्द्रः ॥

यस्याऽ३१ । त्यच्छाऽ३१२३४म् । बारम् । माऽ३दाइ ॥ दिवोऽ३१ ।

दासाऽ३१२३४ । यारा । धाऽ३यान् ॥ आयाऽ३१म् । सासोऽ३१२३४ । माइ ।

द्राऽ३ताइ ॥ सुताऽ३१ः । पिबाऽ३ । ओऽ२३४वा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१। प.१६। मा.८)२१(क्वै । ६८३)

(३९२-२)

यस्यत्यच्छाऽ५म्बरंमदाइ ॥ दिवोदासायरंधयान् ॥ आयाँ सासोऽ३ ॥ माइ ।
द्राताऽ३इ । सूऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ पीऽ२३४बा ॥

(दी.५। प.७। मा.५)२२(फु । ६८४)

(३९२-३)

यस्रात्याऽ३च्छाम्बरम्मदाइ ॥ दिवोऽ२दासायरंधयान् ॥ आया ँसंसोऽ३ ।
माइ । द्राताऽ३इ । सुताआऽ२३: । पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४ती ॥

(दी.५। प.८। मा.८)२३(बै । ६८५)

(३९२-४)

याऽ४स्यत्यात् । होइ । शंबरंमादाऽ६ँए ॥ दिवोदासायरंधयन्नायाँसाऽ३सो ।
माइ । द्राताऽ३४ । औहोवा । सूऽ२३४ताः ॥ पिबोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१०। मा.६)२४(मू । ६८६)

(३९३-१) ॥ सांवर्ते द्वे । द्वयोरिन्द्र उष्णिगिन्द्रः ॥

एन्द्रानाः ॥ गाधिप्राऽ२३या । सात्राजित् । आगोहाऽ२३याऽ३४ ॥गिराऽ३४-
इर्नावाइ ॥ श्वातःपार्थूऽ३: । पाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ दीऽ२३४वाः ॥

(दी.५। प.८। मा.७)२५(बे । ६८७)

(३९३-२)

एन्द्रनोऽ५गधिप्राया ॥ सात्राजित् । आगोहायौ । होऽ३वा ॥ गिराइर्नावौ ।

होऽ३वा ॥ श्वाताऽ२३ः । पाऽ२र्थूऽ२३४औहोवा ॥ पतिर्दिवाऽ१ः ॥

(दी.६। प.९। मा.५)२६(घु । ६८८)

(३९४-१) ॥ यामम्, आक्षारं वा । यम । उष्णिगिन्द्रः ॥

यइन्द्रसो ॥ मापाऽ३तामाः । मादाश्शावाइ । ष्ठचेतताइ ॥ याइनाऽ३हाँ सी॥

नियत्रिणाम् । ताऽ३मीमा ॥ हाऽ२३४५इ ।

(दी.२। प.८। मा.७)२७(जे । ६८९)

(३९५-१) ॥ दीर्घायुष्यम् । प्रजापतिरुष्णिगिन्द्र आदित्यो वा ॥

तुचेतुना । यताऽ३२त्सूऽ२३४नाः ॥ द्राघीयाऽ२३४यूः । जीवासाऽ२इ ॥

आदीऽ२त्यासाऽ२ः ॥ सामाहासाऽ२ः । कृणोऽ३ताऽ५ ॥ नाऽ२३४५ ॥

(दी.३। प.८। मा.५)२८(डु । ६९०)

(३९६-१) ॥ शुन्ध्युसाम । भरद्वाज उष्णिगिन्द्रः ॥

वेत्थाहिनिर्ऋतीनाम् ॥ वाज्रहस्तपरिवृ । जाम् ॥ आहरा । हाः ॥

शुन्ध्युःपरि । पादाऽ३माऽ५इवाऽ६ँ५६ँ ॥

(दी.३। प.७। मा.४)२९(ठी । ६९१)

(३९७-१) ॥ अपामीवम् । आदित्य उष्णिगादित्यः ॥

४ र ५र र ४ १ र २ १ २ १ — १ —
अपामीवामपा ॥ स्त्रिधाम् । अपसेधातादुर्माऽ२३तीम् । आदीऽ२त्यासाऽ२ः ॥
ती क दै घि

१र र २ १ ५ ४ ५
युयोतनानओवाऽ३ओऽ२३४वा ॥ हाऽ५सोऽ६ ँ हाइ ॥
झ ति

(दी.६। प.६। मा.६)३०(कू । ६९२)

(३९८-१) ॥ वैराजे द्वे । द्वयोरिन्द्रो विराडिन्द्रः ॥

५ ४ १र — १र र २ १ २
पिबा ॥ सोममिन्द्रमन्दतुत्वाऽ२ । यंतेसुषावहरिया ॥ श्वाऽ२३द्रीः । सोऽ२३तूः॥
पि घि र कः कः

१र २ २ १ ३ ५र र २ १र । । ।
बाहूमीऽ३याऽ३म् । सुयाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । नार्वाऽ२३४५ ॥
वि वे चा कु

(दी.७। प.९। मा.४)३१(झी । ६९३)

(३९८-२) ॥ सहोदैर्घतमसम् ॥

४ ५ १ २ १ २ १ २ १र र
हाउपिबा ॥ सोममिन्द्रा । मा । दतुत्त्वाऽ३ । दतुत्वा । यन्तेसुषावहरिया ।
ता का क कि का र

२ — १ — र १ र १ २ १ २
श्वाऽ१द्रीऽ२ः । श्वाद्रीऽ२ः । सोतुर्बाहुभ्याम् । सुयताऽ३ः । सुयताऽ३ः ॥
चो का र कि कि

१ ३ ५र र ३ । । ।
नाऽ२र्वाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१३। मा.७)३२(ग्रे । ६९४)
वे टू

॥ इति पञ्चदश पञ्चमः खण्डः ॥५॥ दशतिः ॥१।

(इत्यौष्णिहम्)

(३९९-१) ॥ अभ्रातृव्यं । इन्द्रः ककुबिन्द्रः ॥

४ र र ४ २१र २ १ — १ ३ २
अभ्रातृव्योऽ५अनातुवाम् ॥ आनापिराइन्द्राऽ२ । जनुषाऽ२ ॥ सानाऽ३४५त् ॥
ती पु का टु

३ ५ २१र विर १ २ र ३ २
आऽ२३४सी । युधेदाऽ२पित्वमिच्छसे ॥ युधाऽ१ ॥ (दी.६। प.७। मा.४)३३(खी । ६९५)
टू छु वि

(४००-१) ॥ शार्करे द्वे । द्वयोः शर्करः ककुबिन्द्रः ॥

योनोहाउ ॥ इदाम् । इदंपुराऽ२३हाउ । प्रावा । प्रवस्यआऽ२३हाइ । निना । निनायतमुवाऽ२३हाउ ॥ स्तुषाइ । सखायआऽ२३हाइ । द्रामूताऽ२३-याऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१२। मा.११)३४(थ । ६९६)

(४००-२)

योनाऽ३इदमिदंपुरा ॥ योनइदमिदाऽ१म्पूऽ३रा । प्रवस्यआनिना । यताऽ३मू-ऽ३वस्तुषाइ ॥ निना । यताऽ३मूऽ३वस्तुषाइ ॥ साखायाऽ२ः । आऽ२३इ । द्रामूऽ३ताऽ५याऽ६ँ५६ँइ ॥

(दी.३। प.९। मा.८)३५(ढै । ६९७)

॥ इति ग्रामे गेयगाने दशमः प्रपाठकः ॥१०॥

(४०१-१) ॥ बृहत्कम् । बृहत्ककुम्मरुतः ॥

आगन्ता ॥ मारिषण्याऽ२३ता । प्रास्थावानोमापस्थात । सामान्यावाऽ२ः ॥ दृढाचीऽ३द्याऽ३ ॥ मयोवा । ष्णाऽ५वोऽ६ँहाइ ॥

(दी.७। प.७। मा.२)१(छा । ६९८)

(४०२-१) ॥ सौयवसानि त्रीणि । त्रयाणां सूयवसः ककुबिन्द्रः ॥

४र ५र ४ २ १ र १ २ १ २ १ २
आयाही ॥ अयमिन्दवे । श्वपाऽ२३ताइ । गोपाताउ । वारा१पाताऽ२३४इ ॥
ती र कः का घु

३र २ १र १ ३ ५र र ३ ५
सोमाऽ३म् ॥ सोमाऽ२३ । पाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ पीऽ२३४बा ॥
टी की वे दू

(दी.७। प.९। म.५)२(झु । ६९९)

(४०२-२)

४र ५र ४ २ १ २ २ १ २ र १र २र १ अ २
आयाहिया ॥ याऽ३माइंदाऽ३वे । आश्वापातेगोपते । ऊ । वाराऽ२३हाऽ३इ ।
ती छं घि क वि

२ २ १ ५ १ २ २ १
पाऽ३ताइ । सोऽ२३४मँ्हाइ । सो । म । पातेऽ३हाऽ३इ । पाऽ२३४इबा ।
वे कु क क वि की

५र ४ ४
एहियाऽ६ँ्हा । होऽ५इ ॥ डा ॥
पा ता प

(दी.६। प.१४। मा.७)३(घे । ७००)

(४०२-३)

५र र ५ २ १ २ — र १ २ १
आयाह्ययमिन्दाऽ६ँ्वाइ ॥ अश्वापाऽ१ताऽ२इ । गोपाताऊऽ३ । वेराऽ२-
पा छु चौ

३ ५ १ २ २ १ २ १ ५ ३ ५
पाऽ२३४ताइ। सोमँ्सोमाऽ३१ ॥ पाताइ । पिबाऽ३ओऽ२३४वा ॥ ऊऽ२३४पा।
वू को र ङि दू

४ ५
ऊपा ॥ (दी.३। प.९। मा.६)४(दू । ७०१)
ता

(४०३-१) ॥ धेनुषाम । मरुतः ककुबिन्द्रः ॥

५ र १ र २ १ अ — १ २ १ २
त्वयाहस्वीत् ॥ यूजावयम् । प्रातिश्वासाऽ२ । तंवृषभा । ब्रूवीऽ१माहाऽ२३४इ ।
पा का घि का घु

३ २ १ २ १ ५ ३ ५
सँ्स्थाऽ३इ ॥ जानस्यागोऽ२३४वा ॥ माऽ२३४ताः ॥
टी घू दू

(दी.२। प.८ मा.५)५(जु । ७०२)

(४०४-१) ॥ संवेशीयम् । मरुतः ककुम्मरुतः ॥

५र र ५ २ र १र १ २ १र
गावश्चिद्घासाऽ६ँ मन्यवाः ॥ सजात्येनमरुतस्सबन्धवाऽ२३होइ ॥ रिहतेका-
पा रू

२ २ १ २ ४ ५ ४
कूऽ३भो ॥ मिथा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा र ची ता प

(दी.५। प.७। मा.३)६(फि । ७०३)

(४०५-१) ॥ आभरे द्वे । द्वयोरिन्द्रः ककुबिन्द्रः ॥

४ ५ ४ २ १र २ १ र २ १ २ १ २ ३ ५
त्वन्नाई ॥ द्राआभाऽ२३रा । ओजोनृम्णम् । शातक्रताऽ३उ । वीचर्षाऽ२३४णाइ ॥
ती जा का कि वृ

१ र २ २ १ ३ ५र र ३ ५
आवीरंपाऽ३हाऽ३ ॥ ताऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ साऽ२३४हाम् ॥
वि वै दू

(दी.५। प.८। मा.७)७(बे । ७०४)

(४०५-२)

४ ५ ४ १र २ १ र२ १ २ १ २ ३ ५
त्वन्नइन्द्रा ॥ आभाऽ२३रा । ओजोनृम्णम् । शातक्रताऽ३उ । वीचर्षाऽ२३४णाइ ॥
ती कः का कि वृ

२र १र २ ३ र २ १ ४ ५ ४
आवीराऽ२३म्पा ॥ तनासाहाम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा या ची ता प

(दी.५। प.१०। मा.६)८(मू । ७०५)

(४०६-१) ॥ ऐषिराणि त्रीणि । त्रयाणां वायुः ककुबिन्द्रः ॥

४ ५र ४ २ १ २ १ २र र १र २ १ २
आधाहिया ॥ द्रागिर्वाऽ२३णाः । उपत्वाका । माईमाऽ२३हाइ । सासृग्माऽ२३हाइ ॥
ती जा का जा जा

१ — १ २ १ २ ४
ऊदेऽ२ ॥ वग्माऽ२३न्ताः । उदाऽ२३भाइः । इडाऽ५भीः । होऽ५इ ॥ डा ॥
का जा कः ता ता प

(दी.४। प.११। मा.९)९(तो । ७०६)

(४०६-२)

५ र र ५ १ २र र १ २ — १ अ —
अधाहीन्द्रगिर्वाऽ६ँ ्णाः ॥ ऊपत्वाका । माईऽ१माहाऽ२इ । सासृग्माहाऽ२इ ॥
पा का घि घि
१ २ ४ ५ ४ ५
ऊदेऽ१वाग्माऽ२३ ॥ तओवा । दाऽ५भोऽ६ँ ्हाइ ।
घी ता ति

(दी.४ । प.७। मा.६)१०(थू । ७०७)

(४०६-३)

५ र र ५ १ २र र १ २ २ १ २ ३ ५
अधाहीन्द्रगिर्वणाऽ६ँ ्ए ॥ उपत्वाका । माईऽ१माहाऽ३इ । सासृग्माऽ२३४हाइ ॥
पा का घी वू
१ न २ १न २ १ ३ २ ५रर २ १ । । ।
उदौऽ३होऽ३ । वाऽ३हाऽ३ ॥ ग्माऽ२ । ताऊऽ३४औहोवा ॥ दमीऽ३रेऽ२३४५ ॥
खू खू का टे ज

(दी.६। प.९। मा.६)११(घू । ७०८)

(४०७-१) ॥ सीदन्तीये द्वे । द्वयोः प्रजापतिः ककूबिन्द्रः ॥

२ ५ र ४ ५र ५ २र १ २र १ २र १ २ ४ ५
साऽ३४इ । दन्तस्तेवा । योयाऽ६ँ ्था ॥ गोश्राइतेमा । धौमदिराइ । वाऽ३इवाक्षा ।
थि ती पा रो र ची
३ । । । २ १ र २ ४ २ ३ । । ।
णाऽ२३४५इ ॥ आमित्वामाइन्द्राऽ३नोऽ३ ॥ नूऽ३४५ । माऽ२३४५ः ॥
टू चः ची टू

(दी.६। प.१०। मा.७)१२(ङे । ७०९)

(४०७-२)

३र ४ ५ र ४ ५ ३ २ १ र५र४५र ४ ५ ३ २
सीदन्तस्तेवायाः । याथाऽ३ । गोऽ२३४ । श्रीतेमधौमा । दिराइ ॥ विवाऽ३।
टू टी की तु ता टी
२ १ ५ ३ २ २ १ ५ ३ २
हाऽ३ । क्षाऽ२३४णाइ ॥ आभीऽ३ । होऽ३इ । त्वाऽ२३४मी ॥ द्रानोऽ३ ।
चा कु टी चा कु टी
१ ५ ५
नूऽ२३४माः । उहुवाऽ६ँ ्हाउ । वा ॥
कु पा प

(दी.५। प.१५। मा.६)१३(मू । ७१०)

(४०८-१) ॥ सौभरे द्वे (पक्थम्) । द्वयोः सुभरिः ककुबिन्द्रः ॥

वयमुत्वामपूर्विया ॥ स्थूरन्नकच्चिद्भरन्तआवास्यावाऽ२३४ः ॥ वाज्रिन् ।

चित्राऽ३म् ॥ हाऽ२३वाऽ३ । माऽ३४५होऽ६ हाइ ॥

(दी.३। प.६। मा.५)१४(टु । ७११)

(४०८-२) ॥ सौभरम् ॥

वायामुत्वामपूर्व्यस्थूरन्नकच्चिद्भरन्तः । ओवा ॥ हाऽ३हाइ । आवस्यावाऽ२३४५ः ।

हाऽ३हाइ । वज्रिश्चित्राऽ२३४५म् ॥ हाऽ३हाइ । हावाऽ३ । माऽ२३४हाइ ॥

उहुवाऽ६ हाउ ॥ वा ॥

(दी.३। प.११। मा.८)१५(टै । ७१२)

अष्टादश षष्ठः खण्डः ॥६॥ दशतिः ॥२॥

॥ इति काकुभम् ॥

(४०९-१) ॥ यामम् । यमः पंक्तिरिन्द्रः ॥

स्वादोरित्थाविषू । वाताऽ३ः । माऽ२३४ । धोःपिबन्तिगौ । रियाः ॥

याइन्द्रेणा । सायावाऽ२३रीः । वृष्णामादा । तिशोभाऽ२३था ॥ वस्वाइ-

राऽ१नूऽ२ ॥ स्वाराजियम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१२। प.१४। मा.७)१६(झे । ७१३)

(४१०-१) ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ । द्वयोः गृत्समदः पंक्तिरिन्द्रः ॥

इत्थाहिसो ॥ माइन्माऽ२३दाः । ब्रह्मचाका । रावर्द्धाऽ२३नाम् । शविष्ठवा ।
प्रिन्नोजाऽ२३सा । पृथिव्यानिश्शाशाआहिम् ॥ अर्चानाऽ१नूऽ२ ॥ स्वारौहोऽ२।
जियमोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। पा.११। मा.६)१७(पू।७१४)

(४१०-२)

इत्थाहिसोऽ५मइन्मदाः ॥ ब्रह्माचाका । रावर्द्धाऽ२३नाम् । शाविष्ठाऽ२३४वा।
प्रिन्नोजाऽ२३४सा । पृथिव्यानिःशाशाआहिम् ॥ आर्चाऽ३न्होइ । आनूऽ२३हो॥
स्वाराजियम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१२। मा.८)१८(फै । ७१५)

(४११-१) ॥ आभीके द्वे । द्वयोरभीकः पंक्तिरिन्द्रः ॥

इन्द्रोमदायवाऽ३ । वार्द्धाइ ॥ शवसेवृत्रहाऽ३ । नृभीः । तमिन्महत्सुवाऽ३ ।
जाइषू ॥ ऊतिमर्भेहवाऽ३ । माहाइ ॥ सावा । जाइषुप्रानोऽ२३४वा ।
वाऽ५इषोऽ६ँहाइ ॥

(दी.५। प.११। मा.७)१९(पे । ७१६)

(४११-२)

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ । शवसेवृ । त्राहानृभीऽ३४ः । ताम् । इन्माहाऽ२३४-

त्सुवाऽ६ ँ । हाउ ॥ जाइषू । ऊतिमर्भेहावाऽ१ । माऽ३हाइ ॥ सावा ॥

जाइषुप्रानोऽ२३४वा । वाऽ५इषोऽ६ ँहाइ ॥

(दी.५। प.१२। मा.९)२०(फो । ७१७)

(४११-३) ॥ आभीशवे द्वे । द्वयोरभीशुः पंक्तिरिन्द्रः ॥

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ ॥ शवसेवृ । त्राहाऽ२नृमिः । आऔऽ३हो ।औहोवाऽ२३४५ ।

हिँऽ२३४५ । तामिन्महा । त्सुवाऽ२जिषु । आऔऽ३हो । औहोवाऽ२३४५ ।

हिँऽ२३४५ । ऊतिमर्भे । हवाऽ२माहे । आऔऽ३हो । औहोवाऽ२३४५ ।

हिँऽ२३४५ ॥ सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३ ॥ वाऽ३४५इषोऽ६ ँहाइ ॥

(दी.११। प.१८। मा.७)२१(गे । ७१८)

(४११-४)

इन्द्रोमादायवावृधेशवासेवृ ॥ त्राहानृऽ१भीऽ२ः । तामिन्महा । त्सूआऽ१जिषूऽ३।

ऊतीमाऽ२३४र्भाइ । हवाऽ२माहाइ ॥ सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३ ॥ वाऽ३४५-

इषोऽ६ ँहाइ ॥

(दी.७। प.८। मा.६)२२(जू । ७१९)

(४११-५) ॥ बार्हद्गिराणि त्रीणि । त्रयाणां बृहद्गिरिः,पंक्तिरिन्द्रः ॥

३ २ १ र र ३ ५ २ न २र २
इन्द्रोऽ३१२३४ । मदा ॥ यवावृधेशवाऽ२साऽ२३४इवृ । त्राहाऽ३ । औहोऽ३वा ।
ठा त वृ जो चे

न २ ३ ५ ४ १ र र २ न
आऽ३ । औहोऽ२३४वा । नृभाइः । तमिन्महत्स्वाजिषूतिमाऽ२३र्भाइ । हावाऽ३ ।
खी शे त कः जो

२र २ न २ ३ ५ ४ १ र र न २र २
औहोऽ३वा । आऽ३ । औहोऽ२३४वा । महाइ ॥ सवाजेषुप्रनाऽ३ । औहोऽ३वा ।
चे खी शे त खी चे

न २ ३ ५ ४ ५
आऽ३ । औहोऽ२३४वा ॥ वाऽ५इषोऽ६ँ॒हाइ ॥
खी शे ति

(दी.९। प.१९। मा.७)२३(धे । ७२०)

(४११-६)

३ २ र ५र ५ १ २र १ २ ४र ५र
इन्द्रोऽ३४ । मदाय । वावाऽ६ँ॒र्द्धाइ ॥ शवसेवृ । त्राहानृभीऽ३ः । हाउहौ ।
टु त पा का चौ ता

३र २ १ २ १ २ २ ४र ५र ३र २ १ २र
होवा । तामिन्महा । त्सूआऽ१जिषूऽ३ । हाउहौ । होवा । ऊतिमर्भे ।
य का घी ता य का

१ २ ४र ५र ३र २ १ र र २ ४ २ ५
हावामाहेऽ३। हाउहौ । होवा ॥ सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३ ॥ वाऽ३४५इषोऽ६ँ॒हाइ॥
चौ ता य ख चु

(दी.१५। प.१७। मा.८)२४(फै । ७२१)

(४११-७)

५र र ३ २ र ५र ५ १ २र १ २
ओहाइ । इन्द्रोऽ३४ । मदाय । वावाऽ६ँ॒र्द्धाइ ॥ शवसेवृ । त्राहानृभीऽ३ः ।
प टु त पा का चौ

४र ५र ३र २ १ २ १ २ २ ४र ५र ३र २ २र १
आउहौ । होवा । तामिन्महा । त्सूआऽ१जिषूऽ३ । आउहौ । होवा । ऊतिमर्भाइ ।
ता य का घी ता य र

२र २ १ — १ र र २ २ १ ४ ५
हवौ । होऽ३वा । माहाऽ२इ ॥ सवाजेषूप्राऽ३नो ॥ विषात् । औऽ२३होवा ।
च चे का कः र कु

४
होऽ५इ ॥ डा ॥
ता प

(दी.१५। प.२१। मा.१०)२५(पौ । ७२२)

(४१२-१) ॥ स्वाराज्यम् । इन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः ॥

इन्द्रतुभ्यमिदद्रिवाऽ६ ँ्ए ॥ आनुत्तंवज्रिन्वीरियम् ॥ यद्धात्याऽ१म्माऽ२ ।

याइनंमृगम् । तवात्याऽ१न्माऽ२ । यायावधीः ॥ अर्चानाऽ१नूऽ२ ॥ स्वाराजियम्।

इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ३४५इ ॥ डा ॥ (दी४।प११।मा७)२६(तो।७२३)

(४१३-१) ॥ संघेशीयम्, धृष्णुसाम । कश्यपः पंक्तिरिन्द्रः ॥

प्राइहीऽ२ । आभीहिधृष्णुहाऔऽ३हो ॥ नाताऽ२इ । वज्रोनिय ँ्सताऔऽ३हो ।

आइन्द्राऽ२ । नृम्ण ँ्हितेशवाऔऽ३हो ॥ हानाऽ२ः । वृत्रंजयाअपाऔऽ३हो ॥

आर्चाऽ२नानूऽ२ । स्वाराजियम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१३। मा.११)२७(ब । ७२४)

(४१४-१) ॥ संवेशीयम् । मरुतः पंक्तिरिन्द्रः ॥

यदुदीराऽ५तआजयाः ॥ धृष्णावेऽ२धी । याताइधाऽ१नाऽ२म् । युंक्ष्वामदच्युताऽ३ ।

हारी । क ँ्हनःकंवसाऽ३उ । दाधाः । अस्मा ँ्आऽ२३इन्द्रा ॥ वासौदा-

ऽ२३धाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दा७प.११मा.१०)२८(चौ । ७२५)

(४१५-१) ॥ यामे द्वे । यमः पंक्तिरिन्द्रः, चित्रा वा । (पितरो वा पूर्वस्य) ॥

अक्षन्नमीमाद । ताहीऽ३ । आऽ२३४ । वप्रियाआधू । षाता ॥ अस्तोषतस्वाभानवः ।

विप्रानाऽ२३वी । ष्ठायामती ॥ योजानूऽ३वाऽ३इ ॥ द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥

हाऽ२३४री ॥ (दी११।प११।मा.४)२९(की । ७२६)

(४१६-१) ॥ यामम् । यमः पंक्तिरिन्द्रः ॥

३ ४र ३ ४ ३र ४ ५ २ २ ४ १ २ १र २
उपोषुशृणुहीगिरः । एऽ३ । औऽ३होऽ५वा ॥ माघवन्मा । तथाआऽ१इवाऽ२३४ ।
है चा ची कै घु

३ २ ३ २ १ र २ १ २ १ २
कादाऽ३४नास्सू । नार्त्तावतः । करइदा । थायाऽ१साईऽ२३४त् ॥
यू का का घु

३र २ ३ २ १ ३ ५र र ३ ५
योजाऽ३४नुवाऽ३इ ॥ द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ हाऽ२३४री ॥
ड वे दू

(दी.७। प.१२।मा.९)३०(छो।७२७)

(४१७) ॥ त्रैतानि त्रीणि । त्रयाणां त्रितः पंक्तिरिन्द्रो विश्वेदेवाः ॥

२ १ र २ १ २ १ र २ १र र २
चन्द्रमाआउवा । प्सुवान्ताराउवा । सूपर्णोधाउवा ॥ वातेदिवि । नवोहिराउवा ।
चो चो का र का

१ २ १ २ १ २ १र
ण्यानाइमायाउवा । पादंविन्दाउवा । तिविद्युताः ॥ वित्तम्माआउवा । स्यारोदा-
चो चो र का

२ १
ऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५।प.१२।मा.१३)३१(फि । ७२८)
जु कु प

(४१७-२)

४ ५ र ४ २ १ २ २ १ २र र १ २ ३ ३
चन्द्रामाआ ॥ प्सूऽ३आन्ताऽ३रा । सूपर्णोधावा । ताऽ२३इ । दिविया ।
ती छं का कि चे

१ विर १ २र १ २ १ ५ २ १ १
नावोऽ२हिरण्यनेमयःपादंविन्दा । तिविद्यूतोऽ२३४हाइ ॥ वित्तँ्होइ । मआऽ२३हो ॥
के छ र को

२ १र २ १
स्यारोदाऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.१२ । मा.८)३२(खै । ७२९)
जु कु प

(४१७-३)

५ २ ४ ५ ४ ५ १ २र र १ २ — १ विर १ २
चन्द्रामाऽ३आप्सुवन्तारा ॥ सूपर्णोधा । वाताइदाऽ१इवीऽ२ । नावोऽ२हिरण्य-
पः का छु

र १ २ १ २ १ १ २ १र
नेमयःपादंविन्द । तिविद्यूताऽ२३ः ॥ वित्तँ्होइ । मआऽ२३हो ॥ स्यारो-
के चौ र को

२ १
दाऽ२३साऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१०। मा.८)३३(मै । ७३०)
जु कु प

(४१७-४) ॥ सौपर्णे द्वे । द्वयोः, सुपर्णः पंक्तिरिन्द्रो विश्वेदेवाः ॥

५ ४ ५र ४ १ र र २ १र २ १ १ २ र
चन्द्रमाअप्सुवा । तरा । सुपर्णोधावातेदाऽ२३इवी । नवाऽ२३होइ । हिरण्यने-
फि क वै कौ
१ २ १ २ १
मयःपादंविन्दा । तिविद्यूताऽ२३ः ॥ वित्तँ्होइ । मआऽ२३हो ॥ स्यारोऽ२३ ।
घि चौ र को चौ
१ ३ ५र र २ ५
दाऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.७। प.११। मा.७)३४(च्ले । ७३१)
वे शे

(४१७-५)

५ ४र ५र र ४ ५ ४ र ५ ५ २ १र र र २ १ २ १
चन्द्रौहोमाअप्सुवन्तरा । ओऽ६ँ्वा ॥ सुपर्णोधावतेदाइवायेऽ३ । होवाऽ३होऽ२इ ।
फु पा चौ घः
३ २ ।।। १र १ २ १ ३ २ ।।।
हुवाऽ३४५इ ॥ नवोहाइरण्यनाइमायाऽ२३ः। होवाऽ३होऽ२इ । हुवाऽ३४५इ।
शे कि घः दू
२ १ १ २ १ ३ २ ।।। २ १ र र
पादंविन्दन्तिवाइद्यूता२३ः । होवाऽ३होऽ२इ । हुवाऽ३४५इ ॥ वित्तम्मेअस्यरो-
चौ घः दू
२ १ २ १ ३ २ ४ २
दासायेऽ३ । होवाऽ३होऽ२इ । हुवाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥
चौ घः टो से

(दी.१०। प.१५। मा.१६)३५(ग्लू । ७३२)

(४१८-१) ॥ लौशम् । लुशः पंक्तिरश्विनौ ॥

१ ५ ४ ५ ४ ५ १ २ १र २ १र २
प्राऽ२३४ । तिप्रियतामम् । राथाम् । वार्षाणंवा । सुवाहाऽ२३नाम् । स्तोतावाऽ३-
की तु ता का जा
२ १ ३ ५ १र २ २ १ २ ३ ५
माऽ३ । श्विनाऽ२वाऽ२३४र्षीः । स्तोमाइभीऽ३र्भूऽ३ । षातिप्राऽ२३४ती ॥
वि वू वि वू
१र २ २ १ ४ २ ५
माध्वाइमाऽ३माऽ३ ॥ श्रूऽ२३ताऽ३म् । हाऽ३४५वोऽ६ँ्हाइ ॥
वि ख वु

(दी.४। प.१२ । मा.८)३६(थै । ७३३)

एकविंशति सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः ॥४॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(४१९-१) ॥ संजये द्वे । द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरग्निः ॥

१ र५ र ४५ २ र १ २३२
आऽ२३४ । तेअग्नइधी । माहाइ ॥ द्युमन्तंदेवाऽ३ । आऽ२३ । जारामा ।
की ता ता चा कि चे
१ २ २ १ ३ ५ २१विर १
यद्धास्याऽ३ताऽ३इ । पानीऽ२याऽ२३४सी । सामिद्धीऽ२दया । ताऽ२३इ ।
वि वू रो किं
२३२ १ २ २ १ ४ २ ५
द्याविया ॥ इषाँ॒स्तोऽ३तृऽ३ ॥ भ्याऽ२३आऽ३ । भाऽ३४५रोऽ६ँ॒हाइ ॥
चे वि ख घु

(दी.४। प.१४। मा.७)१(धे । ७३४)

(४१९-२)

३र४र५ र २ ४ ५ २ ४र५४ ५ ३४ ३र४र३४र ५र
आतेअग्नइधी । माऽ३हाइ । द्युमन्ताऽ३न्देवाअजरम् ॥ यद्धस्यातेपानीयासी ।
टा चि पः है
४३४र३४५ न २ ३ ५ १ र २ २
सामिद्धीदायाताइ । हिम्ऽ३हिम् । द्याऽ२३४वी ॥ इषाँ॒स्तोतृभ्याऽ३आ॥
थि खु दू कः
न २ २ १
हिम्ऽ३हिम्ऽ३४३ । भाऽ३४५रोऽ६ँ॒हाइ ॥
खौ घु

(दी.१०। प.१०। मा.१२)२(मा । ७३५)

(४२०-१) ॥ उत्सेधः, अंगिरसः पंक्तिरग्निः ॥

२ ३ ५ १र २ ३ ।।। २ ३ ५
हाउ । औहोऽ२३४वा । आग्निन्नस्ववृक्तिमीऽ२३४५ः ॥ हाउ । औहोऽ२३४वा ।
च शे वू च शे
१र२र र र ३ ।।। २ ३ ५ २र१२र १२र
होतारन्त्वावृणीमाहेऽ२३४५ । हाउ । औहोऽ२३४वा । शीरंपावकशोचिषम् ।
वू च शे छु
३२३ ५ २ ३ ५ २१ २ र१२३ ।।।
विवोमाऽ२३४दाइ ॥ हाउ । औहोऽ२३४वा । यज्ञाइषुस्तीर्णबर्हिषाऽ२३४५म्॥
तौ च शे जौ
२ ३ ५ १२३ ।।।
हाउ । औहोऽ२३४वा ॥ विवक्षासेऽ२३४५ ॥
च शे वू

(दी.९। प.१६। मा.१०)३(तौ । ७३६)

(४२०-२) ॥ निषेधः अंगिरसः पंक्तिरग्निः ॥

५र र १र २र र र १ २ १ २ २
आग्निन्नस्ववृक्तिभिर्हइहाहाइ ॥ होतारन्त्वावृणीमहइहाइहाऽ३ । हाइ ।
प च च

र १ २र १ २र १ २ १ २ २ ३ २ ३ ५ २ १ २ र १ २
शीरंपावकशोचिषमिहाइहाऽ३ । हाइ । विवोमाऽ२३४दाइ ॥ यज्ञाइषुस्तीर्णबर्हिष-
सी च ठौ

१ २ १ २ २ १ ३ ५र र ३ ५
मिहाइहाऽ३ । हाऽ३इ ॥ वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ क्षाऽ२३४से ॥
सी घा वे ट्ट

(दी.१२। प.१०। मा.१३)४(ञि । ७३७)

(४२१-१) ॥ सत्यश्रवसः वाय्यस्य साम । सत्यश्रवाः पंक्तिरुषाः ॥

३ २ र ५र ४ ५र ५ १ २र र र १ २
माहाऽ३४इ । महेनोअद्या । बोधाऽ६ँ्या ॥ उषोराये । दिवित्माऽ२३ती ।
डु ती पा का जा

१ २ २ १ २ ३ ५ १ २ २ १ ३
यथाचीऽ३न्नाऽ३ः । आबोधाऽ२३४याः । सत्याश्राऽ३वाऽ३ । सिवाऽ२या-
वि वू वि

५ १ २ २ १ ४ २ ५
ऽ२३४याइ ॥ सुजाताऽ३आऽ३ ॥ श्वाऽ२३सूऽ३ । नाऽ३४५र्तोऽ६ँ्हाइ ॥
वू वि ख पु

(दी.६। प.१२। मा.७)५(खे । ७३८)

(४२२-१) ॥ पौषम् । पूषा पंक्तिः सोमः ॥

२ १ ४ ५र १ विर १ २ ३ ५ १ २र र
भद्रन्नोऽ२३अपिवातया ॥ मानोऽ२दा । क्षाम् । ऊतक्राऽ२३४तूम् ॥ आथाते ।
छ कै क वू का

१ २र ३ २ १ ३ २ ३ ५ १ विर १र विर १ २
सा । ख्येअन्धासाऽ२ः । विवोमाऽ२३४दाइ । रणाऽ२गावाऽ२नया ॥ वसायेऽ३ ॥
क झे ठौ गो कि

१ ३ ५र र ३ ५
वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ क्षाऽ२३४से ॥
वै ट्ट

(दी.१०। प.१२। मा.८)६(फै । ७३९)

(४२३-१) ॥ औषसम् । उषा पंक्तिरिन्द्रः ॥

क्रत्वामहाँ अनुष्वधाऽ६ँमे ॥ भीमआवावृऽ३ताइशाऽ१वाऽ२ः । श्रियऋष्वाऽ३ः।

ऊपाकाऽ२३४योः । निशिप्रीहरिऽ३वान्दाऽ१धाऽ२इ ॥ हस्तायोऽ३र्वाऽ३ ॥

व्राग्मोऽ२३४वा ॥ याऽ५सोऽ६ँहाइ ॥ (दी.६। प.८। मा.९)७(गो । ७४०)

(४२४-१) ॥ लौशम् । लुशः पंक्तिरिन्द्रः ॥

साघातंवृषाणम् । राथाऽ३४औहोवा ॥ आधितिष्ठा । तिगोवाऽ१इदाऽ२म् ।

यःपात्रँहा । रियोऽ२जाऽ२३४नाम् । पूर्णमि । द्रा । चीकेताऽ२३४ती ।

योजानूऽ३वाऽ३इ ॥ द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ हाऽ२३४री ॥

(दी.९। प.१२। मा.७)८(थे । ७४१)

(४२५-१) ॥ निषेधः । अंगिरसः पंक्तिरग्निः ॥

अग्निंताऽ३म्मन्येयोवसूः ॥ अस्तंयंयाऽ३ । तीधेनाऽ२३४वाः । अस्तामर्वाऽ३ ।

ताआऽ२शाऽ२३४वाः । अस्तन्नित्याऽ३ । सोवाऽ२जाऽ२३४इनाः ॥

इषाँस्तोऽ३तृऽ३४ । हाहोऽ२३४हा ॥ भ्याऽ२३आऽ३ । भाऽ३४५रोऽ६ँहाइ ॥

(दी.४। प.११। मा.८)९(तै । ७४२)

(४२६-१) ॥ अँ्होमुचस्साम, अँ्होमुग्बृहती विश्वेदेवाः ॥

नतम ँ्होनदुरितम् । ईयइयाहाइ ॥ दाइवाऽ२सोअष्टामर्तियामी ।

याइयाऽ२३हाइ । साजोषासोयमर्यामाई । याइयाऽ२३हाइ ॥ माइत्रोनायाऽ३॥

तिवाऽ२रूऽ२३४५णाऽ६ँ्५६ँ्ः ॥ आतिद्विषाऽ२३४५ः॥

(दी.८। प.९। मा.१३)१०(डि । ७४३)

॥ दश अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः ॥४॥

॥ इति पंक्तिः ॥

(४२७-१) ॥ इन्द्रस्य संक्रमे द्वे । द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रसोमौ ॥

पारिप्राधन्वा ॥ इन्द्रायसोमास्वाऽ१दूऽ२३४ः । हाइ ॥ मित्राया ॥ पूष्णेभा-

ऽ२३४हाइ ॥ गाऽ२३४योऽ६ँ्हाइ ।

(दी.५। प.६। मा.४)११(पी । ७४४)

(४२७-२)

पारिप्राधन्वा ॥ इन्द्रायसोमा । ओऽ३हा ॥ ओऽ३हा । स्वादुर्मित्राया । ओऽ३हा।

ओऽ३हा । पूष्णाऽ३४औहोवा ॥ भगाऽ३याऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.९। मा.१)१२(झ । ७४५)

(४२७-३) ॥ सौहविषाणि त्रीणि (स्वर्निधनँ सौहविषम्) । त्रयाणां सुहविः पंक्तिरिन्द्रसोमौ ॥

पारीऽ३होइ । प्राधाऽ२३४न्वा । इन्द्राऽ३हो । यासोऽ२३४मा । स्वादूऽ३होइ। मित्राऽ२३४या । पूष्णेऽ३होइ । भागाऽ२३४या । पूष्णेभागाया ॥ पूष्णेऽ३४३ । होऽ३४३इ । भाऽ३गाऽ५याऽ६ँ५६ँ ॥ एऽ३ । सुवर्वातेऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.१४। मा.४)१३(घी । ७४६)

(४२७-४)

हाऽ३हाइ । परिप्राऽ३धान्वा । एऽ२३४हिया । हाऽ३हाइ ॥ हाऽ३हाइ । इन्द्रायाऽ३सोमा । एऽ२३४हिया । हाऽ३हाइ ॥ हाऽ३हाइ । स्वादुर्मिऽ३त्राया । एऽ२३४हिया । हाऽ३हाइ ॥ हाऽ३हाइ । पूष्णेभाऽ३गाया । एऽ२३४हिया । हाऽ३हाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१८। मा.९)१४(दो । ७४७)

(४२७-५) ॥ वाङ्निधैनँ सौहविषम् ॥

प । यैपारी ॥ प्राधन्वा । होवाऽ३होइ । इन्द्रायसोमा । होवाऽ३होइ । स्वादुर्मित्राया । होवाऽ३होयेऽ३ । पूष्णौवाओऽ२३४वा । भगाऽ५याउ ॥ वा ॥

(दी. ५। प.११। मा.४)१५(पी । ७४८)

(४२८-१) ॥ बाकानि त्रीणि । त्रयाणां बकोऽनुष्टुप् सोमः ॥

पर्यूषुप्रधन्वावाजाऽ३सा । तायाइ । ओइ । पारी । ओइ । वृत्राणि । सक्षणिः।
द्वाइस्षास्ताराऽ२ । धियाऽ२इ । अर्णायाऽ२ः । नाऽ२ः । ईरासाऽ२३इ ।
ओयेऽ३ । रासाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१६। मा.११)१६(प । ७४९)

(४२८-२)

पर्यूषू ॥ प्राधन्वावाऽ३ । जासाताऽ२३४याइ । परिवृत्राणिसक्षणिः ।
द्विषास्ताऽ३रा ॥ धियात्रऋणायाऽ१नाऽ३ई ॥ हिम् । राऽ३४५सोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.४।प.८। मा.६)१७(दू । ७५०)

(४२८-३)

प । यैंपारी ॥ ऊषुप्रधन्वावाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिर्द्वाऽ२३इषाः ।
ताऽ२३रा ॥ धियात्रऋणयानओवाऽ३ओऽ२३४वा ॥ राऽ५सोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.८। प.६। मा.६)१८(दू । ७५१)

(४२९-१) ॥ धर्म सामनी द्वे । द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः ॥

पावस्वसोमा ॥ माहान्त्समुद्राः । पितादेऽ२वानाऽ२३म्।वाऽ२इश्वाऽ२३४औहोवा ॥
भिधामाऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.५। मा.४)१९(णी । ७५२)

(४२९-२)

५र ५ २र २ र १ ३ ५र र १ २ र
औहोऽ६ ँ्वा । औहोऽ३वा । औहोऽ२वाऽ२३४औहोऽवा । पवस्वसोमा ॥
पा चे जे का

१र २१ २१र विर १र विर १२र १ र ५र ५
माहान्त्सामुद्रः ॥ पितादेऽ२वानाऽ२म् ॥ विश्वामिधामाऽ२३४ । औहोऽ६ ँ्वा।
रो हु घु पा

२र २ र १ ३ ५र २ १ ।।।
औहोऽ३वा । औहोऽ२वाऽ२३४औहोऽ६ ँ्वा ॥ एऽ३ । धर्माऽ२३४५ ॥
चे जे चा कु

(दी.१६। प.१२। मा.४)२०(खी । ७५३)

(४३०-१) ॥ विधर्म सामनी द्वे । द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः ॥

५र ५ २र २ र १ ३ ५र र १ २ र
ओहोऽ६ ँ्वा । ओहोऽ३वा । ओहोऽ२वाऽ३४ओहोऽवा । पवस्वसोमा ॥
पा चे जे का

१र २र १२र १ २ १ विर १र विर ३ ५र ५
माहेदक्षाय ॥ अश्वोनानिक्तः ॥ वाऽ२जीधानाऽ२याऽ२३४ । ओहोऽ६ ँ्वा ॥
चो गो खू पा

२र २ र १ ३ ५र २ १ ३ ।।।
ओहोऽ३वा । ओहोऽ२वाऽ२३४ओहोऽ६ ँ्वा । एऽ३ । विधर्माऽ२३४५ ॥
चे जे चा गा

(दी.१५। प.१२। मा.३)२१(फि । ७५४)

(४३०-२) ॥ धनसाम ॥

४ ५ र ४ २र १ — १ र र २ ५र र
पावस्वसोमा ॥ महेदाऽ३क्षायाऽ२ ॥ अश्वोननिक्तोऽ२३ ॥ वाजाऽ३४ । औहोवा ।
ती छो कि डु प

२ १ ।।।
धनाऽ३याऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.६। मा. नास्ति)२२(क् । ७५५)
ज

(४३१-१) ॥ भागम् । भगः पंक्तिस्सोमः ॥

४ ५ ४ १ २ र १ २ र १ २
इन्दुःपविष्टा । चाऽ२३रूः । मदाया ॥ अपामुपाऽ२३स्थाऽ३इ ॥
ती कः र जि

१ ३ ५र र र १ ।।।
काऽ२वाऽ२३४औहोवा । भगाऽ३याऽ२३४५ ॥
वे ज

(दी.४। प.६। मा.३)२३(ति ।७५६)

(४३२-१) ॥ वाजिनाँ्साम । वाजिनोऽनुष्टुप्सोमः ॥

४५ ४ १ २र १ २र १२र३ र २ १ २ २
आनु । आनू ॥ हाइत्वासुतँ्सोममदामसि । मदामासायेऽ३ । माहाऽ३४३इ ।
ता पि के चौ ठः
२ ५ २ १र २र १र २र १ २र३ २र १ २र १
साऽ३४मा ॥ र्याराज्ये । वाजाँ्अभिपवमान । पवमाना ॥ प्रागाहासा ।
ची चो घी या कै
२ ४ ५ ४
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.११। प.१३। मा.४)२४(गी । ७५७)
ची ता प

(४३३-१) ॥ हिकम् । प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः ॥

४ ५र ४ ४ २ १ — १ १ ३
काईंव्याऽ५क्ताः ॥ नरस्साऽ३नाइडाऽ२ः ॥ रुद्रस्यमर्याऽ२३ः ॥ आऽ२था-
ते छो चौ
५र र २ १ ।।।
ऽ२३४औहोवा ॥ सुवाऽ३श्वाऽ२३४५ः ॥
वे ज

(दी.३। प.५। मा.७)२५(णे । ७५८)

(४३३-२) ॥ विकम् । प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः ॥

३ २ २ ३ ५र ३ २ २ ३र ५र २ १ अ
काईऽ३४३०वियाक्ताः ॥ नाराऽ३४३स्सानीडाः ॥ रुद्रस्यामार्याऽ२३ः ॥
डा डा घृ
१ ३ ५र र २ १ ।।।
आऽ२थाऽ२३४औहोवा ॥ सुवाऽ३श्वाऽ२३४५ः ॥
वे ज

(दी.५। प.५। मा.६)२६(मू । ७५९)

(४३३-३) ॥ निकम् । प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः ॥

४ ५ १ १ २ ४ ५ ४ ५ १ १ २
काईम् । वियाऽ२३ । ओवाऽ३ । आत्ताः ॥ नाराः । सनाऽ२३ । ओवाऽ३ ।
ता कि कि ता ता कि कि
४ ५ ४ ५ १ १ २ ४ ५ ४ ५ १
आइडाः ॥ रुद्रा । स्यमाऽ२३ । ओवाऽ३ । आर्याः ॥ आथा । सुवाऽ२३ ।
ता ता कि कि ता ता कि
१ २ ४ ५ ४
ओवाऽ३ । आश्वाः । होऽ५इ ॥ डा ॥
कि ता ता प

(दी. नास्ति । प.१८। मा.९)२७(रो । ७६०)

(३३४-१) ॥ आश्वे द्वे । द्वयोरश्वः पंक्तिरग्निः ॥

५ र ४ ५ २ १र २ १ — १ २ १
अग्नेतमाद्या ॥ अश्वन्नस्तोमाइः । क्रतुन्नाऽ३भाद्राऽ२म् ॥ हार्दिस्पृशाम् ॥
पै र छो कै
२ १ ३ ५र र २ १र ३ । । ।
ऋध्याऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ ताओहाऽ२३४५इः ॥
पू शि

(दी.५। प.६। मा.८)२८(पै । ७६१)

(४३४-२)

५ र २ २ ३ ५ २ १र २ १ —
अग्ने । होऽ३४३इ । तामद्या ॥ अश्वन्नस्तोमाइः । क्रतुन्नाऽ३भाद्राऽ२म् ॥
प चै ची र छो
१ २ १ २ १ ३ ५र र २ १र ३ । । ।
हार्दाऽ३ओइ ॥ स्पृशम् । ऋध्याऽ२माऽ२३४औहोवा । ताओहाऽ२३४५इः ॥
को का पू शि

(४३५-१) ॥ वाजिनाँ्साम । वाजिनः पुरउष्णिक् सचिता ॥

२र १ ५ १र र र र २र १ २ १ ५
आविर्माऽ२३४र्याः ॥ आवाजंवाजिनोअग्मान् । देवास्यसा ॥ वितुस्साऽ२३४वाम् ॥
छ क चो छ
१ अ १ । । ।
स्वर्गाँ्आर्वाऽ२३४५न्ताऽ६ँ्५६ँ्: ॥ जयताऽ२३४५ ॥
के कु

(दी.६। प.६। मा.६)३०(कू । ७६३)

(४३६-१) ॥ पवित्रम् आदित्याः पंक्तिस्सोमः ॥

४ ५ र ४ ३ २ २ ३र ५ १ २र १ र २र
पावस्वसोमा ॥ द्युम्नीऽ३४३सुधारः । माहाँ्अवीनाम् ॥ अनुपू ॥
ती कै का
३ २
र्वियोऽ३४५इ ॥ डा ॥
दू प

(दी.५। प.६। मा.४)३१(पी ७६४)

॥ एकविंशति नवमः खण्डः ॥९॥ दशतिः ॥५॥

(४३७-१) ॥ आभरे द्वे । द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः ॥

५ र २र १ २ २ ३ ५ २र र
विश्वतोहाउ ॥ दावन्विश्वतोनाः । ओऽ३ । हा । ओऽ२३४हाइ । आं । भरा ।
प - चो चा च टू च च
१ २ १ २र१ २१ २ ३र ५ २र र ३र २
भाऽ२३रा ॥ यान्त्वाशविष्ठामाइ ॥ माहा । औहोऽ२३४वा ॥ ऐहीयैहीऽ१ ॥
कः गो का टू रि

(दी.९ प.१२। मा.४)३२(थी । ७६५)

(४३७-२)

४ ५ र र ४५र ४ २ र १ २ १र २र १ २ १ २ १
विश्वतोदावन्विश्वतोनाआ ॥ भरा । भाऽ२३रा॥ यान्त्वाशविष्ठामाइम् ॥ हा ।
ते च कः के क
२ ४ ५ ४
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
ची ता प

(दी.५। प.८। मा.३)३३(बि । ७६६)

(४३८-१) ॥ वासुमन्दे द्वे । द्वयोर्वसुमन्दो गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ १ र२ २ २ ३ २ १ २
एषाः । ब्राह्मायआऽ३१उवाऽ२३ । एऽ३ । त्वियाआ ॥ आऽ२३इन्द्राः ॥
ता क चा चे कः
१ २ २ २ ३ २
नामश्रुताऽ३१उवाऽ२३ ॥ एऽ३ । गृणाआ ॥
क चा चे

(दी.१। प.८। मा.८)३४(गै । ७६७)

(४३८-२)

४ ५ ४ ५ १ — — १ २ १ २ १ —
एषाएषाः ॥ ब्राह्माऽ२ब्राह्माऽ२ । यत्रत्वियोवा । ओवा । आइन्द्राऽ२-
तु धि चो का
१ — १र २ १ २ १ २ ४ ५ ४
आइन्द्राऽ२ः । नामश्रुतोवा ।ओवा । गृणा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
धि का का र ची ता प

(दी.१। प.११। मा.८)३५(कै । ७६८)

(४३८-३) ॥ कावषाणि त्रीणि । त्रयाणां कवषो गायत्रीन्द्रः ॥

४ ५ ४ ५ १ २र १ अ — १ २ २
एषाः । ओ । ओवा । ब्रह्मायाः । ऋत्वियाऽ२ः । आइन्द्रोऽ३हाऽ३इ ॥
ता त ता कै झौ वि
२ २ १ २ १ २ ४ ५ ४
नाऽ३मा ॥ श्रूऽ२३तो । गृणा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
चै कः र ची ता प

(दी.१। प.१२। मा.६)३६(खू । ७६९)

(४३८-४)

न २ २ ५ २र १ २ २ ५ ४
ओऽ३हाऽ३४३ । ओऽ३४हा । एषाब्राह्माऽ३४३ । याऽ३४ः । ऋत्वियाः ॥
खौ ची चः चि पि
न २ २ ५ २ १ २ २ ५र ४
ओऽ३हाऽ३४३ । ओऽ३४हा । इन्द्रोनामाऽ३४३ । श्रुऽ३४ । तोगृणाइ ।
खौ ची चः चि पि
न २ २ २ १ २ ३ ।।।
ओऽ३हाऽ३४३ ॥ ओऽ३४५हाऽ६ँ५६ँ॥ एऽ३ । सुवर्वातेऽ२३४५ ॥
खौ चू चा वू

(दी.२। प.१४। मा.३)३७(झि । ७७०)

(४३८-५)

२र १र २र १ २ र १रर २र१र २
एषब्रह्मौहो ॥ यात्रऋत्वियाः ॥ इन्द्रोनामौहो ॥ श्रूतोगृणाऽ३१उवाऽ२३ ॥
र र र झी
२ ५
ऊऽ३४पा ॥ (दी.८। प.५। मा.३)३८(ण्यि । ७७१)
ची

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशः प्रपाठकः ॥११॥

(४३९-१) ॥ श्लोके द्वे । द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

५र २ १ — १ २ १ ३ ५
हाउस्वरता ॥ ब्रह्माणाऽ२ः । इन्द्रम् । आ । माहयाऽ२न्तोऽ२३४ । कैः ॥
प चो र क जी प

१ — १ २ र ३ २ २र १ । । ।
अवाऽ२र्द्धायान् । अहयेहा । तावाऽ३४५इ । ऊऽ६ँ५६ँ॥ श्लोकयताऽ२३४५॥
कै च टू पा छ

(दी.३ । प.११। मा.६)१(टू । ७७२)

(४३९-२)

५र २ १र — १ ३ ५
हाउ । अभि । स्वरता ॥ ब्रह्माणआइन्द्राऽ२म् । माहयाऽ२न्तोऽ२३४ । कैः ॥
प प प चो जी प

२ १ — र १ ३ ५
अवर्द्धायाऽ२न् ॥ अहयेहन्तवाऽ२३४५ऊऽ६ँ५६ँ ॥ श्लोऽ२३४काः ॥
चो छी टू

(दी.३। प.९। मा.८)२(ढै । ७७३)

(४४०-१) ॥ अनुश्लोके द्वे । द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः त्वष्टा वा ॥

५र २ १ २ १ २ र १२ र १ २
हाउस्वरता । स्वरतस्वराऽ२३ता । आनावस्तेराथमा । श्वायाताऽ१क्षूऽ२३४ः॥
प जा थि छे

५र २ १ २ १ २र १२१ २र १ अ
हाउस्वरता । स्वरतस्वराऽ२३ता । त्वष्टावज्रंपुरुहू । ताद्युमान्ताऽ२३४म् ॥
प जा कै घु

५र २ १ ३ ५रर २ १ । । ।
हाउस्वरता ॥ स्वरतस्व । राऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा ॥ स्वराऽ३ताऽ२३४५ ॥
प र का डु प ज

(दी.९। प.१४। मा.५)३(धु । ७७४)

(४४१-१)

३र २ ३ ४ ५ २ १ २ १ र र र
औहोइ । शम्पदाम् ॥ माघँरायाऽ३१२३४इ । षिणाइ । नकाममव्रतोहिनोतिन-
य टा ह्र त

२ ३
स्पृशत् ॥ रयिमोऽ२३४५इ । डा ॥
का सो प

(दी.४। प.७। मा.६)४(थू । ७७५)

(४४२-१) ॥ वाचः सामनी द्वे । द्वयोर्वाग्पङ्क्तिर्वाक् ॥

४ ५ १र र २१र २ ३ ५ १ र २ १ ५
सादा ॥ गावश्शुचयोविश्वाधायाऽ२३साः ॥ साऽ२३४दा ॥ दाइवाआरोऽ२३४वा ॥
ता दै द्र घू

३ ५
पाऽ२३४साः ॥ (दी.४। प.५। मा.४)५(नी । ७७६)
द्र

(४४३-१)

३र २ ४ ५ १ —१र २ १अ — १
औहोऽ३इ । आयाही ॥ वनाऽ२सासहा । गावाःसच । तावार्त्तानीऽ२म् ॥यात् ।
टी ता कै का घि क

३
ऊऽ२३ ॥ धमिरोऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कि शे प

(दी.२। प.९। मा.४)६(झी । ७७७)

(४४४-१) ॥ माधुच्छन्दसम् मधुच्छन्दाः त्रिष्टुभ्मरुतः ॥

४ ५४र ५ ४ ५ ४ १ र र र २ १ २
ओवा । उपप्रक्षेमाधुमतिक्षियन्तः । ओवा ॥ ओइ ।पुष्येमरयिन्धीमहेताआऽ२३इन्द्रा ॥
त तै ता क दै

१ २ १ २र २ ५
ओ । वाओवा ॥ ओ ॥ वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ऊऽ३४पा ॥
क का क छौ ची

(दी.५। प.१०। मा.६)७(न्यू । ७७८)

(४४५-१) ॥ मारुतम् । मरुतस्त्रिष्टुभ्मरुतः ॥

४ ५ ४ १ २ १ २ १ २र १ २ १र र
अर्च्चन्तिया ॥ कम्मरुतःसुवाऽ२३र्काः ॥ आस्तोभाताइ ॥ श्रुतोयुवासआ-
ती दै कै

न २ २ ५
इन्द्राऽ३उवाऽ३ ॥ ऊऽ३४पा ॥
जि ची

(दी.३। प.५। मा.५)८(ण्यु । ७७९)

(४४६-१) ॥ उद्वँशपुत्रः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रो वृत्रहा ॥

प्रावाः ॥ आइन्द्रायवृत्रहान्तामाऽ२३या ॥ वाइप्रायगाथंगाऽ१याऽ३त्ता ।
यांजुजौवाऽ३ । उप् । षाऽ२तोऽ३५हाइ ॥

(दी.३। प.६। मा.५)९(दु । ७८०)

षोडश दशमः खण्डः ॥१०॥ दशतिः ॥६॥

॥ इति प्रथमोऽर्धः प्रपाठकः ॥

(४४७-१) ॥ शाम्ये द्वे । द्वयोर्धुरो गायत्र्यग्निः ॥

आचेती ॥ अग्निः । चिकाऽ२३इतीऽ३ः ॥ हाऽ२३व्याऽ३ ॥ वाऽ२ण्णाऽ२३४-
औहोवा ॥ सुमद्राथाऽ२३४५ः ॥ (दी.३। प.६। मा.५)१०(दु। ७८१)

(४४७-२)

आचेतिया ॥ ग्राइश्चाइकाइतीऽ२३ः । हौहोइ । औऽ३होऽ२३४५ ॥
हव्याऽ२३ ॥ वाऽ२ण्णाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । सुमद्राथा२३४५ः ॥

(दी.४। प.८। मा.७)११(दे । ७८२)

(४४८-१) ॥ गूर्दः । प्रजापतिः पंक्तिरग्निः ॥

ओग्नाइ ॥ त्वन्नोऽ२३आ । हिम्माऽ२३ । ताऽ२३४माः । उतत्राताशिवोभुवः ॥
शिवोभुवाऽ२३ः ॥ वरोवा । थाऽ५योऽ६ँहाइ ॥

(दी.४ । प.८। मा.६)१२(दू । ७८३)

(४४८-२) ॥ अत्यर्द्दः । विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः ॥

५ र २ ५र २ २र १ २ ५
अग्नौ । होइ । त्वौ । होइ ॥ नोअन्तामाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ऊऽ२३४ता ॥
प च प च झी द्र
३र २ ३ ५ २ १र २ ३ १ १ १
त्राताओऽ२३४वा ॥ शिवोभुवाऽ२३४५ः ॥
ठौ शि

(दी.५। प.८। मा.६)१३(बू । ७८४)

(४४८-३) ॥ गूर्द्दः । प्रजापतिः पंक्तिरग्निः ॥

५ र २ ४ ५र ४ ५ २ १ २र १र २ १र २ १ ३र २ ३ ५
अग्नेतूऽ३वन्नोअन्तमाः ॥ उतत्राताशिवोभुवः ॥ वराऽ२३ ॥ औहौहोऽ२३४वा।
पः थौ कि ठौ
४ ५
थाऽ५योऽ६ ँहाइ ॥
ति

(दी.६। प.५। मा.४)१४(ञ्जी । ७८५)

(४४८-४) ॥ अत्यर्द्दः । विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः ॥

५ र २ ४ ५र ४ ५ २ — १ — न २
अग्ने । होऽ३इ । त्वन्नोआ । तामाः ॥ उताऽ२ । हाऽ२इ । औऽ३होऽ३१इ ॥
प चा ती ता चो का गी
३ २ ३ ५
त्राताऽ२ ॥ शिवोऽ३४५ ॥ भूऽ२३४वाः ॥
का द्र द्र

(दी.२। प.१०। मा.६)१५(ञ्रू । ७८६)

(४४९-१) ॥ सान्तनिके द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः ॥

४ ५ १ २ १ ३ ५र र
भागाः ॥ नचित्रः ॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म् ॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥
ता क वि ये
२ १ ३ १ १ १
तिरात्नाऽ२३४५म् ॥
शि

(दी.२। प.५। मा.५)१६(ञ्रु । ७८७)

(४४९-२)

भागोनाचित्रा: ॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म् ॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । तिराल्नाऽ२३४५म् ॥

(दी.३। प.५। मा.४)१७(णी । ७८८)

(४५०-१) ॥ धनम् (द्वे । द्वयोः) प्रजापतिर्गायत्री विश्वेदेवाः ॥

विश्वस्या ॥ प्रस्तोभाऽ२ । पुरोवासाऽ३न् । यदिवेऽ२३४हा ॥ नूऽ२३ ॥ नाऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ धाऽ२३४नाम् ॥

(दी.४। प.७। मा.३)१८(थि । ७८९)

(४५०-२) ॥ धर्मसाम ॥

औहोइविश्वस्या ॥ प्रस्तोभाऽ२ । पुरौहोवाऽ३हाइ । वासाऽ२न् । यदिवेहा ॥ नूऽ२३ ॥ नाऽ२माऽ२३४औहोवा ॥ धाऽ२३४र्मा ॥

(दी.७। प.८। मा.४)१९९जी । ७९०)

(४५१-१) ॥ उषसस्साम । उषा पंक्तिरुषा ॥

उषाअपा ॥ स्वासुष्टाऽ२३४माः । संवाऽ२र्त्ताया । तिवाऽ२र्त्ताऽ२३४नीम् ॥ सूऽ२जाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । ताताऽ२३४५ ॥

(दी.३। प.७। मा.४)२०(ठी । ७९१)

(४५२-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजः पंक्तिर्विश्वेदेवाः ॥

इमानुकंभूऽ५वना ॥ सीषधाऽ२इमाउवाऽ३ । ईऽ३४हा । इन्द्रश्चवाऽ२इ-

श्वाउवाऽ३ । ईऽ३४हा ॥ चादेऽ३ । वाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ वीऽ२३४शाः ॥

(दी.४। प.८। मा.६)२१(दू । ७९२)

(४५३-१) ॥ रातिसाम । इन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

विस्रूविस्रू ॥ तायाऽ२स्तायाऽ२ः । यथापथः ॥ आइन्द्राऽ२त्वाद्याऽ२३ ॥

तुरोऽ२३४वा । ताऽ५योऽ६ँहाइ ॥ (दी.१। प.६। मा.४)२२(की । ७९३)

(४५४-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

अयावाजम् ॥ दाइवहि । तँसानेमा । मदेमशाऽ३ताहिमाऽ२ः ॥ शाताऽ२३॥

हाऽ२इमाऽ२३४औहोवा ॥ सुवीऽ३राऽ२३४५ः ॥

(दी.५। प.७। मा.६)२३(फू । ७९४)

(४५५-१) ॥ ऐषम् । इषस्त्रिष्टुब्-मित्रावरुणौ ॥

ऊर्जा ॥ मित्रोवरुणःपिन्वाताऽ२३इडाः ॥ पीवरीमिषंकृणुहीनआइन्द्राऽ३उ-

वाऽ३ ॥ ऊऽ३४पा ॥ (दी.४। प.४। मा.५)२४(ध्यु । ७९५)

(४५६-१) ॥ वैराजे द्वे । द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रोऽ३४ ॥ विश्वस्यरा ॥ जतिहोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१। प.४। मा.१)२घ । ७९६)

(४५६-२)

इन्द्राऽ२होऽ१इ ॥ वाऽ२इश्वा ॥ स्यराऽ२जाति ॥ होवाऽ३होऽ२३४५इ ॥

डा ॥ (दी. नास्ति । प.५। मा.३)२६(वि । ७९७)

॥ सप्तदश एकादशः खण्डः ११ ॥ दशतिः ॥८॥

॥ इति द्वैपदमैन्द्रं समाप्तम् ॥

(४५७-१) ॥ वाजजित् । प्रजापतिरष्टिर्विष्णुः ॥

ओइत्रिका । द्रुकाइ । षूऽ३माहिषो । यावाशिरम् । तुवीशुष्मः ॥ओइतृऽ२३४म्पात् ।

सोमाम् । अपिबाऽ३द्वि । ष्णुनासुतम् । याथावाशम् । ओइसाऽ२३४ईम् ।

ममा । दाऽ३माहिका । माकर्तावे । माहामुरुम् ॥ ओइसाऽ२३४इनाम् ।सश्चात्।

देवोदेवाम् । सत्यइन्दुःसत्याऽ५मिन्द्राउ ॥ वा ॥

(दी.९। प.२०। मा.२०)२७(नौ । ७९८)

(४५८-१) ॥ गोरांगिरसस्य सामनी द्वे, द्वयोर्गौरतिजगतीन्द्रः ॥

अय सहोहाइ ॥ स्त्रामानाऽ२३४वाः । दृशाःकावीनाम्मतिर्ज्यो । तिर्विधाऽ२३४र्मा ॥

ब्रध्नाःसामाइचीरुषासः । सामाइराऽ१याऽ२त् । आराऽ३ । होवाऽ३ । पा ।

सस्साचे । तासाऽ३ः ॥ स्वासरे ॥ मन्युमाऽ२३न्ताः ॥ चितो । याऽ२३४औहोवा ॥

गोऽ२३४५ः ॥ (दी.८। प.१६। मा.१०)२८(टौ । ७९९)

(४५८-२)

अय ँ् सहस्रमानाऽ६ ँ् वाः ॥ दृशाःकवीनांमतिर्ज्यो । तिर्विधाऽ२३र्मा ॥

ब्रध्नाःसामाइचीरुषासः । सामाइराऽ१याऽ२३त् । ओऽ३वा । अरेपासःसाचेतसः ।

स्वासरे ॥ मन्युमाऽ२३न्ताः । ओऽ३वा । चिताऽ३ः । गोऽ२राऽ२३४-

औहोवा ॥ बाऽ२३४५ ॥ (दी.१०।प.१३।मा.९)२९(बो । ८००)

(४५९-१) ॥ प्रयस्वत् । प्रजापति (रष्टि) रत्यष्टिरिन्द्रः ॥

एन्द्रयाह्युपानाः ॥ पाराऽ२वाऽ२३४ताः । नायमच्छा । विदाथानाइ । वासत्पा-

ऽ२३४तीः । अस्ताराऽ३जेऽ३ । वासत्पाऽ२३४तीः । हावामहेत्वाप्रायस्वन्ताः ।

सुताइषूऽ३वा ॥ पुत्रासोना । पितरंवा । जासाताऽ२३४याइ ॥ म ँ् हाइष्ठा-

ऽ३०वाऽ३ ॥ जाऽ२३साऽ३ । ताऽ३४५योऽ६ ँ् हाइ ॥

(दी.९। प.१५। मा.१०)३०(नौ । ८०१)

(४६०-१) ॥ अक्षय्यम् । रेवत्प्रजापतिरतिजगतीन्द्रः ॥

तमिन्द्रंजोहवीमिमाघावानाम् । ऊऽ२३४ग्राम् । सत्राहोइ । दधानमप्रताऽ२इ-

ष्कूऽ२३४ताम् । श्रवाऽ२३साऽ२इ । भूऽ२३४री । म ँ् हिष्ठोगीर्भिरा । चायाऽ२-

ज्ञाऽ२३४याः । वावार्त्ताऽ२ ॥ रायेहोइ । नोविश्वासुपाऽ२३४था । कृणोऽ३।

तूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.१४। प.१४। मा.९)३१(ध्वो । ८०२)

(४६१-१) ॥ याज्ञतुरम् । यज्ञतुरोऽत्यष्टिरिन्द्रः ॥

अस्तुश्रौषाट् ॥ पुरोअग्निंधियादाधे । हा । औऽ३होऽ२३४वा । आनुत्यच्छर्द्धोदि ।
व्याम् । वृणाऽ२३हाइ । माऽ२३४हे । इन्द्रावाऽ३युऽ३ । वृणीऽ२माऽ२३४-
हाइ । यद्धक्राणाविवाऽ१स्वाऽ३ताइ । नाभासन्दायनाऽ३ । व्यासाइ ।
अधप्रनूनमुपया । तिधीतायाऽ२३ः । हा । औऽ३होऽ२३४वा ॥ दाइवाऽ१ँ-
अच्छाऽ२३ । हा । औऽ३होऽ२३४वा । नाधोऽ२३४वा । ताऽ५योऽ६ँहाइ ॥

(दी.१३। प.२२। मा.११)३२(ठ । ८०३)

(४६२-१) ॥ एवयामरुतः साम । एवयामरुदतिजगतीन्द्रः ॥

प्राऽ२३४ । वोमाहेमातायोयन्तुविष्णावो। हाइ ॥ मरुत्वताऽ३इगिरिजाऽ३४ः ।
हाहोइ । एवायाऽ२ । माऽ२३४रुत् । प्राशार्द्धायाऽ२ । प्रायाज्यावाऽ२३इ ।
सूखादाऽ२३४याइ । तवसेभंददिष्टये ॥ धुनाइव्राऽ३ताऽ३ ॥ याऽ२शाऽ२३४-
औहोवा ॥ वाऽ२३४से ॥

(दी.९। प.१४। मा.९)३३(धो । ८०४)

(४६३-१) ॥ विषमाणि त्रीणि, भरद्वाजोऽत्यष्टिस्सोमः ॥

आया ॥ रुचा । हरि । ण्यापुनानाः । विश्वाद्वेषाँसितरतीऽ२३साऽ३युग्वाभिः॥
सूरोऽ२३नाऽ३ । साऽ२युऽ२३४औहोवा ॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी.६। प.८.मा.४)३४(गी । ८०५)

(४६३-२)

५ र ३ २र ३ ४ ५ २ र १ र २ १ २ र र २
अयारुचाहारिण्या ॥ पुनानः । विश्वाद्वाऽ२३इषा । साइतारा । त्यौहो । वाऽ३हाऽ३इ ।
पौ र कः का च शी
१ ३ ५ २र १ २ ३ २ ४
सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः ॥ सूरोऽ२३ना ॥ सायूऽ३ग्वाऽ५भाऽ६ँ५६ँइः ॥
वू जा टो

(दी.७। प.९। मा.७)३५(झे । ८०६)

(३६३-३)

४ ३र ४ ३र ४ ५र १ र र ५र ४ ५ १ २ १ अ —
आयारुचाहारिण्या । पूऽ२३४ । नानोविश्वाद्वेषा ॥ साइतारति । सायुग्वाभीऽ२ः।
थि की तु का घि
१ २ १ ३ ५ ४र ५र ४ १ — १ २ १ २
सूरोनाऽ३ । सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः । धारापृष्ठा । स्यारोऽ२चाताइ । पुनानोआऽ३ ।
कि वू ती कै चौ
१ २ ३ ५ ४ ५र ४ १ २ र १ अ — १ २ २
रूषोहाऽ२३४रीः । विश्वायद्रु । पापारिया । सात्रक्कामीऽ२ः ॥ सप्तासीऽ३येऽ३ ॥
वू ती का घि वि
१ ४ २ ५
भाऽ२३इराऽ३ । क्वाऽ३४५भोऽ६ँहाइ ॥ (दी.१०। म.१७। मा.१०)३६(फौ । ८०७)
ख चु

(४६४-१) ॥ सवितुस्साम । सवितात्यष्टिः सविता ॥

५ ४ ५र ४ ५ ४र ५ र ४र ५ १र ५ २ १ ५
अभित्यन्देवँसवितारम् । औहौहोवाहाइ ॥ ओणाऽ२३४योः । काविक्राऽ२३४तूम् ।
फी पै कु छ
२ ३ ५ २ ३ ५ २ १र ५ २ १ ५
आर्चामीऽ२३४सा । त्यासावाऽ२३४ँरा । त्वाधामाऽ२३४मी । प्रियम्माऽ२३४तीम् ।
शे शे छ छ
२र १र २र १ ५ २ ३ ५ २ ३ ५
औहोऔहोवाऽ२३४हाउ ॥ ऊर्ध्वायाऽ२३४स्या । आमातीऽ२३४र्भाः ।
छै शे शे
२ १ ५ २ १र ५ २र १र २र १ ५
आदिद्यूऽ२३४तात् । सावीमाऽ२३४नी । औहोऔहोवाऽ२३४हाउ ॥
छ छ छै
२ ३ ५ २ ३ ५ २ १ ५ २र १र २र
हीरण्याऽ२३४पा । णीरामीऽ२३४मी । तासुक्राऽ२३४तूः । औहोऔ-
शे शे छ
१ २ २ १र । । ।
होवाऽ२३४५हाउ । वा ॥ एऽ३ । कृपासुवाऽ२३४५ः ।
छै प चा छ

(दी.१७। प.२१। मा.१५)३७(चु । ८०८)

(४६५-१) ॥ भारद्वाजे द्वे । भरद्वाजोऽत्यष्टिरग्निः ॥

अग्नि ँ्होता ॥ रम्मन्येऽ३दास्वन्तम् । ओऽ३वाऽ३ । वासोःसूऽ२३४नूम् ।
सहसोजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म् । विप्रन्नजा । ओऽ३वाऽ३ । तवेऽ२दाऽ२३४साम् ।
याऊर्ध्वाऽ१याऽ२ । सुवाध्वाऽ१राऽ२ः । देवोदेवा । ओऽ३वाऽ३ ।
चियाऽ२काऽ२३४र्पा । घृतोवा । स्याविभ्राऽ२ष्टिम् । अनुशुक्रशा । ओऽ३वाऽ३।
चिषः ॥ आजुह्वाऽ२३ना ॥ स्यसा । ओऽ३वाऽ३ । पाऽ२इषाऽ२३४औहोवा ॥
ऊऽ२३४पा ॥ (दी.१३। प.२३। मा.१०)३८(ङ्वौ । ८०९)

(४६५-२)

अग्नि ँ्होतारम्मन्ये । दाऽ२३४ । स्वन्तंवासोःसूनुम् ॥ सहसोजाऽ३-
तावेऽ१दासाऽ२म् । विप्रन्नजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म् । यऊर्ध्वयाऽ३सूवाध्वाराऽ२ः ।
देवोदेवाऽ३चायाऽ१कृपाऽ२ । घृतास्यविभ्राष्टिमनुशु । क्राशोऽ१चिषाऽ२ः ।
आजूह्वाऽ३नाऽ३ ॥ स्याऽ२३साऽ३ । पाऽ३४५इषोऽ६ ँ्हाइ ॥

(दी.१६। प.१२। मा.८)३९(खै । ८१०)

(४६५-३) ॥ अवभृथसाम । बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः ॥

आहावोहाऽ२३४वाः (त्रिः) । अग्निष्टपती । प्रातिदाहाती । अग्नि ँ्हो ।
तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम् ॥ वासोः । सूनु ँ्सहसोजाऽ३ताऽ३वेदासम् । विप्राम् ।
नजाऽ३ताऽ३वेदासम् । याऊ । ध्वयाऽ३सूऽ३वध्वारः । देवो।देवाऽ३चीऽ३याकृपा ॥
घृता । स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः ॥ आजू । ह्वानाऽ३स्याऽ३सर्पिषः ।
आहावोहाऽ२३४वाः (त्रिः) । अग्निष्टपती । प्रातिदाहाऽ५ताऽ६ ँ्५६ ँ्इ ॥ एऽ३।
विश्व ँ्समत्रिणंदहा । (द्वे-द्विः) एऽ३ । विश्व ँ्समत्रिणंदाहाऽ२३४५ ॥

(दी.१४। प.३०। मा.१६)४०(नू । ८११)

(४६५-४) ॥ प्रवर्ग्यसाम । बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः ॥

त्यग्नाइः । प्रातिदाहाती । हाउहोऽ५हाउ । अग्नि ँ्हो । तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम् ॥
वासोः । सूनु ँ्सहसोजाऽ३ताऽ३वेदासम् । विप्राम् । नजाऽ३ताऽ३वेदासम् ।
याऊ। ध्वयाऽ३सूऽ३वध्वारः ॥ देवो । देवाऽ३चीऽ३याकृपा ॥ घृता ।
स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः ॥ आजू । ह्वानाऽ३स्याऽ३सर्पिषः । त्यग्नाइः ।
प्रातिदाहाती । हाउहोऽ५हाउ । वा ॥ एऽ३ । विश्व ँ्समत्रिणंदहा । एऽ३ ।
विश्वंव्यत्रिणंदहा । एऽ३ । विश्वंन्यत्रिणंदाहाऽ२३४५ ॥

(दी.१४। प.२७। मा.१७)४१(थे । ८१२)

(४६६-१) ॥ ऐषम् । इषोऽष्टिरिन्द्रः ॥

१ ४ २१ — १ ३ २३ ५
ताऽ२३४वत्यन्नाऽ५रियन्नृताउ ॥ अपइन्द्राऽ२ । प्रथमंपूऽ२ । विंयंदिवि ।
खा चो का दू
३ २र ३ २ ३५ २र १र — १ ३ २र ३ ५ ३ २ ३५
प्रावा । चियंकृतम् । योदेवास्याऽ२ । शवसाप्राऽ२ । रिणाआसु । रिणन्नापः ।
य दू चो का दू दू
२ १र — १ ३ २र ३ ५र ३ २र ३र ५ ३ २ ३ ५
भुवोविश्वाऽ२म् । अभ्यदाऽ२इ । वामोजासा । विदेदुर्जम् ॥ शाताक्राऽ२३४तूः॥
चे का दू दू वी
४
विदाऽ५इदिषाउ ॥ वा ॥
ता प

(दी.९। प.१७। मा.११)४२(थ । ८१३)

षोडश द्वादशः खण्डः ॥१२॥ दशतिः ॥८॥

॥ इति ग्रामे-गाने द्वादशस्यार्द्ध प्रपाठकः ॥

॥ इत्यैन्द्राख्यतृतीये गाने इन्द्रपुच्छाख्यं सप्तमं तन्त्रं समाप्तम् ॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

॥ इति ऐन्द्रं काण्डम् ॥

—*—

आग्नेय काण्डे मंत्र संख्या – १८०

ऐन्द्रम् काण्डे मंत्र संख्या – ६३३

योगः – ८१३

॥ अथ पावमानं काण्डम् ॥

(४६७-१) ॥ आजिगम् । अजिगो प्रजापतिर्वा गायत्री सोमः ॥

उच्चा ॥ तेजाऽ३तामान्धासाऽ२ः । दिविसद्भूम्याददाइर ॥ उग्रँ्शाऽ२३र्माऽ३।

माऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥ उप् । श्राऽ२३४वाः ॥

(दी. ६। प.७। मा.५) १ (खु । ८१४)

(४६७-२) ॥ आभीकम् । अङ्गिरसो गायत्री सोमः ॥

उच्चातेऽ२३४जा । तामान्धाऽ२३४साः । दिवाइसाऽ२३४द्भू ॥ मियाददाइर ॥

उग्रँ्शाऽ२३र्मा ॥ माहायेऽ३ । श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४५इ ॥

(दी.४। प.८। मा.५)२(दु । ८१५)

(४६७-३) ॥ ऋषभः पावमानम् । ऋषभो गायत्री सोमः ॥

हाहाउच्चातेजा ॥ हाऽ३ । हाऽ३इ । तामाऽ२न्धाऽ२३४साः । दिविसद्भूमिया-

ऽ१दाऽ३दे ॥ उग्रँ्शाऽ२३४र्मा ॥ ओमोऽ३ । महोवा । श्राऽ५वोऽ६ँहाइ ॥

(दी.५। प.९। मा.४)३(भी । ८१६)

(४६७-४) ॥ आभीकम् । अंगिरसो गायत्री सोमः ॥

ऊ२३४च्चातेजाऽ५ । तमौहोन्धासाः ॥ दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे ॥ उग्रँ्शाऽ२३४र्मा॥

माहाऽ३उवाऽ३४३ । श्राऽ३४५वोऽ६ँहाइ ॥ (दी.४। प.६। मा.३)४(ति । ८१७)

(४६७-५) ॥ बाभ्रवे द्वे । द्वयोः बभ्रुर्गायत्री सोमः ॥

उच्चातेजा ॥ तामा । धासाऽ२३ः । ओमोऽ३वा । दिविसद्भू ।मियादाऽ१ऽदेऽ२३ ॥
ओमोऽ३वा ॥ उग्राँ्शाऽ१र्माऽ२३ ॥ ओमोऽ३वाऽ३ । माऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥
श्रवाऽ३ईऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.११। मा.३)५(टि । ८१८)

(४६७-६)

उच्चातेजा ॥ तामन्धाऽ२३साः । दिविसद्भू । मियादाऽ२३दाइ ॥
ऊग्राऽ३ँ्हाइ । शार्माऽ३हाइ ॥ माहाऽ३होयेऽ३ । श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥
ग्वाऽ२३४भीः ॥ (दी.६। प.९। मा.६)६(घू । ८१९)

(४६७-७) ॥ इन्द्राण्याः साम । इन्द्राणी गायत्री सोमः ॥

उच्चातेजातमा ॥ धासाऽ२३ः । ओमोऽ३वा । दिविसद्भू । मियादाऽ१देऽ२३ ।
ओमोऽ३वा ॥ उग्राँ्शाऽ१र्माऽ२३ । ओमोऽ३वा ॥ माहायेऽ३ । श्राऽ२वाऽ२३४ऽ-
औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.९। प.११। मा.२)७(स्ला । ८२०)

(४६७-८) ॥ शैशवे द्वे । द्वयोः शिशुर्गायत्री सोमः ॥

उच्चातेजातमन्धासाः ॥ दिविसद्भूम्याददाइ ॥ उग्र ँ्शाऽ२३४र्मा ॥
माहाऽ३इश्राऽ५वाऽ६ँ्५६ँ्ः ॥ (दी.५। प.४। मा.४)८(भी । ८२१)

(४६७-९)

उच्चातेजातमन्धाऽ६ ँ्सा: ॥ दिविसद्भू । म्यादाऽ२३दाइ । उ ।

ग्र ँ्शाऽ२३र्मा ॥ महाऽ२ ॥ होऽ२इ । औऽ३होऽ३१इ । श्रवाऽ२: । होऽ२इ।

औऽ३होऽ३१इ ॥ इयाऽ३होइ । इयोऽ२३४५वाऽ६ ँ्५६ ँ् ॥ ऊऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.१४। मा.८)९(भै । ८२२)

(४६७-१०) ॥ दोहसामनी द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री सोमः ॥

उच्चाऽ३४औहोवा ॥ तेजाऽ२ । तामाऽ३४५ । धाऽ२३४सा: । दिविसद्भूम्यादादे ॥

ऊग्रा ँ्शाऽ२३र्मा ॥ महिश्रावा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.१०। मा.३)१०(मि । ८२३)

(४६७-११) ॥ दोहीयसाम ॥

उच्चातेजातमन्धसोदोहाइदोहाऽ६ ँ्ए ॥ दिविसद्भूम्यादादे । दोऽ३हाइ ।

दोऽ३हाऽ३ए ॥ उग्र ँ्शाऽ२३र्मा । दोऽ३हाइ । दोऽ३हाऽ३ए ॥ माहिश्राऽ२३-

वाऽ३४३: । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१०। प.१०।मा.८)११(मै । ८२४)

(४६७-१२) ॥ इन्द्राण्याः साम । इन्द्राणी गायत्री सोमः ॥

उच्चातेजातमन्धसा: ॥ दिवाइसाऽ२३४द्भू । मियाऽ२दादे । ओम् । ओऽ३वा।

ओऽ३वा । ववाऽ२३होइ ॥ उग्र ँ्शाऽ२३र्मा । ओऽ३वा । ओऽ३वा ।ववाऽ२३होइ ॥

माहिश्रावोऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ययुरेऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१४। मा.६)१२(घू । ८२५)

(४६७-१३) ॥ आमहीयवम् । अमहीयुर्गायत्री सोमः ॥

उच्चाताऽ३इजातमन्धसाः ॥ दिवाइसाऽ१द्भूऽ२ । मियाऽ२३ददाइ ॥उग्रँ शर्मा ॥
महाऽ२३इश्रवाउ ॥ वाऽ३ ॥ स्तौषेऽ३४५ ॥

(दी.३। प.७। मा.६)१३(ठू । ८२६)

(४६८-१) ॥ आजिगम् अजिगो गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

स्वादाइष्ठाया । मदाइष्ठाया ॥ पवस्वसो । माधाऽ१राऽ२३या ॥ इन्द्रायापा ।
तावाइसूऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.८। मा.५)१४ (त । ८२७)

(४६८-२) ॥ सुरूपे द्वे । द्वयोर्गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

स्वादिष्ठयाऽ२ । इयाऽ२इया । मदिष्ठायाऽ२ ॥ पवस्वासोऽ२ । इयाऽ२इया ।
मधारायाऽ२ ॥ इन्द्रायापाऽ२ । इयाऽ२इया ॥ तावाइसूऽ२३ताऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११।मा.६)१५(दू । ८२८)

(४६८-३)

स्वादिष्ठयौहोऽ२ । इया । मदिष्ठायाऽ२ ॥ पवस्वसौहोऽ२ । इया । मधारायाऽ२ ॥
इन्द्रायपौहोऽ२ । इया ॥ तावाइसूऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३।प.११ । मा.३)१६(टि । ८२९)

(४६८-४) ॥ जमदग्नेः शिल्पे द्वे । द्वयोः जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

ओइस्वाऽ२३४दी ॥ ष्ठयाऽ३मादिष्ठाया । ओऽ२३४वा । पावस्वसोमाधारायाऽ३ ॥

ओईऽ२३४न्द्रा ॥ याऽ२पाऽ२३४औहोवा ॥ तवेसुताऽ१ः ॥

(दी.६। प.७। मा.४)१७(खी । ८३०)

(४६८-५)

उहुवाइ । स्वाऽ२३४दी ॥ ष्ठयाऽ३मादिष्ठाया । ओऽ२३४वा । पावस्वसोमा-

धारायाऽ३ ॥ उहुवाइ । इन्द्राऽ५यपा ॥ ताऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ सूऽ२३४ताः ॥

(दी.५। प.९। मा.४)१८(भी । ८३१)

(४६८-६) ॥ सँहितम् । सँहितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

स्वादाइष्ठया ॥ मदिष्ठयाऽ३ । पावाऽ३स्वासो । मधारयाऽ३ ॥ आइन्द्रा-

ऽ३यापाऽ६ँ । हाउ ॥ तवाऽ५इसुताउ ॥ वा ॥

(दी.२। प.८। मा.५)१९(जु । ८३२)

(४६८-७) ॥ शकुलः । वसिष्ठो गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

स्वादिष्ठयामादिष्ठयापावस्वसोमधारयाइ । द्राऽ५यपा ॥ तवाऽ२इ । ऊऽ२ ।

तवाऽ२इ । ऊऽ२ ॥ तावाऽ३४औहोवा । सूऽ२३४ताः ।

(दी.८। प.८। मा.५)२०(डु । ८३३)

(४६८-८) ॥ गंभीरम् । जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

५र र र र ४ ५ २ २ १र २ ३ ५
औहोहिम्हाएहिया । हाऽ३हाइ । स्वादाइष्ठाया । माऽ२३४दी ॥
पै चै का दू

२ ३ ५ र र र र ४ ५ २ २ १ २
ओइमाऽ२३४दी ॥ औहोहिम्हाएहिया । हाऽ३हाइ । ष्ठयापावा ।
शे पै चै का

३ ५ २ ३ ५ र र र र ४ ५ २ २
स्वाऽ२३४सो ॥ ओस्वाऽ२३४सो ॥ औहोहिम्हाएहिया । हाऽ३हाइ ।
दू शे पै चै

१ २ ३ ५ २ ३ ५ र र र र ४ ५ २ २
मधाराया । ईऽ२३४न्द्रा । ओईऽ२३४न्द्रा ॥ औहोहिम्हाएहिया । हाऽ३हाइ ।
का दू शे पै चै

१ २ ३ ५ २ ३ ५ र र र र ४ ५
यपातावाइ । सूऽ२३४ताः । ओइसूऽ२३४ताः । औहोहिम्हाएहिया ।
का दू शे पै

२ २ ५र र ३ । । ।
हाऽ३हाऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
शु प दू

(दी.२३। प.२४। मा.२१)२१(ढो । ८३४)

(४६८-९) ॥ सँहितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

४र ५ र ४ ४ २ — १ २ १ — १
स्वादिष्ठयामा । दाऽ५इष्ठाया । पावाऽ२ । स्वाऽ२३सो । मंधाऽ२राया ॥
ता ती चो कः कै

१ २ १ — १ अ २ ३ ५
आऽ२३इन्द्रा ॥ याऽ२पा । तावाऽ२३ ॥ हाउवाऽ३ । सूऽ२३४ताः ॥
कः कै झं चा दू

(दी.२। प.१०। मा.४)२२(जी । ८३५)

(४६९-१) ॥ सोम सामनी द्वे । द्वयोः सोमो गायत्रीन्द्र सोमौ इन्द्रो वा ॥

५ र २र १ — २ १ २ १
वृषापवा ॥ स्वधारायाऽ२ । मारुत्वताइ । चमत्साऽ२३राः ॥ वाइश्वाऽ२३ ॥
प चो र कः कि

१ ३ ५र र २१र ३ । । ।
दाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ नाओजासाऽ२३४५ ॥
वे शि

(दी.५। प.७। मा.५)२३(फु । ८३६)

(४६९-२)

वृषाहाउ ॥ पाऽ२३४वा । स्वाधाराऽ२३४या । माऽ२३४रू । त्वाऽ२३४ताइ ।
चामत्साऽ२३४राः ॥ वाइश्वादधाऽ२३ ॥ नाऽ२ओऽ२३४औहोवा ॥
जाऽ२३४सा ॥ (दी.३। प.९। मा.६)२४(दू । ८३७)

४६९-३) ॥ आशुभार्गवम् । भृगुर्गात्रीन्द्रसोमौ इन्द्रो वा ॥

वृषापावा । स्वधाराऽ६ँया ॥ मारुत्वताऽ३इ । चामाऽ२त्सा२३४राः ॥
विश्वादाऽ१धाऽ२ ॥ नाओऽ३ । जाऽ२३४सोऽ६ँहाइ ॥

(दी.२। प.७। मा.४)२५(छी । ८३८)

(४६९-४) ॥ वैश्वदेवे द्वे । द्वयोर्विश्वेदेवा गायत्रीन्दसोमौ इन्द्रो वा ॥

आइवृषा ॥ पावा । इहा । औऽ३हो । स्वाधाराऽ२३४या । मा । रू ।त्वातेऽ३हाइ ।
च । मा । त्साराऽ२३हाऽ३४इ । विश्वादधाहाउ । नओजसाहाउ ।
ओवाऽ३४३ओऽ३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥ अस्मेरायाऽ२उतश्रवाऽ२३४५ः ॥

(दी.९। प.१५ । मा.९)२६(नो । ८३९)

(४६९-५)

वृषा । पावाऽ३ । एहिया ॥ स्वाधाऽ२। रायाऽ३४औहोवा । मारूऽ३४ ।औहोवा ॥
त्वतेचामाऽ१त्साऽ३राः ॥ औऽ३होऽ३१येऽ३ । औहोऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥
विश्वादाधानाओजसाऽ२३४५ ॥ (दी.१०। प.११। मा.३)२७(पि । ८४०)

(४६९-६) ॥ इन्द्र सामनी द्वे । द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रसोमौ इन्द्रो वा ॥

वृषापावाऽ२३ । हौहोइ । औऽ३होऽ२३४५ । स्वधारायाऽ२३ । हौहोइ ।
औऽ३होऽ२३४५ ॥ मरूत्वातेऽ२३ । हौहोइ । औऽ३होऽ२३४५ ।
चमात्साराऽ२३ः । हौहोइ । औऽ३होऽ२३४५ ॥ विश्वादाधाऽ२३ । हौहोइ ।
औऽ३होऽ२३४५ । नओजासाऽ२३ । हौहोइ । औऽ३होऽ३४३ ॥
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.२०। मा.९)२८(ञो । ८४१)

(४६९-७)

वृषापावा । औहौहोऽ२३४वा । स्वाधारायाै । औहौहोऽ२३४वा ॥ मरूत्वाता ।
औहौहोऽ२३४वा । चामात्सारा । औहौहोऽ२३४वा ॥ विश्वादाधा ।
औहौहोऽ२३४वा । नाओजासा । औहौहोऽ२३४वा ॥ होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.१२ । प.१४। मा.२)२९(झा ८४२)

(४६९-८) ॥ यौक्ताश्वे द्वे द्वयोर्युक्ताश्वो गायत्री सोमः इन्द्रो वा ॥

औहोहोहाइ । वृषा ॥ पवस्वाऽ३धारायाऽ३ । मारूऽ२त्वाऽ२३४ताइ । ओइ ।
चामाऽ२३ । चमाऽ२त्साऽ२३४राः ॥ औहोहोहाइ । विश्वा ॥ दधाऽ२नाऽ२३४ओ ।
जासाऽ२३४औहोवा ॥ ओइ । ज्वाराआ ॥

(दी.४। प.१३। मा.९)३०(दो । ८४३)

(४६९-९)

वृषाऔहोहोहाइ ॥ पवाऽ३स्वाधाऽ१रायाऽ३ । मारूऽ२त्वाऽ२३४ताइ । चामाऽ३ । ओइ । चामाऽ२त्साऽ२३४राः ॥ विश्वाऔहोहोहाइ ॥ दधाऽ२नाऽ२३४ओ । जाऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ ओइ । जूऽ२३४वा ॥

(दी.६। प.११। मा.१०)३१(कौ । ८४४)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशः प्रपाठकः ॥१२॥

(४७०-१) ॥ भासम् । अत्रिर्गायत्री सोमः ॥

यास्ताइ ॥ मादो । वाराओऽ२३४वा । णीऽ२३४याः । ताइना ॥ पावा । स्वाऽ३आओऽ२३४वा । धाऽ२३४सा ॥ दाइवा ॥ वाइरा । घाशाओऽ२३४वा ॥ साऽ२३४हा ॥

(दी. नास्ति । प.१२। मा.९)१(यो । ८४५)

(४७०-२) ॥ सोम साम । सोमो गायत्री सोमः ॥

यस्तेमदाः ॥ वाराइणियाः । ताइनापावाऽ३स्वाऽ३ । अन्धासा ॥ दाइवा-वाइराऽ३४ । हाउ ॥ घशाऽ५ ँसहा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी. नास्ति । प.९। मा.८)२(लै । ८४६)

(४७०-३) ॥ प्राजापत्यम् । प्रजापतिर्गायत्री सोमः ॥

यस्ताऽ३ २इमाऽ२३४दाः ॥ वाराइणायाः । ओऽ२३४वा । हा । ओऽ२३४वा ।
हाइ । ताइनापवा । स्वाआन्धासा । ओऽ२३४वा । हा । ओऽ२३४वा । हाइ ॥
दाइवावाइरा । ओऽ२३४वा । हा । ओऽ२३४वा । हाऽ३इ ॥
घाऽ२शाऽ२३४औहोवा ॥ सहोरयिऽ३ष्ठाऽ२३४५ः ॥

(दी.४। प.१९। मा.१२)३(धा । ८४७)

(४७०-४) ॥ सोमसाम । सोमो गायत्री सोमः ॥

यस्ताइमाऽ२३दोवरेणियाः ॥ ताइनापवा । स्वाआन्धाऽ१साऽ२ ॥ दाइवा-
ऽ२वाइराऽ२३ ॥ घाशोऽ२३४वा । साऽ५होऽ६ँहाइ ॥

(दी.३। प.६। मा.७)४(टे । ८४८)

(४७०-५) ॥ भासम् । अत्रिर्गायत्री सोमः ॥

यस्ते । माऽ३दो । वा । ईया ॥ राइणाऽ१याऽ२ः । ताइनापवा ।स्वा ।औऽ३हो ।
वाहा । धसाऽ२। दाइवाऽ२३ ॥ वाऽ२इराऽ२३४औहोवा ॥ घशँ साहाऽ१ ॥

(दी.६। प.१३। मा.६)५(गू । ८४९)

(४७०-६) ॥ अध्यर्द्धेडँसोम साम सोमो गायत्री सोमः ॥

यस्तेमदोवरेणियाऽ६ँए ॥ तेनापवस्वान्धसा ॥ देवावीराऽ२३ । हाइ ॥
घाशाउवा । साहाउवाऽ३ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.९। प.७। मा.४)६(थ्ली । ८५०)

(४७१-१) ॥ वैष्टम्भे द्वे । द्वयोर्विष्टंभो गायत्री सोमः ॥

तिस्रोवाचाः ॥ उदाइ । उदाऽ३१उ । वायेऽ३ । राऽ२३४ते ॥ गावोमिमा ॥
तिधाइ । तिधाऽ३१उ । वायेऽ३ । नाऽ२३४वाः॥ हरिरेती ॥ कानाइ ।
कनाऽ३१उ । वायेऽ३ ॥ क्राऽ२३४दात् ॥ (दी.५। प.१५। मा.९)७(मो । ८५१)

(४७१-२)

तिस्रोवाचाः ॥ उदाइराऽ३ते । गावोमिमन्तिधाऽ१इनाऽ३वाः ॥ हरिरेतो-
ऽ२३४हाइ ॥ काऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ क्राऽ२३४दात् ॥

(दी.७। प.६। मा.७)८(चे । ८५२)

(४७१-३) ॥ पाष्ठौहे द्वे, द्वयोः पष्ठवाड् गायत्री सोमः ॥

तिस्रोवाचोऽ२३४हाइ ॥ उदीरताइ । गावोमिमाऽ२३४हा ॥ तिधेनवाः ॥
हरिराइतोऽ२३४हाइ ॥ कानायेऽ३ । क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ अस्माभ्यंगा-
तुवित्तामाऽ२३४५म् ॥ (दी. ८। प.८। मा.७)९(डे । ८५३)

(४७१-४)

तिस्रोवाचउदीरातो । वाहाइ ॥ गावोमिमाऽ३ । तीधेनाऽ२३४वाः ॥ हारीराइती ॥
काऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ क्राऽ२३४दात् ॥

(दी.७। प.७। मा.६)१०(छू । ८५४)

(४७१-५) ॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् । विष्टंभो गायत्री सोमः ॥

तिस्रोऽ५वा । चाऽ३उदीरताइ ॥ गावोमिमा । तिधाइनाऽ१वाऽ२३ः ।
होवाऽ३हाइ ॥ हराइराऽ१इतीऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥ कानायेऽ३ ।
क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ दीऽ२३४शाः ॥

(दी.५। प.१०। मा.१०)११(मौ । ८५५)

(४७१-६) ॥ पाष्ठौहम् । पष्ठवाड् गायत्री सोमः ॥

तिस्रोवाचाऽ५उदीरताइ ॥ गावोमिमन्तिधेनवाः । हरिराऽ२३इती ॥ कानौऽ२ ।
हुवाइ । होऽ३वाऽ३ ॥ क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ हाओवा । ओवाऽ२३४५ ॥

(दी.९। प.९। मा.७)१२(धे । ८५६)

(४७२-१) ॥ इषोवृधीयम् । प्रजापति र्गायत्रीन्द्रसोमौ ॥

इन्द्रायेन्दाउ ॥ मारुत्वताइ । पवस्वामाऽ२ । धुमत्तमाः ॥ अर्कस्यायोऽ२ ॥
निमाऽ२३ । साऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥इषोवृधेऽ१ ॥

(दी.५। प.८। मा.४)१३(बी । ८५७)

(४७२-२) ॥ इन्द्रसाम । इन्द्रो गायत्रीन्द्रसोमौ इन्द्रो वा ॥

आऽ२३४इन्द्रा । याऽ२३४इन्दो ॥ मारुत्वतेऽ३ । पाऽ२३४वा । स्वाऽ२३४मा ।
धुमात्तामाऽ३ः ॥ आऽ२३४र्का ॥ स्याऽ२३४यो ॥ निमासादाऽ२३४५म् ॥

(दी.१। प.९। मा.४)१४(घी । ८५८)

(४७२-३) ॥ वैश्वदेवे द्वे द्वयोर्विश्वेदेवागायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा ॥

२ र १ १ २ र २ १ १ २ र २
इन्द्रायाइन्दोऽ२३ । हा । औऽ३होवा । मरुत्वातेऽ२३ । हा । औऽ३होवा ॥
चौ क चे चौ क चे

२ १ १ २ र २ २ १ १ २ र २
पवस्वामाऽ२३ । हा । औऽ२३होवा ॥ धुमत्तामाऽ२३ः । हा । औऽ३होवा ॥
चौ क चे चौ क चे

२ १ १ २ र २ र १ १ २ र २
अर्कस्यायोऽ२३ । हा । औऽ३होवा । निमासादाऽ२३म् । हा । औऽ३होवाऽ३४३ ॥
चौ क चे चौ क शु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.८। प.२०। मा.४)१५(णी । ८५९)
कु प

(४७२-४)

४ ५र र र र ४ ४ १ २ १ २ १
इन्द्रायेन्दो । एऽ५ । मरू ॥ त्वताइ । पवस्वमाधुमत्ताऽ२३माः । हुवाइ ।
ता ता त क धै र

न २ १ २ १ न २ १र २
होऽ३वा ॥ अर्कास्याऽ२३यो । हुवाइ । होऽ३वा ॥ निमासाऽ२३दाऽ३४३म् ।
खु जा र खु यु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.४। प.१३। मा.६)१६(दू । ८६०)
कु प

(४७२-५) ॥ आग्नेये द्वे । द्वयोरग्निर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रोवा ॥

५ र र र २ १ २ २ १ २ १ अ २
इन्द्रायेन्दोहाउ ॥ म । रू । त्वातेऽ३हाउ । पवास्वमधु । मा । तामाऽ२३हाउ।
प च क कः कौ क झः

१ अ २ १ ५ ४ ५
अ । का । स्यायोऽ२३हाऽ३इ ॥ निमाऽ२३ । होऽ२३४वा । साऽ५दोऽ६ँ्हाइ॥
च का ञ कि दू ति

(दी.३ । प.१३। मा.५)१७(डु । ८६१)

(४७२-६)

५ र र ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ १ २ १२ १ २
इन्द्रायेन्दोवा । ओवा ॥ मरुत्वतोवा । ओवा । पवस्वमोवा । ओवा । धुमत्तमोवा ।
पै ता चो का चो का चो

१ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ ५ ४ ५
ओवाऽ३ ॥ अर्काहाउ । स्ययोहाउ ॥ निमोवाऽ३ओऽ२३४वा । साऽ५दो६ ँ्हाइ ॥
कि ता ता झु ति

(दी.२। प.१२। मा.४)१८(छी । ८६२)

(४७२-७) ॥ वैश्वदेवम् । विश्वेदेवा गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा ॥

इन्द्रायेन्दोमारुत्वते । ओहाइ ॥ पवास्वामाधुमत्तमः । ओऽ३हाऽ३४३। ओऽ२३४हा ॥

आर्कास्यायोऽ२३ । नाऽ२इमाऽ२३४औहोवा ॥ उप् । साऽ२३४दाम् ॥

(दी.६।प.९। मा.६)१९(घू । ८६३)

(४७२-८) आग्नेयम् । अग्निर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा ॥

इन्द्रायेन्दोमरुत्वाऽ६ ँ्ताइ । पवास्वमा । धुमात्ताऽ१माऽ२३४ः ॥ अर्कस्य-

योनिमाऽ६ ँ्हाउ । साऽ५दोऽ६ ँ्हाइ ॥

(दी.४। प.५। मा.४)२०(नी । ८६४)

(४७३-१) ॥ शैशवानि चत्वारि शिशुर्गायत्री श्येनसोमौ ॥

आसा ॥ विय ँ्शुर्माऽ३१उवाऽ२३ । दाऽ२३४या । आप्सूदाक्षाः । गिरा-

ऽ३१उवायेऽ३ । ष्ठाऽ२३४५ः ॥ श्येनोनाऽ२३यो ॥ निमाऽ३१उवाऽ२३ ॥

साऽ२३४दात् ॥ (दी.२। प.९ । मा.६)२१(झू ।८६५)

(४७३-२)

आसाविया ॥ शूर्मादाऽ२ । य । आप्सुदाक्षाऽ२ः । गाइरिष्ठाः ॥ श्याइनो-

ऽ१नायोऽ२३ ॥ निमोऽ२३४वा । साऽ५दो६ ँ्हाइ ॥

(दी.२। प.८। मा.५)२२(जु । ८६६)

(४७३-३)

असा । वियाओऽ२३४वा ॥ शूर्मदाया । ओऽ२३४वा । आप्साओऽ२३४वा ॥

दक्षोगिराइ । ष्ठाओऽ२३४वा । श्येनोनयोनिमासादाऽ२३४५त् ॥

(दी.६। प.८। मा.५)२३(गु । ८६७)

(४७३-४)

असा । वियौवाओऽ२३४वा । शुर्मदायौ । वाओऽ२३४वा । अप्सू ।

दक्षौवाओऽ२३४वा । गिराइ । ष्ठौवाओऽ२३४वा । श्येनः । नयौवाओऽ२३४वा ॥

निमा । सादौवाओऽ२३४वा ॥ होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.१४। मा.९)२४(झो । ८६८)

(४७३-५) ॥ च्यावनानि चत्वारि । चतुर्णां च्यवनो गायत्री श्येनसोमौ ॥

आसा । व्युहुवाहाइ ॥ अँ्शुर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाउहुवाऽ२३होइ ।

श्याऽ२३इनोऽ३ । नाऽ२योऽ२३४औहोवा ॥ निमासादाऽ२३४५त् ॥

(दी.८। प.६। मा.६)२५(दू । ८६९)

(४७३-६)

आसाव्यँ्शुः । औहोवाहाइ ॥ मदाऽ२३या । आप्सुदक्षोगिरिष्ठाः ॥

श्याइनोनाऽ३योऽ३ ॥ नाऽ२इमाऽ२३४औहोवा ॥ उप् । साऽ२३४दात् ॥

(दी.६। प.८। मा.८)२६(गै । ८७०)

(४७३-७)

इहाऽ३१२३४ । इहा । साव्यँ्शुर्मदाय । इहा ॥ अप्सुदक्षोगिरिष्ठाऽ३४५ः । ईऽ२३४हा ॥ श्येनोनयोऽ२निमाऽ३४५ । ईऽ२३४हा ॥ आऽ२सादाऽ३४५त्॥ ईऽ२३४हा ॥ (दी.६ । प.१० मा.२)२७(ञा । ८७१)

(४७३-८)

असाऽ२३४ । वियँ्शुः । मदाऽ२३४याऽ६ँ्। हाउ ॥ आप्सूदाऽ२३४क्षाः । गिराइष्ठाऽ२३४हाइ ॥ श्याइनोनाऽ३योऽ३ ॥ नाइमाऽ२३हाऽ३४३इ । साऽ२३४दोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी. नास्ति । प.९। मा.९)२८(लो । ८७२)

(४७४-१) ॥ प्राजापत्येद्वे । द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री मरुद्वायू ॥

पावस्वदौ । हौहोवाहाइ ॥ क्षासाधनाऽ३ः । औऽ३होऽ३४इ । औहो । वाहाइ। देवेभ्यःपाइ । तायेहाराऽ३इ । औऽ३होऽ३४इ । औहो । वाहाइ ॥ मारुद्व्योवाऽ३ । औऽ३होऽ३४इ । औहो । वाहाऽ३इ ॥ याऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ माऽ२३४दाः ॥

(दी.१८। पा.१७। मा.१२)२९(ठा । ८७३)

(४७४-२)

पावस्वदक्षसाधनः । ओऽ६ँ्वा ॥ देवेभ्यःपीतयाऽ२ओइ । हराऽ२इ ॥ मारुद्व्योवाऽ२ । ओऽ२३ ॥ यवोवा । माऽ५दोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.५। प.८। मा.५)३०(बु । ८७४)

(४७५-१) ॥ वैदन्वतानि चत्वारि । चतुर्णां विदन्वान्गायत्री सोमः ॥

पारी ॥ स्वानोगिरिष्ठाः । पावाऽ२इत्रेऽ२३४सो । मोअक्षाराऽ२त्॥मदाइषूसाऽ३ ।

ईऽ३याऽ३ ॥ र्वाधोऽ२३४वा । आऽ५सोऽ६ हाइ ॥ (दी.४ । प.८। मा.६)३१(दू । ८७५)

(४७५-२)

प । यैंपारी ॥ स्वानोगिरिष्ठाः । पावाऽ२इत्रेऽ२३४सो । मोअक्षाराऽ२त् ॥

मदाइषूसाऽ३हाऽ३ ॥ र्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । आसीऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.९। मा.६)३२(घू । ८७६)

(४७५-३)

पाऽ५रि । स्वानोऽ३गाऽ३इरिष्ठाः ॥ पावित्रेसो । मोअक्षारात् । पावित्रे ।

सोमोऽ२३ । क्षारात् । ओइ । मादौ । वाऽ३४३ओऽ२३४वा ॥ षुवा ॥ सर्वधाः ।

असायेऽ३ । माऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । षुसर्वधाआसीऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.१६। मा.१०)३३(टौ । ८७७)

(४७५-४)

औऽ३होइ । इहाहाहाहाइ । औऽ२होऽ२३४वा । पराइस्वाऽ२३४नो । गिराऽ२३४-

इष्ठाः ॥ पावित्रेऽ२३४सो । मोअक्षाऽ२३४रात् ॥ मदाइषूऽ२३४सा ।

र्वधाआऽ२३४सी ॥ औऽ३होइ । इहाहाहाहाइ । औऽ२होऽ२३४५वाऽ६ ५६ ॥

एऽ३ । उपाऽ२३४५ ॥ (दी.२। प.१४। मा.११)३४(झ । ८७८)

(४७५-५) ॥ आंगिरसस्य रजेः पदस्तोभौ द्वो । द्वयो राजिर्गायत्री सोमः ॥

प । र्येस्वानाः ॥ गाऽ२इ । रिष्ठाऽ२या । हाहाइ । उवाऽ२३होइ । पावित्रेसो ।
मोआक्षाराऽ२त् । हाहाइ । उवाऽ२३होइ ॥ मदाऽ२इषुसा । हाहाइ । उवा-
ऽ२३हो ॥ र्वाधोऽ२३४वा । आऽ५सोऽ६ँहाइ ॥ (दी.३। प.१५। मा.११)३५(ण । ८७९)

(४७५-६)

पर्योहोवाहाइस्वानाः ॥ गाऽ२इ । रिष्ठाऽ२या । ओऽ२३४ । हाहोइ । हाहा ।
होवा । होवा । पावित्रेसो । मोआक्षाराऽ२त् । ओऽ२३४ । हाहोइ । हाहा ।
होवा । होवा । मदाऽ२इषुसा। ओऽ२३४ । हाहोइ । हाहा । होवा । होवाऽ३ ।
र्वाधोऽ२३४वा । आऽ५सोऽ६ँहाइ ॥ (दी.१०। प.२३। मा.१०)३६(वौ । ८८०)

(४७६-१) ॥ और्णायवे द्वे । द्वयोरूर्णायुर्गायत्री सोमः ॥

परिप्रियादिवःकावीः ॥ वयाँसिनप्त्योर्हितः ॥ स्वानैर्याऽ२३ती ॥ आयाऽ२ ।
इयाऽ२ईऽ३या ॥ कविक्रातोऽ२ । या२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.८। मा.४)३७(ज्री । ८८१)

(४७६-२)

४ ४ १विर र २ १ र र २ १ र र २
परिप्रियाऽ५दिवः कवाइः ॥ वायाऽ२होऽ१वा सिनप्त्योवोर्हितः ॥ स्वानैर्याऽ२३ती ॥
ती ङं कः

२ १ २ १ २ १ — न २ ३ २ १ ३ ५र र
हुवा । होवा । होवा । हुवाऽ२इ । ईऽ३या । कविक्रातोऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥
र का का का ख ञु टे

२ १ ।।।
ईऽ३याऽ२३४५म् ॥ (दी.८। प.११। मा.६)३८(दू । ८८२)
ण

एकोनसप्ततिः प्रथमः खण्डः ॥१॥ दशतिः ॥९॥

॥ इति ग्रामे गेय गाने त्रयोदशस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(४७७-१) ॥ सौभरे द्वे । द्वयोः सुभरिर्गायत्री सोमः ॥

२ ३ ५ २ १२ १ र २ १ ३ ५
प्रसोमाऽ२३४साः ॥ मदच्यूतः । औऽ२३होवाऽ३ । श्रवाऽ२साऽ२३४इनाः ।
रो यो थि यू

१ अ — १ १ ३ ५र र २र ३ ।।।
ओइमाघोनाऽ२म् ॥ सुताऽ२३ः ॥ वाऽ२इदाऽ२३४औहोवा ॥ थेअक्रामूऽ२३४५ः ॥
थि कि वे रो

(दी.४। प.८। मा.११)१(द । ८८३)

(४७८-१)

५ र र १ २ १२ — १र२ १२ —
प्रसोमासाः ॥ वाइपाश्चितः । आपोऽ१नायाऽ२ । ताऊर्मयः ॥ वानाऽ१निमाऽ२ ।
प का थि का थि

१ २ २ १२र १ २ १
आऔऽ३हो ॥ हिषाइवा । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
कः का ञु कु प

(दी.४। प.१०। मा.८)२(नै ।८८४)

(४७९-१) ॥ वृषकाणि त्रीणि । त्रयाणामिन्द्रो गायत्री सोमः ॥

४ र र ४ २१र र र २ २ ३ ५
पवेस्वन्दोऽ५वृषासुताः ॥ कृधीनोयशसोजनायेऽ३ ॥ वाइश्वाआऽ२३४पा ॥
ती चौ रो

१ ३ ५र र ३ ५
द्वाऽ२इषा२३४औहोवा ॥ जाऽ२३४ही ॥ (दी.७। प.५। मा.५)३(ञु । ८८५)
वे दू

(४८०-१)

वृषाहिया ॥ सिभानूऽ२३ना । द्युमन्तन्त्वाहावाऽ१माहाऽ२३४इ ॥ पावाऽ३ ॥
मानासुवोऽ२३४वा ॥ दृऽ२३४शाम् ॥

(दी.३। प.६। मा.२)४(टा । ८८६)

(४८०-२)

वृषाहियाऽ५सिभानुना ॥ द्युमन्तन्त्वाहावाऽ२महे । हाऽ२इ । ऊऽ२ । होऽ३वा ॥
पवमानसुवर्दृशम् । हाऽ२इ । ऊऽ२ । होऽ३वा ॥ हुवोऽ३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.४)५(की । ८८७)

(४८१-१) ॥ बभ्रोः सामानि त्रीणि, कौम्भ्यस्य वा । त्रयाणां बभ्रुर्गायत्री सोमः ॥

इन्दुरौहोवाहाइ । पावी ॥ ष्टाचाऽ२इ । तानोऽ२३४हा । हाहोइ । होऽ३हा ।
प्रियाःकवी । नाम्मा । तिरोऽ२३४हा । हाहोइ । होऽ३हा ॥ सृजाऽ२त् ।
अश्वोऽ२३४हा । हाहोइ । होऽ३हा३ ॥ राऽ२था२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४वा ॥

(दी.८। प.१७। मा.७)६(ठे । ८८८)

(४८१-२)

इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकावाइ ॥ हिम्ऽ३हिम् । नाम्माऽ२३४तीः ॥ सृजादा-
ऽ२३श्वाम् ॥ हिम्ऽ३हिम्ऽ३ । राऽ२थाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४वा ॥

(दी.३ प.७। मा.८)७(ठै । ८८९)

(४८१-३)

इन्दुःपविष्टाचेतनःप्रियःकवीनाम्मातिःसृ । जाऽ५दश्वाम् ॥ ओवाऽ२३ ।
ओवाऽ२३ ॥ राऽ२थाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४वा ॥

(दी.५। प.६। मा.२)८(पा । ८९०)

(४८२-१) ॥ कार्तवेशस्य सामानि त्रीणि । त्रयाणां कृतवेशोगायत्री सोमः ॥

असृक्षाऽ३ताप्रावाजिनाः ॥ गाव्याऽ२सोमाऽ२ । सोआ । श्वाया ॥
शूऽ१क्राऽ२सोवीऽ२ ॥ रयाऽ२शावः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.२। प.८। मा.४)९(जी । ८९१)

(४८२-२)

असृक्षताप्राऽ६ँवाजिनाः ॥ गव्यासोमासोअश्वयाऽ२३होइ ॥ शुक्रासोवाऽ३१इ ॥
रयाऽ२३ । शाऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ ग्वाऽ२३४भीः ॥

(दी.१०। प.६। मा.६)१०(पू । ८९२)

(४८२-३)

असृक्षतप्रवाजिनः । एऽ३ । गव्यासोमा ॥ सोऽ३आश्वाऽ३या ॥ शुक्राऽ२-
सोऽ२३४वी ॥ रायोऽ२३४वा । शाऽ५वोऽ६ँहाइ ॥

(दी.२। प.७। मा.३)११(छि । ८९३)

(४८३-१) ॥ शाम्मदे द्वे । द्वयोः शम्मद्गायत्रीन्द्रवायू ॥

पावस्वादे ॥ वायाऽ३ । वाऽ२याऽ२३४औहोवा । यूऽ२३४षाक् । आइन्द्रंगाच्छा ।
तुताऽ३इ । तूऽ२ताऽ२३४औहोवा । माऽ२३४दाः ॥ वायूऽ२ँहो१इ । आऽ२३रो ॥
हाधाऽ३ । हाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ माऽ२३४णा ॥

(दी.७। प.१३। मा.८)१२(जै । ८९४)

(४८३-२)

पावस्वदेवऐ । हीऐहीऽ२३४या ॥ आयुषागैऽ२हीऐऽ२हीऽ३या । इन्द्रंगच्छतुते-
मदऐऽ२हीऐऽ२हीऽ३या ॥ वायूमारोऽ३१२३ ॥ हाधोऽ२३४वा । माऽ५णोऽ६ँहाइ ॥

(दी.४ । प.७ । मा.६)१३(थू । ८९५)

(४८४-१) ॥ जनित्रे द्वे । द्वयोर्वसिष्ठो गायत्री सोमवैश्वानरौ ॥

पावा ॥ मानो । आजीजाऽ२३४नात् । दिवश्चित्राम् । नतन्यतूम् ॥
ज्योतिर्वैश्वा२३ ॥ नाऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ बृऽ२३४हात् ॥

(दी.४ । प. ८ । मा.५)१४(दु । ८९६)

(४८४-२)

पवमानाः ॥ अजाइजाऽ३नात् । दिवश्चित्राऽ२३ँहाऽ३इ । नातन्याऽ२३४तूम् ॥
ज्योऽ२३४तीः । वाऽ२३४इश्वा ॥ नरोवा । बृऽ५होऽ६ँहाइ ॥

(दी.१ । प.८। मा.८)१५(गै । ८९७)

(४८५-१) ॥ प्रक्रीडास्त्रयः (प्रक्रीडम्) । मरुतो गायत्री सोमः ॥

पारी ॥ स्वानासइन्दवोमदायवा । हणाऽ२३गिराऽ३४ । माधोऽ३४अर्षाऽ३ ॥

तिधोऽ२३४वा । राऽ५योऽ६हाइ ॥ (दी.४। प.६। मा.३)१६(ति । ८९८)

(४८५-२) ॥ संक्रीडम् ॥

पारी ॥ स्वानासइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया ॥ मदायबर्हणागिराउवा-

ऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया ॥ मधोअर्षन्तिधारयाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईयाऽ२ ।

वाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥ (दी.८। प.६।.मा.९)१७(द्वो । ८९९)

(४८५-३) ॥ निक्रीडम् ॥

पाऽ५रि । स्वानाऽ३साऽ३इन्दावाः ॥ मदाऽ२यबर्हाणाऽ२गिरा ॥ मधोऽ२३र्षा ॥

ऊर्म्मिरिवाऽ२ । ईऽ३या । तिधाराया । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.१०। मा.३)१८(नि । ९००)

(४८६-१) ॥ औशनम् । उशना गायत्री सोमः ॥

परिप्रासी । ष्यदत्कावीऽ२ः । सिन्धोरूर्मावाधिश्रिताऽ२ः ॥ कारूऽ२३म् ॥

वाऽ२इभ्राऽ२३४औहोवा ॥ पुरुस्पृहाऽ२३४५म् ॥

(दी.७। प.६। मा.६)१९(चू । ९०१)

एकोनविंशति द्वितीयः खण्डः ॥२॥ दशतिः ॥१०॥

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥

(४८७-१) ॥ यामानि त्रीणि । त्रयाणां यमो गायत्री देवाः ॥

२ — १ र र — १ २ — १ र
इहाऽ२इहा । उपोषुजातमाऽ२प्तुराम् । इहा ॥ इहाऽ२इहा । गोभिर्भङ्गंपरा-
रै कै क रै
— १ २ — १ र र — १ २
ऽ२इष्कृताम् । इहा । इहाऽ२इहा ॥ इन्दुन्देवाअयाऽ२सिषूः ॥ इहाऽ१ ॥
कै क रै कै कै

(दी.५। प.९। मा.८)२०(मै । ९०२)

(४८७-२)

१ र र — १ र १ — १
ऊपोषुजातमाऽ२प्तुराम् । उपा ॥ गोभाऽ२३इहोइ । भंगम्पराऽ२इष्कृताम् ।
कै क को कै
१ र र — १ २
उपा ॥ इन्दूऽ२३ होइ ॥ देवाअयाऽ२ । सिषुराऽ३१उवाऽ२३ ॥
क को का व
२ ५
ऊऽ३ २३४पा ॥ (दी.५।प.९।मा.८)२१(भ्लै।९०३)
शे

(४८७-३)

४ ५र ४र ५ १ २ २ न २ २ १ २ ३ ५
उपोष्वौ । होइजाताम् ॥ आप्तूऽ३राम् । औऽ३होऽ३वाऽ३ । गोभिर्भाऽ२३४ङ्गाम् ॥
ती ता कः वै यू
१ अ — १ र २ ५र र २ र ३ । । ।
ओइपारिष्कृताऽ२म् ॥ इन्दूऽ२३म् ॥ देवाऽ३४औहोवा ॥ अयासिषूऽ२३४५ः ॥
धि कि टे शे

(दी.६। प.९। मा.९)२२(घो । ९०४)

(४८८-१) ॥ अंकतेः साम ,(वैरूपम्) । अंकतिर्गायत्री सोमः ॥

५ र र २ ३ ५ १ ३ ५ २ ३ ५
पुनानोआ ॥ क्रामीदाऽ२३४मी । विश्वाऽ२माऽ२३४र्द्धाः । वीचर्षाऽ२३४णीः ॥
प शे यू शे
१ ३ ५ १ ३ ५र र ३ ५
शुम्भाऽ२न्ताऽ२३४इवी ॥ प्राऽ२न्धाऽ२३४औहोवा ॥ तीऽ२३४भीः ॥
यू वे दू

(दी.४। प.७। मा.६)२३(थू । ९०५)

(४८९-१) ॥ औशने द्वे । द्वयोरुशना गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

५र र ५ १ २र १२ १ २ न २
आविशन्कालाऽ६ँ शँ सुताः ॥ वाइश्वाआर्षन् । आभाइश्रायाऽ३ः । ओऽ३हाऽ३।
पा घि चौ खू

१२ ३ ५ १ १ ३ ५र र
ओवा । ओऽ२३४हाइ ॥ इन्दूऽ२३ः ॥ आऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा ॥
का टू कि वे

२र ३ । । ।
यधीयातेऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.९। वि.१०)२४(घौ । ९०६)
शे

(४८९-२)

४र ३ ४ ५ ३ २ ४ ५ १ २ १ २ ३र र
आविशन्कालाशम् । सुताऽ३ः । वाइश्वाः ॥ आर्षन् । आभाइश्राया । औहौहो-
थ टी ता का चो

५ १ २र २ — १र ३ ५र र
ऽ२३४वा ॥ औहौहो१इ ॥ इन्दूराऽ१इन्द्राऽ२ ॥ या । धीयाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥
टू कै घि च वे

३ ५
ऊऽ२३४पा ॥ (दी.७। प.११। मा.९)२५(च्वो।९०७)
टू

(४९०-१) ॥ सोमसाम । सोमो गायत्री सोमः ॥

५ २ १र २ १ २र १ अ ३ ५
असर्जिरा ॥ थि । योयाऽ२३था । पवित्रे । चा । मुवोऽ२स्सूऽ२३४ताः ॥
प च कः चो क त्रु

२र १ २ १ २ १ ४ ५ ४
कार्ष्मन्वाऽ२३जी ॥ नियक्रामाइत् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जा कै कु ता प

(दी.३। प.११। मा.४)२६(टी । ९०८)

(४९१-१) ॥ कार्ष्णे द्वे । द्वयोः कृष्णो गायत्री सोमः ॥

४ ५ २र र १ २ ३र २ १ विर र
प्रयाद्धाउ ॥ गावोनाऽ३भूर्णाऽ१याऽ२३४ः । त्वेषाऽ३ः । आयाऽ२सोअक्रमुः ॥
ता चै टी का

१ २ १ २ र १ ३ ५र र २ ५
घ्नन्ताःकाऽ२३र्ष्णाम् ॥ आपात्वाचम् । औहोऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥ऊऽ३२३४पा ॥
जा चो जे शे

(दी.८। प.८। मा.८)२७(ड्लै ९०९)

(४९१-२)

प्रायद्वाऽ३वोनभूर्णयाः ॥ त्वाइषाअया । सोआक्रमूऽ२३ः ॥ घ्नाऽ२३४न्तोहाइ॥

काऽ२र्ष्णाऽ२३४औहोवा ॥ आपत्वाचाऽ२३४५म् ॥

(दी.७। प.६। मा.८)२८(चै । ९१०)

(४९२-१) ॥ सोमसाम (वैश्वदेवम्) । सोमो गायत्री सोमः ॥

आपघ्नौ । होइपावा ॥ साइमाऽ१र्द्धाऽ२ः । क्रातुवित्सो । मामात्साऽ१राऽ२ः॥

नुदाऽ२३ ॥ स्वाऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ वायुअनाऽ२३४५म् ॥

(दी.४। प.८। मा.६)२९(दू । ९११)

(४९३-१) ॥ सूर्यसाम (वैश्वदेवम्) सूर्यो गायत्री सूर्यः ॥

एअयापवा ॥ स्वधाऽ२ । रायाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३४पा । ययासूर्यमरोऽ२ ।

चायाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३४पा ॥ हिन्वानोमानुषाऽ२३इर्होइ ॥ आपआ-

ऽ३१उवाऽ२३ ॥ ऊऽ३ऽ२३४पा ॥

(दी.७। प.१०। मा.७)३०(ञ्ले । ९१२)

(४९४-१) ॥ वार्त्रघ्नम् । इन्द्रो गायन्त्रीद्रो वृत्रहा ॥

साहोऽ३४३इ । पावास्वा ॥ याआऽ२विथा । इन्द्रंवृत्राऽ३ । याहन्ताऽ२३४वे ।

ओवाऽ३ओवा ॥ वव्रिवाऽ२३ साम् ॥ माहीरापा । औऽ३होवा ।

होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.१ । प.११। मा.५)३१(कु । ९१३)

(४९५-१) ॥ सोम सामानि त्रीणि । त्रयाणां सोमो गायत्री सोमः ॥

अयावीती ॥ पारिस्त्रवा । यस्तइन्दाउ । मादाइषुवा ॥ अवाहाऽ३न्नाऽ३ ॥

वातोऽ२३४वा । नाऽ५वोऽ६ँहाइ ॥ (दी.४। प.७। मा.४)३२(थी । ९१४)

(४९५-२)

आयावीता ॥ औहोवा । औहोऽ३४इ । औ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥

परिस्त्रवा ॥ यस्तइन्दा ॥ औहोवा । औहोऽ३४इ । औ । होऽ२ । वाऽ२३४ ।

औहोवा ॥ मदेऽ२षुवा ॥ अवाहन्ना ॥ औहोवा । औहोऽ३४इ । औ । होऽ२ ।

वाऽ२३४ । औहोवा ॥ वातीर्नवाऽ२३४५ ॥ (दी.२१।प.२४।मा.४)३३(घी । ९१५)

(४९५-३)

आयाऽ५वी । ताऽ३इपाऽ३रिस्त्रवा ॥ यास्ताइन्दो । मादाइषूऽ१वाऽ२ ॥

अवाहाऽ३न्ना ॥ वतीर्नावा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.३ । प.९। मा.४)३४(ढी । ९१६)

(४९६-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजो गायत्री सोमः ॥

परिद्युक्षाम् ॥ ओइ । सनद्रायीऽ२म् । ओइ । भरद्वाजाऽ२म् । ओइ ।

नोअन्धासाऽ२३४ ॥ स्वानोऽ३४अर्षाऽ३ ॥ पवोवा । त्राऽ५योऽ६ँहाइ ॥

(दी.२। प.१०। मा.९)३५(जो । ९१७)

षोडशः तृतीयः खण्डः ॥३॥ दशति ॥१॥

इति ग्रामे गेय-गान त्रयोदशः प्रपाठकः ॥१३॥

(४९७-१) ॥ वार्षाहरम् । वृषाहरिर्गायत्री सूर्यः ॥

अचिक्रदाऽ३त् । आचिक्रदाऽ३त् । अचिक्रदा५दे ॥ वृषाहराऽ३इ । वार्षाहराऽ३इ । वृषाहराऽ५ए । महान्मित्राऽ३ः । माहान्मित्राऽ३ः । महान्मित्राऽ५ए ॥ नदर्शताऽ३ः । नादर्शताऽ३ः । नदर्शताऽ५ए ॥ सँ सूरियाऽ३इ । साँ सूरियाऽ३इ । सँ सूरियाऽ५ए । णदिद्युताऽ३इ । णादिद्युताऽ३इ । णदाऽ५इद्युताउ ॥ वा ॥

(दी.९। प.१९। मा.१८)१(धै । ९१८)

(४९८-१) ॥ वार्शाणि त्रीणि । त्रयाणां वृशोगायत्री सोमः ॥

आतेदक्षाम् ॥ मायोभूऽ३वाम् । वाह्निम । द्या । वृणीऽ२माऽ२३४हाइ ॥पान्तामाऽ३ । ईऽ३या ॥ पुरूऽ२३ । स्पृूऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.४। प.१०। मा.४)२(न्ली । ९१९)

(४९८-२)

आतेदाऽ२३४क्षाम् । मायोभूऽ२३४वाम् ॥ वह्निमद्यावृणी । महोऽ२३४हाइ । पान्ताऽ३माऽ३ । ईऽ३याऽ३ ॥ पूऽ२रूऽ२३४औहोवा ॥ स्पृूऽ२३४हाम् ॥

(दी.४। प.८। मा.५) ३ (दु । ९२०)

(४९८-३)

आतेदक्षम्मयाः । भुवोऽ२३४हाइ ॥ वह्निमद्यावृणी । महोऽ२३४हाइ ॥

पान्ताऽ१माऽ२ ॥ पूरुस्पृहम् । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.४। प.९। मा.५)४(धु । ९२१)

(४९९-१) ॥ वैरूपे द्वे । द्वयोरिन्द्रो गायत्री सोमः ॥

अध्वर्योऽ२३४आ ॥ द्रिभाइस्सूऽ३ताऽ३म् । सोमाऽ२म्पाऽ२३४वी ।

त्राआऽ१नायाऽ२ ॥ पुनाऽ२३ ॥ हीन्द्राऽ३४औहोवा ॥ यापातावेऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.७। मा.५)५(फु । ९२२)

(४९९-२)

अध्वर्यौ । होआद्री ॥ भिस्सुतम् । औऽ३होऽ३वाऽ३ । सोमाऽ२म्पाऽ२३४वी ।

ओत्राआऽ१नायाऽ२ ॥ पुनाऽ२३ ॥ हाऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा ॥ यापातावेऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.९। मा.५)६(भु । ९२३)

(५००-१) ॥ तरन्तस्य साम । तरन्तो गायत्री सोमः ॥

तरत्समा ॥ दीधावाऽ१ताऽ२३इ । धाराऽ२सूऽ२२४ता ॥ स्याआऽ२३ ॥

धाऽ२साऽ२३४औहोवा ॥ तरत्समन्दीधावातीऽ२३४५ ॥

(दी.६ । प.६। मा.३)७(कि । ९२४)

(५०१-१) ॥ सोमसाम । सोमो गायत्री सोमः ॥

आपवस्वा ॥ सहस्त्रिणाम् । हुवाइ । हुवाऽ२३हो ॥ रयिँ सोमा । सुवीरियाम् ।
हुवाइ । हुवाऽ२३होइ ॥ अस्मेश्रवा । सिधारया । हुवाइ । हुवाऽ२३होऽ२ ।
वाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी.७। प.१४। मा.७)८(ज्वे । ९२५)

(५०२-१) ॥ सूर्यसाम । सूर्यो गायत्री सूर्यः ॥

अनुप्रत्नासआयाऽ६ँ वाः ॥ पादन्नवीयोअक्रमूः ॥ रुचाइजाना ॥ ताऽ३सू ।
हिम्मायेऽ३ ॥ रीऽ२३४याम् ॥

(दी.४। प.६। मा.६)९(तू । ९२६)

(५०३-१) ॥ दार्ढच्युतानि त्रीणि । त्रयाणां दृढच्युतिर्गायत्री सोमः ॥

अर्षा ॥ इहा । सोमद्युमाऽ२त्तामा । इहा ॥ आभाइ ॥ इहा । द्रोणानिरोऽ२रुवा ।
इहा ॥ सीदा ॥ इहा ॥ योनौवनाऽ२इषुवा ॥ इहाऽ१ ॥

(दी.६।प.१२। मा.२)१०(खा । ९२७)

(५०३-२)

अर्षाहाउ ॥ सोमद्युमत्तमो । भिद्रोऽ२३णा । निराऔऽ३हो । रुवाऽ२३त् ॥
सीदाउवा ॥ योनौवाऽ३ने । हिम्मायेऽ३ ॥ षूऽ२३४वा ॥

(दी.४। पं.९। मा.४)११(धी। ९२८)

(५०३-३)

३ ४र ५र ३ २ ३ ४र ५र १ २ १ २र १ २ १र २
अर्षासोमद्युमा । तामाः । अर्षासोमा ॥ द्यूमात्तमः । आमिद्रोणाऽ२३हा ।निरोरुवत् ॥
टा य टा का दै चो
१ २र १ २ १ २ १
साइदन्योनाऽ२३उहाइ ॥ वानाइषूऽ२३वाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
दै जु कु प

(दी. ७। प.१०। मा.८)१२(जै । ९२९)

(५०४-१) ॥ वृषकम् । इन्द्रो गायत्री सोमः ॥

५ र र १ — १ — १ २ २ १ २ ३ ५
वृषासोमा ॥ द्युमाऽ२ँ ्आसाऽ२इ । वृषादेवाऽ३हाऽ३इ । वार्षव्राऽ२३४ताः ॥
प घु वि यू
१ २ न २ १ २र १ २ १
वृषाधर्माऽ३ ॥ ईऽ३या ॥ णाइदाध्रिषे । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥
कि खु का बु कु
डा ॥
प

(दी.३। प.१०। मा.६)१३(णू । ९३०)

(५०५-१) ॥ ऐषम् । इषो गायत्री सोमः ॥

५र २ र र र २ ५र र २ १ विर र र १ २
इषेपवा ॥ स्वधारयौहोवाऽ३हाऽ३४ । औहोवा । मृज्यामाऽ२नोमनीषिभिः ॥
प शु प छु
३ २र ३ ५र २ र र २ ५र र १ २ ३ । । ।
इन्दोरुचा ॥ अभिगौहोवाऽ३हाऽ३४ । औहोवा ॥ उप् । इहीऽ२३४५ ॥
दू शु प क से

(दी.१५। प.९। मा.२)१४(भा । ९३१)

(५०६-१) ॥ श्यावाश्वम् । श्यावाश्वो गायत्री सोमः ॥

५ र २ १र र २ १ २ १
मन्द्रयासो ॥ माधारया । वृषापाऽ२३वा । स्वादाइवाऽ२३यूः ॥ अव्याऽ२३ः ॥
प र कः जा कि
१ ३ ५र र २ ३ २
वाऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ भिरस्मयूऽ१ः ॥
वे रि

(दी.५। प.७। मा.५)१५(फु । ९३२)

(५०७-१) ॥ अयासोमीयम् । अयासोमो गायत्री सोमः ॥

५ ४ २ ४ ५ २ १र अ ३ ५ १ २र
आयाऽ३सोऽ३मसुकृत्यया ॥ माहान्त्सन्ना । भ्यावाऽ२र्द्धाऽ२३४था: ॥ मान्दाना-
पौ र नु
१ २ ३ २ ४
आयेऽ३त् । वृषाऽ३याऽ५साऽ६ँ५६ँइ ॥
घी टो

(दी.२। प.५। मा.४)१६(त्री । ९३३)

(५०८-१) ॥ आग्नेयम् । अग्निर्गायत्री सोमः ॥

२ ३र४र ५ २ १ २ ३र४र ५ र
आ । औहौहोवाहाइ । अयंविचा ॥ षाणाइर्हाइता । औहौहोवाहाइ ॥ पवमाना: ॥
च टा प चो टा प
२ १ २ ३र४र ५ र २ न २न ४ ५
साचाइताता । औहौहोवाहाइ ॥ हिन्वानआ ॥ पियौऽ३हौऽ३ । हवोवा ।
चो टा प ञः ता
४ ॥ ५
बृऽ५होऽ६ँहाइ ॥
ति

(दी.८ । प.१२ । मा.९)१७(ठो । ९३४)

(५०९-१) ॥ आयास्ये द्वे । द्वयोरयास्यो गायत्री सोमः ॥

३४५ २र २ ३ ५ १र —१ — न २ र १
प्रनइन्दोऐ । हीऐहीऽ२३४या ॥ माहेतुनऐऽ२हीऐऽ२हीऽ३या ।ऊर्मिन्नबिभ्रदर्षसऐऽ२-
टा शे च
१ — न २ १ २ १ ३ ५१र २१र २ ३ ।।।
हीऐऽ२हीऽ३या ॥ अमायेऽ३ ॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ आयासियाऽ२३४५: ॥
है कि वे णू

(दी.७। प.७। मा.१०)१८(छौ । ९३५)

(५०९-२)

३ ४५ र २ २ ५ २१र — न २ र १
प्रानाइन्दो । इयाऽ३४३ईऽ३४या ॥ माहेतुनइयाऽ२ईऽ३या । ऊर्मिन्नबिभ्रदर्षस-
टा थि है
— न २ १ २ १ ३ ५१र २ २१र २ ३ ।।।
इयाऽ२ईऽ३या ॥ अमायेऽ३ ॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । आयासियाऽ२३४५ ॥
है कि वे वा णू

(दी.६। प.८। मा.९)१९(गो । ९३६)

(५१०-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजो गायत्री सोमेन्दौ ॥

होईऽ२३४या । (द्विः) । इयाहाइ । आपध्नाऽ२३न्पाऽ३४५ ॥ होईऽ२३४या ।
(द्विः) । इयाहाइ । वाताइ । माऽ२ । धाऽ२३४ । औहोवा ।
अपसोमोऽ२आराऽ२ल्नाऽ२३४५ः । होईऽ२३४या । (द्विः) । इयाहाइ ।
गच्छन्नाऽ२३इन्द्राऽ३४५ ॥ होईऽ३४या । (द्विः) । इयाहाइ । स्यानाइः ।
काऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.७। प.२४। मा.१८)२०(झै । ९३७)

विंशतिःचतुर्थः खण्डः ॥४॥ दशतिः ॥२॥

(५११-१) ॥ आयास्यम् । अयास्यो बृहती सोमः ॥

पुनानःसो ॥ माऽ२धाऽ२३४औहोवा । राऽ२३४या । आपोवसानोअर्षसि ॥
आरात्नाऽ३धाः । योनाइमाऽ३र्त्ताऽ३ । स्याऽ२साऽ२३४औहोवा । दाऽ२३४सी ॥
उत्सोदेऽ३वोऽ३ ॥ हाऽ२इराऽ२३४औहोवा ॥ ण्याऽ२३४याः ॥

(दी.१२। प.११। मा.८)२१(चै । ९३८)

(५११-२) ॥ माण्डवम् । मण्डुर्बृहती सोमः ॥

इयाऽ२ईऽ३या । पुनानःसोऽ२ । माधाराऽ२३४या ॥ आपोवसानोअर्षाऽ२३सी॥
आरत्नधायोनिमृतस्यासीदाऽ२३सी ॥ उत्सोदेवोऽ२३ ॥ हाऽ२इरा२३४औहोवा ॥
ण्याऽ३याऽ२३४५ः ॥

(दी.१२। प.८। मा.५)२२(जु । ९३९)

(५११-३) ॥ अपदासम् । वसिष्ठो बृहती सोमः ॥

पुनानःसोमाधाराया ॥ आपोवसानोअर्ष । स्योऽ३हा । ओऽ३हा । आरात्नधायोनिमृत-
स्यसीद । स्योऽ३हा । ओऽ३हा ॥ उत्सोदाऽ१इवाऽ२ः । ओऽ३हा । ओऽ३हा ॥
हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.१० । प.१३। मा.५)२३(बु । ९४०)

(५११-४) ॥ सोमसाम । सोमो बृहती सोमः ॥

पुनानःसोऽ५मधारया ॥ आपोऽ२वासाऽ२ । नोअर्षसी । आराऽ२त्नाधाऽ२ः ।
योनिमार्त्ताऽ२ । स्यासीदसी ॥ ऊत्सोऽ२दाइवाऽ२ः ॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१०। मा.६)२४(मू । ९४१)

(५११-५) ॥ ऐडमायास्यम् । अयास्यो बृहती सोमः ॥

आइपुना ॥ नाःसो । माधारया । आपोवासाऽ३१ । नोअर्षसी । आरत्नाधाऽ३१ः ।
योनिमृता । स्यासीदसी ॥ ऊत्सोदेवाऽ३१ः ॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१२। मा.६)२५(फू । ९४२)

(५११-६) ॥ माण्डवम् । मण्डुर्बृहती सोमः ॥

पुनानःसोमाधारया । पोवसोवा ॥ नोआर्षसि । आरात्न । धाउवाऽ२३ । होवाऽ३हाइ ।
योनिमृतास्यसीदसि ॥ उत्सोदे । वाउवाऽ२३ । होवाऽ३हाइ ॥ हिरण्या-
ऽ२३याऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.११। प.१३। मा.७)२६(गे । ९४३)

(५११-७) ॥ उद्वत्प्राजापत्यम् । प्रजापतिर्बृहती सोमः ॥

५ २४ ५र ४र ४ २१र र २ १ — १ — १र र र
पुनानःसोमाधा । होऽ५राया ॥ आपोवसानाआहोऽ२ । षासीऽ२ ॥ आरत्नधायोनि-
फि ती छु का
२ १ — १ — १ — २ २ १
मृतास्यासाहोऽ२इ । दासीऽ२ ॥ उत्साऽ२होऽ१इ । दाऽ२३इवोऽ३ ॥ हिरो-
चि का कै वि
५ ४ ५
ऽ२३४वा । ण्याऽ५योऽ६ हाइ ॥ (दी.८। प.१०। मा.५)२७(णु । ९४४)
छ ति

(५११-८) ॥ त्रिणिधनमायास्यम् । अयास्यो बृहती सोमः ॥

५ र र र र ४ ५ १ २ ३ ५ १ ३ २
पुनानःसोमधाहाउहोवा ॥ रायाआऽ२३४पो । वासाऽ२ । नाआऽ३४५ ।
पै वू का दू
३ ५ १र २ ३र ४र ५ १ र र ३ २
षाऽ२३४सी ॥ आराऽ३४ । औहोवा ॥ त्वधायोनिमृताऽ२ । स्यासाऽ३४५इ ।
दू की टा का दू
३ ५ १ २ ३र ४र ५ १ ३ २
दाऽ२३४सी ॥ उत्साऽ३४ । औहोवा ॥ दाइवोऽ२ । हिराऽ३४५ ॥
दू की टा का दू
३ ५
ण्याऽ२३४याः ॥ (दी.११। प.१५। मा.६)२८(ङू । ९४५)
दू

(५११-९) ॥ कण्वरथन्तरम् । कण्वो बृहती सोमः ॥

५र र ४ ५र ४र ५ ४ २ १र २ १ २ २ र र र
पूनानःसोमाधाराया ॥ आपोवसा । नोऽ३आर्षाऽ३सी । आरत्नधायोनि-
फु र छं
र ३ ५र २ १र ५ २
मृतस्यसीदासाऽ२३४ऐही ॥ उत्सोदाऽ२३४इवाः ॥ हिराऽ३१उवाऽ२३ ॥
से छ छौ
२ २ ३ २
एऽ३ । ण्यायाआ । (दी.११। प.८। मा.६)२९(गू । ९४६)
वा चे

(५११-१०) ॥ तिरश्चीन (द्वे) निधनमायास्यम् । अयास्यो बृहती सोमः ॥

४ र ३ ४र ३र ४ ५र २ २ ४ १ २ १ ३ २
पुनानःसोमाधाराया । एऽ३। औऽ३होऽ५वा ॥ आपोऽ३ । वसाऽ२ । नाआऽ३४५ ।
थि चा ची कि का दू
२ १ — १ २ १ २ १ २ १ २ ४
षाऽ३सीऽ२ । आरात्नाधाः । योनिमृता । स्यासाऽ३आ । औऽ३होऽ३ ।
छो कै कै को
५ २ १ २ २ १ ३ २ २ १ । । ।
दाऽ२३४सी ॥ उत्साऔऽ३हो ॥ दाइवोऽ२ । हिराऽ३४५॥ ण्याऽ३याऽ२३४५ः ॥
दू जा का दू ज

(दी.४। प.१६। मा.६)३०(तू । ९४७)

(५११-११) ॥ सदोविशीयम् । प्रजापतिर्बृहती सोमः ॥

पुनानःसोमधारयाओहाओहाऽ६ ऍ । औहोऔहोऽ६ वा ॥ आपोवसानोअर्षा ।

स्योऽ३हा । ओऽ३हाऽ३ए । औऽ३होइ । औऽ३होऽ३वा । आरात्नाधायोनिमृता-

स्यसीद । स्योऽ३हा। ओऽ३हाऽ३ए । औऽ३होइ । औऽ३होऽ३वा ॥

उत्सोदाऽ१इवाऽ२ः । ओऽ३हा । ओऽ३हाऽ३ए । औऽ३होइ । औऽ३होऽ३वा ॥

हिरा । ण्याऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ सदोविशाऽ२३४५ः ॥ (दी.२०। प.२०। मा.१५)३१(मु । ९४८)

(५११-१२) ॥ स्ववासिनी द्वे । द्वयोर्जमदग्निर्बृहती सोमः ॥

ओऽ२होऽ१ । वाओवा । ओऽ२होऽ१ । वाओवा । ओऽ२होऽ१ । वाओवाऽ३ ।

ओऽ२वाऽ२३४औहोवा । पुनानःसोमाधाराया ॥ पोवसानोअर्षसि ॥ आरात्नाधा-

योनिमृतस्यसीदसि ॥ उत्सोदेवाः । ओऽ२होऽ१ । वाओवा । ओऽ२होऽ१ ।

वाओवा । ओऽ२होऽ१ । वाओवाऽ३ । ओऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ ।

हिरण्ययाऽ२३४५ः ॥ (दी.१७ । प.२०। मा.११)३२(ज । ९४९)

(५११-१३)

ओऽ३ । होऽ१ । वाओवाऽ३ । ओऽ२वाऽ२३४औहोवा । पुनानःसोमाधाराया।

पोवसानोअर्षसि ॥ आरात्नाधायोनिमृतस्यसीद । स्योऽ३ । होऽ१ । वाओवाऽ३ ।

ओऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१८ । प.१५। मा.७)३३(णे । ९५०)

(५११-१४) ॥ प्लवः वसिष्टो बृहती सोमः ॥

हा । वोऽ३हा । वोऽ३हाऽ३ । हा । ओऽ२३४वा । हाइ । पूनानाऽ२३४ःसो ।
माधाराऽ२३४या ॥ आपोवाऽ२३४सा ॥ नोआर्षाऽ२३४सी ॥ आरात्नाऽ२३४धाः ।
योनीमाऽ२३४र्त्ता । स्यासीदाऽ२३४सी ॥ ऊत्सोदाऽ२३४इवो ।
हाइरण्याऽ२३४याः । हा । वोऽ३हा । वोऽ३हाऽ३ । हा । ओऽ२३४वा ।
हाऽ३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । आतिविश्वानिदुरितातरेमाऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.२४। मा.६)३४(भू । ९५१)

(५११-१५) ॥ रौरवम् । रुरुर्बृहती सोमः ॥

पुनानःसोमाऽ३धाराऽ२३४या ॥ आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसा-
ऽ२इदसाइ । ओहाऽ३उवा ॥ उत्सोदेवोहिराऽ२३हाइ । ओहाऽ३उवा ॥
ण्याया । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.११। प.९। मा.७)३५(घे । ९५२)

(५११-१६) ॥ यौधाजयम् । युधाजिद्बृहती सोमः ॥

पुनाऽ३१ । नाऽ३ःसो । मा । धाराऽ२३४या ॥ आपोऽ३ । वसाऽ२ । नाआऽ३४५ ।
षाऽ२३४सी । आरात्नाधाः । यो । निमृताऽ२ । स्यासाऽ३४५इ । दाऽ२३४सी ॥
उत्साऽ२ः ॥ दाइवोऽ२ । हिराऽ३४५ ॥ ण्याऽ२३४याः ॥

(दी.२। प.१७। मा.६)३६(छू । ९५३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशस्यार्धः प्रपाठकः ॥

(५१२-१) ॥ अच्छिद्रम् । विश्वामित्रो बृहती सोमः ॥

परीतोषी ॥ चताऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४ताम् । सोमोऽ२यउत्ताम ँ्हावीः ॥
सोमोयऊ ॥ तमाऽ३१उवाऽ२३ ॥ हाऽ२३४वीः । दधन्वाँ्योनर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥
दधन्वाँ्याः ॥ नर्योऽ२ । आ । प्सुवाऽ३१उवाऽ२३ । ताऽ२३४रा । सुषावसोम-
मद्रिभीऽ२३४ः ॥ सुषावसो ॥ ममाऽ३१उवाऽ२३ ॥ द्राऽ२३४इभीः ।

(दी.१५ । प.१७। मा.१३)१(फि । ९५४)

(५१२-२) ॥ रयिष्ठम् । इन्द्रो बृहती सोमः ॥

परीतोषी ॥ चातासूऽ३ताम् । औऽ३होऽ३वा । औऽ३होऽ३वा । ईऽ३या ।
ईऽ३याऽ३४ । हा । हाउवा । सोमोऽ२यउत्तामँ्हावीः ॥ सोमोयऊ ॥ तामँ्हाऽ३वीः ।
औऽ३होऽ३वा । औऽ३होऽ३वा । ईऽ३या । ईऽ३याऽ३४ । हा । हाउवा ।
दधन्वायोनर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥ दधन्वा ँ्याः ॥ नर्योऽ२ । आ । प्सूऽ३आन्ताऽ३रा ।
औऽ३होऽ३वा । औऽ३होऽ३वा । ईऽ३या । ईऽ३याऽ३४ । हा । हाउवा ।
सुषावसोममद्रिभीऽ२३४ः ॥ सुषावसो ॥ मामाद्रीऽ३भाइ । औऽ३होऽ३वा ।
औऽ३होऽ३वा । ईऽ३या । ईऽ३याऽ३४ । हा । हाउवाऽ३ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.१५। प.३८। मा.१३)२(ब्लि । ९५५)

(५१२-३) ॥ भारद्वाजे द्वे । द्वयोर्भरद्वाजो बृहती सोमः ॥

५र र र र २ र १ न २ ३र २ १ न २र २
औहोइपरीतोषी ॥ चतासुताम् । औऽ३होइ । औहोइ । आऽ३ । औहोऽ३वा।
प र खु य खी चे

१र विर १ २ १ २ १ न २ ३र २ १न २र २
सोमोऽ२यउत्तामँहाविः । औऽ३होइ । औहोइ । आऽ३ । औहोऽ३वा ॥
ऊः खु. य खी चे

१र र विर १ २ १र न २ ३र २ १न २र २
दधन्वाँयोनर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥ औऽ३होइ । औहोइ । आऽ३ । औहोऽ३वा ॥
रौ खु य खी चे

१र र २ न २ ३र २ १ ५ ५
सुषावसोममद्रिभिः । औऽ३होइ । औहोइ । आऽ२३४ । उहुवाऽ६ँहाउ ॥वा ॥
चौ खु य की पा प

(दी.२०। प.२२। मा.१४)३(फी । ९५६)

(५१२-४)

४ ५ २र १ विर १ २र ३ २र ३ न २
प । यैंपारी ॥ तोषिश्चाताऽ२सुतम् । आउवाऽ२३ । हाउहाउ । होऽ३वा ।
त ता रौ कि शी खु

१र विर १ २ १ २ १ २र ३ २र ३ २न २ १र र
सोमोऽ२यउत्तामँहाविः । आउवाऽ२३ । हाउहाउ । होऽ३वा । दधन्वाँयो-
ऊः कि शी खु

विर १ २ १ २र ३ २र ३ २न २ १र २
नर्योऽ२प्सुवन्ताराउ । वाऽ२३ । हाउहाउ । होऽ३वा ॥ सुषावाऽ२३सोऽ३ ।
रौ कि शी खु जु

२र ३ २र ३ २न २ ३ २ १ ५ ५
हाउहाउ । होऽ३वा ॥ मामा । द्राऽ२३४इभाइ । उहुवाऽ६ँहाउ ॥ वा ॥
शी खु य की पा प

(दी.१६। प.२१ । मा.१७)४(के । ९५७)

(५१२-५) ॥ आभीशवे द्वे । द्वयोरभीशुर्बृहती सोमः ॥

५ र र र २र र १ अ २ ३ ५ २
परीतोषिश्चतासुतम् । ए ॥ सोमोयउऽ३त्तामाँहाविः ॥ दाऽ२३४धा । हाइ ॥
प प घु दू च

१र र र अ २ ३ १ २ १ र २ १ ५
न्वाँयोनर्योअप्सूआन्तारा ॥ सूऽ२३४षा । हाइ ॥ वासोमामोऽ२३४वा ।
धि दू च दू

४ ५
द्राऽ५इभोऽ६ँहाइ ॥ (दी.९। प.१०। मा.९)५(नो । ९५८)
ति

(५१२-६)

परीतोषिञ्चतासुतम् । ए । ए ॥ सोमोयउऽ३त्तामाँ ्हाविः ॥ दाऽ२३४धा ।
हाऽ३हाइ ॥ न्वाँ ्योनर्योअप्सूआन्तारा ॥ सूऽ२३४षा । हाऽ३हाइ ॥ वासोमा-
मोऽ२३४वा । द्राऽ५इभोऽ६ँ ्हाइ ॥ (दी.९। प.११। मा.९)६(तो । ९५९)

(५१२-७) ॥ माण्डवे । द्वे । द्वयोर्मण्डुर्बृहती सोमः ॥

पारीतोषिञ्चतासुतम् । इहा ॥ सोमोयउत्तामँ ्हाऽ२३वीः । इहा । दधन्वाँ ्योनर्यो-
अप्सुवन्ताऽ२३रा । इहा ॥ सुषावाऽ२३सो । इहा । मामाऽ२३ । द्राऽ२इ-
भाऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४हा ॥ (दी.११। प.११। मा.६)७(कू । ९६०)

(५१२-८)

इहा । पारीतोषिञ्चतासुताम् । इहा ॥ सोमोयउत्तामँ ्हाऽ२३वीः । इहाउवाऽ३।
ऊऽ३४पा । दधन्वाँ ्योनर्योआप्सुवन्ताऽ२३रा । इहाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा ॥
सुषावाऽ२३सो । इहाउवाऽ३ । ऊऽ३४पा । मामद्राऽ२३इमीः । इहाउवाऽ३ ॥
ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.९। प.१५। मा.१०)८(न्लौ । ९६१)

(५१२-९) ॥ अभिवाससाम । अङ्गिरसो बृहती सोमः ॥

पारीतोषिञ्चतासुताम् ॥ सोमोयाउ । तामँ ्हावाइः । दाधाओऽ२३४वा । ऊऽ२३४पा ।
न्वाँ ्योनर्योआप्सुवन्ताऽ२३रा ॥ सुषावाऽ२३सो ॥ मामाद्रिभिः । इडा-
ऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.९। प.११। मा.८)९(तै । ९६२)

(५१२-१०) ॥ परिवाससाम । अङ्गिरसो बृहती सोमः ॥

पारीतोषिञ्चतासुतम् । ओऽ६ँ वा ॥ सोमोऽ२यउत्तामँ हाविः । दधान्वँ योऽ३।

हाऽ३हाइ । नर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥ सुषावासोऽ३ । हाऽ३हा ॥ मामाद्रिभिः ।

इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.७। प.१२। मा.६)१०(छू । ९६३)

(५१२-११) ॥ वैणवम् । वेणुर्बृहती सोमः ॥

पारीतोषिञ्चा । ताऽ५सुताम् ॥ सोमोयउत्तामाऽ२१२म् । हावीऽ२ः । दधन्वाँ यो-

नर्योअप्सुवाऽ२१२ । ताराऽ२ ॥ सुषावाऽ२३सोऽ३ ॥ मामोऽ२३४वा ।

द्राऽ५इभोऽ६ँ हाइ ॥ (दी.८। प.९। मा.७)११(ढे । ९६४)

(५१२-१२) ॥ सोमऋतवीयम्, माण्डवं वा । सोमक्रतुर्बृहती सोमः ॥

परीतोषाऽ२इ । चतासुताऽ२म् । ऐहीऽ२ । ऐहीऽ२ । ऐहिहाऽ२इ । उवाऽ२इ ।

ईऽ३या ॥ सोमोयऊऽ२ । तमँ हावीऽ२ः । ऐहीऽ२ । ऐहीऽ२ । ऐहिहाऽ२इ ।

उवाऽ२इ । ईऽ३या । दधन्वाँ योनर्योऽ२ । प्सुवन्ताराऽ२ । ऐहीऽ२ । ऐहीऽ२ ।

ऐहिहाऽ२इ । उवाऽ२इ । ईऽ३या ॥ सुषावसोऽ२ । ममद्रिभाऽ२इ । ऐहीऽ२ ।

ऐहीऽ२ । ऐहिहाऽ२इ । उवाऽ२इ । ईऽ३याऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.२०। प.३०। मा.१४)१२(मी । ९६५)

(५१२-१३) || गूर्द्दः । प्रजापतिर्बृहती सोमः ||

उपाउपा । उपाऽ३१ । उपाउपा । परीतोषिञ्चतासुतम् ॥ उपाउपा । उपाऽ३१ । उपाउपा ।
सोमोयउत्तमँ्हाविः ॥ उपाउपा । उपाऽ३१ । उपाउपा । दधन्वाँ्योनर्योऽ३प्सुवन्तारा ॥
उपाउपा । उपाऽ३१ । उपाउपा । सुषावसोमामाद्रिभिः । उपाउपा । उपाऽ३१।
उपाऽ३ऊऽ५पाऽ६ँ्५६ँ् । ऊऽ२३४पा ॥ (दी.११। प.२०।म.१४)१३(ज्वी । ९६६)

(५१२-१४) || प्रतोदः । कश्यपो बृहती सोमः ||

हाउहाउहाउवा । परीतोषिञ्चतासुतम् । उपाऽ२३४५ ॥१॥

(५१२-१५) || अंगिरसां गोष्ठः । अंगिरसो बृहतीसोमः ||

हाउहाउहाउवा । षरीतोषिञ्चतासुतम् । इहा । उपाऽ२३४५ ॥२॥

(५१२-१६) || पुस्ति । अंगिरसो बृहतीसोमः ||

हाउहाउहाउवा । परीतोषिञ्चतासुतम् । श्रवोबृहत् । उपाऽ२३४५ ॥३॥

(५१२-१७) || महारौरवम् रुरुर्बृहती सोमः ||

हाउहाउहाउवा । परीतोषिञ्चतासुतम् ॥ सोमोऽ२यउत्तामँ्हाविः ॥ दधन्वाँ्-
योनर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥ सुषावासोऽ२३४५ । हाउहाउहाउवा ॥ एऽ३ ।
मामद्रिभीऽ२३४५ः ॥ (दी.२०। प.१९ । मा.२३)१४(मि । ९६७)

(५१२-१५) ॥ महायौधाजयम् । युधाजिद् बृहती सोमः ॥

हाओऽ२३४वा । हाओऽ२३४वा । हाऽ३ओऽ२३४वा । हाउवा । परीतोषिञ्चता-
सुतम् ॥ सोमोऽ२यउत्तामँ हाविः ॥ दधन्वाँ योनर्योऽ२प्सुवन्तारा ॥ सुषावसोममा ।
हाओऽ२३४वा । हाओऽ२३४वा । हाऽ३ओऽ२३४वा । हाउवाऽ३ ॥
द्राऽ३इभी२३४५ः ॥ (दी.११। प.१३। मा.१३)१५(गी । ९६८)

(५१३-१) ॥ आश्वानि चत्वारि । चतुर्णामश्वो बृहत्यश्वः ईश्वरो वा ॥

आऽ२३४सो ॥ मस्वानोऽ३आ । द्राइभाओऽ२३४वा । तिरोवाराऽ२णि-
अव्ययाऽ२३ । जानाओऽ२४वा । नापाओऽ२३४वा ॥ रिचामुवोऽ२र्विशद्धरीऽ२३ः ॥
सादाओऽ२३४वा ॥ वानाओऽ२३४वा ॥ षुदाऽ५भ्रिषाइ । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१२। मा.११)१६(ख । ९६९)

(५१३-२) ॥ सोमसाम ॥

हावासोमस्वा ॥ नोअद्राऽ२३४इभीः । तिरोवाऽ२३४रा । णियाऽ३१उवाऽ२३ ।
व्याऽ२३४या ॥ जनोनाऽ२३४पू ॥ राइचामूऽ२३४वोः । विशाऽ३१उवाऽ२३ ।
हाऽ२३४रीः ॥ सद्रोवाऽ२३४ने । षुदाऽ३१उवाऽ२३ । ध्रीऽ२३४षे ॥

(दी.३। प.१२। मा.९)१७(ठो । ९७०)

(५१३-३)

आसोमस्वानोअद्रिभाइः ॥ तिरोवाराणिआव्याऽ१याऽ२ । जनोनपुरिचामूऽ१-
वोऽ२ः । विशाद्धाऽ१रीऽ२ः ॥ सदोवानाइ ॥ षूऽ२दाध्रिषोऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.९। प.७। मा.८)१८(थै । ९७१)

(५१३-४)

आसोमस्वानोअद्रिभिः । तिरोवाऽ३राणिअव्यया ॥ जनोनपुरिचमुवोर्विशद्धरिः ।
औऽ२ । हुवाइ । होऽ३वा ॥ सदोवनेषुदौऽ२ । हुवाइ । होऽ३वा । ध्रिषा ।
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.१०। प.१३। मा.७)१९(बे । ९७२)

(५१४-१) ॥ त्रिणिधनमाग्नेयम् अग्निर्बृहती सोमः ॥

प्रसोमदा ॥ वावीताऽ२३४याइ । सिन्धूर्नापाइप्यआऽ३१उवाऽ२३ । णाऽ२३४सा ।
आ ँ्शोःपाऽ२३४या ॥ सामदाइरोनंजाऽ३१उवाऽ२३ । गृऽ२३४वीः ॥
आच्छाकोऽ२३४शाम् ॥ मधाऽ३१उवा२३ ॥ श्रूऽ२३४ताम् ॥

(दी.३। प.१०। मा.१०)२०(णौ । ९७३)

(५१४-२) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य साम । अग्निर्बृहती सोमः ॥

प्रासोमदेवावी । तयोऽ२३४हाइ ॥ सिन्धुर्नपिप्येआ । णसो२३४हाइ ॥ आँ्शा-
ओऽ२३४वा । पायाओऽ२३४वा ॥ सामदिरोनाजा ॥ गृऽ२३४ । वीऽ६ँ्हाइ॥
आच्छाओऽ२३४वा । कोशाओऽ२३४वा ॥ मधूऽ५श्रुताम् । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.७ । प.१४। मा.१०)२१(झौ । ९७४)

(५१४-३) ॥ द्विहिङ्कारं वामदेव्यम् । वामदेवो बृहती सोमः ॥

प्रासोमाऽ२३देवावीतयाइ ॥ साइन्धुर्नपिप्येअर्णसाँ्शोःपयसामदिरोनाजौहोऽ३।
हिम्माऽ२ । गृऽ२३वीः ॥ अच्छाकोशाम्माधौहोऽ३ । हिम्माऽ२ ॥ श्रुताम् ।
औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.११। पा.१०। मा.६)२२(ङू । ९७५)

(५१४-४) ॥ उत्सेधः । अंगिरसो बृहती सोमः ॥

प्रासोमादेवावीताये । सिन्धुः । नापाऽ३४औहोवा । प्येअर्णसाऽ२ । हाऽ३१उवाऽ२३ ।
ऊऽ३४पा ॥ अँ्शोऽ३ःपया । औहोवाहाइ ॥ सामादिरो । नजागृविः ।
हाऽ३१उवाऽ२३ । ऊऽ३४पा ॥ अच्छाऽ३कोशम् । औहोवाहाइ ॥ माधूऽ३-
श्चूऽ५ताऽ६ँ्५६ँ्म् ॥ ऊऽ२३४५ ॥ (दी.११। प.१६। मा.१०)२३(क्यौ।९७६)

(५१४-५) ॥ निषेधः । अंगिरसो बृहती सोमः ॥

प्रसोमदाइवाऽ६ँ्वीतयाइ ॥ सिन्धूर्नापाइ । प्येअर्णासाऽ२ । इहाऽ३ ॥ आँ्शो-
ऽ३ःपाया । हाहोऽ२३४हा ॥ सामादिरो । नजागृऽ२३वीः । इहाऽ३ ॥ आच्छा-
ऽ३कोशाम् । हाहोऽ२३४हा ॥ माधूऽ३श्चूऽ५ताऽ६ँ्५६ँ्म् ॥ हेऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.१३। मा.७)२४(बै । ९७७)

(५१५-१) ॥ सोम सामानि षट् । षण्णां सोमो बृहती सोमाश्वौ ॥

हाउसोमाः ॥ उष्वाणाऽ३ःसोतृऽ१भीऽ२ः । आधिष्णुमिरावीऽ२नाम् । आश्वौऽ३हो ॥
येवहरितायाताइधाऽ१रयाऽ२ ॥ मन्द्रायाऽ३याऽ३४ । हाओवा ॥
तिधारायाऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.८। मा.६)२५(डू। ९७८)

(५१५-२)

सोमऊऽ३ष्वाणःसोतृभाइः ॥ आधिष्णुभिरवीनाम् । आश्वायेऽ२३४वा ।
हरितायातिधाऽ१राऽ३या ॥ मद्रायाऽ२३४या ॥ ताऽ२३४इधा । राया ।
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.७। प.१०। मा.६)२६(जू। ९७९)

(५१५-३)

सोमउष्वाणःसोतृभिः । एऽ५ । अधी ॥ ष्णुमिराऽ३१उवाऽ२३ । वीऽ२३४नाम् ॥
आऽ२३श्वा ॥ येवहरितायातिधाऽ३१उवाऽ२३ । राऽ२३४या ॥ माऽ२३न्द्रा ॥
यायातिधाऽ३१उवाऽ२३ ॥ राऽ२३४या ॥

(दी.७। प.११। मा.६)२७(चू। ९८०)

(५१५-४)

सोमउष्वाणःसोतृभिः । एऽ५ । अधी ॥ ष्णुभिरावीऽ२ । नाम् । आश्वयेव ।
हारितायाऽ२ । ताइधारया । मान्द्रयायौवा ॥ तीऽ२३४धा । राया । औऽ३होवा ।
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.७। प.१४। मा.५)२८(झु। ९८१)

(५१५-५)

४र५ र ४ ५र ४ ५ ४ ५ ४५र १ २ १ २ १विर १
सोमउष्वाणःसोतृ । भाइ । आधिष्णुभिरवी । नाम् ॥ आधिष्णुभिरावीऽ२ । नाम् ।
ते त तै प के क

र २ १ र र २ ५
अश्वयेवा । हरितायाताऽ२३इधा । रयाऽ३१उवा२३ ॥ माऽ२३४न्द्रा ॥
क जा छौ दू

२ ३ ५ ३ २ ३र ४ ५ ४
यायातीऽ२३४धा ॥ रायाऔहोवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
से दू ता प

(दी.९। प.१४। मा.८)२९(धै । ९८२)

(५१५-६)

३र ४ र ३ ४र ५ न २ १ ५ ४ ५र
सोमउष्वाणःसोतृभिः । औऽ३होऽ३इ । आऽ२३४ । धिष्णुभिरवीनाम् ॥
ठी खू की तै

१ २र र र १ २ ३ ५ २ १ र २ २
आश्वयेवहरिताया । तिधारायौ । वाओऽ२३४वा ॥ मन्द्रायायातीऽ३धा ॥
का चो शे जा

न २ २ ॥ ५
हिम्ऽ३हिम्ऽ३४३ । राऽ३४५योऽ६ँहाइ ॥
खौ चु

(दी.८। प.१०। मा.८)३०(णै । ९८३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशः प्रपाठकः ॥१४॥

(५१६-१) ॥ वैष्णवे द्वे । द्वयोर्विष्णुर्बृहती सोमः ॥

तवाहँ्सो ॥ मराऽ२राणा । रणा । सख्यइन्दोदिवाऽ२इदिवाइ । दिवे ।
पुरुणिबभ्रोनिचरन्तिमाऽ२मावा । अवा ॥ परिधीँ्रतिताऽ२ँ्इहाऽ२३इ ।आऽ२इ ।
हाऽ२३४ । औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.८। प.१२। मा.६)१(ठ्लू । ९८४)

(५१६-२)

तावा । तावा ॥ आहँ्सोमरारणा । सख्याईऽ३न्दो । दिवाऔऽ३हो । दाइवेऽ२ ।
पुरुणिबभ्रोनिचरन्तिमाऽ१माऽ३वा ॥ पाराऔऽ३हो ॥ धाइँ्रातितोऽ२३४वा।
आऽ५इहोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.५। प.१०। मा.७)२(मे । ९८५)

(५१६-३) ॥ आंगिरसानि त्रीणि । त्रयाणामंगिरसो बृहती सोमः ॥

तवाहँ्सोमाऽ६ँ्रारणा ॥ साख्याईऽ२३४न्दो । दिवेदाऽ२३४इवे । पुरुणिबभ्रोनि-
चारन्तिमाम् । आवाऽ२३४हाइ ॥ पारीधाइँ्रा ॥ तितोऽ२३४वा ।
आऽ५इहोऽ६ँ्हाइ ॥ (दी.६। प.८। मा.७)३(गे । ९८६)

(५१६-४)

तावाहँ्सोमरौ । होऽ५राणा ॥ साख्यइन्दोऽ२ ॥ दिवाऽ३४इ । दीऽ२३४वे ।
पूरूऽ२णाइवाऽ२ । भ्रोनिचराऽ२ । तिमाऽ३४५म् । आऽ२३४वा ॥
पारीऽ२धाइँ्राऽ२ ॥ तितँ्ऽ३४५ ॥ ईऽ२३४ही ॥ (दी४। प.१२। मा.५)४(थु । ९८७)

(५१६-५)

तावाह ँ सोमरारण । सख्याइन्दोदिवेदिवाइ ॥ सख्यइन्दोदिवेदाऽ२३इवे ।
पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामाऽ२३वा ॥ पाराइधाऽ२३इ ँ रा ॥ तित ँ ऽ२३इहाऽ३४३इ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१०। प.८। मा.९)५(बो । ९८८)

(५१७-१) ॥ औक्ष्णोरंध्राणि त्रीणि (स्वारम्) त्रयाणामुक्ष्णोरन्ध्रो बृहती सोमः ॥

मृज्यमानाः ॥ सुहस्तियाऽ३ । सामूऽ३द्राइवा । चमिन्वसाऽ३इ । रायीऽ३म्पाइशा ।
गंबहुलाऽ३म् । पूरूऽ२स्पृऽ२३४हाम् । पवमा । ना । औऽ३हो ॥ भियोऽ२३४वा ।
षाऽ५सोऽ६ ँ हाइ ॥ (दी.२। प.१२। मा.७)६(छे । ९८९)

(५१७-२)

मृज्यमानाः ॥ सुहस्तायाऽ२ । सामुद्रेवा । चामिन्वासाऽ२३४इ ॥ राया-
ऽ३४इम्पिशा । गंबहुलंपूरुस्पृहाऽ२म् ॥ पवाऽ२३ । माऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥
भियाऽ२र्षासीऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.९। मा.५)७(घु । ९९०)

(५१७-३)

मृज्यमानाः ॥ सुह । स्तिया । साऽ१मूऽ२द्राइवाऽ२ । चमि । न्वसाइ ।
राऽ१यीऽ२म्पाइशाऽ२ । गंबाहुलंपुरु । स्पृहाम् ॥ पाऽ१वाऽ२मानाऽ२३ ॥
भाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ षाऽ२३४सी ॥

(दी.३ । प.१२। मा.६)८(दू । ९९१)

(५१७-४) ॥ आग्नेयानि त्रीणि । त्रयाणामग्निर्बृहती सोमः ॥

५ ५ १र २ २ १ र र २ २
मृज्याऽ६ ँ्ए ॥ मानःसुहस्तियाऔऽ३हो । समुद्रेवाचमिन्वसाऔऽ३हो ।
पा कः जा

१ २ २ १ २ २ १ ५
रायिंपिशंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽ३हो ॥ पावमाऽ२३नाऽ३ ॥ भियोऽ२३४वा ।
जा जि छ

४ ५
षाऽ५सोऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.३ । प.७। मा.५)९(ठु । ९९२)
ति

(५१७-५)

५ ४५र ४ ५ २ १ अ ३ ५
मृज्यमानःसुहस्त्यो । वाहाइ ॥ समुद्राइवा । चामीऽ२न्वाऽ२३४सी ।
फि ता र डु

३ २ ३ २ १ २ १ अ ३ २ ३र २
रायाऽ३४इम्पिशा । गंबाहुलम् । पूरुस्पृहाऽ२३४म् ॥ पावाऽ३४मानाऽ३ ॥
यू का घु ड

२ १ ५ ४ ५
भियोऽ२३४वा । षाऽ५सोऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.२।प.१०।मा.६)१०(ञु ।९९३)
छ ति

(५१७-६)

४ र ४ १ — १ — १ — १ —
मृज्यमानाऽ५ःसुहस्तिया ॥ समूऽ२द्राइवाऽ२ । चमाऽ२इन्वासीऽ२ ।
ती घि घि

१ २ २ १ २ १ ५
रायिंपिशंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽ३हो । पावामाऽ२३नाऽ३ । भियोऽ२३४वा ।
जा जि छ

४ ५
षाऽ५सोऽ६ ँ्हाइ ॥ (दी.१। प.७।·मा.४)११(खी।९९४)
ति

(५१७-७) ॥ ऐडमौक्ष्णोरन्ध्रम् । उक्ष्णोरन्ध्रो बृहती सोमः ॥

५ ४ ५र र र ४ ५ १ २ १ अ २ २ २
मृज्यामानःसुहस्त्या । समुद्रेवोवा ॥ चामिन्वसि । रायिंपिशा३ । हाऽ३हा ।
पै पै का धी वै

१ २ १ २ १२ १ २ २ १ २
गंबाहुलंपुरुस्पृहम् ॥ पवमानाऽ३ । हाऽ३हा ॥ भीयर्षाऽ२३साऽ३४३इ ।
के कि वै णु

१
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११। मा.३)१२(टि । ९९५)
कु प

(५१७-८) ॥ वाजजित् । प्रजापतिर्बृहती सोमः ॥

मृज्यामानःसुहा ॥ स्तियाऽ२ । समूऽ२हो । द्रेवाऽ२हो । चामिन्वसाइ ।

रयाऽ२इ ँहोइ । पिशाऽ२हो । गम्बहुलाम् । पूरुस्पृहाम् ॥ पवाऽ२हो ।

मानाऽ२हो ॥ भीयर्षासाऽ३१उवाऽ२३ ॥ वाजीजिगीऽ३वँऽ१ ॥

(दी.८। प.१३। मा.६)१३(डूं । ९९६)

(५१८-१) ॥ वैश्वदेवे द्वे । द्वयोर्विश्वेदेवा बृहती सोमः ॥

हाऽ३हाइ । अभिसोमासाऽ३आयाऽ१वाऽ२३ः ॥ हाऽ३हाइ । पवन्तेमदिऽ३-

याम्माऽ१दाऽ२३म् ॥ हाऽ३हाइ । समुद्रस्याधिविष्टपेमाऽ३नाइषाऽ१इणाऽ२३ः ॥

हाऽ३हाइ । मत्सरासोमाऽ३दाच्यूऽ१ताऽ२३ः । हाऽ३हाऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥

डा ॥ (दी.७ । प.११। मा.१३)१४(चि । ९९७)

(५१८-२)

आभीसोमा ॥ सआऽ३१उवाऽ२३ । याऽ२३४वाः । पावन्ताइमा ।

दियाऽ३१उवाऽ२३ । माऽ२३४दाम् । सामुद्रस्या ॥ धिविष्टापेमनाऽ३१उवा-

येऽ३ । षीऽ२३४णाः । मात्सारासाः ॥ मदाऽ३१उवाऽ२३ ॥ च्यूऽ२३४ताः ॥

(दी.१ । प.१२। मा.११)१५(ख । ९९८)

(५१८-३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे । द्वयोरिन्द्रो बृहती सोमः ॥

आभिसोऽ३मासआयवाः ॥ पवन्तेमदियम्मा । दा । औऽ३हो । आऔऽ३हो ॥
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषि । णा । औऽ३हो । आऔऽ३हो । मत्सरासोमदच्यु ।
ता । औऽ३हो ॥ आऔऽ३होऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.१५। मा.६)१६(णू । ९९९)

(५१८-४)

आभिसोमासआ । होऽ५यावाः ॥ पवन्तेमद्यम्मदम्पवन्तेमा । दिया ँ होइ ।
माऽ२३दाम् ॥ समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणाः । मानाहोइ । षाऽ२३इणाः ।
मत्सरासोमदच्युताः । मादाहोइ । च्यूऽ२३ताऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा॥

(दी.१०। प.१३। मा.१२)१७(बा । १०००)

(५१८-५) ॥ स्वःपृष्ठमांगिरसम् । अंगिरसां बृहती सोमः ॥

अभाऽ२इसोमाऽ३४ । औहोऽ५सआयवाः ॥ पवाऽ२न्तेमाऽ३४ । औहोऽ५-
दियम्मदाम् । समूऽ२द्रस्याऽ३४ । औहोऽ५धिविष्टपाइ । ओयेऽ३ ।
माऽ२नाऽ२३४औहोवा । षीऽ२३४णाः । ऊऽ२३४पा । ऊऽ२३४पा ॥
मत्सारासोऽ२३ ॥ माऽ२दाऽ२३४औहोवा ॥ च्यूऽ२३४ताः ॥

(दी.११। प.१४। मा.९)१८(घो । १००१)

(५१८-६) ॥ इन्द्रसामानि त्रीणि । त्रयाणामिन्द्रो बृहती सोमः ॥

४र ५र ४ ५ ४ र ५र र ४ ५ ४र ५र ४ १ ३र २ ४
औहोवा । आमिसोमासआयावाः । औहोवा । पवाऽ२ । तेमाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ।
ती फी ती का टो

२ १२ १ ३ २ ४ २ १ विर र १ विर
दियम्मादम् । समूऽ२ ॥ द्रस्याऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ । धिविष्टापेऽ२मनीषिणाऽ२ः।
चो का टो छु

न २ ३र २ ४ २ १ २ ।।।
औऽ३होऽ३१इ ॥ मत्साऽ२ ॥ रासाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ ॥ मदच्युताऽ२३४५ः ॥
गि का टो शि

(दी.१२। प.१३। मा.९)१९(जो । १००२)

(५१८-७)

५ र र र ५ १ ३र २ ४ २ १२ १
अमिसोमासआयाऽ६ँवाः । पवाऽ२ । तेमाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ । दियंमादम् । समूऽ२ ।
पा का टो चो का

३ २ ४ २ १ विर र १ विर १ ३र २ ४
द्रस्याऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ। धिविष्टापेऽ२मनीषिणाऽ२ः । मत्साऽ२ ।रासाऽ३ओऽ५-
टो छु का

२ १ ३ ।।।
वाऽ६ँ५६ँ । मदच्युताऽ२३४५ः । (दी.८। प.१०। मा.८)२०(गै । १००३)
टो शि

(५१८-८)

५ र र र ५ १ अ ३ ५ ३ २ १
अमिसोमासआयाऽ६ँवाः ॥ पवन्ताइमा । दियाऽ२म्माऽ२३४दाम् । समुद्रस्या।
पा क डु या

२ १ २ ४ ५ १ २र १ १ ३ ५र र
धिविष्टपाइ । मानाऽ३इषाइणाः ॥ मात्सारासोऽ२३॥ माऽ२दाऽ२३४औहोवा।
र कु घी वे

३ ५
च्यूऽ२३४ताः ॥ (दी.६। प.९। मा.१०)२१(घौ । १००४)
दू

(५१९-१) ॥ सोमसाम । सोमो बृहती सोमः ॥

५ र४ ५र ४र५ ४ १र र अ — १ र र
पुनानःसोमजागृविरव्याः ॥ वारैःपारिप्रियाऽ२ः । त्वंविप्रोअभवोङ्गाइराऽ२३४ ।
फु धि की

३ २ १ २र १ १ ३ ५र र ३ ५
स्तामाऽ३ ॥ माध्वायज्ञाऽ२३म् ॥ माऽ२इमाऽ२३४औहोवा ॥ क्षाऽ२३४णाः ॥
टी घी वे दू

(दी.१०। प.७। मा.८)२२(फै ।१००५)

(५२०-१) ॥ सोमसाम । सोमो बृहतीन्द्रो मरुत्वान् ॥

इन्द्रायपा ॥ वाताऽ२इमादाऽ२ः । सोमोमरुत्वताऽ२इसूताऽ२ः । स । हास्त्रधारः ।
अतिअव्यमाऽ२र्षातीऽ२ ॥ तामाऽ२इमार्जाऽ२ ॥ तिआयाऽ२३वाऽ३४३ः ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१०। मा.१०)२३(मौ । १००६)

(५२०-२) ॥ स्वः पृष्ठमांगिरसम् । अंगिरसो बृहतीन्द्रो मरुत्वान् ॥

इन्द्रायपा ॥ वतेमदाः । सोमोमारूऽ२ । त्वतेहोऽ२इ । सूताऽ२ः । स ।
हास्त्रधारः । अतिअव्यमा । षाताओऽ२३४वा । ऊऽ२३४पा ॥ तमीहोऽ२इ ।
मार्जाऽ२ ॥ तिआयाऽ२३वा३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.१५। मा.१०)२४(ञौ । १००७)

(५२०-३) ॥ सोमसाम । सोमो बृहतीन्द्रो मरुत्वान् ॥

इन्द्रायाऽ३पावताइमदाः ॥ सोमोमरुत्वाताऽ१इसूऽ३ताः । स । हास्त्रधारः ॥
अतिअव्यमाऽ३ । षाती ॥ तामाऔऽ३होऽ३इ । मार्जा ॥ ताऽ२याऽ२३४औहोवा ॥
याऽ२३४वाः ॥ (दी.६। प.१०। मा.१०)२५(ञौ । १००८)

(५२१-१) ॥ सोमसाम । देवाःदेवताः सोमश्च ॥

पावस्ववाजासा । इहा ॥ ताऽ२३४माः । आभिविश्वानिवारिया । त्वँसाऽ२-
मूऽ२३४औहोवा । द्रःप्राथमेविधर्मन् ॥ दाइवायेऽ३ ॥ भ्याऽ२स्सोऽ२३४औहोवा ॥
ममत्सराऽ१ः ॥ (दी.१० । प.९ । मा.६)२६(भू । १००९)

(५२२-१) || पवित्रम् । आदित्योबृहतीमरुत्वान्त्सोमः ||

४ ५ र र ४ १ र र र र २ २ १
पवमानाअसृक्षतपवाइ || त्रामतिधारयामरुत्वन्तोमत्सराइन्द्रीऽ३याः || हायाः ||
ती कः र

२ १ २ १ ३ ५र र ३ ५
माऽ२३इधाम् || अभायेऽ३ । प्राऽ२याऽ२३४औहोवा || सीऽ२३४चा ||
कः कि वे दू

(दी.८। प.७। मा.८)२७(ठै । १०१०)

त्रिःसप्ततिःपञ्चमः खण्डः ||५|| दशतिः ||३||

(५२३-१) || औशनानि पञ्च । उशनास्त्रिष्टुबश्वः अग्निर्वा ||

२ ३ ५ ३ २ २ १ २ २ ३ ४ ५ २ ३ ५ ३ २
ओइप्रातु । इहाऽ३१ । द्रावा । परिकोऽ३ । शन्निषीदा || ओइनृभिः ।इहाऽ३१ ।
ची वि र कि ची ची वि

२ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ ३ ५ ३ २ २ १ २ १
पुना । नोऽ३आभि । वाजमर्षा || ओआश्वम् ।-इहाऽ३१ । नत्वा । वाऽ३जिनम् ।
र रा ची ची वि र रा

२ ३ ४ ५ २ ३ ५ ३ २ २ १ २ १ र २
मर्जयन्ताः || ओआच्छा । इहाऽ३१ । बर्हाइः । रशना । भाऽ३४३इः ।
ची ची वि र र थै

२ ४
नाऽ३याऽ५न्ताऽ६ँ५६ँइ ||
धू

(दी.१ । प.२१। मा.१४)२८(की । १०११)

(५२३-२) || वृषौशनंसाम ||

४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४ ५
प्रातु । एप्रातू । द्रावा । द्रावा । परिकोऽ३ । शन्निषीदा || नृभिः । एनृभीः ।
ता ता र र कि ची ता ता

२ १ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
पुना । पुना । नोऽ३आभि । वाजामर्षा || आश्वम् । एआश्वाम् । नत्वा । नत्वा ।
र र रा ची ता ता र र

२ १ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ १र२
वाऽ३जिनम् । मर्जायन्ताः || आच्छा । एआच्छा । बर्हाइ । बर्हाइः । रशनाभिः ।
रा ची ता ता र क चो

३ २ ५ ५ ३ । । ।
नायेऽ३४ । हियाऽ६ँहाउवा || ताऽ२३४५इ ||
इ पा दू

(दी.१ । प.२६। मा.१५)२९(कु । १०१२)

(५२३-३) ॥ जानस्याभीवर्तौ द्वौ ॥

प्रातुद्रा ॥ वापरिकोशाम् । निषीऽ३दा । साइदा । औहोइ । औहोऽ३वा ।
नृभिःपुनानोअभिवा । जामाऽ२३र्षा । आर्षा । औहोइ । औहोऽ३वा ।
अश्वन्नत्वावाजिनम्मा । जायाऽ२३न्ताः । यान्ता । औहोइ । औहोऽ३वा ॥
अच्छाबर्हाइः ॥ राशानाभिः । नायेऽ३४ । हियाऽ६ँहाउवा ॥ ताऽ२३४५इ ॥

(दी.१३। प.२१। मा.१२)३०(टा । १०१३)

(५२३-४)

हाओऽ६ँहा । उहुवाऽ३४ । ओऽ६ँहा । प्रातुद्रवा । परिकोऽ३ । शन्निषीदा ॥
नृभाइःपुना । नोऽ३आभि । वाजामर्षा ॥ अश्वन्नत्वा । वाऽ३जिनम् । मर्जायन्ताः ॥
हाओऽ६ँहा । उहुवाऽ३४ । ओऽ६ँहा । अच्छाबर्हाइः । राशाना । भाऽ३४३इः ।
नाऽ३याऽ५न्ताऽ६ँ५ऽ६ँइ ॥ (दी.४। प.१९। मा.११)३१(घ । १०१४)

(५२३-५) ॥ त्रिष्टुबौशनम् ॥

प्रातू ॥ द्रवापरिकोशाम् । निषीऽ३दा । नृभाइःपुना । नोऽ३आभि । वाजामर्षा ॥
अश्वन्नत्वावाजिनम्मा । जायाऽ२३न्ताः ॥ अच्छाबर्हाइः । राशाना । भाऽ३४३इः ।
नाऽ३याऽ५न्ताऽ६ँ५ऽ६ँइ ॥ (दी.५। प.१२ । मा.९)३२(फो । १०१५)

(५२४-१) ॥ वाराहाणि चत्वारि । चतुर्णां वराहस्त्रिष्टुब्देववराहौ ॥

४ १र — १ — १ २ १रर — १र —
प्रा ॥ कावियाऽ२म् । उशनेवाऽ२ । ब्रुवाऽ२३णाः । देवोदेवाऽ२ । नाऽऽनिमाऽ२ ।
त का का जा का का
१ २ १ — १ — १ २ १ र —
विवाऽ२३त्ती ॥ महिव्राताऽ२ः । शुचिबन्धूऽ२ः । पवाऽ२३काः ॥ पदावाराऽ२ ।
जा का का जा का
१र ३ २ ५र र ३ ।।।
होअभियाऽ२इ । तिराऽ३४औहोवा ॥ भाऽ२३४५न् ॥
का ठे दृ

(दी.८। प.१४। मा.९)३३(ढो । १०१६)

(५२४-२)

१ र — १ — १ — १र र — १र —
प्रकावियाऽ२म् । उशनेवाऽ२ । ब्रुवाणाऽ२ः ॥ देवोदेवाऽ२ । नाऽऽनिमाऽ२ ।
का का चो का का
१ — १ — १ — १ — १ र —
विवात्तीऽ२ ॥ महिव्राताऽ२ः । शुचिबन्धूऽ२ः । पावाकाऽ२ः ॥ पदावाराऽ२ ।
चो का का चो का
१ ३ २ ५र र २१र३ ।।।
होऽ२ । भियाऽ३४औहोवा ॥ तिरैभाऽ२३४५न् ॥
का टे शि

(दी.८। प.१३। मा.७)३४(डे । १०१७)

(५२४-३)

२ र र १ २ ३ ५ २ररर र १ २ ३
प्रकाव्यमुशनेवब्रूऽ३वाणो । देऽ२३४वाः ॥ देवानाऽऽनिमाविऽ३वात्ती । माऽ२३४-
छो दृ छो
५ २ १ २ ३ ५ २ र र र १
ही ॥ व्रतःशुचिबन्धुःपाऽ३वाकाः । पाऽ२३४दा ॥ वराहोअभ्येतिराऽ२३ ।
दृ छो दृ चौ
२ ३ ।।।
हाउवाऽ३ ॥ भाऽ२३४५न् ॥ (दी.९। प.९। मा.५)३५(धु । १०१८)
चा दृ

(५२४-४)

५र र १ २१र २१र २३४५ २र१रर २ १
हाउहाउ । हुप् । प्राकावियाम् । उशने । वब्रुवाणाः ॥ देवोदेवा । नाऽ३आनि ।
प क र र ची र रा
२ ३४५ २१ २ २ ३४५ ५र र १ २१र
माविवक्ती ॥ माहिव्रताः । शुचिबाऽ३ । धुःपावाकाः ॥ हाउहाउ । हुप् । पादावरा ।
ची र कि ची प क र
२ १ २ २ ४
होऽ३आभि । आऽ३४३इ । तीऽ३राऽ५इमाऽ६ँ५६ँन् ॥
रा वै चू

(दी.१०। प.१७। मा.१४)३६(फी । १०१९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशस्यार्धः प्रपाठकः ॥

(५२५-१) ॥ संक्रोशास्त्रयः । त्रयाणामंगिरसत्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

१ २ १ २ १रर २ १ २३४५
होइ । हो । हाऽ३होइ । तिस्त्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः ॥१॥
क क रा र रा ची
१ १ २१रर २ १ २३४५
होइयाऽ२३होइ । तिस्त्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः ॥२॥
को र रा ची
२र १ १ २१रर २ १ २३४५
आ । होइयाऽ२३होइ । तिस्त्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः ॥३॥
च को र रा ची

॥ सामसुरसी द्वे । द्वयोः समसुरास्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

१ २१ न २ २१रर २ १
होइहा । इहोइहा । औऽ३होऽ३१इ । इहा । तिस्त्रोवाचाः । ईऽ३राया ।
क का गी क र रा
२३४५ १ २१ न २ २१रर
तिप्रावह्नीः ॥४॥ होइया । इयोइया । औऽ३होऽ३१इ । इया । तिस्त्रोवाचाः ।
ची क र गी क र
२ १ २३४५
ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः ॥५॥
रा ची

(दी.११।प. २९।मा.२२)१(घा । १०२०)

(५२५-२)

॥ वेणोर्विशाले द्वे । वेणुस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

३ २३५ २र १ ३र२ ३५ २ १रर २ १ २ ३ ४५
इहोइहा । इहोइहाऽ३हो । वाहोइहा । तिस्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः॥६॥
द्व रा द्व र रा ची

५ ४र २१ २ ५ ४ ४ २ १र १
इहोवाऽ५ । इहोवाऽ२३ । ईऽ३४हहाइ । ईऽ५ । इहा । तिस्रोवाचाः ।
पै चो ची ता त र

३ १ २ ३ ४ ५
ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः ॥७॥
रा ची

॥ तन्त्रातन्त्रे द्वे । गोतमास्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

२ १ २ ५ ४ २ १र र २ १ २ ३ ४ ५
इहोवाऽ२३ । ईऽ३४हहाइ । इहा । तिस्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावह्नीः॥८॥
चौ ची त र रा ची

१ २ २ १ २ २ ५रर २ २ १र र १
आऔऽ३हो । आऔऽ३होऽ३४ । औहोवा । हाऽ३हाइ । तिस्रोवाचाः । ईऽ३राया ।
कः वी प चे र रा

२ ३ ४ ५
तिप्रावह्नीः ॥९॥
ची

॥ अगस्त्यस्य यमिके द्वे । द्वयोरगस्त्यस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

१ २ र र २ ३र ४र ५ २ १र र २ १ २ ३ ४ ५
आ । औऽ३होवाहाऽ३४ । औहोवा । तिस्रोवाचाः । ईऽ३राया । तिप्रावाह्नीः ॥१०॥
क शु टा र रा ची

(दी.१९। प.३३। मा.१८)२(दै । १०२१)

(५२५-३)

३र २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
ओहाऽ३ । ओहाओहा । ऋतस्यधाइ । तीऽ३म्ब्रह्म । णोमानीषाम् ॥ ११ ॥
टी तु र रा ची

॥ वारवंतीये द्वे । द्वयोरिन्द्रस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

१ २ १ २ ३र २ १ २र १र २ १ २ ३ ४ ५
हाहाहोइ । हाहाहाहाहोइ । गावोयन्ताइ । गोऽ३पातिम् । पृच्छामानाः ॥१२॥
कै कं र रा ची

१ २ १ १ २ ३र २ १ २र १ २ १ २
इहाहोइ । इहाहाहाहोइ । सोमंयन्ताइ । मातयः । वाऽ३४३ ।
कै कं र र चै

२ ४
वाऽ३शाऽ५नाऽ६ँ५६ँ ॥१३॥ (दी. ६।प.१६।मा.१३)३(कि । १०२२)
षू

(५२६-१) ॥ अष्टौ वासिष्ठानि । षण्णां वसिष्ठस्त्रिष्टुब्देवाः उत्तरयोर्विश्वेदेवाः, ॥

अस्याऽ३४औहोवा । प्रेषा । हेऽ३माना । पूयमानाः ॥१॥ उहुवाइ ।

अस्याऽ३४औहोवा । प्रेषा । हेऽ३माना । पूयमानाः ॥२॥ हाइ । उहुवा ।

देवाऽ३४औहोवा । देवाइ । भीऽ३ःसामा । पृक्तारासाम् ॥३॥ हाउ । होइ ।

सुताऽ३४औहोवा । पावाइ । त्राऽ३म्पारि । एतिरेभान् ॥४॥ हा । हाऔहोइ।

मिताऽ३४औहोवा । वसा । द्माऽ३पाशु । मन्तिहोता । पशु । माऽ३४३ ।

तीऽ३होऽ५ताऽ६ँ५६ँ ॥५॥ (दी.१७। प.३०। मा.१७)४(जे । १०२३)

(५२६-२)

औहोवाहाऽ३होइ । इहा । अस्यप्रेषा । हेऽ३माना । पूयमानाः । देवोदेवाइ ।

भीऽ३ःसामा । पृक्तारासाम् । सुतःपवाइ । त्राऽ३म्पारि । एतिरेभान् ।

औहोवाहाऽ३होइ । इहा । मितेवसा । द्माऽ३पाशु । माऽ३४३ ।

तीऽ३होऽ५ताऽ६ँ५६ँ ॥६॥ (दी.१२।प.१७।मा.७)५(छे।१०२४)

(५२७-१) ॥ कालकाक्रन्दौ द्वौ ॥

सोमःपवतेजनितामाऽ३ताइनाऽ२म् ॥ जनितादिवोजनितापृऽ३थाइव्याऽ२ः ॥

जनिताग्रेर्जनितासू । रियाऽ२३स्या ॥ जनितेन्द्रा । स्याऽ३जानि । तोऽ३४३।

ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६ँ५६ँः ॥७॥

(दी.१०। प.८। मा.६)६(बू । १०२५)

(५२७-२)

-सोमःपवतेजनिता । एऽ३ । औऽ३होऽ५वा ॥ माताऽ२३४५इनाऽ६ँ५६ँम् ।

जनितादिवोजानितापृथिव्याः ॥ जनाऽ२इताऽ२३४ग्नेः ॥ जनिता । सूऽ३४३।

रीऽ३याऽ५स्याऽ६ँ५६ँ ॥ जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोऽ२३४५ः ॥ ८ ॥

(दी.१०। प.१०। मा.६)७(मू । १०२६)

(इत्यष्टौ वासिष्ठानि)

(५२७-३) ॥ जानित्रे द्वे । द्वयोर्वसिष्ठस्त्रिष्टुब्विश्वेदेवाः ॥

हाउजनत् । (त्रिः) । जनाद्धाउ । (त्रिः) । होइ । जनत् । (द्वे-द्विः) । होइ ।

जनात् । सोमःपवा । तेऽ३जानि । तामतीनाम् ॥ जनितादाइ । वोऽ३जानि ।

तापृथिव्याः ॥ जनिताग्नाइः । जानिता । सूरियस्या ॥ हाउजनत् (त्रिः) ।

जनाद्धाउ । (त्रिः)। होइ । जनत् । (द्वे-द्विः)। होइ । ज़नात् । जनितेन्द्रा ।

स्याऽ३जानि । तोऽ३४३ । ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६ँ५६ँ ॥

(दी.९। प.३७। मा.३७)८(थे । १०२७)

(५२७-४)

जनाद्धाउ । (त्रिः) । जनदाउ । (त्रिः) । जनत् । होइ । (द्वे-त्रिः) । सोमःपवा । तेऽ३जानि । तामातीनाम् ॥ जनितादाइ । वोऽ३जानि । तापृथिव्याः ॥ जनिताग्राइः । जानिता । सूरियस्या ॥ जनाद्धाउ । (त्रिः) । जनदाउ । (त्रिः) । जनत् । होइ । (द्वे-त्रिः) । जनितेन्द्रा । स्याऽ३जानि । तोऽ३४३ । ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६ँ५६ँः ॥ (दी.५। प.३७। मा.३१)९(फ । १०२८)

(५२८-१) ॥ अंगिरसां व्रतोपोहः, (सम्पा) । वसिष्ठास्त्रिष्टुब्वरुणः ॥

ओऽ३हाइ । ओऽ३हा । ओहा । इयाऽ२ । ओऽ३हाऽ३ए । आमित्रिपा । ष्ठाऽ३म्वृषा । णंवायोधाम् । अंगोषिणाम् । आवाव । शन्तवाणीः । वानावसा। नोऽ३वारु । णोनसिन्धूः ॥ ओऽ३हाइ । ओऽ३हा । ओहा । इयाऽ२ । ओऽ३हाऽ३ए । विरत्लधाः । दायते । वाऽ३४३ । रीऽ३याऽ५णाऽ६ँ५६ँइ ॥

(दी.६। प.२३। मा.१०)१०(गौ । १०२९)

(५२९-१) ॥ वैयश्वम् । व्यश्वस्त्रिष्टुप्सूर्यः ॥

हो । होइ । अक्रान्त्समुद्रःप्राथमेविधा । मान् ॥ हो । होइ । जनयन्प्राजाभुवनस्यगो । पाः ॥ हो । होइ । वृषापावित्रेआधिसानोऽ२आ । व्याइ ॥ हो । हो । बृहत्सोमोऽ२वावृधेस्वानोआ । द्रा । औऽ३होवाहाउवाऽ३ ॥ एऽ३ । स्वानोआ। द्रीऽ२३४५ः ॥ (दी.१८। प.२०। मा.१२)११(णा । १०३०)

(५३०-१) ॥ सोम सामनी द्वे । द्वयोः सोमः त्रिष्टुप्सोमः ॥

कानी । क्रान्तीऽ२क्रान्तीऽ२ । हरिरासृज्यमाऽ२३नाऽ३ः ॥ साइदान् ।
वानाऽ२वानाऽ२ । स्यजठरेपुनाऽ२३नाऽ३ः ॥ नृभीः । याताऽ२याताऽ२ः ।
कृणुतेनिर्णिजाऽ२३ङ्गाऽ३म् ॥ आताः । मातीऽ२म्मातीऽ२म् । जनयताऽ२३ ।
स्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा ॥ भीऽ२३४५ः ॥

(दी.५। प.१४। मा.११)१२(भ । १०३१)

(५३०-२)

कानिक्रन्तिहा । होइ । हारिरासृज्य । माऽ२३४नाः ॥ हाहोइ । सीदन्वनस्य-
जठरेपुनाऽ२३नाः ॥ हाहोइ । नृभिर्यतःकृणुतेनिर्णिजाऽ२३ङ्गाम् ॥ हाहोइ ।
अतोमताइम् । जानयताऽ२३ ॥ स्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा । भीऽ२३४५ः ॥

(दी.११। प.१३। मा.११)१३(ग । १०३२)

(५३१-१) ॥ ऐषम् । इषस्त्रिष्टुबिन्द्रसोमौ ॥

एषाएषाः ॥ स्याताऽ३१२३४इ । माधुमाःइन्द्रसोमः । वृषावृषाऽ६ँऽए ।
वृष्णाऽ३१२३४ः । पारिपवित्रेअक्षाः ॥ सहसहाऽ६ँऽए । स्रादाऽ३१२३४ः ।
शातादाभूरिदावा ॥ शश्वच्छश्वाऽ६ँऽदे । तामाऽ३१२३४म् । वर्हिरावाजियेऽ५।
हियाऽ६ँऽहाउवा ॥ स्थाऽ२३४५त् ॥

(दी.११। प.१४। मा.१४)१४(घी । १०३३)

(५३२-१) ॥ माधुच्छन्दसम् । मधुच्छन्दास्त्रिष्टुप्सोमः ॥

२ ३ ५ ३ २ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
हाओऽ२३४हाइ । इहाऽ३१ । पावस्वसो । माऽ३माधु । मा ँ्ऋतावा ॥
शे वि र रा ची

२ १र २ १ २ ३र४ ५ २ १ र २ १ २ ३ ४५
आपोवसा । नोऽ३आधि । सानोअव्याइ ॥ आवद्रोणा । नीऽ३घृत । वन्तिरोहा॥
र रा ची र रा ची

२ ३ ५ ३ २ २ १ २ १ २
हाओऽ२३४हाइ । इहाऽ३१ । मादिन्तमो । मत्सरः । आऽ३४३इ ।
शे वि र र थै

२ ४
द्राऽ३पाऽ५नाऽ६ ँ्५६ ँ्ः ॥ (दी.३। प.१७। मा.११)१५(ठ । १०३४)
चू

चतुर्विंशति षष्ठः खण्डः ॥६॥ दशतिः ॥४॥

(५३३-१) ॥ कुत्सस्याधिरथीयानि त्रीणि । त्रयाणांकुत्सस्त्रिष्टुप्सोमः ॥

३ ५ ३ २ ४ ५ २१र २र १ र र २ २ ३ ४ ५
होऽ४वा । उहुवाऽ३ । होवा । प्रासेनानाइः । शूरोआऽ३ । ग्राइरथानाम् ॥
टा टी ता रो कि ची

२ १ २र १ २ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ २ २ ३ ४ ५
गव्यन्नेताइ । हर्षताऽ३इ । अस्यसेना ॥ भद्रान्कृण्वान् । इन्द्राहाऽ३ । वान्त्साखिभ्याः ॥
रो कि ची रो कि ची

२र १र २र १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ ५ ३ २ ४ ५
आसोमोवा । स्त्राऽ३राभा । सानिदत्ताइ । होऽ४वा । उहुवाऽ३ । होवाऽ६ ँ् ॥
रो रा ची टा टी ति

५
हाउवा ॥ (दी.९। प.१९। मा.११)१६(ध । १०३५)
प

(५३३-२)

५र ४ २ ।।। २ १र २र १ र र २ २ ३ ४ ५ २ १ २र १
औहोऽ३वाऽ३४५ । प्रासेनानाइः । शूरोआऽ३ । ग्राइरथानाम् ॥ गव्यन्नेताइ ।
पौ रो कि ची रो

२ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५
हर्षताऽ३इ । अस्यासेना ॥ भद्रान्कृण्वान् । इन्द्राहाऽ३ । वान्त्साखिभ्याः ॥
कि ची रो कि ची

र ४ २ ।।। २र १र २र १ २ १ २ २ ४
औहोऽ३वाऽ३४५ । आसोमोवा । स्त्राऽ३राभा । साऽ३४३ । नीऽ३दाऽ५-
पौ रो रा थै

त्ताऽ६ ँ्५६ ँ्इ ॥ (दी.११। प.१५। मा.१०)१७(ञौ । १०३६)
चू

(५३३-३)

ओहोऽ३वाऽ३४५ । प्रसेनानाइः । शूरोआऽ३ । ग्राइरथानाम् ॥ गव्यन्नेताइ । हर्षताऽ३इ । अस्यासेना ॥ भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहाऽ३ । वान्त्साखिभ्याः ॥ ओहोऽ३वाऽ३४५ । आसोमोवा । स्राऽ३राभा । साऽ३४३ । नीऽ३दाऽ५ ॥ ताऽ२३४५इ ॥ (दी.११ । प.१६। मा.१०)१८(कौ । १०३७)

(५३४-१) ॥ वैश्वज्योतिषाणि त्रीणि । त्रयाणां विश्वज्योतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः ॥

हाउहोवाऽ३हाइ । प्रतेधारामधुमाऽ३ताइरासृग्राऽ२३४५न् ॥ हाउहोवाऽ३हाइ। वारंयत्पूतोअतिऽ३याइषिआव्याऽ२३४५म् । हाउहोवाऽ३हाइ । पवमान-पवसेऽ३धामागोनाऽ२३४५म् ॥ हाउहोवाऽ३हाइ । जनयन्त्सूर्यमाऽ३-पाइन्वोअर्काऽ२३४५इः । हाउहोवाऽ३हाउ ॥ वाऽ३४५ ॥

(दी.२०। प.१०। मा.२१)१९(म । १०३८)

(५३५-१) ॥ अस्य देवा देवता ॥

प्रागायता । अभिया । चामदेवान् ॥ सोमँहिनो । ताऽ३माहा । तेधानाया ॥ स्वादुःपवा । ताऽ३माति । वारमव्याम् ॥ आसीदतू । कालाशम् । दाऽ३४३इ। वाऽ३आऽ५इन्दूऽ६ँ५६ँः ॥ (दी.५। प.१३। मा.७)२०(बे । १०३९)

(५३६-१) ॥ इन्द्रोऽस्य देवता ॥

हाउहोवाऽ३हाइ । प्रहिन्वानोजनितारोऽ३४३दासीयोः ॥ हाउहोवाऽ३हाइ ।
रथोनवाजँसनिषाऽ३४३नायासीत् ॥ हाउहोवाऽ३हाइ । इन्द्रङ्गच्छन्नायुधा-
साऽ३४३ँशिशानाः ॥ हाउहोवाऽ३हाइ । विश्वावसुहस्तयोराऽ३४३दाधानाः ।
दधाऽ५नाउ ॥ वा ॥ (दी. २३ । प.१०। मा.१३)२१(णि । १०४०)

(५३७-१) ॥ वाचस्सामनी द्वे । द्वयोः वाकृत्रिष्टुप्वाक्सोमौ ॥

ताक्षाद्यदी । होऽ२३४५इ ॥ मनसोवेनाताः । वाऽ२३४५क् ॥ ज्येष्ठस्यधा ।
होऽ२३४५ ॥ मन्द्युक्षोरानी । काऽ२३४५इ ॥ आदीमायन् । होऽ२३४५इ ॥
वारामावावाशा । नाऽ२३४५ः ॥ जुष्टम्पातिम् । होऽ२३४५इ ॥ कलशेगाऽ५वः ।
इ । दाउ ॥ वा ॥ (दी.१३। प.१८. मा.११)२२(ड । १०४१)

(५३७-२)

तक्षाद्यदाऽ३१२३४इ । मानासोवेनाताः । वाऽ२३४५क् ॥ ज्येष्ठस्याधाऽ३१२३४।
मन्द्युक्षोरानी । काऽ२३४५इ ॥ आदाइमायाऽ३१२३४न् । वारामावावशा ।
नाऽ२३४५ः ॥ जुष्टम्पाताऽ३१२३४इम् । कलशेगाऽ५वः । इ । दाउ ॥ वा ॥
(दी.११। प.१४। मा.११)२३(ध । १०४२)

(५३८-१) ॥ दाशस्पत्ये द्वे । द्वयोर्दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः ॥

४ ५ १ र २ १ २ १ — १र र र २ १ २
साकाम् ॥ उक्षोमर्जयन्तस्वासाऽ२३राः । दाशाऽ२ । धीरस्यधीतयोधानूऽ२३त्रीः ॥
ता वै का घै

१ — १ र अ २ १ — १ र र
हारीऽ२ः । पर्यद्रवज्जाःसूरियाऽ२३स्या ॥ द्रोणाऽ२म् । ननक्षेअत्योनवाऽ२३ ।
का वै का कि

२ । । ।
हाउवाऽ३ ॥ जीऽ२३४५ ॥ (दी.७। प.१०। मा.७)२४(जे । १०४३)
चा दू

(५३८-२)

५र ५ २ ५ ४ ५र र ५ २
साकमुक्षाऽ६ँ्ए ॥ एऽ३१२३४ । मर्जयन्तस्वासारः । दशधीराऽ६ँ्ए । एऽ३१२३४।
पा छः तु पा छः

५र ४ ५र ४ ५ र ५ २ ५ ४र र ५
स्याधीतायोधानुत्रीः ॥ हरिःपर्याऽ६ँ्ए । एऽ३१२३४ । द्रावज्जाःसूर्यस्य ॥
तै पा छः तु

र ५ २ र ५र ४ ५ ५ ३ । । ।
द्रोणन्ननाऽ६ँ्ए । एऽ३१२३४ । क्षेअत्योनावाऽ६ँ। हाउवा ॥ जीऽ२३४५ ॥
पा छः तू प दू

(दी.११। पा.१४ । मा.८)२५(घे । १०४४)

(५३९-१) ॥ कश्यपस्य शोभनम् । कश्यपस्त्रिष्टुप्सूर्यः ॥

४ ५ ४ १ विर १ विर १ २ र १ र २ ३ ४ ५
आधियदा ॥ स्माइन्वाऽ२जिनीऽ२वाशु । भाः । स्पर्द्धन्तेधियःसू । राइनाविशाः ॥
ती गो क कै ची

२ १र र अ २ १ २ १ २
आपोवृणानःपवताइ । कावीऽ२३यान् । व्राजन्ना । पा । शुवर्द्धा । नाऽ३४३ ।
र झः र क क चै

२ ४
याऽ३माऽ५न्माऽ६ँ्५६ँ् ॥ (दी.६। प.१२। मा.६)२६(खू । १०४५)
चू

(५४०-१) ॥ दाशस्पत्यानि चत्वारि । चतुर्णां दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यसोमेन्द्राः सोमेन्द्रौ वा ॥

२ १ — १ र र २ १ ५ १ २
इन्दुऽ३र्वाजीऽ२ । पवतेगोनियोघाः ॥ इन्द्राइसोऽ२३४माः । साहइन्वन्मदाया ॥
छो का छ का

१ ५ १र र २ १ ५ २ १
हन्ताइराऽ२३४क्षाः । वाधतेपर्यरातिम् ॥ वाराइवा२३४स्कृ । ण्वन्वृजानाऽ२३ ।
छ का छ चौ

१ न २ ३ ५ ४
स्या । राऽ३जौवाओऽ२३४वा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (बी.४। प.१२। मा.१०)२७(थौ ।१०४६)
क खः ता प

(५४०-२)

इन्दुर्वाजीपावातौ । हौहोवाहाइ ॥ गोनियोघौ । वाओऽ२३४वा । इन्द्रेऽ२-
सोमाऽ२ःसाहाइ । न्वान्मादायौ । वाओऽ२३४वा ॥ हन्तिरक्षोबाधते । पार्यारातौ।
वाओऽ२३४वा ॥ वरिवस्कृण्वन्वृजनाऽ३ । स्या । राऽ३जौवाओऽ२३४वा ।
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.१०। प.१५। मा.७)२८(मे । १०४७)

(५४०-३)

इन्दुरौहोवाहाईया ॥ वाजाउ । वाऽ३ । हाउवा । पवतेगोनियोघाउ । वाऽ३ ।
हाउवा । इन्द्राइसोमः । सहइन्वाउ । वाऽ३ । हाउवाऽ३ । माऽ२दा-
ऽ२३४औहोवा । याऽ२३४५ ॥ हन्ताइरक्षो । बाधाताइपाउ । वाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥
र्याऽ२राऽ२३४औहोवा । तीऽ२३४५म् ॥ वाराइवास्कृ । ण्वन्वृजानाउ । वाऽ३।
हाउवाऽ३ । स्याऽ२राऽ२३४औहोवा ॥ जाऽ२३४५ ॥

(दी.१४। प.२५। मा.२१)२९(न । १०४८)

(५४०-४)

इन्दुर्वाजीपवतेगोनियोघाः ॥ इन्द्रेसोमःसहइन्वन्मदाया ॥ हन्तिरक्षोबाध-
तेपर्यरातीम् ॥ वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा । राजाऽ३४औहोवा ॥ एऽ३ ।
स्याराजाऽ२३४५ ॥ (दी.१३। प.७। मा.४)३०(ठी । १०४९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशः प्रपाठकः ॥१५॥

(५४१-१) ॥ श्नौष्टानि त्रीणि । त्रयाणां श्रुष्टिस्त्रिप्सोमः ॥

औहोहाइ । आयोहाइ ॥ पवापवस्वैनावासूऽ२३नी । औऽ३होइ । इहा ।ईऽ३या । मा ँ श्चत्वइन्दोसरसिप्राधाऽ२३न्वा । औऽ३होइ । इहा । ईऽ३या ॥ ब्रध्नश्चिद्य-स्यवातोनाजूऽ२३तीम् । औऽ३होइ । इहा । ईऽ३या ॥ पुरुमेधाश्चित्त-कवेनाराऽ२३न्धात् । औऽ३होइ । इहा । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । दीदिहीऽ१ ॥

(दी.१४ । प.२२। मा.९)१(थो । १०५०)

(५४१-२)

आयोहाइ । पावोहाइ ॥ पवस्वैनावासूऽ२३नी । इहोइहाऽ३ । ईऽ३या । मा ँ श्चत्वइन्दोसरसिप्राधाऽ२३न्वा । इहोइहाऽ३ । ईऽ३या ॥ ब्रध्नश्चिद्यस्य-वातोनाजूऽ२३तीम् । इहोइहाऽ३ । ईऽ३या ॥ पुरुमेधाश्चित्तकवेनाराऽ२३न्धात् । इहोइहाऽ३ । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । दीदयाऽ२३४५त् ॥

(दी.१६। प.१८। मा.१०)२(गौ । १०५१)

(५४१-३)

हाओऽ२३४वा ।(द्विः) हाऽ३ओऽ२३४वा । हाउवा । आयापावापवस्वैनावासूनि। इहइ । हियाऽ२ । इहा । इहा ।।मा ँ श्चत्वइन्दोसरसिप्राधन्व । इहइ । हियाऽ२ । इहा । इहा ॥ ब्रध्नाश्चिद्यस्यवातोनाजूतिम् । इहइ । हियाऽ२ । इहा। इहाऽ३ ॥ हाओऽ२३४वा (द्विः)। हाऽ३ओऽ२३४वा । हाउवा । पुरुमेधाश्चित्तकवेनरन्धात् । इहइ । हियाऽ२ । इहा ॥ इहाऽ२३४५ ॥ (दी.१४ । प.२८। मा.१५)३(दु । १०५२)

(५४२-१) ॥ आत्रम् । अत्रिस्त्रिष्टुप्सूर्यो विश्वेदेवा वा ॥

महत्तत्सोमोमहिषश्चाऽ३काराऽ२ ॥ अपांयद्गर्भोवृणीताऽ३दाइवाऽ२न् ॥ अदधा-

दिन्द्रेपवमानाऽ३ओजाऽ२ः ॥ अजनयत्सूर्येऽ३ज्योऽ२३ । तिरिन्दाउवाऽ३ ॥

एऽ३ ।अजनायत्सूर्येज्योतिरि । न्दूऽ२३४५ः ॥ (दी.१३। प.८। मा.६)४(डू । १०५३)

(५४३-१) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठस्त्रिष्टुप्सोमः ॥

आसाऔऽ३हो । जिवाक्वाऽ२ । रथ्याइयाऽ३४ । था । जाऽ२३४५उ ॥

धियाऔऽ३हो । मानोताऽ२ । प्रथमामाऽ३४ । नी । षाऽ२३४५ ॥ दाशाऔऽ३हो ।

स्वासाराऽ२ः । अधिसानोऽ३४ । अ । व्याऽ२३४५इ ॥ मृजाऔऽ३हो ।

तिवाह्नीऽ२म् । सदनाइषूऽ३४ । अच्छऽ२उ । वाऽ३४५ ॥

(दी.२। प.२०। मा.११)५(ञ । १०५४)

(५४४-१) ॥ अपां साम । आपस्त्रिष्टुप्सोमः ॥

आपामिवेदूर्मायस्तौ । होवाहाइ ॥ तुराणाऽ२३४ः । हाहोइ । प्रमनी । षाः ।

ईरतेऽ३ । सोमामा । छाऽ३४ । हाहोइ ॥ नमस्य । ताइः । उपचाऽ३ ।

यन्तिसम् । चाऽ३४ । हाहोइ ॥ आचवि । शा । तियुश । तीरुश । ताऽ३४म् ।

हाहाऽ३४ । औहोवा ॥ वाऽ३हाऽ२३४५ः ॥ (दी.१२ । प.२४। मा.११)६(झ १०५५)

॥ द्वाविंशतिः सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः ॥५॥

(इति त्रैष्टुभम् ॥)

(५४५-१) ॥ प्रेंखौ द्वौ । नकुलोऽनुष्टुप्सोमः ॥

पुरोजिती ॥ वोअन्धाऽ२३४साः । सुतायामाऽ२दयाऽ३१उवायेऽ३ ।
त्नाऽ२३४वे ॥ अपश्वानाऽ२ ँ श्नथाऽ३१उवायेऽ३ ॥ ष्टाऽ२३४ना ॥
सखायोदीऽ२र्घजाऽ३१उवाये ॥ ह्वीऽ२३४याम् ॥

(दी.३। प.८। मा.६)७(डू । १०५६)

(५४५-२) ॥ वामदेवोऽनुष्टुप्सोमः ॥

पुरोजिती ॥ वोऽ३ओन्धाऽ३साः । सूतायमाऽ२ । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ ।
दाऽ३याइत्नाऽ३वे । आपश्वानाऽ२म् । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ ।
श्नाऽ३थाइष्टाऽ३ना ॥ साखायोदाऽ२इ । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२३ ॥
घाऽ२जाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । ह्वियाऽ२३४५म् ॥

(दी.७। पं.१९।मा.११)८(झ ।१०५७)

(५४५-३) ॥ कार्तयशम् । कृतयशाऽनुष्टुप्सोमः ॥

पुरोहाहाउ ॥ जाऽ२३४इती । वोआऔऽ३होऽ३ । धासाः । सुताऔऽ३होऽ३ ।
यामाऽ६ ँ । हाउवा । दयित्नावेऽ२ । उपा ॥ अपश्वान ँ श्नाथाऽ१इष्टाऽ३ना॥
साखाऔऽ३होऽ३ ॥ योदाऽ६ ँ । हाउवा । घजिह्वियम् ॥ उपाऽ२३४५ ॥

(दी.५। प.१५। मा.११)९(मा १०५८)

(५४५-४) ॥ और्ध्वसद्मनम् । ऊर्ध्वसद्मानुष्टुप्सोमः ॥

५ ४र५ र र ४ ५ ४ ५ २ १र र १ र
पुरोजितीवोअन्धासाः । उहुवाहाइ । सुतायमादयित्नवउवाऽ२३होइ । अपश्वानँ्श्न-
कि ता रु
१ २र र १ २ ३
थिष्टनउवाऽ२३होइ ॥ साखायोदाइ ॥ घाजिह्वाऽ२३४५याऽ६ँ५६ँम् ।
को कै वै
२ १ २ १र २ १विर ३ २
सुवृक्तिभिर्न्नृमादानम्भारेऽ२षुवाऽ१ ॥ (दी.१०। प.७। मा.९)१०(फो। १०५९)
क्षी

(५४५-५) ॥ श्यावाश्वम् । श्यावाश्वोऽनुष्टुप्सोमः ॥

३ २ २ ४ र ५ २ ४ ५ १ र र २
पुरोऽ३१ । जीऽ३ती । वोआ । धाऽ३साः । एहिया ॥ सू । तायमादा । यि ।
थि चि ता चि ता क क च
१ — १र — १र २ ४ ५ २र —
त्नवाऽ२इ । एहियाऽ२ । अपश्वानाँश्नाऽ३थीऽ३ ॥ ष्टाऽ२३४ना ॥ ऐहाऽ२इ ।
का का चः टू चो
१र र १र २ ४ २ ५
एहियाऽ२ । सखायोदाइर्घाऽ३जीऽ३ । ह्वाऽ३४५योऽ६ँहाइ ॥
का चः चु

(दी.९। प.१६। मा.६)११(तू। १०६०)

(५४५-६) ॥ आन्धीगवम् । अन्धीगुरनुष्टुप्सोमः ॥

५ र र ५ २ १र र २ १ —
पुरोजितीवोऽ४न्धासाः ॥ सुताय । मादाऽ२३या । हिम्माऽ२१२ ।
पै र कः धि
१र र २ १ २ २ —१ २ १
त्नवेअपश्वानँश्नथिष्टना ॥ साखाऽ३उवा ॥ योऽ२दी । घाऽ२३जी । ह्वियाम् ।
का कः कै कः र
४ ५ ४
औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.१२। मा.५)१२(खु। १०६१)
कु ता प

(५४६-१) ॥ क्रौञ्चानि त्रीणि । त्रयाणां क्रुङ्नुष्टुप्पूषाभगोद्यावापृथिवी ॥

२ १र र २र १ २र १ २ ४
अयंपूषौहो । रायिर्भगाः ॥ सोमःपुनाऽ३ । नोआऽ३र्षाऽ५ताऽ६ँ५६ँइ ॥
र र चा कै
२ १ र २र १र २ १ २ ४
पतिर्विश्वौहो । स्याभूमनाः ॥ वियख्यद्रोऽ३ । दासीऽ३ऊऽ५भाऽ६ँ५६ँइ ॥
र र चा कै

(दी.७। प.८। मा.६)१३(जू। १०६२)

(५४६-२)

अयंपूषा । अयंपूषा ॥ रयिर्भगाः । सोमःपूनाऽ२ । नोअर्षताइ । पतिर्वाइश्वाऽ२ ।
ओस्यामूऽ१मानाऽ२ः ॥ ओइवियख्याऽ२३द्रो ॥ दासीउभ । इडाऽ२३भाऽ३४३ ।
ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.१२। मा.८)१४(फै । १०६३)

(५४६-३)

आयंपूषा । हो । रायिर्भगाऽ६ँऽए ॥ सोमाऽ२ःपुनाऽ२ । नाआऽ३४५ ।
षाऽ२३४ती । पतिर्विश्वस्यामूमानः ॥ वियख्याऽ२३द्रो ॥ दासीऊऽ२३भाऽ३४३इ ।
ओऽ२३४५इ ॥डा ॥ (दी.४। प.११। मा.६)१५(तू । १०६४)

(५४७-१) ॥ त्वाष्ट्री सामनी द्वे । द्वयोस्त्वाष्ट्र्योऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोमा ॥ धुमाऽ३त्तमाः । सोमाइन्द्राऽ३यमाऽ३ । एऽ३ । दिनाआ ।
पवाइत्रवाऽ३न्तोऽ३ । एऽ३ । क्षारन्ना । दाइवान्गाच्छाऽ३न्तुवाऽ३ः ।
एऽ३ ॥ मादाआ ॥ (दी.४। प.११। मा.७)१६(ते । १०६५)

(५४७-२) ॥ ऊर्ध्वेडँत्वाष्ट्रीसाम ॥

सुतासोमाधुमात्तमाः ॥ सोमाऽ२इन्द्राऽ२ । यामाऽ३४५। दीऽ२३४नाः ।
पावित्रवन्तोअक्षरन् ॥ देवान्गाच्छा ॥ तुवोमाऽ२३दाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥
डा ॥ (दी.६। प.९। मा.७)१७(घे । १०६६)

(५४७-३) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोमाधुमत्तमाः । सोमाइन्द्रा ॥ यमन्दिनाः । पावित्रावाऽ२ । तोआक्षरन्॥

दाइवान्गाच्छौवा ॥ तूऽ२३४वाः । मादा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.११। मा.८)१८(कै । १०६७)

(५४७-४) ॥ आनिधनँत्वाष्ट्रीसाम । त्वाष्ट्र्योऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोमाधुमत्तमाः । सोमाहाउ ॥ इन्द्राऽ३यामान्दिनाऽ२ः । इन्द्राऽ३हो ।

यामाऽ२न्दा२३४इनाः । पवित्रवाऽ३न्तोआक्षाराऽ२न् । त्रावाऽ३हो ।

तोऽ२क्षाऽ२३४रान् । देवान्गाच्छाऽ३न्तूवोऽ१मदाऽ२ः ॥ देवाऽ३न्होइ ।

गच्छोऽ२३४हा ॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ मदाऽ३आऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.१३। मा.१२)१९(बा । १०६८)

(५४७-५) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोमधुमत्तमाऽ६ ँए ॥ सोमाइन्द्राऽ३यामान्दिनाऽ२ः । दाइनाऽ२ः ।

पवित्रवाऽ३न्तोआक्षाराऽ२न् । क्षाराऽ२न् । देवान्गाच्छाऽ३न्तूवोऽ१मदाऽ२ः ।

मादाऽ२ः ॥ देवाऽ३न्होइ । गच्छोऽ२३४हा ॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥

मदाऽ३ईऽ२३४५ ॥ (दी.१०। प.११। मा.१३)२०(पि । १०६९)

(५४७-६) ॥ त्वाष्ट्री सामनी द्वे । द्वयोस्त्वाष्टयोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोमाऽ३हा । धुमत्तामाऽ२ः ॥ सोमाइन्द्राऽ३हा । यामन्दाइनाऽ२ः ॥

पवित्रवाऽ३हा । तोअक्षाराऽ२न् ॥ देवान्गाच्छाऽ३हा । तुवोऽ३होऽ२३४ । वा ।

माऽ५दोऽ६ँ॒हाइ ॥ (दी.७। प.१०। मा.७)२१(जे । १०७०)

(५४७-७) ॥ द्विरभ्यस्तं त्वाष्ट्रीसाम ॥

सुता । सोमाऽ३ । हाऽ३हा । धुमत्तामाऽ२३४ः ॥ सोमाः । इन्द्राऽ३ ।

हाऽ३हा । यामन्दाइनाऽ२३४ः ॥ पावि । त्रावाऽ३ । हाऽ३हा । तोअक्षाराऽ२३४न् ॥

देवान् । गच्छाऽ३ । हाऽ३हा । तुवोऽ३होऽ२३४ ॥ वा । माऽ५दोऽ६ँ॒हाइ ॥

(दी.७। प.१८। मा.८)२२(जै । १०७१)

(५४७-८) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

सुतासोऽ३माधुमत्तमाः ॥ सोमाइन्द्रा । यमन्दिनाः । पावाओऽ२३४वा । त्रवन्तो-

अक्षरन् ॥ देवान्गच्छा ॥ तुवोमाऽ२३दाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.७। प.९। मा.८)२३(झै । १०७२)

(५४८-१) ॥ क्रौञ्चे द्वे । द्वयोः क्रुङ्नुष्टुप्सोमः ॥

हाउसोमाः ॥ पवाऽ३न्ताइन्दावाउ । वाऽ३ । हाउवा । अस्मभ्यंगातूवित्तामाउ ।

वाऽ३ । हाउवा । मित्राःस्वानाआरेऽ१पासाउ । वाऽ३ । हाउवाऽ३४ ॥ सुवा ।

धियाऽ३ः ॥ सूऽ२३वाऽ३ः । वाऽ३४५इदोऽ६ँ॒हाइ ॥ (दी.५। प.१४। मा.१४)२४(भी । १०७३)

(५४८-२)

सोमाःपावन्तइन्दवाः ॥ अस्माभ्यंगा । तुवित्तामाः । माइत्राओऽ२३४वा ।

स्वानाआरेपासः ॥ सुवाधियाः ॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.६। प.९। मा.११)२५(घ । १०७४)

(५४९-१) ॥ सोम सामानि त्रीणि । त्रयाणां सोमोऽनुष्टुप्सोमः ॥

अभीनोवा ॥ जाऽ२साऽ२३४औहोवा । ताऽ२३४माम् । रयिमर्षशतस्पृहाम् ॥

इन्दोसहस्रभाऽ२३हो । णासाऽ२म् ॥ तुविद्युम्नंविभाऽ२३होयेऽ३ ॥

सहमोऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.५। प.९। मा.५)२६(भु । १०७५)

(५४९-२)

अभीनोवा ॥ जासातमम् । रायिम । षाउवाऽ२३ । होवाऽ३हाइ । शतस्पृहम्।

इन्दोऽ२सा । हाउवाऽ२३ । होवाऽ३हा । स्त्रभर्णसम् ॥ तुवायेऽ३ ॥

द्यूऽ२म्नाऽ२३४औहोवा ॥ विभासाहाऽ२३४५म् ॥ (दी.७। प.१३। मा.८)२७(जै । १०७६)

(५४९-३)

आभीऽ२होइ । नोवाजाऽ३साऽ३ । हाताऽ२३४माम् ॥ रायीऽ२ होइ ।

अर्षशाऽ३ताऽ३। हास्पृऽ२३४हाम् । इन्दोऽ२होइ । सहस्राऽ३भाऽ३ ।

हार्णाऽ२३४साम् । तुवाऽ२होइ । द्युम्नंवीऽ३भाऽ३ । हाऽ३साऽ५हाऽ६ ५६ म्॥

(दी.२। प.१२। मा.८)२८(छै । १०७७)

(५४९-४) ॥ क्रौञ्चम् । क्रुङनुष्टुप्सोमः ॥

आभीनोवाऽ३१२३४ । जासा । तामाऽ३म् ॥ रायिमर्षाऽ३१२३४ । शात ।
स्पृहाऽ३म् ॥ इन्दोसाहाऽ३१२३४ । स्राम । णासाऽ३म् ॥ तुवाइद्यूम्नाऽ३१२३म् ।
विभाऽ५सहाउ ॥ वा ॥ (दी.१। प.१२। मा.६)२९(खू । १०७८)

(५४९-५) ॥ सोमसाम । सोमोऽनुष्टुप्सोमः ॥

अभीनोवौहौऽ५जसातमाम् ॥ रयिमर्षौहोऽ५शतस्पृहाम् ॥ इन्दोसहौहोऽ५-
स्रभर्णसाम् ॥ तुविद्युम्नौहोऽ५विभासहाम् । साहम् । तुविद्युम्नंविभाऽ६ँ॒ ।
हाउवा ॥ सहाऽ३मेऽ२३४५ ॥ (दी.९। प.८। मा.६)३०(दू । १०७९)

(५५०-१) ॥ आङ्गिरसानि त्रीणि । त्रयाणामंगिरसोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

आऽ२३४भी ॥ ओइनवन्तआद्रूऽ१हाऽ२ः । ओइप्रियमिन्द्रस्यकामाऽ१याऽ२म् ॥
ओइवत्सन्नपूर्वआयूऽ१नीऽ२ ॥ ओइ । जातँ॒रिहन्तिमोऽ१२३४ । वा ।
ताऽ५रोऽ६ँ॒हाइ ॥ (दी.२। प.८। मा.९)३१(जो । १०८०)

(५५०-२)

अभी । नावाऽ३२ । तआऽ५द्रुहाः ॥ प्रियामिन्द्राऽ३ । स्याकामाऽ२३४याम् ।
वत्सन्नपूऽ३ । र्वाआयूऽ२३४नी ॥ जाताऽ३ँ॒होइ । रिहाऽ३हो ॥ तिमाताऽ२३-
राऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.३।प.१२। मा.७)३२(ठे । १०८१)

(५५०-३)

आभीनवन्तेअद्रुहः । ओहाइ ॥ प्रियमिन्द्रस्यकामियम् । ओहाइ ॥
वत्सन्नपूर्वआयुनि । औहोवाहाइ ॥ जातँ रिहौवा । तीऽ२३४मा । तारा ।
औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी. ६। प.१२ । मा.८)३३(खै । १०८२)

(५५१-१) ॥ गृत्समदस्य सूक्तानि चत्वारि । चतुर्णां गृत्समदो बृहती सोमः ॥

आहाऽ३ । ओऽ२३४वा ॥ र्यातायधृष्णावेऽ२ । धानूऽ३ः । ओऽ२३४वा ॥
तन्वन्तिपौँसियम् । शुक्राऽ३ः । ओऽ२३४वा ॥ वियन्त्यसूरायनिर्णिजेऽ२ ।
विपाऽ३ । ओऽ२३४वा ॥ अग्रेऽ२माहीयुवाऽ२३४५ः ॥

(दी.८। प.१२। मा.४)३४(ठी । १०८३)

(५५१-२)

हाऽ३हाइ । आहार्याता । याऽ२३४धृ । हाऽ३हाऽ३४ । औहोवा । ष्णाऽ२३४वे ॥
हाऽ३हाइ । धनूष्टान्वा । तीऽ२३४पौ । हाऽ३हाऽ३४ । औहोवा । सीऽ२३४याम् ॥
हाऽ३हाइ । शुक्राविया । ताआसुरा । याऽ२३४नी । हाऽ३हाऽ३४ । औहोवा।
णीऽ२३४जे ॥ हाऽ३हाइ । विपामाग्राइ । माऽ२३४ही । हाऽ३हाऽ३४ ।
औहोवा । यूऽ२३४वाः ॥ (दी.९ । प.२५ । मा.८)३५(नै । १०८४)

(५५१-३)

आहर्यतायधृष्णावाआ ॥ धनूष्टाऽ१न्वाऽ२ । तिपौँ ्साऽ१याऽ२म् । शुक्राविय ।
ताआसुराऽ३ । यानीऽ२र्णा२३४इजाइ ॥ विपामाऽ१ग्राऽ२इ ॥ ओइ ।
माऽ२३हीऽ३ । यूऽ३४५वोऽ६ँ ्हाइ ॥ (दी.३ । प.१०। मा.८)३६(णै । १०८५)

(५५१-४)

आऽ४हर्या । ताऽ४यधृ । ष्णाऽ३वे । धनुष्टन्वा ॥ तिपौँ ्सियाम् । शुक्राविया ।
ताआसुरा । यानाउवाऽ३ । णीऽ२३४जे ॥ वाइपाऽ३ँ ्हाइ । आग्रेऽ३हाइ ॥ माहीयू-
ऽ२३वाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.२ । प.१४ । मा.८)३७(झै । १०८६)

(५५२-१) ॥ द्विरभ्यस्तमाकूपारम् । अकूपारोऽनुष्टुब्देवाः ॥

पारित्य ँ ्हर्यत ँ ्हारिम् । पाऽ२३४ । रित्य ँ ्हौहोऽ५र्यत ँ ्हराइम् ॥ बभ्रुम्पुन-
न्तिवारेणा । वाऽ२३४ । भ्रुम्पुनौहोऽ५न्तिवारेणा ॥ योदेवान्विश्वा ँ ्इत्पारि ।
योऽ२३४ । देवान्वौहोऽ५श्वा ँ ्इत्पराइ ॥ मादेनसाहागच्छाति । माऽ२३४ ।
देनसौहोऽ५हगा । छाऽ५तोऽ६ँ ्हाइ ॥ (दी.१७। प.१३। मा.७)३८(जे । १०८७)

(५५३-१) ॥ वैरूपम् । विरूपोऽनुष्टुप्सोमः ॥

प्रासुन्वाऽ२३नायअन्धसाः ॥ मार्त्तः । नवाऽ२ । ष्टातद्वाऽ२३४चाः । अपश्वानमारा ।
धाऽ२३४साम् ॥ हातामाऽ२३खाम् ॥ नभ्रूऽ३गाऽ५वाऽ६ँ ्५६ ्ः ॥ (दी.३ । प.८। मा.७)३९(डे । १०८८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षोडशस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

॥ त्रयस्त्रिंशदष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः ॥६॥ इत्यानुष्टुभम् ॥

(५५४-१) ॥ कावम् । (कुत्सो) कविः जगती सोमसूर्यौ ॥

आभिप्रीऽ२३४या । णीपावाऽ२३४ताइ । चानोहिताऽ२३ः ॥ नामानीऽ२३४या ।

ह्वोआधीऽ२३४ये । षूवर्द्धतायेऽ३ ॥ आसूरीऽ२३४या । स्याबृहाऽ२३४ताः ।

बृहन्नधायेऽ३ ॥ राथंवाऽ२३४इष्वा । चामारूऽ२३४हात् । विचाऽ३१उवाऽ२३ ॥

क्षाऽ२३४णाः ॥ (दी. ४। प.१३। मा.८)१(दै । १०८९)

(५५४-२) ॥ ऐडंकावम् । कविर्जगती सोमसूर्यौ ॥

एऽ५ । अभिप्रियाऽ२ । णिपावताइ । एऽ५ । चनोहिताः ॥ एऽ५ । नामानियाऽ२ ।

ह्वोआधियाइ । एऽ५ । षुवर्द्धताइ ॥ एऽ५ । आसूरियाऽ२ । स्याबृहताः ।एऽ५ ।

बृहन्नधी ॥ एऽ५ । रथंविष्वाऽ२ । चामारुहात् । एऽ५ । विचक्षणाः । होऽ५इ॥

डा ॥ (दी.६। प.२२। मा.९)२(खो । १०९०)

(५५४-३) ॥ वाजसनि । वाजसनिर्जगती सोमसूर्यौ ॥

अभ्यौहोवाहाइप्रियाणी ॥ पवताइचाऽ२३४नो । हिताः । नामानियह्वो-

अधियेषुवर्द्धताइ ॥ आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधाइ ॥ राथम् । वाइष्वञ्चमरुहूत् ।

विचाऽ३१उवाऽ२३ ॥ क्षाऽ३णाऽ२३४५ः ॥

(दी.९ । प.९ । मा.११)३(ध । १०९१)

(५५४-४) ॥ वाजजिती द्वे । द्वयोर्वाजजित् (प्रजापतिः) जगती सोमसूर्यौ ॥

२ १ २र १ १ २ १२ ५र ४ ५र४ ५
अभिप्रिया । णीपवताइ । होइहोवाऽ३होयेऽ३४ । चानोहिताः । हाहो । वाहाइ ॥
र र ञ ती पि ता

२र र १ २र १ १ २ १२ ५ ४ ५र ४ ५
नामानिया । ह्वोअधियाइ । होइहोवाऽ३होयेऽ३४ । षुवर्द्धाताइ । हाहो ।वाहाइ ॥
र र ञ ती पि ता

२र र १ २र १ २ १ २ ५ ४ ५र ४ ५
आसूरिया । स्याबृहताः । होइहोवाऽ३होयेऽ३४ । बृहन्नधी । हाहो । वाहाइ ॥
र र ञ ती पि पा

२ १ २र १ २ १ २ ५ ४ ५र ४ ५ ५
रथंविष्वा । चामरुहात् । होइहोवाऽ३होयेऽ३४ । विचक्षणाः । हाहो । वाऽ६ँ हाउ ।
र र ञ ती पि पा

२र १र २ २
वा ॥ वाजीजिगीऽ३वँऽ१ ॥ (दी.१५ । प.२६। मा.१६)४(पू ।१०९२)
प क्षी

(५५४-५)

२ १ २र १ २र १र २ १ २र र १ २र १
अभिप्रिया । णीपवताइ । चानोहिताः । होवाऽ३होइ ॥ नामानिया । ह्वोअधियाइ ।
र र र को र र

२र १ २ १ २र र १ २र १ २र १ २ १
षूवर्द्धताइ । होवाऽ३होइ ॥ आसूरिया । स्याबृहताः । बृहन्नधाइ । होवाऽ३हो ॥
र को त्र र र को

२ १ २र १ २र १ २ १ ३ ५र र
रथंविष्वा । चामरुहात् । वीचक्षणाः । होवाऽ३होऽ२ । वाऽ२३४औहोवा ॥
र र र घः टे

२र १र २र १र २र १ विर ३ । । ।
वाजीजिगीवाविश्वाधनाऽ२नीऽ२३४५ ॥ (दी.२१। प.१८। मा.१२)५(गा । १०९३)
स

(५५४-६) ॥ स्वारकावम् ॥ कविः प्रजापतिर्जगतीं सोमसूर्यौ ॥

५ ४ २ १र २ र १ — १र र र
अभ्योवा ॥ प्रियाणिपवताइ । चनोहाइताऽ२ः । नामानियह्वोअधियाइ ।
पि र चो क

२ १ — १र र २ १ १ २ ४ ५
षुवर्द्धाताऽ२इ ॥ आसूर्यस्यबृहतो । बृहन्नाधीऽ२३ ॥ राथाऽ३म्वाइष्वा ।
चो क चौ कु

२ १ १ २
चमारुहाऽ२३त् । वाइचाऽ३क्षाऽ५णाऽ६ँ ५६ँ ःः॥
चौ के

(दी.७। प.१०। मा.१०)६(ञौ। १०९४)

(५५५-१) ॥ उद्वद्भार्गवम् भृगुर्जगती सोमो देवाश्च ॥

२ र १ २र १ २र १ २ र १ २ १
अचोदासोऽ२३ । नोधनूवाऽ२३ । तूइन्दवाः ॥ प्रस्वानासोऽ२३ । बृहद्दाइ-
चौ चौ र चौ

२र १ २ १ २र १ २र १र
वेऽ२३ । षूहरयाः ॥ विचिदाश्नाऽ२३ । नाइषायाऽ२३ः । आरातयाः ॥
चौ र चौ चौ र

२ र १ २र १ २र १र २ ।।।
अर्योनाःसाऽ२३ । तूसानाइषाऽ२३ । तूनोधियाऽ३१उवाऽ२३४५ ॥
चौ चौ ह्र

(दी.१२ । प.१२। मा.९)७(छो । १०९५)

(५५५-२) ॥ आंगिरसे द्वे द्वयोरंगिरसो जगती सोमो देवाश्च ॥

१ २र ३ २ ३र ४ ५ ४ ५ १ २र ३र २ ३ ४र २५ ४ ५
आचोदासो । नोधनुवन्तु । इन्दवाः ॥ प्रास्वानासो । बृहद्देवेषु । हरयाः ॥
कः टा ता कः टा ता

१ २ ३ २ ३र ४ र ५ ४र ५ १ २र ३ २ ३ ४ ५
वाइचिदश्ना ॥ नाइषयोआ । रातयाः ॥ आर्योनःसा । तुसानिषा ।
कः टा ता कः टा

४
तुनोऽ५धियाउ ॥ वा ॥ (दी.१०। प.१३ । मा.७)८(बे । १०९६)
ता प

(५५५-३)

२र र २ र र र १ २ ४ २ ३ ।।।
हाउहोवाऽ३हाइ । अचोदसोनोऽ३धा । नुवाऽ३न्तूऽ३ । इन्दावाऽ२३४५ः ॥
चे रा चै सै

२र र २ र र र १ २र ४ २ ३ ।।।
हाउहोवाऽ३हाइ । प्रस्वानासोबृऽ३हात् । देवेऽ३षूऽ३ । हरायाऽ२३४५ः ॥
चे रा चै सै

२र र २ र र १ २ ४ २र ३ ।।।
हाउहोवाऽ३हाइ । विचिदश्नानाऽ३आइ । षयोऽ३आऽ३ । रातायाऽ२३४५ः॥
चे रा चै सै

२र र २ र १ २ ४ २र ।।।
हाउहोवाऽ३हाइ । अर्योनःसन्तुऽ३सा । निषाऽ३न्तूऽ३ । नोधियाऽ३२उवाऽ३४५ ॥
चे रा चै सै

(दी.२०। प.१६ । मा.१६)९(पू । १०९७)

(५५५-४) ॥ सामराजे द्वे । द्वयोः सामराजो जगती सोमो देवाश्च ॥

५ ४ १ र.र २ १ — १ र र र र २ १ —
आचोहाइ ॥ दासोनोधनुवा । तुइन्दावाऽ२ः । प्रस्वानासोबृहद्देवाइ । षुहरायाऽ२ः ।
पि क चो क चौ

३ ५ ३ ५ २र ३ ५ १ २
विचोऽ२३४हाइ । अश्नोऽ२३४हाइ । नाइषयः । अरोऽ२३४हाइ । तायाः ॥
दू दू च दू का

३ ५ ३ ५ २ ३ ५ १ न २
अर्योऽ२३४हाइ । नःसोऽ२३४हा ॥ तूसानीऽ२३४षा । तूनाऽ३उवाऽ३ ॥
दू दू शे खू

५
धीऽ२३४याः ॥ (दी.७। प.१५। मा.१४)१०(णी । १०९८)
दू

(५५५-५) ॥ स्वारं सामराजम् ॥

५ र ४ ५ १ र र २ १ — १ र र र र २ १
अचौहोवा ॥ दासोनोधनुवा । तुइन्दावाऽ२ः । प्रस्वानासोबृहद्देवाइ । षुहरायाऽ२३ः ।
पै क चो क चौ

१ २ ४ ५ २ ३ ५ २ ३ २ ३ ५ २
वाइचीऽ३दाश्ना । नाइषाऽ२३४याः । होइ । आराताऽ२३४याः ॥ होऽ३इ ।
कु शे च तौ चा

१ २ ४ ५ २ ३ ५ २ ३ २ ४
आर्योऽ३नाःसा ॥ तूसानीऽ२३४षा । हो । तुनोऽ३धाऽ५याऽ६ँ५६ँः ॥
कु शे च टो

(दी.७। प.१४। मा.११)११(झ । १०९९)

(५५५-६) ॥ सिमानान्निषेधः ॥

५ ४ ५ १ र र २ १ — १ र र र र
आचो । वाहाइ ॥ दासोनोधनुवा । तुइन्दावाऽ२ः । प्रास्वानासोबृहद्देवाइ ।
पि ता क चो क

२ १ १ २ १ २ ३र ४ ३ ४र ५र २ २
षुहरायाऽ२३ः । वाऽ२३इचीत् । आऽ२३श्नाऽ३४ । नाइषयोआरा । ताऽ३याः ॥
चौ कः वी चे

१ २ १ २ ३ ४ ५ ३ २ ४
आऽ२३र्यो ॥ नाऽ२३ःसाऽ३४ । तुसानिषा । तुनोऽ३धाऽ५याऽ६ँ५६ँः ॥
कः वी थ टो

(दी.९। प.१४। मा.११)१२(ध । ११००)

(५५६-१) ॥ वैधृतं वासिष्ठम् । वसिष्ठो जगतीन्द्रः ॥

एषप्रकोशेऽ२ । म । धुमाँ ऽ२ । आचाइक्राऽ२३४दात् ॥ इन्द्रास्यावाज्राऽ२ः ।
व । पुषोऽ२ । वापुष्टाऽ२३४माः ॥ आभाऋतास्याऽ२ । सु । दुघाऽ२ः । घृताश्चू-
ऽ२३४ताः ॥ वाश्राअर्षान्तीऽ२ । प । यसाऽ२३ । चाधाऽ३इनाऽ५वाऽ६ँ५६ँः॥

(दी.३। प.१६। मा.१०)१३(टौ । ११०१)

(५५७-१) ॥ लौशे द्वे । द्वयोर्लुशो जगतीन्द्रसोमौ ॥

प्रोयाऽ२३४सीत् । इन्दुरिन्द्राऽ२३ । स्याऽ३निष्कृतम् । साखासख्युः ।
नप्रमिनाऽ२३ । तीऽ३संगिरम् ॥ मर्याइवा । युवतिभाऽ२३इः । साऽ३मर्षाति॥
सोमःकाला । शेशतयाऽ२३ । मानाऽ३पाऽ५थाऽ६ँ५६ँ ॥

(दी.३। पा.१२। मा.७)१४(ठे । ११०२)

(५५७-२)

प्रोयासीदिन्दुरिन्द्रस्यानिः । कृताम् । कृताऽ२३४५म् ॥ साखाऽ३१२३४ ।
सख्युर्नप्रमिनातिसम् । गिराङ्गिराम् ॥ मर्याऽ३१२३४ः । इवायुवतिभिस्सामा ।
षाताइषाताइ ॥ सोमाऽ३१२३४ः । कलशेशताया । मानाऽ३पाऽ५थाऽ६ँ५६ँ ॥

(दी.७। प.१२। मा.९)१५(छो । ११०३)

(५५७-३) ॥ प्रवद्भार्गवम् । भृगुर्जगतीन्द्रसोमौ ॥

२र १र २ १ — १ २ र १ २१ —
प्रोआयासाइत् । इन्दुरिन्द्रा । स्याऽ२निष्कृताम् ॥ सखासख्यूः । नप्रमिना । ताऽ२इ-
र र कै र र
१ २ १ २ १ — १ २र १ २र१
सङ्गिराम् ॥ मर्यइवा । युव्रतिभाइः । साऽ२मर्षताइ ॥ सोमःकला । शेशतया ।
कै र र कै र र
—१र २ । । ।
माऽ२नापाथाऽ३१उ ॥ वाऽ२३४५ ॥ (दी.६ ।प.१३ । मा.१२)१६(गा । ११०४)
गौ कु

(५५७-४) ॥ तंत्रम् । विरूपो जगतीन्द्रसोमौ ॥

२र १र २ १ २र १ २र ३ ५ ३ २ ३ ५र
प्रोआयासाइत् । इन्दुरिन्द्रा । स्यानिष्कृताऽ२३म् ॥ साखासख्युः । नप्रामिना।
र र चौ टू टू
३ २ ३ ५ २ १ २ १ २र १ २ र २ ३ ५
तिसंगाऽ२३४इराम् ॥ मर्यइवा । युवतिभाइः । सामर्षतायेऽ३ ॥ सोमःकाला।
ठौ र र चौ टू
३र २ ३ ५र ३ २ ४
शेशाताया । मानाऽ३पाऽ५थाऽ६ँ५६ँ ॥ (दी.९। प.१२। मा.१०)१७(थौ । ११०५)
टू टो

(५५७-५) ॥ यामम् । यमो जगतीन्द्रसोमौ ॥

१ — १ र र अ ४ २ ३ ५ १ र
आऽ२इ । इया । प्रोअयासाइदिन्दुरिन्द्राऽ२३ । स्याऽ३निष्कृतम् ॥ सखा-
का क घी थू
अ ४ २ ३ ५ १ अ ४ २ ३ ५
सख्यूर्नाप्रमिनाऽ२३ । तीऽ३संगिरम् ॥ मर्यइवायुवतिभाऽ२३इः । साऽ३मर्षाति ॥
घी थू घी थू
१ — १ र २ २ ४
आऽ२इ । इया । सोमःकलाशेऽ१शतयाऽ२३ । मानाऽ३पाऽ५थाऽ६ँ५६ँ ॥
का क घी टो

(दी.४। प.१२। मा.९)१८(थो । ११०६)

(५५८-१) ॥ दास (वात्स) शिरसी द्वे । द्वयोर्दसशिरा जगतीसोमः ॥

धर्तादाइवाऽ३ । ओवाऽ५ए ॥ पवतेकृत्विऽ३योरासाऽ३ । ओवाऽ५ए ।
दक्षोदाइवाऽ३ । ओवाऽ५ए ॥ नामनुमादिऽ३योनृभाऽ३ । ओवाऽ५ए ॥
हाराइःसार्जाऽ३ । ओवाऽ५ए ॥ नोअतियोनाऽ३सात्वाभाऽ३ । ओवाऽ५ए ।
वृथापाजाऽ३ । ओवाऽ५ए ॥ सिकृणुषाइनादाइषूवाऽ३ । ओवाऽ५ए ।
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.१३। प.१८। मा.१५)१९(डु । ११०७)

(५५८-२)

धर्त्ताऔहोहोहाइ ॥ दिवः । पवतेका । औहोऽ३हाऽ३ । हा । त्वियोरसो ।
दक्षोदेवा । औहोऽ३हाऽ३ । हा । नामनुमा । दियोनृभाइः । हराइःसार्जा ॥
औहोऽ३हाऽ३ । हा । नोअतियो । नासत्वभाइः ॥ वृथापाजा । औहोऽ३हाऽ३ ।
हा ॥ सिकृणूषा । औहोऽ३हाऽ३ । हाइ । नदीषुवा । औहोऽ३हाऽ३ । हाऽ३४ ।
औहोवा ॥ एऽ३ । नादीषुवाऽ१ ॥ (दी.१८ । प.२८ । मा.१०)२०(डौ ।११०८)

(५५९-१) ॥ यामानि त्रीणि, (ऐडयामम्) त्रयाणां यमो जगती सोमेन्द्रौ ॥

वृषामातीऽ२३ । नाम्पवाताऽ२३इ । एऽ३ । विचक्षणएऽ३ ॥ सोमोआह्लाऽ२३म्।
प्रतराइताऽ२३ । एऽ३ । उषसान्दिवएऽ३ ॥ प्राणासाइन्धूऽ२३ । नांकाला-
शाँऽ२३ । एऽ३ । अचिक्रददेऽ३ ॥ इन्द्रस्याहाऽ२३ । दियावाइशाऽ२३न् ।
एऽ३ । मनीषिभिरेऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी. १०। प.१८। मा.१०)२१(बौ । ११०९)

(५५९-२)

१२र र१र २ ५ ३ ।।। १र२र१२र१ २र
वृषामतीनाम्पवा । ताइवाऽ१इचाऽ२३४ । क्ष । णाऽ२३४५ः ॥ सोमोअह्नाम्प्रतरी ।
कै घु प द्व कै
१२ ५ ३ ।।। २र१र २र र १ ३
तोषाऽ१साऽ२३४म् । दि । वाऽ२३४५ः ॥ प्राणासिन्धूनांकला । शा ँआऽ१-
घु प द्व रो
५ ३ ।।। १ २ १र र २
चाऽ२३४इ । क्र । दाऽ२३४५त् ॥ आइन्द्रस्याहार्दियावि । शान्माऽ१-
घु प द्व कै.
५ ।।।
नाऽ२३४इ । षिमाऽ२उ । वाऽ३४५ ॥ (दी.१३। प.१६। मा.१२)२२(टा । १११०)
घु ठै ची

(५५९-३)

१ — १ — १र र २ १ २ १र — १ — १ र र
वृषाऽ२मताऽ२इ । नाम्पवतेविचक्षाऽ२३णाः ॥ सोमोऽ२आह्नाऽ२म् । प्रतरीतो-
घि थै घि
२ १र २ १र — १ — १र र २ १ २
षासान्दाऽ२३इवाः ॥ प्राणाऽ२सिन्धूऽ२ । नांकलशा ँआचिक्राऽ२३दात् ॥
थै घि थै
१ — १ — १ र २ १र २ १
इन्द्राऽ२स्यहाऽ२ । दियाविशन्मानीषाऽ२३इमाऽ३४३इः ॥ ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
घि चं कु प
(दी.११। प.१०। मा.१२)२३(ञा । ११११)

(५६०-१) ॥ मरुतान्धेनु । मरुतो जगती सोमः ॥

१ ५र ४५र४५र र ४ ५ २ १र र
त्राऽ२३४इः । अस्मैसप्तधेनावोदुदौ । होह्नाइराइ ॥ सत्यामाशिरम्परमाइ ।
की तै ता र
२र१ — १ र र २ १ २ ३ ५
वियोमानीऽ२ । चत्वार्यन्याभुवना । निनिर्णाइजाऽ२३इ ॥ चारूणाऽ२३४इचा ॥
चो क चौ रो
२र १ २र १ २ ४
क्रेयदृतैः। आवाऽ३र्द्धाऽ५ताऽ६ँ५६ँ ॥ (दी.११। प.१०। मा.९)२४(ञो । १११२)
चो के

(५६१-१) ॥ इन्द्रस्यापामीवम् । इन्द्रो जगतीन्द्रसोमौ ॥

२ १ २ र ४ २ ३ ५ २ १ २र र ४ २र ३ ५
इन्द्रा । यसोमसुषुताऽ३पाऽ३रिस्रावा ॥ आपा । मीवाभवतुराऽ३क्षाऽ३सासाहा॥
र वि र वि
२र १ २ ४ २र ३ ५ २ १ २
माताइ । रसस्यमत्सताऽ३द्वाऽ३याविनाः ॥ द्रावाइ । णस्वन्तइहस ।
र वि र च
३ २ ४
तुवाऽ३इन्दाऽ५वाऽ६ँ५६ँः ॥ (दी.६। प.९। मा.६)२५(घू । १११३)
टो

(५६१-२) ॥ वायोरभिक्रन्दम् ॥ वायुर्जगतीन्द्रसोमौ ॥

इन्द्रायसोमसुषुतःपर्यौ । होइस्त्रावा ॥ अपामीवाभवतुरक्षासाऽ१साऽ३हा ।
मातेरसस्यमत्सतद्वायाऽ१वीऽ३नो । द्राऽ२३४वी । णाऽ२३४स्वा ॥ ताइहासाऽ३ ।
हाऽ२३ । तुवाऽ३इन्दाऽ५वाऽ६ॅ५६ॅः ॥ (दी.८। प.९। मा.४)२६(ढी । १११४)

(५६२-१) ॥ यामानि त्रीणि । त्रयाणां यमो जगती सोमश्येनौ ॥

असाविसो । मोअरुषोऽ२३४ । वृषाहराइः ॥ राजेवदा । स्मोअभिगाऽ२३४ः ।
आचिक्रदात् ॥ पुनानोवा । रामतियाऽ२३४इ । षिअव्ययाम् ॥ श्येनोनयो ।
निंघृतवाऽ२३ । तमाऽ५सदात् । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.११। प.१४। मा.११)२७(घ । १११५)

(५६२-२)

आसावीऽ२३४सो । मोआरूऽ२३४षाः । वार्षाहरायेऽ३ः ॥ राजेवाऽ२३४दा ।
स्मोआमीऽ२३४गाः । आचिक्रदाऽ२३त् ॥ पूनानोऽ२३४वा । रामातीऽ३४ये ।
षीअव्ययाऽ२३म् । श्येनोनाऽ२३४यो । निंघार्त्ताऽ२३४वा । तामाऽ३ । साऽ२-
दाऽ२३४औहोवा ॥ देऽ३ । दिवीऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१५। मा.९)२८(ञो । १११६)

(५६२-३)

आसाविसोमोअरुषोवृषाहा । राइः ॥ राजेवदस्मोअभिगाअचिक्रा । दात् ॥
पुनानोवारमत्यष्येव्या । याम् ॥ श्येनोनयोनिघृत । वा । तामाऽ३ । साऽ२दाऽ२३४औहोवा।
एऽ३ । दिवीऽ२३४५ ॥ (दी.१८। प.१२। मा.८)२९(ठै । १११७)

(५६३-१) ॥ मरुतांधेनु । मरुतो जगतीसोमः ॥

४ ५ २ १ २र १ २ — १ २ ३ ५ २ १र २र
प्रादे ॥ वामच्छामाधुमा । ताआऽ२इन्दवाः । आसिष्याऽ२३४दा । तागावाआ ।
ता छु रै वू चो

— १ २ ३ ५ २ १र विर — १
नाधाऽ२इनवाः । बर्हिषाऽ२३४दाः । वचनावाऽ२ । तऊऽ२धभाइः ॥
रै वू चो रै

२ ३ ५ २ १र २ १ ३ ५र र
पारिस्रूऽ२३४ताम् ॥ उस्रियानिर्णिजन्धाइरायेऽ३ ॥ धाऽ२इराऽ३४औहोवा॥
वू चौ वे

२ १ । । ।
धाऽ३इराऽ२३४५इ ॥ (दी.८। प.१३। मा.१६)३०(डू। ११९८)
ज

(५६४-१) ॥ काक्षीवतानि (शार्ङ्गाणि) त्रीणि । अञ्जतः कक्षीवाञ्जगती सोमः ॥

२ १ २ १ २ १ — १ २र १
अञ्जताइ । वियञ्जताइ । समञ्जाताऽ२इ ॥ क्रतुँ रिहा । तीमधुवां ।
र र चो र र

२ १ — र १ २र १ २ १ — १
भियञ्जाताऽ२इ ॥ सिन्धोरुच्छ्वा । सेपतया । तमुक्षाणाऽ२म् ॥ हिरण्यपा ।
चो र र चो र

२र १ २र १ २ । । ।
वःपशुमा । प्सूगृभ्णाताऽ३१उवाऽ२३४५ ॥ (दी.५। प.१२। मा.६)३१(फू। ११९९)
र डू

(५६४-२) ॥ व्यञ्जतः कक्षीवान् ॥

३ २ १ २ १ २ ४ २ ३ ५ ३ २ १
अञ्जाऽ३हो । तेऽ३होइ । वियञ्जतेऽ३साऽ३मञ्जाताइ ॥ क्रातूँऽ३होइ ।
वि रा वि वि

३ २ १ २ ४ २ ३ ५ ३ २ १ ३ २ १
रिहाऽ३हो । तिमधुवाऽ३भीऽ३अञ्जाताइ ॥ सिन्धोऽ३होइ । उच्छ्वाऽ३हो ।
वि वि वि वि

२र ४ २ ३ ५ ३ २ १ ३ २ १ २र
सेपतयाऽ३न्ताऽ३मुक्षाणम् ॥ हिराऽ३हो । ण्यापाऽ३हो । वःपशुम ।
वि वि च

३ २ ४
प्सुगाऽ३र्भ्णाऽ५ताऽ६ँ५६ँइ ॥ (दी.२ । प.१३ । मा.८)३२(जै । ११२०)
टो

(५६४-३) ॥ समञ्जतः कक्षीवान् ॥

हावाञा । ताऽ२३४इ । वियञ्जतेसामञ्जते । एहिया । एहियाऽ३४ ॥ हाउक्रातूम् ।
राऽ२३४इ । हन्तिमधुवाभियञ्जते । एहिया । एहियाऽ३४ ॥ हाउसाइन्धोः ।
ऊऽ२३४त् । श्वासेपतयन्तामुक्षाणम् । एहिया । एहियाऽ३४ ॥ हाउहाइरा ।
ण्याऽ२३४ । पावःपाशुमप्सुगृभ्णाते । एहिया । एहियाऽ३४ । हाउ ।
होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.९ प.२३। मा.१३)३३(दि । ११२१)

(५६५-१) ॥ अर्कपुष्पे द्वे । द्वयोरादित्यो जगती ब्रह्मणस्पतिः ॥

पवित्रन्तेविताततंब्रह्मणस्पतेऽ३ । हुवेऽ२३ । हुवेऽ२३ । होवाऽ३हाऽ३ । हाइ ॥
प्राभुर्गात्राणिपारियेषिविश्वताऽ२३ः । हुवेऽ२३ । हुवेऽ२३ । होवाऽ३हाऽ३ ।
हाइ ॥ अताप्ततनूर्न्नातादाऽ२मोअश्नुतेऽ३ । हुवेऽ२३ । हुवेऽ२३ । होवाऽ३हाऽ३ ।
हाइ ॥ श्रृतासइद्वहन्तःसन्तादाऽ२शत । हुवेऽ२३ । हुवेऽ२३ । होवाऽ३हाऽ३ ।
हाऽ३४ । औहोवा ॥ अर्कोदेवानाऽ२म्परमेवियोऽ२माऽ२३४५न् ॥

(दी.१७। प.२२। मा.७)३४(छे । ११२२)

(५६५-२)

२१ २र १ २१ २ १ २र १ — १ र २र १ २र
पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पतेऽ३ । हुवाइ । औहोवाऽ२ ॥ प्राभुर्गात्राणिपरियेषिवि-
ज: क चो
१ १ २र १ — १ २ र १ विर १र २ १
श्वता२३: । हुवाइ । औहोवाऽ२ ॥ अतप्ततनूर्नातादाऽ२मोअश्नुतेऽ३ । हुवाइ।
चं क चो कै क
२र १ — १र२१ २ १ विर १ २र १ ३ ५र र
औहोवाऽ२ ॥ श्रृतासइद्वहन्तःसन्तादाऽ२शता । हुवाइ । औ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥
चो जं क च का टु प
२१ २र१र२ १र विर ३ ।।।
अर्कस्यदेवःपरमेवियोऽ२माऽ२३४५न् ॥ (दी.१९।प.१६।मा.८)३५(तै। ११२३)
झा

पञ्चत्रिंशन्नवमः खण्डः ॥९॥ दशतिः ॥७॥ इति जागतम् ॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षोडशः प्रपाठकः ॥१६॥

(५६६-१) ॥ पदे द्वे । द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः ॥

५ २ १ २ ३र. ५ १ २ १अ २ ३र ५
इन्द्रमच्छा ॥ सुताइमा । औहोऽ२३४वा । वृषाणंया । तूहाराया । औहोऽ२३४वा ॥
प चो दू का धि दू
२ १ २र१ २ ३ २ १ २१ २ १
श्रुष्टाइजाता । साइन्दावाः ॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३: । ओऽ२३४५इ ॥डा ॥
रौ रि जु कु प

(दी.३। प.११। मा.७)१(टे । ११२४)

(५६६-२)

५ २१ २ १२ २ १ २ १अ — १ २ २
इन्द्रमच्छा ॥ सुताइमाऽ३इ । ताईऽ३माइ । वृषाणंया । तूहारायाऽ२:।हाराऽ३याः ।
प चौ कः का धि कः
र र र १ अ — १ २ २ १ २ ५र र
श्रुष्टेजाताऽ३साइन्दवाऽ२: ॥ आइन्दाऽ३वाऽ३: ॥ सुवाराऽ३४ । औहोवा ॥
डु वि की प
२ र १ ।।।
विदोविऽ३दाऽ२३४५: ॥ (दी.६। प.११। मा.११)२(क । ११२५)
ण

(५६६-३) ॥ अनुपदे द्वे । द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः ॥

४ ५ ४ २ १ २ — १ — १ २ १ अ —
इन्द्रम् । इन्द्राम् ॥ अच्छाऽ३सूताऽ१इमेऽ२ । आइमेऽ२ । वृषाणंया ।तूहारयाऽ२ः ।
ता पि पु का का धि
१ — २ र र र १ अ — १ १ २ ५र र
रायाऽ२ः । श्रुष्टेजाताऽ३साइन्दवाऽ२ः ॥ दावाऽ२३ः ॥ सुवाराऽ३४ । औहोवा ॥
का पु कि की प
२ १ । । ।
विदोऽ३विदाऽ२३४५ः ॥ (दी.५। प.१२। मा.१०)३(फौ । ११२६)
शे

(५६६-४)

३ ४ ३ ४ ३र ४ ३र ४ ५ २ २ ३ २ १ २ १ २
इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहा । होऽ३४३ । रायाआ ॥ श्रूष्टाउवा । जाताउवाऽ३४ ॥
डै चै चे का की
३ ४ ५ २ ३ २
सइन्दवःसुवा । हो ॥ विदओऽ३४५इ ॥ डा ॥
थ च शे प

(दी.२। प.९। मा.७)४(झे ।११२७)

(५६६-५) ॥ पौष्कलम् । प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः ॥

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १ २ १ २ ३ ५
इन्द्रामाऽ३च्छासु । ताईऽ२३४माइ ॥ वृषाणंया । तूहाराऽ२३४याः ॥
छा शे रो वू
२ १ र अ ३ २ १ ३ । । ।
श्रुष्टाइजाता । साईऽ२न्दाऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँः ॥ सुवर्विदाऽ२३४५ः ॥
र ञू शि

(दी.१। प.७। मा.७)५(खे ।११२८)

(५६७-१) ॥ ऐषिराणि पञ्च । इषिर उष्णि गिन्द्रः ॥

२ १र र २ ५ २ १र २ र १र र २
प्रधन्वासौहोइ । औऽ३होऽ२३४वा । माजागृविः ॥ इन्द्रायेन्दौहोइ । औऽ३होऽ-
र शे चो र
५ १ २ १ र २ ५ २ १र २ १ र
२३४वा । परिस्त्रवा ॥ द्युमन्तँशौहोइ । औऽ३होऽ२३४वा । ष्मामाभर । सुवर्विदौहोइ ।
शे का र शे चो र
२ ३ ५
औऽ३होऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥ ऊऽ२३४पा ॥
शौ दू

(दी.९। प.१२। मा.५)६(थ्वु । ११२९)

(५६७-२)

२ १र र २ १ २ र १ — र १र र २ १
प्रधन्वासौहो । वाऽ३हो । मजागृवीऽ२ः ॥ इन्द्रायेन्दौहो । वाऽ३होइ ।
र रा चो र रा
२ १ — र २ १ २ र १ — १ र
परिस्रावाऽ२ ॥ द्युमन्त ँ शौहो । वाऽ३हो । ष्ममाभाराऽ२ ॥ सुवर्विदौहो ।
चो र रा चो र
२ १ ३ ५र र ३ ५
वाऽ३होऽ२ । वाऽ२३४औहोवा । ऊऽ२३४पा ॥
छो टे दू

(दी.११। प.१३। मा.३)७(ग्वि । ११३०)

(६६७-३)

२र १र २ १ — र १र २ र १ — र १र
औहौहोइ । प्रधन्वासोऽ२ । औहौहो । मजागृवीऽ२ः ॥ औहौहोइ ।
र चो र चो र
२ र १ — र १र २ १ — र १र २ १ —
इन्द्रायाइन्दोऽ२ । औहौहोइ । परिस्रावाऽ२ ॥ औहौहोइ । द्युमन्ता ँ शूऽ२ ।
चो र चो र चो
र १र २ र १ — र १र २ १ ३ ५र र
औहौहो । ष्ममाभाराऽ२ ॥ औहौहोइ । सुवः । वाऽ२इ । दाऽ२३४ ।औहोवा ॥
र चो र घ का इ प
३ ५
ऊऽ२३४पा ॥ (दी.१९।प.१८। मा.९)८(द्वो । ११३१)
दू

(५६७-४)

१ — १ — १ १ २ १ — र १ —
हुवाऽ२इ । हुवाऽ२इ । हुवाऽ२३होइ । प्रधन्वासोऽ२ । मजागृवीऽ२ः ॥
का का को चो चो
र १ — १ — १ — र १ —
इन्द्रायाइन्दोऽ२ । परिस्रावाऽ२ ॥ द्युमन्ता ँ शूऽ२ । ष्ममाभाराऽ२ ॥
चो चो चो चो
१ — १ — १ — १ १ ३ ५र र
सुवर्वाइदाऽ२म् । हुवाऽ२इ । हुवाऽ२इ । हुवाऽ२३होऽ२ । वाऽ२३४औहोवा ॥
चो का का घः टे
३ ५
ऊऽ२३४पा ॥ (दी.५। प.१५। मा.१०)९(म्वौ । ११३२)
दू

(५६७-५)

प्राधन्वाऽ२३सोमजागृवीः ॥ इन्द्राऽ२याऽ२३४इन्दो । ओइ । पाऽ३राइ-
स्राऽ३वा । द्युमाऽ२न्ताऽ२३४ँ्शू ॥ ओ । ष्मामाऽ२भाऽ२३४५राऽ६ँ्५६ँ् ॥
सुवर्विदाऽ२३४५म् ॥ (दी. २। प.८। मा.५)१०(जु । ११३३)

(५६८-१) ॥ शौक्तानि पञ्च । शुक्तिरुष्णिक्सोमः ॥

सखाऽ३याआऽ२ । निषीदता ॥ पुनानाऽ२३या । प्रागायता ॥ शिशुन्नाऽ२३या ॥
ञ्जैःपाराइभूऽ२ । षाताश्राऽ२३याऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.९। मा.४)११(भी. । ११३४)

(५६८-२)

साखायाआ ॥ निषीदाऽ२३४ता । पुनाऽ२नाऽ२३४या । प्राऽ२गाऽ२३४औहोवा ।
याऽ२३४ता ॥ शिशून्नाया । ञ्जैःपारिभूऽ२३ ॥ षाऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥
श्रियेऽ१॥ (दी.५। प.९। मा.३)१२(भि । ११३५)

(५६८-३)

साखायआनि । षीदाऽ६ँ्ता ॥ पुनानायप्रगायाता ॥ शिशुन्नयञ्जैःपराऽ२इ ॥
भूषाऽ२३ताऽ३ । श्राऽ२३याऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.८। मा.४)१३(डी । ११३६)

(५६८-४)

५२र ४ ५र ४र ५र ५ २ र१र २र१र २ ४ ५ ४ ५
ओहाइ । साखायआनि । षीदाऽ६ँता ॥ पुनानौहोइ । पुनानौहोयेऽ३ ।याप्रायाप्रा ॥
प ती पा र चौ तु
२र १ र २र१र २ ४ ५ ४ ५ २१र २१र २
गायतौहोइ ॥ गायतौहोयेऽ३ । शाइशूँशाइशूम् ॥ नायज्ञौहोइ । नायज्ञौहोयेऽ३ ।
र चौ तु र चौ
४ ५ ३ २ ५र र २ २र ३ २
पारी । पाराऽ३४औहोवा ॥ एऽ३ । भूषतश्रियेऽ१ ॥
ता दू घा रि

(दी.१८। प.१५। मा.९)१४(णो । ११३७)

(५६८-५)

५ र ३ २ ३ ५ २ १ २ ३ ५ २ र१र विर
सखा । याआओऽ२३४वा । निषाइ । दाताओऽ२३४वा । पुनानायप्रागाऽ२यत ॥
प ठौ र वू चो
१ २ ३ ५ १ र २ १ २ ३ ५ २
शाइशाओऽ२३४वा ॥ नयज्ञैःपरिभूऽ३ । षाताओऽ२३४वा ॥ श्रियेऽ१ ॥
वू कि वू र

(दी.५। पा.९। मा.७)१५(भे । ११३८)

(५६९-१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि । त्रयाणां कर्णश्रवा उष्णिक्सोमः ॥

३ ५ ३ ५ २र१ २ १ र २ १र २
ताऽ२३४म्वाः । साऽ२३४खा ॥ योमदाऽ२३या । पूनानमा । भिगायाऽ२३ता॥
दू दू जा का जा
१ २ १ २ ३र २१ २ ३र २ १
शाइशुन्नाहा । व्यैःस्वदयाऽ२३ ॥ तागूर्तिभाऽ३४३इः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
धि ठौ शू कु प

(दी.५। प.१० । मा.५)१६(मु ।११३९)

(५६९-२)

२ ३४ ५ २र१ २ ३ ५ २ र१ न २ ३ ५
ओइतंवस्सखा । योमा । दायाओऽ२३४वा । पुनानममिगाऽ३ । आ । ओऽ२३४वा ।
ची र वू जो च दू
३ २ ३ ५ १२१२१र २ २ ३ ५ ३ २ ३ ५
याताओऽ२३४वा । शिशुन्नहव्यैःस्वदयाऽ३ । आ । ओऽ२३४वा । तागाओऽ२३४वा ।
ठौ कै च दू ठौ
३ ५
तीऽ२३४भीः ॥ (दी.३। प.१२ । मा.५)१७(ठु । ११४०)
दू

(५६९-३)

तंवःसखायोमदाऽ६ँ्या ॥ पुनानमभिगाऽ२यत । शाइशुन्नाहाऽ३ । व्यैःस्वा ।

दयाऽ३ ॥ ताऽ२३गूऽ३ ॥ ताऽ३४५इभोऽ६ँ्हाइ ॥

(दी.५। प.७। मा.३)१८(फि । ११४१)

(५७०-१) ॥ वाचस्सामनी द्वे । द्वयोर्वागुष्णिक्सोमः ॥

प्राणा ॥ शाऽ२३४इशूः । माहाऽ२३४इनाम् । हिन्वाऽ२नाऽ२३४र्त्ता ।

स्याऽ३दाइधीऽ३तीम् ॥ वाइश्वापरि । प्रियाभुवाऽ२३त् ॥ आधद्विताऽ३४३ ।

ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.२। प.१०। मा.९)१९(जो । ११४२)

(५७०-२)

प्राणाप्राणा ॥ शाइशूऽ२ःशाइशूऽ२ः । महाऽ३१उवायेऽ३ । नाऽ२३४५म् ।

हिन्वन्नार्त्तस्यदाऽ३१उवायेऽ३ । धीऽ२३४तीम् । विश्वापारिप्रियाऽ३१उवाऽ२३ ।

भूऽ२३४वात् ॥ आधौऽ२ । हौऽ२ । हुवायेऽ३ ॥ द्वाऽ२इताऽ२३४औहोवा ॥

ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.३। प.१३। मा.११)२०(ड्ल । ११४३)

(५७०-३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे । द्वयोरिन्द्रउष्णिक्सोमः ॥

प्राणाशिशूः ॥ माहाऽ२इनाम् । औहोऽ३वा । हिन्वन्नृतस्यदीधितिम् ॥

वाइश्वाउवा । पाराउवा ॥ प्रियाऽ२भुवात् । आधाउवाऽ३ ॥ एऽ३ । द्विताऽ१॥

(दी.५। प.१०। मा.९)२१(मो । ११४४)

(५७०-४)

प्राणा । होऽ३इ । इयाहाइ ॥ शाइशुर्महाइ । नाऽ२३म् । आउहाउ । होऽ३वा । हिन्वन्नृतस्यदीधिताइम् । आउहाउ । होऽ३वा ॥ विश्वापा । र्याउहाउ । होऽ३वा ॥ प्रियाऽ२३ । भूऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ आधद्विताऽ१ ॥

(दी.१२ । प.१६। मा.१४)२२(ची । ११४५)

(५७०-५) ॥ मरुतां प्रेङ्खम् । मरुत उष्णिक्सोमः ॥

प्राणा । हाहोइ । शाऽ२३४इशूः । हाहोऽ३इ । माहीनाऽ२३म् । होवाऽ३होयेऽ३४ ॥ हिन्वन् । हाहोइ । आऽ२३४र्त्ता । हाहोऽ३ । स्यादीधिताऽ२३इम् । होवाऽ३हो-येऽ३४ ॥ विश्वा । हाहोइ । पाऽ२३४री । हाहोऽ३इ । प्रियाभुवाऽ२३त् । होवा-ऽ३होयेऽ३ ॥ आऽ२३धाऽ३ । द्वाऽ३४५इतोऽ६ँहाइ ॥

(दी.६। प.२०। मा.१४)२३(ङी । ११४६)

(५७१-१) ॥ प्राजापत्ये द्वे । द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रसोमौ ॥

पवस्वदाऽ२इ । वावीताऽ२३४याइ ॥ आइन्दोधाराऽ२ । भिरोजाऽ२३४सा । आकलशाम् । माधूमाऽ२३४न्त्सो ॥ मनएमानाऽ२३ः ॥ सदाऽ५ए । होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.४ । प.१०। मा.८)२४(नै । ११४७)

(५७१-२)

पवस्वदा ॥ वावीतयाइ । इन्दोधाऽ२३राऽ३४ । भिरोजसाऽ६ँ ए । आकाऽ३हा ।
लाशाऽ२म् ॥ माधूऽ३हाइ । मान्त्सोऽ२३ ॥ मानोऽ२३४वा । साऽ५दोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.३। प.१०। मा.५)२५(णु ।११४८)

(५७२-१) ॥ सुज्ञाने द्वे । द्वयोरिन्द्र उष्णिक्सोमः ॥

सोमःपुना ॥ नऊर्मिणा । अव्यंवाराऽ२म् । विधावताइ ॥ अग्रेवाचाऽ२ः ॥ पावा ।
माऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ कनिक्रददेउपाऽ२३४५ ।

(दी.७।प.८।मा.६)२६(जू।११४९)

(५७२-२)

सोमःपुना ॥ नऊर्मिणोवाऽ३ । ओऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । अव्यंवारंविधावति ॥
अग्रेऽ३ । होवाऽ३ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । वाचःपवमानः ॥ कानाऽ३ ।
होवाऽ३ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ क्राऽ२३४दात् ॥

(दी.१२। प.१८। मा.३)२७(जि । ११५०)

(५७२-३) ॥ द्यौते द्वे । द्युतउष्णिक्सोमः ॥

सोमःपुनानऊ ॥ मिणा । अव्यंवारंविधावाऽ२३ती ॥ अग्रेवाचाः ॥ पवमानाः ।
काऽ३निक्रा ॥ दाऽ२३४५त् ॥ (दी.७। प.७। मा.४)२८(छी । ११५१)

(५७२-४)

सोमःपुनाऊर्मिणाऽ२३४ऐही ॥ अव्यंवारंविधावाताऽ२३४ऐही ॥ अग्रेवाचः-

पवमानाऽ२३४ऐही ॥ कानी । क्रददेऽ३४ । हियाऽ६ँ्हा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.११। प.८। मा.५)२९(गु । ११५२)

(५७२-५) ॥ आतीषादीये द्वे । द्वयोः प्रजापतिरुष्णिक्सोमः ॥

सोमःपुना । नऊऽ३२र्मीऽ२३४णा ॥ अव्यंवारम् । विधावाति ॥ अग्राऽ३२इ ।

वाऽ२३४चाः ॥ पवाऽ३२ । माऽ२३४नाः ॥ कनाऽ३इक्राऽ५दाऽ६ँ्५६ँ्त् ॥

(दी.३। प.९। मा.७)३०(ढे । ११५३)

(५७२-६)

सोमःपुना । हो । नऊर्मिणाऽ६ँ्ए ॥ अव्यंवारंविधाऽ१वाऽ३ती । अग्रेवाऽ२३४५ ।

चाऽ२३४५ः ॥ पावमाऽ२३नाऽ३ः ॥ काऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ क्रददेऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.९। मा.५)३१(घु ।११५४)

(५७३-१) ॥ सोमसामानि चत्वारि । चतुर्णां सोम उष्णिक्सोमः ॥

प्रापुनाऽ२३नायवेधसाइ ॥ होइ । होइ । सोमायवचाउच्याताऽ२इ ॥

भृतिन्नभरामातिभाऽ२इः ॥ जुजोषाऽ२३ताऽ३४३इ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.८। मा.९)३२(बो । ११५५)

(५७३-२)

प्रपुनानौहोऽ५यवेधसाइ ॥ सोमाऔऽ३होऽ३४ । यावचउच्यताइ ॥ भृताऔऽ३-
होऽ३४ । नभरामतिभाइः ॥ जुजाऽ३१उवाऽ२३ ॥ षाऽ२३४ते ॥

(दी.५ । प.७। मा.८)३३(फै । ११५६)

(५७४-१)

गोऽ४मन्नाः । होइ । इन्दोअश्ववाऽ६ँदे ॥ सूतःसुदक्षाधाऽ१नीऽ३वा । शुचिंचावा-
ऽ२३४५ ॥ णमधिगोऽ२३४औहोवा ॥ षूऽ२३४धा । राया । औऽ३होवा ।
होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.११। मा.५)३४(टु । ११५७)

(५७५-१)

हावास्मा ॥ भ्याऽ२३४न्त्वा । वासूवीऽ२३४दाम् । अभाऽ२इवाऽ२३४णीः ।
आनाओऽ२३४वा । षाऽ२३४ता ॥ गोभिष्टेवा ॥ णामाभिवाऽ२३ ॥ सयाम-
सिहोऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.३। प.१०। मा.५)३५(णु । ११५८)

(५७६-१) ॥ यशाँसि त्रीणि । त्रयाणां सोमउष्णिक् सोमः ॥

पवतेहा ॥ र्यातोहरिः । औऽ३होऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा । आतिह्वाराऽ२ँ-
सिरँहिया । औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा ॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा । औऽ३होऽ३१इ।
औऽ२होऽ२३४वा ॥ राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ यशोयाशाऽ२३४५ः ॥

(दी.१०। प.१२। मा.६)३६(फू । ११५९)

(५७६-२)

३ २ ४ ५र २ १र २र १ न २ ३र २ १ २ १ विर १
पावाऽ३ । पवतेहा ॥ र्यातोहरिः । औहोइ । औऽ३होइ । औहोइ ।आतिह्वाराऽ२ँसिर-
टी ता र र खु य
२ र र १ न २ ३र २ १ २ र १ २र १ २र १
ँहिया । औहोइ । औऽ३होइ । औहोइ ॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा । औहोइ ।
के र खु य रौ र
न २ ३र २ १ ३ ५र र २ र १ ३ । । ।
औऽ३होइ । औहोऽ३ ॥ राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ यशोयाशाऽ२३४५ः ॥
खु टी वे शि

(दी.१५। प.१६। मा.११)३७(प । ११६०)

(५७६-३)

३ ४ ५र ३ २ १ ५र ४ ५ २ १
पावातेहर्यताः । हारीऽ३ः । आंऽ२३४ । तिह्वराँसिरा । हिया ॥ अभ्यर्षाऽ२३४ ।
टा टी की ती ता चं
र ५ ३र २ १ ३ ५र र ३ ५
स्तोतृ ॥ भ्योवाऽ३इ ॥ राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ याऽ२३४शाः ॥
ता टी वे दू

(दी.६। प.१०। मा.५)३८(ङु । ११६१)

(५७७-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाज उष्णिक् सोमः ॥

२ १ २ ४ ५ १र २ र१र २ १ २ २ ३
पारिकोऽ३शंमधुश्चुताम् ॥ सोमःपुनानोआर्षति । होयेऽ३ ॥ अभिवाऽ२३४५ ॥
छा धि कि शे
२र १ २र र १ २ ३ ५ ३ ५
णीर्ऋषीणाँस । प्तानाओऽ२३४वा ॥ षाऽ२३४ता ॥
चो वृ दू

(दी.६। प.७। मा.३)३९(खि । ११६२)

एकोनचत्वारिंशत्, दशमः खण्डः ॥१०॥ दशतिः ॥८॥

॥ इत्यौष्णिहम् ॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(५७८-१) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठः ककुप् सोमः ॥

४ ५ १ २ ३ ५ ३ ५ २ र १
पावा ॥ स्वमधुमा । तामाओऽ२३४वा । ईऽ२३४न्द्रा । यसोमक्रतुवित्ता-
ता क वू टू
२र१ २ १ २ ३ ५ २ १ २र१ ३ ।।।
मोमादाऽ३ः ॥ ओइ । माहाओऽ२३४वा ॥ द्युक्षतमोमादाऽ२३४५ः ॥
घू क वू सं

(दी.३। प.८। मा.५)१(डु । ११६३)

(५७८-२) ॥ सफे द्वे । द्वयो र्देवाः ककुप् इन्द्रसोमौ ॥

२ ५ ४ ५ ५ १ — १ — १ २
पाऽ३४ । वस्वामा । धुमत्ताऽ६ँ्माः ॥ आइन्द्राऽ२ । यासोमाऽ२ । क्रतुवाइत्ताऽ३-
चि ती पा का चो
४ २ २ १ २ ४ २ ५
मोऽ३ । माऽ३दाः ॥ महिद्युक्षाताऽ३मोऽ३ ॥ माऽ३४५दोऽ६ँ्हाइ ॥
घः चे ख चू

(दी. नास्ति । प.९। मा.५)२(लु । ११६४)

(५७८-३)

४ ५ ४ ५ र ४ १ र र २ १र २ १ २
पावस्वमधुमा । इहा ॥ तमाः । इन्द्रायसोमक्रतुवित्तामोमाऽ२३दाः । इहा ॥
तु च क घै का
१ २ १ २ १र २ १
माहाइद्यूऽ२३क्षा । इहा ॥ तामोमाऽ२३दाऽ३४३ः । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
जा का जु कु प

(दी.५। प.१०। मा.५)३(मु । ११६५)

(५७८-४) ॥ वासिष्ठम् । वसिष्ठः ककुप् सोमेन्द्रौ ॥

४ ५ ४र ४ १ २ र १ २ २
पावस्वामा । एऽ५ । धुमा ॥ तमाः । इन्द्रायसोऽ३ । हा । औऽ३हो ।
ती ता त क चा क चे
१ २ १ २ २ ३ २ ३ २ २ १ २
माक्रातूवीऽ२३दाऽ३ । हा । औऽ३होऽ३४ । तामोऽ३४मादाः ॥ माहायेऽ३ ॥
वि क गु वू चौ
१ ३ ५र र २र १ ३ ।।।
द्यूऽ२क्षाऽ२३४औहोवा ॥ तमोमादाऽ२३४५ः ॥
वे शि

(दी.५। प.१४। मा.४)४(भी । ११६६)

(५७८-५) ॥ सफम् । देवाः ककुप् सोमः ॥

२ १ २ ४५ २ ३ ५ २ १र २ १ — १ २ ४
पावस्वाऽ३माधु । मत्ताऽ२३४माः ॥ इन्द्रायासोमाऽ२ । क्रतुवाइत्ताऽ३मोऽ३ ।
छ शे छु चः
२ ५ २ १ २ ४ २ ५
माऽ३२३४दाः ॥ माहाइ ॥ द्युक्षाताऽ३मोऽ३ । माऽ३४५दोऽ६ँहाइ ॥
शे र ख घु

(दी.१। प.८। मा.५)५(गु । ११६७)

(५७९-१) ॥ ऐषिराणि चत्वारि । चतुर्णामिषिरः ककुप् सोमः ॥

२ १ २ — ४ २ ३ ५ २ १ २र र ४ २र ३ ५
आभाइ । द्युम्नाऽ३म्वृऽ३हद्याशाः ॥ इषाः । पतेदिदीहिदेऽ३वाऽ३देवायुम् ॥
र वि र वि
२ १ २ ३ २ ४
विको । शम्मा ॥ ध्यामाऽ३ँयूऽ५वाऽ६ँ५६ँ ॥
र घ टो

(दी.३। प.७। मा.४)६(ठी । ११६८)

(५७९-२)

५ ४ ५ २ १ २ — १ २ ३ ५
अ । भ्येद्यूम्नाम् ॥ बृहाद्याऽ१शाऽ२ः । इषास्पताइ । दीदीहाऽ२३४इदे।
प ता घु र वू
३ २ ३ ५ २ ३ ५ १ २
वादाइवाऽ२३४यूम् ॥ विकौवाओऽ२३४वा ॥ शम्मध्यमाऽ३१उवाऽ२३ ॥
ठौ शे ञ
५
यूऽ२३४वा ॥ (दी. नास्ति । प.९। मा.८)७(लै । ११६९)
दू

(५७९-३)

५ ४५ ४ ५ ४ १ र र २र १र २ र र
अभिद्युम्नम्बृहात् । इहा ॥ यशाः । इषस्पतेदिदीहिदेवादेवाऽ२३यूम् ॥ विकौहोवा-
फु त क थै
२ १ विर १ २ १ २ १
ऽ३हाइ ॥ शम्माऽ२ध्यमंयुवा । इडाऽ२३भाऽ३४३ । ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥
थै घि वु कु प

(दी.७। प.९। मा.५)८(झु । ११७०)

(५७९-४)

अभिद्युम्नंबृऽ६ँ हृद्यशाः ॥ इषस्पताइ । दिदीहिदाइ । वादेवयूम् ॥ विकोशम्मध्य-

माऽ२३ँ होइ ॥ यूऽ२३४वा । एहियाऽ६ँ हा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.५। प.९। वि.६)९(भू । ११७१)

(५८०-१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि । त्रयाणां कर्णश्रवा ककुबश्वः ॥

आसोतापा ॥ राऽ२इषाऽ२३४औहोवा । चाऽ२३४ता । अश्वन्नस्तोमामप्तुरा-

ऽ२ँ रजस्तुरम् ॥ ओयेऽ३ । वानाऽ३ ॥ ओयेऽ३ । प्रक्षाऽ३४ । औहोवा ॥

उदप्रुताऽ२३४५म् ॥ (दी.९। प.१०। मा.४)१०(नी । ११७२)

(५८०-२)

आसोतापा ॥ रिषि । चताऽ२ । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ । अश्वन्नस्तोममा।

प्तुराऽ२म् । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ । रज । स्तुराऽ२म् । ऊऽ२ ।

हाऽ२इ । ऊऽ२ ॥ वन । प्रक्षाऽ२म् । ऊऽ२ । हाऽ२इ । ऊऽ२ ॥ उदा ।

प्रुऽ२ताऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ३२३४पा ॥ (दी.६।प.२४। मा.८)११(च्लै । ११७३)

(५८०-३)

आसोतापा ॥ रि । षाइ । चता । अश्वान्नस्तो । मामप्तूऽ२३४राम् । राजास्तू-

ऽ२३४राम् ॥ वानोहाइ ॥ प्रक्षामूऽ३दा । हिम्मायेऽ३ ॥ प्रूऽ२३४ताम् ॥

(दी.३ । प.११। मा.५)१२(टु । ११७४)

(५८०-४) ॥ वाचस्सामानि त्रीणि । त्रयाणां वाक्ककुबश्वः ॥

आसोतापारीऽ६ँ षिश्वता ॥ आश्वाओऽ२३४वा । नस्तोमामप्तुराऽ२ँ रजस्तुरा-

ऽ२३म् ॥ होइ । वानाओऽ२३४वा ॥ प्रक्षमुदप्रुताऽ२३४५म् ॥

(दी.६। प.६। मा.५)१३(कु।११७५)

(५८०-५)

आसोऽ३४औहोवा ॥ तापराइषिश्चाताऽ२ । आश्वन्नस्तो । मामाप्तूराऽ२म् ।

राजास्तूऽ२३४राम् ॥ वानोहाइ ॥ प्राक्षमुदाऽ३१उवाऽ२३ ॥ प्रूऽ२३४ताम् ॥

(दी.५। प.८। मा.७)१४(बे । ११७६)

(४८०-६)

आसोतापा । हो । रिषिश्चताऽ६ँ ए ॥ आश्वन्नस्तो । मामाप्तूराऽ२म् ।राजास्तुरम् ॥

वानाप्रक्षाऽ२३म् ॥ ऊऽ२३दाऽ३ । प्रूऽ३४५तोऽ६ँ हाइ ॥

(दी.४। प.९। मा.५)१५(धु । ११७७)

(५८१-१) ॥ कौल्मलबर्हिषे द्वे । द्वयोः कुल्मलबर्हिः ककुप् वृषभः ॥

एताम् ॥ ऊत्याम् । मादाऽ२च्यूऽ२३४ताम् । साहास्त्राधा । रांवृषभाऽ३म् ।

दिवोऽ२दूऽ२३४हाम् ॥ विश्वाऽ२होऽ१इ । होइ ॥ वाऽ२३सूऽ३ । नाऽ२इबा-

ऽ२३४औहोवा ॥ भ्राऽ२३४ताम् ॥

(दी.२। प.११। मा.१०)१६(चौ । ११७८)

(५८१-२)

एतामूत्याम् ॥ मदाऽ३१उवाऽ२३ । च्यूऽ२३४ताम् । साहस्त्रधारंवृषभन्दिवो-
दूहाऽ२३म् ॥ वाइश्वावासू ॥ निवाऽ३१उवायेऽ३ ॥ भ्राऽ२३४ताम् ॥

(दी.२। प.७। मा.७)१७(छे । ११७९)

(५८१-३) ॥ सादन्तीयम् (शङ्कु) प्रजापतिः ककुप् वृषभः ॥

एतमुत्याम् । एऽ५ । मदा ॥ च्युताम् । सहस्त्रधारंवृषभंदिवोदूऽ२३हाम् ॥
वाइश्वाऽ२वासूऽ२३ ॥ निबोऽ२३४वा । भ्राऽ५तोऽ६ हाइ ॥

(दी.३। प.८। मा.५)१८(डु । ११८०)

(५८१-४) ॥ कौल्मलबर्हिषाणि त्रीणि । त्रयाणां कुल्मलबर्हिः ककुप् वृषभः ॥

एतमुत्याम् । ओहाइ । मदच्यूताम् । ओहाइ ॥ साहस्त्राऽ२३४धा । रंवार्षाऽ२३४माम् ।
दिवोदुहमोऽ२३४हाइ ॥ विश्वाऽ२होऽ१इ ॥ वाऽ२३सूऽ३ । नाऽ२इबा-
ऽ२३४औहोवा ॥ भ्राऽ२३४ताम् ॥ (दी.४। पा.११।मा.१०)१९(तौ । ११८१)

(५८१-५)

एतामुत्यंमदाच्युताम् ॥ साहस्त्राधा । रा०वृषाभाऽ२म् । दिवोऽ२ । दुहमोइ ॥
विश्वावसूनिवाऽ२३होइ ॥ भ्रातमाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ऊऽ३२३४पा ॥

(दी.३। प.८। मा.५)२०(ड्लु । ११८२)

(५८१-६)

३र २ ५ र ४ ५ २ १ र वि १

एताऽ३४म् । उत्यम्मदा । च्यूताम् ॥ सहस्रधाराऽ२ँवृ । षाभम् । दिवोऽ२३१२३ ।

ट ता ता चो र ऊ

१ ५ १र र २ १ २ १ ५र ५

दूऽ२३४हाम् ॥ विश्वावसूनिबाऽ३ओयेऽ३ ॥ आऽ२३४ताम् । एहियाऽ६ँहा ॥

की ऊ ट पा

४

होऽ५इ ॥ डा ॥ (दी.६। प.१२। मा.७)२१(खे । ११८३)

ता प

(५८२-१) ॥ लोमनी द्वे (दीर्घम्) द्वयोर्भरद्वाजः ककुप् सोमः ॥

४ ५ १र र २ १ — १ — र र १ २

सासू । न्वेयोवसूऽ२३नाम् । योराऽ२यामाऽ२ । नेतायाइडाऽ२३नाम् ॥

ता कः धि जा

१ २ १ २ १ ५ ५

सोऽ२३माः ॥ यःसुक्षिताऽ२३४इनोऽ६ँहाइ ॥ (दी.४। प.६। मा.६)२२(तू । ११८४)

कः घे

(५८२-२)

४ ५ १र र र २ १ — १ — र र १ र

ससुहाउ ॥ न्वेयोवसूनाऽ२३ँहाउ । योराऽ२यामाऽ२ ॥ नेतायः ॥ इडानाऽ२३-

ता कः धि च

२ १र र २ २ ३ २र १ ४ ५ ४

ँहाउ ॥ सोमोयःसूऽ३हाउ ॥ क्षितीनाम् । औऽ२३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

कः कः या कु ता प

(दी.९। प.१०। मा.७)२३(ने । ११८५)

(५८२-३) ॥ सोमसामानि त्रीणि । त्रयाणां सोमः ककुप् सोमः ॥

४ ५ १ र २ । । । १र विर १र विर २र १र २

सः । स्वेसासू ॥ न्वेयोवसाऽ३१उवाऽ२३ । नाऽ२३४५म् । योराऽ२यामाऽ२नेताया-

त ता ऊ टू

१ विर र २ ३ ५ १ २ २

इडाऽ२नाऽ३म् ॥ सोमौवाओऽ२३४वा ॥ यःसुक्षिताऽ३१उवायेऽ३ ॥

ला ठौ ऊ

३ । । ।

नाऽ२३४५म् ॥ (दी.९। प.८। मा.८)२४(दै । ११८६)

दू

(५८२-४)

२ १ ४र ५र २र १ २ २ र १
सासुन्वेऽ२३योवसूनाम् ॥ योरायाऽ१माऽ२३ने । तायइडाऽ२३४५नाऽ६ँ५६ँम् ॥
छा जै छी
१र विर १ २ र १ र ।।।
सोमोऽ२यःसुक्षितीनाम् । सोमाऽ२३४५ः ॥
गो कु

(दी.८। प.५। मा.५)२५(णु । ११८७)

(५८२-५)

४ ५ र र ४ ५ २र १ २ २ र र १ २
ससुन्वेयाः । एवासू ॥ नाँयोराऽ१याऽ२३मा । नेतायइडाऽ२३नाऽ३४म् ॥
ता ता जै जी
३र २ १ २ १ ३ ।।।
सोमाऽ३ः ॥ यःसुक्षि । ताऽ२३४५इ ॥ नाऽ२३४५म् ॥
टी का कु दू

(दी.६। प.८। मा.६)२६(गू । ११८८)

(५८३-१) ॥ शैतोष्माणि चत्वारि । चतुर्णां शीतोष्मः ककुप् सोमः ॥

५ २ र र १ — १ —
त्वँहिया ॥ गदाइवियपवमानजनिमानिऽ३द्यूमाऽ२ । तामाऽ२ः ॥
प छो का
१ — २ १ ५ ४ ५
आमाऽ२र्त्तात्त्वाऽ२३ ॥ याघोऽ२३४वा । षाऽ५योऽ६ँहाइ ॥
घी छ ति

(दी.२। प.६। मा.३)२७(चि । ११८९)

(५८३-२)

५ २ १ २ १ २र १ २ २ १ २ ५
त्वँहिया ॥ गादाइविया । पवमान । होवाऽ३हाइ । जानिमाऽ२३नीऽ३४ । द्युमा ।
प चो का कः जी ता
२ २ १ १ ३ ५रर २ १ ।।।
ताऽ३माः । अमाऽ२३ ॥ ताऽ२त्त्वाऽ२३४औहोवा ॥ यघोऽ३षयाऽ२३४५न् ॥
वे कि वे ज

(दी.३। प.१०। मा.५)२८(णु । ११९०)

(५८३-३)

त्वँ ह्यंगादा ॥ विया । पवमानजनिमानिद्युमत्ताऽ२३माः ॥ आमार्त्ताऽ२३त्त्वाऽ३ ॥

याघोऽ२३४वा । षाऽ५योऽ६ँ हाइ ॥

(दी.२ । प.६। मा.२)२९(चा । ११९१)

(५८३-४)

त्वँ होऽ३अंगादैविया ॥ पवमाऽ२ना । जानिमाऽ२नायेऽ३४ । द्युमा । ताऽ३माः ॥

अमार्त्ताऽ३त्त्वाऽ३ ॥ याघोऽ२३४वा । षाऽ५योऽ६ँ हाइ ॥

(दी.१। प.८। मा.३)३०(गि । ११९२)

(५८४-१) ॥ गायत्रपार्श्वम् । देवाः ककुप् सोमः ॥

एषाः ॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३ । सू२३४ताः । अव्याऽ२वारेभिःपवते-

मादिन्तामः ॥ क्रीडानूऽ१र्मीऽ२ः ॥ आपाऽ३म् । हिम्ऽ२३वाऽ३ ॥

आइवाऽ२३४५ ॥

(दी.६। प.८।मा.८)३१(गै । ११९३)

(५८४-२) ॥ सन्तनि । देवाः ककुप्युस्त्रिया अभिव्रजन्तेति विष्टारपंक्तिः सोमः ॥

एषाहाउ ॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४ताः । अंव्याऽ२वारेभिःपव-

तेमादिन्तामाऽ२३ः ॥ क्रीडन्हाउ ॥ ऊर्मिरपाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ२३४वा ॥

छू ॥१॥ यउस्त्रियाऽ२अपियाअन्तरश्मनीऽ२३ ॥ निर्गाहाउ ॥ आकृन्तदा-

ऽ३१उवाऽ२३ ॥ जाऽ२३४सा ॥ झु ॥२॥ आभिव्रजन्तत्लिषेगव्यमश्वियाऽ२३म् ॥

वर्मीहाउ ॥ वाधृष्णवाऽ३१उवाऽ२३ ॥ रूऽ२३४जा ॥ घि ॥३॥

(दी.१०। प .१५। मा.१४)३२(मी । ११९४-९५)

(५८४-३) ॥ सोम सामानि त्रीणि । त्रयाणां सोमः ककुप् सोमः ॥

एषस्यधा । रायाऽ१सुताऽ२ः ॥ अव्यावाराइ । भाइःपवते । मदिन्तामाः ॥

क्रीडन्नूऽ२३र्मीऽ३ः ॥ आऽ२३पाऽ३म् । आऽ३४५इवोऽ६ँहाइ ॥

(दी.६। प.८। मा.८)३३(गै । ११९६)

(५८४-४)

एषस्याऽ३धारयासुताः ॥ अव्याहोऽ२इ । वारेभिःपवतेमादिन्तामाऽ२ः ॥

क्रीडाऽ२न्होऽ१इ । ऊ२३र्मीः ॥ अपामिवा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी.८। प.९। मा.६)३४(दू । ११९७)

(५८४-५)

४र र ४ २ १र २र १ २ ३ २ १ २ ३ २
एषस्यधाऽ५रयासुताः ॥ अव्यावाराइ । भिःपावाताऽ२३इ । मादिन्तामाः ॥
ती रो श्री चे

१र र २ १ ५ ४ ५
क्रीडन्नूर्मिरपोवाऽ३ओऽ२३४वा ॥ आऽ५इवोऽ६ँ्हाइ ॥
क्षि ति

(दी.६।प.६। मा.७)३५(के । ११९८)

पञ्चत्रिंशत्, एकादशः खण्डः ॥११॥ दशतिः ॥९॥

इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशः प्रपाठकः ॥१७॥

॥ इति ककुबुष्णिहः ॥ ॥ इति पावमानाख्यं चतुर्थं गानं समाप्तम् ॥

॥ इति सौम्यं तृतीयं पर्वसमाप्तम् ॥ इति पावमानं पर्व समाप्तम् ॥

॥ इति वेयगानं समाप्तम् ॥

—*—

आग्नेय काण्डे मन्त्र संख्या – १८०

ऐन्द्रम् काण्डे मन्त्र संख्या – ६३३

पावमान काण्डे मन्त्र संख्या – ३८५

योगः – ११९८

ॐ नमः सामवेदाय

॥ अथ आरण्यक-गानम् ॥

(अथ अर्क पर्वः)

(१-१) ॥ अष्टौ वैरूपाणि (अष्टौ वैरूपम्) । वैरूपो बृहतीन्द्रसूर्यौ वा ॥

ओम् ॥ यद्यावई ॥ द्रता३१उवाऽ२३ । शाऽ२३४ताम् । हाहाऽ३१उवाऽ२३ ।
ईऽ२३४डा । शातंभूमीः । उताऽ३१उवाऽ२३ । सीऽ२३४यूः । हाहाऽ३१-
उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ॥ नत्वावज्रिन्त्सहस्र꣡ꣳसू । रियाऽ३१उवाऽ२३ ॥
आऽ२३४नू। हाहाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा । नजातमा । ष्टरोऽ३ । आउ ।
वाऽ२३ । दाऽ२३४सी । हाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दीर्घ.१०। पद.२२। मात्रा.१३)१(फि ।१)

(१-२) ॥ ह्रस्वावैरूपम् ॥

यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ नात्वावज्रिन् ।
सहस्र꣡ꣳसूरियाऽ२आनूऽ२ ॥ नाजाऽ२तामा ॥ ष्टारोऽ२३ । दाऽ२साऽ२३४-
औहोवा ॥ दिशंविश꣡ꣳहस् । अश्वाशिशुमतीऽ३ । इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.१०। प.१२। मा.७)२(फे ।२)

(१-३) ॥ पञ्चनिधनं वैरूपम् ॥

१ र २ र १ र २ १ र र २ १ र — १ — १ —
यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ ओवाऽ२ । हिँ ऽ२ । हिँ ऽ२ ।
कै क रो क का का का
१ — १र न २ १ र २ १ २ १र २र १ र —
हिँ ऽ२ । ओवाऽ३ । हाउवा । नत्वावज्रिन्त्सहस्र ँ सूर्याअनु । ओवाऽ२ ।
का खी च ल का
१ — १र न २ १ र २ १र २र १र — १ —
हिँ ऽ२ (त्रिः) । ओवाऽ३ । हाउवा । नजातमष्टारोदासी ॥ ओवाऽ२ । हिँ ऽ२ ।
का खी च धि का का
१र न २ १ १र — १ —
(त्रिः) । ओवाऽ३ । हाउवा । दिशविश ँ हस् ॥ ओवाऽ२ । हिँ ऽ२ । त्रिः) ।
खी च क का का
१र न २ १ र २ र १र — १ — १र न
ओवाऽ३ । हाउवा । अश्वाशिशुमती । ओवाऽ२ । हिँ ऽ२ । (त्रिः) ओवाऽ३ ।
खी च का का का खी
२ १ ।।।
हाउवाऽ३॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥
चा कु

(दी.२३ । प.३९। मा.१०)३(ढौ ।३)

(१.४) ॥ षण्णिधनं वैरूपम् ॥

१ र २ र १ र २ १ र र २ १ २
यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा ।
कै क रो क च
१ र र २ १ २ १र २र १ २ १ र २ १र २र
नत्वावज्रिन्सहास्र ँ सूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।
कः च धि
२ १ २ १ र २ र
हाउहाउहाउवा। दिशंविश ँ हुस् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ अश्वाशिशुमती ।
च क च का
२ १ २ र १ र २ १ ।।।
हाउहाउहाउवा । युवतिश्चकुमारिणी । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥
च रो चा कु

(दी.१५। प.१६। मा.२३)४(पि । ४)

(१-५) ॥ सप्त निधनं वैरूपम् ॥

यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा।
नत्वावज्रिन्त्सहास्त्र ँ्सूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।
हाउहाउहाउवा। दिशंविश ँ्हस् ॥ हाउहाउहाउवा । अश्वाशिशुमती ।
हाउहाउहाउवा । सूवः । हाउहाउहाउवा । ज्योतिः । हाउहाउहाउवा३ ॥
इट् इडा२३४५ ॥ (दी.१५ । प.१८। मा.२८)५(बै ।५)

(१-६) ॥ अष्टा निधनं वैरूपम् ॥

यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा ।
नत्वावज्रिन्त्सहास्त्र ँ्सूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।
हाउहाउहाउवा। दिशंविश ँ्हस् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ अश्वाशिशुमती ।
हाउहाउहाउवा । युवतिश्चकुमारिणी ॥ हाउहाउहाउवा । सूवः । हाउहाउहाउवा ।
ज्योतिः । हाउहाउहाउवा३ ॥ इट्इडा२३४५ ॥

(दी.१७। प.२०। मा.३१)६(ज ६)

(१-३) ॥ पञ्चनिधनं वैरूपम् ॥

१ र २ र १ र २ १र र २ १ र — १ — १ —
यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ ओवाऽ२ । हिँ्ऽ२ । हिँ्ऽ२ ।
कै क रो क का का का
१ — १र न २ १ र २ १ २ १र २र १ र —
हिँ्ऽ२ । ओवाऽ३ । हाउवा । नत्वावज्रिन्त्सहस्त्र ँ्सूर्याअनु । ओवाऽ२ ।
का खी च ल का
१ — १र न २ १ र २ १र २र १र — १ —
हिँ्ऽ२ (त्रिः) । ओवाऽ३ । हाउवा । नजातमष्टारोदासी ॥ ओवाऽ२ । हिँ्ऽ२ ।
का खी च घि का का
१र न २ १ १र — १ —
(त्रिः) । ओवाऽ३ । हाउवा । दिशविश ँ्हस् ॥ ओवाऽ२ । हिँ्ऽ२ । त्रिः) ।
खी च क का का
१र न २ १ र २ र १र — १ — १र न
ओवाऽ३ । हाउवा । अश्वाशिशुमती । ओवाऽ२ । हिँ्ऽ२ । (त्रिः) ओवाऽ३ ।
खी च का का का खी
२ १ । । ।
हाउवाऽ३॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥
चा कु

(दी.२३ । प.३९। मा.१०)३(ढौ ।३)

(१.४) ॥ षण्णिधनं वैरूपम् ॥

१ र २ र १ र २ १र र २ १ २
यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा ।
कै क रो क च
१ र र २ १ २ १र २र १ २ १ र २ १र २र
नत्वावज्रिन्सहास्त्र ँ्सूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।
ङः च घि
२ १ २ १ र २ र
हाउहाउहाउवा। दिशंविश ँ्हस् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ अश्वाशिशुमती ।
च क च का
२ १ २ र १ र २ १ । । ।
हाउहाउहाउवा । युवतिश्वकुमारिणी । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥
च रो चा कु

(दी.१५। प.१६। मा.२३)४(पि । ४)

(१-५) ॥ सप्त निधनं वैरूपम् ॥

यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा।

नत्वावज्रिन्त्सहास्त्रꣳसूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।

हाउहाउहाउवा। दिशंविशꣳहस् ॥ हाउहाउहाउवा । अश्वाशिशुमती ।

हाउहाउहाउवा । सूवः । हाउहाउहाउवा । ज्योतिः । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥

इट् इडाऽ२३४५ ॥ (दी.१५ । प.१८। मा.२८)५(वै ।५)

(१-६) ॥ अष्टा निधनं वैरूपम् ॥

यद्यावाइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाउहाउहाउवा ।

नत्वावज्रिन्त्सहास्त्रꣳसूर्याअनु । हाउहाउहाउवा । नजातमष्टारोदासी ।

हाउहाउहाउवा। दिशंविशꣳहस् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ अश्वाशिशुमती ।

हाउहाउहाउवा । युवतिश्चकुमारिणी ॥ हाउहाउहाउवा । सूवः । हाउहाउहाउवा ।

ज्योतिः । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.१७। प.२०। मा.३१)६(ज ६)

(१-७) ॥ द्वादश निधनं वैरूपम् ॥

यद्यावइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ ओहाहाउहाउ । ओहहाउवा ।
नत्वावज्रिन्त्सहस्र ँ्सूर्याअनु । ओहाओहा । ओहाओहा । ओहाओहाऽ३ ।
हाउवा । नजातमष्टारोदासी । ओहाहाउहाउ । ओहाहाउवा । दिशंविश ँ्हस् ॥
ओहाओहा । ओहाओहा । ओहाओहाऽ३ । हाउवा ॥ अंश्वाशिशुमती । ओहाहाउहाउ ।
ओहाहाउवा । सूवाः । ओहाओहा । ओहाओहा । ओहाओहाऽ३ । हाउवा ।
ज्योतिः ।ओहाहाउहाउ । ओहाहाउवा । ईडा । ओहाओहा । ओहाओहा ।
ओहाओहाऽ३ । हाउवा । इट् इडा । ओहाहाउहाउ । ओहाहाउवाऽ३ ॥
हौऽ३ । आऽ३ । ऊऽ३ । ईऽ२३४५ ॥ (दी.६८। प.४२। मा.३८)७(व्र । ७)

(१-८) ॥ पुष्यम् वैरूपम् ॥

यद्यावइन्द्रतेशातम् । ए । शातंभूमीरुता । स्योवा ॥ हाओवा । (द्विः) । हुवे।
हाओवा । हुवे । हाओऽ२३४वा । नत्वावज्रिन्त्सहस्र ँ्सूर्याअनु । हाओवा ।
(त्रिः) । हुवे । हाओवा । (द्वे द्विः) । हुवे । हाओऽ२३४वा । नजातमष्टारोदासी ।
हाओवा । (चतुः) । हुवे । हाओवा । (द्वे-चतुः) ॥ नाजातमष्टरोदासाइ ।
ऐहोइ । आऽ२३४इही । (त्रीणि-चतुः) ॥ हाओवा । (पञ्च) । हुवे । हाओवा।
(द्वे-पञ्च) । हैहैहैहोवाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥ ऊऽ२३४५ ॥

(दी.११५ । प.६३ । मा.४४)८(वीं । ८)

(२-१) ॥ अन्तरिक्षे द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

हाउपिबासुता ॥ स्यरसि । नाः । औहौहोवाऽ२ । इहा । मत्स्वानइन्द्रगोम ।
ताः । औहौहोवाऽ२ । इहा । आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृ । धाइ । औहौहोवाऽ२ ।
इहा ॥ अस्माँ॒अ । वा । औहौहोवाऽ२ ॥ इहा । तुताइ । धाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥
सुष्टुभस्तुभोश्वाशिशुमक्राऽ३न् । इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.२६। प.२१। मा.१०)९(कौ । ९)

(२-२)

पिबासुता ॥ स्यरसिनाः । मात्स्वाऽ१नाईऽ२ । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ ।
ईऽ३४डा । द्रागोमताः । आपिर्नोबोऽ२ । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ । ईऽ३४डा ।
धिसधमाद्येवृधे ॥ आस्माँ॒ऽ१अवाऽ२ । आ । औऽ३होवाहाउवाऽ३ । ईऽ३४डा ॥
तुताइ। धाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ विष्टुभस्तुभोश्वाशिशुमक्राऽ३न् । इट्इडाऽ२३४५॥

(दी.१५। प.२०। मा.११)१०(म । १०)

(३-१) ॥ अरिष्टे द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्जगती सोमःदेवा ब्रहस्पतिर्वा ॥

हाहा । होइया । (द्वे-त्रिः) । पावी । त्रंताइ । विततऽ३म्ब्रा। ह्याणस्पाऽ२३४ताइ ॥
प्राभूः । गात्रा । णीऽ३पारियाइ । षिवाइश्वाऽ२३४ताः । आता । प्तता ।
नूऽ३र्नातादा । मोअश्नूऽ२३४ताइ ॥ शार्ता । सआइत् । वहन्तः। सम् ।
तादाशाऽ२३४ता । हाह । होइया । (द्वे-त्रिः) ॥ होइडा । (द्विः)। होऽ२३४५इ ॥
डा ॥ (दी.२६। प.३३। मा.२२)११(गा । ११)

(३-२)

हाहु । हौऽ३४५ । (द्वे-त्रिः) । पावी । त्रंताइ । वितताऽ३म्ब्रा ।
ह्माणस्पाऽ२३४ताइ ॥ प्राभूः । गात्रा । णीऽ३परियाइ । षिवाइश्वाऽ२३४ताः॥
आता । प्तता । नूऽ३र्न्नातादा । मोअश्नूऽ२३४ताइ । शार्ता ॥ सआइत् । वहन्तः।
सम् । तादाशाऽ२३४ता । हाहु । हौऽ३४५ । (द्वे-त्रिः) ॥ होइडा । (द्विः) ।
होऽ२३४५इ ॥ डा ॥ (दी.१४। प.३३। मा.१६)१२(दू । १२)

(४-१) ॥ अहरीते द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ऋभुर्वा ॥

हावाभी ॥ त्वापूर्वपीत् । याइ । इहाऽ३ । हाउवाऽ३ । बृऽ२३४हात् । इन्द्रास्तोमाइ।
भिरायावाः । इहाऽ३ । हाउवाऽ३ । बृऽ२३४हात् । सामाइचीना । सात्रभावाः ।
समाऽ२स्वारान् । इहाऽ३ । हाउवाऽ३ । बृऽ२३४हात् ।।रुद्रागृणा । तापूर्वियाम् ।
इहाऽ३ । हाउवाऽ३ । बृऽ२३४हात् ॥ ए । बृहात् ॥ (दी.८। प.२४। मा.१७)१३(ढे । १३)

(४-२)

अभीहाउ ॥ त्वापूर्वपीतयाइ । इहु । हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः ।
इन्द्रस्तोमेभिरायवाः । इहु । हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः ॥ समी ।
चीनासत्रभवस्समस्वरान् । इहु । हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः ॥
रुद्रागृणन्तपूर्वियाम् । इहु । हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः ॥ एऽ३ ।
सुवाऽ२३४५ः ॥ (दी.११ । प.२०। मा.१५)१४(डु । १४)

॥ चतुर्दशः प्रथमः खण्डः ॥१॥

(५-१) ॥ वरुणस्य देवस्थानम् । वरुणो बृहतीन्द्रः ॥

हाउपिबासुता ॥ स्यरसिनाऽ३ः । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । सहोनरः ।
मत्स्वानइन्द्रागोमताऽ३ः । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । सत्यमोजः ॥
आपिर्नोबोधिसधमाऽ३ । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । स्वर्ज्योतिः ॥
दियेवृधेऽ३ । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा ॥ एस्थादिदम् । (त्रिः) ।
अस्मा ँ्अवन्तुतेधियाऽ३ः । होइ । (त्रिः) हाउहाउहाउवा ॥
द्यौरक्रान्भूमिरततनत्समुद्र ँ्समचूकुपत् । इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.२३ । प.३४ । मा.४४)१५(ढी । १५)

(६-१) ॥ बृहद्देवस्थानम् । प्रजापतिः बृहती मरुतः ॥

हाउहाउहाउ । बृहात् । (त्रिः) । बृहत् । (त्रिः) । बृहात् । (त्रिः) ।
बृहदिन्द्रायाऽ३गायाऽ१ताऽ२ ॥ मरुतोवृत्राऽ३हान्ताऽ१माऽ२म् ॥
येनज्योतिरजनयन्नृऽ३तावाऽ१र्द्धाऽ२ः ॥ देवन्देवायाऽ३जागृऽ१वीऽ२३ ।
हाउहाउहाउ । बृहात् । (त्रिः) । बृहत् । (त्रिः) बृहात् । (द्विः) । बृहाऽ३१उ ।
वाऽ२ ॥ ए । बृहत् (द्वे-त्रिः) ॥

(दी.१६ । प.३१ । मा.२९)१६(को । १६)

(७-१) ॥ ऐरयदैरिणे द्वे । वरुणो बृहती सोमः ॥

ऐरायाऽ२त् । (द्विः)। ऐरायाऽ२३त् । सुवाराऽ३४ । हाहोइ । पुनानःसोमाऽ३-
धाराऽ१याऽ२ ॥ आपोवसानोऽ३आर्षाऽ१सीऽ२ ॥ आरत्नधायोनिमृतस्याऽ३-
साइदाऽ१सीऽ२ ॥ उत्सोदेवोहिऽ३राण्याऽ१याऽ२ः ॥ ऐरायाऽ२त् । (द्विः) ।
ऐरायाऽ२३त् । सुवाराऽ३४ । हाहाऽ३४ । औहोवा ॥ एऽ३ ।
देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः ॥ (दी.२५। प.१७। मा.११)१७(फ । १७)

(८-१) ॥ वरुणो गायत्रीन्द्रः ॥

हावौहोहाउ । अभित्वावार्षाऽ३भासुताइ । आभित्वावा । षाभासुताइ ।
अमित्वावार्षाऽ३भासुताइ ॥ औहोहावौहोऽ२ । सुतँ्सृजामीऽ३पीतयाइ । सुतँ्सृजा ।
मीपीतयाइ । सुतँ्सृजामीऽ३पीतयाइ ॥ हावौहोहाउ । तृंपावियाश्नूऽ३हीमदाम्।
तृंपाविया । श्नूहीमदाम् । तृम्पावियाश्नूऽ३हीमदाम् ॥ औहोहावौहोऽ२ ।
उहुवाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ हस् ॥ (दी.३४। प.१९। मा.१३)१८(धि । १८)

(७-१) ॥ आङ्गिरसे द्वे । अंगिरा बृहती सोमः ॥

हाउहाउहाउ । हौवाओऽ२३४वा । हाहा३१उवाऽ२ । पुनानःसोमधाराया ।
श्रवोबृहदिहाइडा ॥ आपोवसानोअर्षसि । श्रवोबृहदिहाइडा ॥ आरत्नधायोनिमृत-
स्यसीदसि । श्रवोबृहदिहाइडा ॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः । श्रवोबृहदिहाइडा ।
हाउहाउहाउ । हौवाओऽ२३४वा । हाहाऽ३१उवाऽ२ ॥ सुवर्जगन्माहस्पृथि-
व्यादिवामाशाकेमवाजिनोयामम् । हुस् । इट्इडाऽ२३४५ ॥(दी.३१। प.१७। मा.१९)१९(थो । १९)

(९-१) ॥ आङ्गिरसे द्वे (तत्रोत्तरम्) ॥

२र र र र र र र र २ १र २र १ २ १ २ १

औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा । तवेदिन्द्रावामंवासु ॥ त्वंपुष्यसिमध्यामम् ॥

चे धि कै

२ १र २ १ २र १ २र१र २ र र र र र र र र र २

सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि ॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते । औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा ॥

छु धि चे

१ २ र१र २र१ २र १ २१र २र १ र २१ २ १ २ १र २१र

सुवर्जगन्मदेवानामवसावायँ शाकेमवाजिनोयामम् । सुवर्जगन्ममहस्पृथिव्यादिवामा ।

लं ऊः

२१ ।।।

हस्बृहन्नमाऽ२३४५: ॥ (दी.३० । प.९। मा.८)२०(मै । २०)

घू

(९-२) ॥ बार्हस्पत्यम् बृहस्पतिर्बृहतीन्द्रः ॥

१र २र १र २ २ १ ३ २ ५र र १र २र १ २

औहोऔहोऽ३वा । (त्रिः) । इडाऽ२३भिराऽ३४ । औहोवा । तवेदिन्द्रावामंवासु ॥

चै वी प धि

१ २ १ २ १र २ १ २र १ २र१र २ र

त्वंपुष्यसिमध्यामम् ॥ सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि ॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते ।

कै छु धि

१र २र १र २ २ १ २ ५र र

औहोऔहोऽ३वा । (त्रिः) । इडाऽ२३भिराऽ३४ । औहोवा ॥

चै वी प

१ र र२१ ।।।

इडासुवोबृहन्नमाऽ२३४५: ॥ (दी.३१। प.१५ । मा.८)२१(डै । २१)

घू

(१०-१) ॥ भारद्वाजम् । भरद्वाजो बृहतीन्द्रः ॥

२र र र र र र र र र र र १ २

हाउहाउहाउ । औहोआत्वासहस्रमाशताम् ॥ हाउहाउहाउ । युक्तारा ऽ१था ऽ२३इ ।

च च च घू

२र र र १ २ २र र र १ २

हाउहाउहाउ । हिराण्याऽ१याऽ२३इ । हाउहाउहाउ । ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३: ॥

च घू च घी

२र र र १ २ १ २ २र र र

हाउहाउहाउ । हारायइ । द्राकाइशाऽ१इनाऽ२३: ॥ हाउहाउहाउ ।

च का घू

१ २ २र र र ३ २ १ ५ ५

वहान्तूऽ१सोऽ२३ ॥ हाउहाउहाउ । मापीऽ३ । ताऽ२३४याइ । उहुवाऽ६ँ हाउ ।

घी च टी की पा

१

वा ॥ हस् ॥ (दी.२६। प.१९। मा.३३)२२(घि । २२)

प क

(११-१) ॥ आथर्वणम् । अथर्वा गायत्री आपः ॥

उहुवाओहा । औहोवा । शन्नोदेवीः ॥ उहुवाओहा । औहोवाहाउ । वा ।
आवात् । आमिष्टाऽ२३याऽ३इ ॥ उहुवाओहा । औहोवा । शन्नोभवा ॥ उहुवाओहा ।
औहोवाहाउ । वा । सूवः । तुपीताऽ२३याऽ३इ ॥ उहुवाओहा । औहोवा ।
शंयोरभी ॥ उहुवाओहा । औहोवाहाउ । वा । ज्योतिः । स्त्रावन्तूऽ२३नाऽ३ः।
उहुवाओहा । औहोवाहाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.४३ । प.२८। मा.१८)२३(ड्रै । २३)

(१२-१) ॥ नारद्वसवम् । नरद्वसुर्बृहतीन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । औहोइन्द्रज्येष्ठन्नआभराऽ३ए ॥ हाउहाउहाउ । औहोऽ२ ।
ओऽ२ । जिष्ठम्पूपारा । औहोवाश्रावांः ॥ हाउहाउहाउ । औहोऽ२ । याऽ२त् ।
दिधृक्षेमावा । व्रहस्त । औहोवारोदासी ॥ हाउहाउहाउ । औहोऽ२ । ओऽ२।
भेसुशाइप्रा । औहोवापाप्राः । हाउहाउहाउ । औहोऽ२ । ओऽ२ । उहुवाऽ३हाउ ।
वाऽ३ ॥ हस् ॥ (दी.३६। प.२४। मा.२४)२४(घी । २४)

(१३-१) ॥ बृहती वामदेव्ये द्वे । वामदेवो गायत्रीन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । बृहद्वामम् । (त्रिः) बृहत्पार्थिवम् । (त्रिः) । बृहदन्तरिक्षम् । (त्रिः)।
बृहद्दिवम् । (त्रिः) । बृहद्वामम् । (त्रिः) । कयानश्चित्राऽ३आभूऽ१वाऽ२त् ॥ ऊतीसदावृऽ३-
धाःसाऽ१खाऽ२ ॥ कयाशचिष्ठाऽ३यावाऽ१र्ताऽ२३ ॥ हाउहाउहाउ । बृहद्वामम् ।
(त्रिः) । बृहत्पार्थिवम् । (त्रिः) । बृहदन्तरिक्षम् । (त्रिः) बृहद्दिवम् । त्रिः । बृहद्वामम् (द्विः)।
बृहद्वामम् । औहोवाहाउ । वा ॥ ए । बृहद्वामम् । ए । बृहद्ध्योवामम् । ए ।
वामेम्योवामम् । ए । वामम् । वामम् । वामम् ॥ (दी.४५। प.४७। मा.४५)२५(फु । २५)

(१३-२)

बृहद्वामम् (त्रिः) । कायानश्चाइ । त्राआऽ२भूऽ२३४वात् ॥ ऊताइसादा ।
वार्द्धःसाऽ२३४खा ॥ कायाशचाइ । ष्ठायाऽ२वाऽ२३४र्ता ॥ बृहद्वामम् (द्विः)॥
बृहत् । वामाऽ३उवा ॥ ए । बृहद्वामम् ॥(द्वे-त्रिः)॥(दी.१०। प.११। मा.१५)२६(मु । २६)

(१४-१) ॥ बृहत्साम भरद्वाजो बृहतीन्द्रः ॥

औहोइत्वामिद्धिहवामहाऽ३ए ॥ सातौवाजा । स्याकाराऽ२३४वाः । तुवाऽ३४ । औहोवा।
वृत्राइषुवाइ । द्रासाऽ३१त् । पातिन्नाऽ२३४राः ॥ त्वांकाष्ठाऽ३४ । ओहोवा ॥
सूऽ२आर्वाऽ२३४ । ताः । उहुवाऽ६ँहाउ । वा ॥ हस् ॥

(दी.१३। प.१५। मा.११)२७(ण । २७)

॥ त्रयोदश द्वितीयः खण्डः ॥

॥ इति अरण्येगेयगाने प्रथमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(१५-१) ॥ वसिष्ठजमदग्न्योरर्कौ द्वावगस्त्य-जमदग्न्योर्वा ।

इयाऽ३होइ ।(त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहावन्ताइ ॥ यत्पारियाः ।
युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रवा । सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ।
व्राजेभा । जातुवन्नाः । इयाऽ३होइ । (द्विः) इयाऽ३होऽ२ । याऽ२३४औहोवा॥
ईऽ२३४५ ॥ (दी.११। प.२०। मा.१३)१(ङि । २८)

(१५-२) ॥ जमदग्निस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

ओहोइया । (त्रिः)। इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहावन्ताइ ॥ यत्पारियाः ।
युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रवा । सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ।
व्राजेभा । जातुवन्नाः । ओहोइया । (द्विः) । ओहोऽ३४५याऽ६ "५६ "॥
ईऽ२३४५ ॥ (दी.२५। प.१९। मा.१२)२(श्रा । २९)

(१६-१) ॥ स्वाशिरामर्कः । स्वाशिरा गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

आयामायाम् (त्रिः) । स्वादिष्ठयाऽ२ । मादाइष्ठाऽ२३४या ॥ पवस्वसोऽ२ ।
माधाराऽ२३४या ॥ इन्द्रायपाऽ२ । तावाइसूऽ२३४ताः ॥ आयामायाम् ।(द्विः) ।
आयाम् । आऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.१० । प.१६ । मा.९)३(प्रो । ३०)

(१७-१) ॥ दीर्घतमसोऽर्कः । दीर्घतमा जगती सोमः ॥

हाउहाउहाउ । औहोवाएहियाहाउ । धार्त्ता । दाइवःपवतेकृत्वियः । रासोरासो ।
रासः ॥ हाउहाउहाउ । औहोवाएहियाहाउ । दाक्षाः । दाइवानामनुमादियः ।
नृभीर्नृभीः । नृभीः ॥ हाउहाउहाउ । औहोवाएहियाहाउ । हारीः । सार्जा-
नोअत्योनसा । त्वाभीस्त्वाभीः । त्वाभीः ॥ हाउहाउहाउ । औहोवाएहियाहाउ।
वार्था । पाजाँ्सिकृणुषेनदी । षुवाषुवा । षुवा । हाउहाउहाउ । औहोवाए-
हियाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५॥ (दी.५३। प.२८। मा.३७)४(डे । ३१)

(१८-१) ॥ मरुतामर्कौ द्वौ । मरुतो बृहती मरुतः ॥

हाउहाउहाउ । प्रवइन्द्रायबृहाताइ । हाताइ । (द्विः) ॥ हाउहाउहाउ ।
मरुतोब्रह्मअर्चाता । चाता । चाता ॥ हाउहाउहाउ । वृत्रँ्हनतिवृत्रहाशतक्रातूः ।
क्रातूः । क्रातूः ॥ हाउहाउहाउ । वज्रेणशतपर्वाणा । र्वाणा । र्वाणा । हाउहाउहाउ ।
वाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.१६। प.१९। मा.२४)५(घी । ३२)

(१८-२) ॥ मरुतां संस्तोभः ॥ मरुतो बृहती मरुतः ॥

हाउहाउहाउ । सन्त्वानोनवुः । (त्रिः) । आनोनवुः । (त्रिः) । मारुतः।(त्रिः) ।
विश्वस्मात् । (त्रिः) प्रवइन्द्रायबृहाताइ । हाताइ । (द्विः) ॥ मरुतोब्रह्मअर्चाता ।
चाता । चाता ॥ वृत्रँ हनतिवृत्रहाशतक्रातूः । क्रातूः । क्रातूः ॥ वज्रेणशतर्वाणा ।
र्वाणा । र्वाणा । हाउहाउहाउ । सन्त्वानोनवुः । (त्रिः)आनोनवुः । (त्रिः) ।
मारुतः । (त्रिः) । विश्वस्मात् । (द्विः) वाइश्वस्माऽ२३४औहोवा ॥ ईऽ२३४५॥

(दी.३५। प.३९।मा.३९)६(भ्रो । ३३)

(१९-१) ॥ अग्नेरर्कः । अग्निः गायत्र्याग्निः ॥

होहोवा । ई । ईया । (त्रीणि-त्रिः) अग्निर्मूर्द्धादिऽ३वःकाऽ१कूऽ२त् ॥
पतिःपृथीवीऽ३याआऽ१याऽ२म् ॥ अपाँ रेताँ सिऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२ ॥ होहोवा ।
ई । ईया । (त्रीणि-त्रिः) । होहोवा । ई । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ ए ।
अग्निर्मूर्द्धाभावद्दिवाः ॥ (दी.११ । प.२५। मा.५)५(ड्डु । ३४)

(२०-१) ॥ प्रजापतेरर्कः । प्रजापतिरनुष्टुप् द्यावापृथिवी ॥

होवा । ईया । औऽ२३होआऽ३ । आयाम् । पूषाऽ२ । रायिर्भाऽ२३४गाः ॥
सोमाः । पुनाऽ२ । नोअर्षाऽ२३४ती ॥ पातीः । विश्वाऽ२ । स्यामूमाऽ२३४नाः ॥
वाया । ख्यद्रोऽ२ । दासीऊऽ२३४भाइ । होवा । ईया । औऽ२३होआऽ३४ ।
औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.६। पा.२०। मा.१०)८(ञौ । ३५)

(२१-१) ॥ इन्द्रस्यार्कौ द्वौः इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हावीन्द्राः ॥ राजा । जागतः । चर्षणीनाम् । नाम् । नाम् । नाओइनम् ।(त्रिः)
नाहोइनम् । (त्रिः)। हावौहोहाउ । आधिक्षमा । विश्वारू । पंयदस्या । स्या ।
स्या । स्याओइनम् । (त्रिः)। स्याहोइनम् । (त्रिः) । औहोहावौहोऽ२ ॥ तातोददा ।
तीऽ३दाशु । षाइवसूनी । नी । नी । नाओइनम् । (त्रिः) । नाहोइनम् ।
(त्रिः) । हावौहोहाउ ॥ चोदद्राधाः । उपस्तु । तंचिदर्वा । र्वा । र्वा । र्वाओइनम् ।
(त्रिः) । र्वाहोइनम् । (त्रिः) औहोहावौहोऽ२ । हाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.६६। प.५१। मा.७०)९(क्रौ ।३६)

(२१-२)

इन्द्रोहाउ ॥ राजा । जागतः । चर्षणीनाम् । नाम् । नाम् । नोवा । (त्रिः) ।
नोवाहाइ । (त्रिः) । हाओऽ३ । हाऽ३हाउ । आधिक्षमा । विश्वारू । पंयदस्या।
स्या । स्या । स्योवा । (त्रिः) स्योवाहाइ । (त्रिः) । हाओऽ३ । हाऽ३हाउ ॥
तातोददा । तीऽ३दाशु । षाइवसूनी । नी । नी । नोवा । नोवा । नोवा ॥
नोवाहाइ । (त्रिः) । हाओऽ३ । हाऽ३हाउ ॥ चोदद्राधाः । उपस्तु । तंचिदर्वा ।
र्वा । र्वा । र्वोवा । (त्रिः) । र्वोवाहाइ । (त्रिः) । हाओऽ३ । हाऽ३हाउ ।
वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.७२। प.५५। मा.२७)१०(ञ्रें । ३७)

(२२-१) ॥ अर्कशिरः । अर्कोगायत्रीन्द्रः ॥

हाउयास्या ॥ इदमारजोयूऽ१जाऽ२ः ॥ तुजेजनेवना ँ सूऽ१वाऽ२ः ॥

आइन्द्रस्याऽ३४५राऽ६ ँ ५६ ँ ॥ तियंबृहात् ॥ (दी.३। प.५। मा.५)११(णु । ३८)

(१) ॥ अर्कग्रीवः । अर्को यजुरर्कः ॥

पातीऽ२ः । (त्रिः) । दिवाआ ॥ पातीऽ२ः । (त्रिः) । अन्तरिक्ष । स्या ।

पातीऽ२ः । (त्रिः) । पार्थिव । स्या । पातीऽ२ः । (त्रिः) । आपामोषधी ।नाम् ॥

पातीऽ२ः । (त्रिः) विश्वस्यभूत । स्या । पातीऽ२ः । पातीऽ२३ः । पाऽ२ । ताऽ२३४ ।

औहोवा ॥ ए । पतिर्दिवाः । ए । पतिरन्तरिक्षस्य । ए । पातिःपार्थिवस्य । ए ।

पतिरापामोषधीनाम् । ए । पातिर्विश्वस्यभूतस्य । ए । सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.२० । प.४१ । मा.२२)१२(पा । ३९)

(२३-१) ॥ वरुणगोतमयोरर्कः । वरुणगोतमौ त्रिष्टुप् वरुणादित्यौ ॥

हाउहाउहाउ । आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहोवा । ईया । उदुत्तमंवरुणपाशामाऽ२३स्मात् ॥

अवाधमंविमध्यमँ श्राथाऽ२३या ॥ अथादित्यव्रतेवायन्ताऽ२३वा ॥अनागसोअदितये-

सियाऽ२३माऽ३ । हाउहाउहाउ । आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहोवा । ईऽ२ ।

याऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.२१ । प.१५। मा.१०)१३(ञौ । ४०)

(२४-१) ॥ अर्कपुष्पे द्वे प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

१ २ न २ १ २ ^ १ २र ३ ४ ५
इय । होइ । इयइयईऽ३या । (त्रीणि-त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहवन्ताइ ॥
क क जं र रा ची
२ १र २ १ २ ^ ३ ४ ५ २र १र २ ^ १ २ ३ ४र ५
यत्पारियाः । युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रवा । सश्चाकामाइ॥
र र ची र रा ची
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ १ २ न २
आगोमताइ । व्राजेमा । जातुवन्नाः । इय । होइ । इयइयईऽ३या । (त्रीणि-द्विः) ।
र र ची क क जं
१ २ १ ^ ३ ५र र ३ । । ।
इय । होइ । इयइय । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
क क च का दु प दू

(दी.११। प.३४। मा.२४)१४(घ्री । ४१)

(२४-२)

१ २ न २ १ २ ^ १ २र ३ ४ ५
उव । होइ । उवउवऊऽ३वा । (त्रिणि-त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहावन्ताइ ॥
क क जं र रा ची
२ १र २ १ २ ^ ३ ४ ५ २र १र २ ^ १ २ ३ ४र ५
यत्पारियाः । युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रवा । सश्चाकामाइ ॥
र र ची र रा ची
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ १ २ न २
आगोमताइ । व्राजेमा । जातुवन्नाः । उव । होइ । उवउवऊऽ३वा । (त्रीणि-द्विः) ।
र र ची क क जं
१ २ १ ^ ३ ५र र ३ । । ।
उव । होइ । उवउव । ऊऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
क क च का दु प दू

(दी.११। प.३४। मा.२४)१५(घ्री । ४२)

॥ पञ्चदशस्तृतीयः खण्डः ॥३॥

(२५-१) ॥ ज्येष्ठसाम आज्यदोहम् । अग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः ॥

२र र र र ३ ४र ५ २र १र २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । आज्यादोहम् । (त्रिः) । मूर्द्धानन्दाइ । वाऽ३आरा । तिंपृथिव्याः ।
च ची र रा ची
२र १र २ १ र २र ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४र ५
वैश्वानराम् । ऋताआ । जातामग्नीम् ॥ कावि॑ँ्सम्रा । जाऽ३माति । थिंजानानाम् ॥
र र ची र रा ची
२र १ २ १ २ ३ ४र ५ २र र र र ३ ४र ५
आसन्नःपा । त्राऽ३०जाना । यन्तादेवाः । हाउहाउहाउ । आज्यादोहम् । (द्विः)
र रा ची च ची
२र ३ ४ २र र १ २ २र र १ ३ । । ।
आज्यादोऽ५हाउ । वा । ए । आज्यादोहम् । (द्वे-द्विः) । ए । आज्यादोहाऽ२३४५म् ॥
ची प च चो च शि

(दी. ३२। प.२७। मा.२३)१६(छि । ४३)

(२५-२) ॥ ईनिधनमाज्यदोहम् ॥

२र र र र १ २ १ २ १ २ २र १र
हाउहाउहाउ । हिम्चिदोहम् । चिदोहम् । चिदोहम् । मूर्द्धानन्दाइ ।
च चो चो चो र
२ १ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ र २र ३ ४ ५ २ १
वाऽ३आरा । तिंपृथिव्याः ॥ वैश्वानराम् । ऋताआ । जातामग्नीम् ॥ कावि॑ँ्सम्रा ।
रा ची र र ची र
२ १ २ ३ ४र ५ २र १ २ १ २ ३ ४र ५ २र र र
जाऽ३माति । थिंजानानाम् ॥ आसन्नःपा । त्राऽ३०जाना । यन्तादेवाः । हाउहाउहाउ ।
रा ची र रा ची च
र १ २ १ २ न २ । । ।
हिम्चिदोहम् । चिदोहम् । चिदोऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
चो चो उं चा दू

(दी.१७। प.२२। मा.२२)१७(छ्र । ४४)

(२५-३) ॥ ऋत-निधनमाज्यदोहम् ॥

२र र र १ २ र १र २ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । च्योहम् । (त्रिः) । मूर्द्धानन्दाइ । वाऽ३आरा । तिंपृथिव्याः ॥
च क्रा र रा ची
२र १र २ १ र २र ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४र ५
वैश्वानराम् । ऋताआ । जातामग्नीम् ॥ कावि॑ँ्सम्रा । जाऽ३माति । थिंजानानाम् ॥
र र ची र रा ची
२र १ २ १ २ ३ ४र ५ २र र र १ २
आसन्नःपा । त्राऽ३आना । यन्तादेवाः । हाउहाउहाउ । च्योहम् (द्विः) ।
र रा ची च का
न २ २ २ १
च्योऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ एऽ३ । ऋताम् ॥ (दी.१५ । पा.२३ । विं.२१)१८(ब । ४५)
खु चा चा र

(२६-१) ॥ रुद्रस्य त्रय ऋषभाः । तत्रेदं प्रथमं रैवतऋषभः रुद्रो गायत्री प्रजापतिः ॥

सुरूपकृत्नुमूतये । (त्रिः) । सुदुघामिवगोदुहे । जुहूमासाइ ॥ द्यावियवाइ ॥

(द्विः) । द्याविद्यवाऽ३१उ । वाऽ२३ ॥ हिम् । हिम् । हिम् ॥

(दी.१५ । प.१२। मा.७)१९(फे । ४६)

(२७-१) ॥ वैराजऋषभमिदं द्वितीयम् । रुद्रो विराडिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । आइही । (त्रिः) । आइ । (त्रिः) । इयाहाउ । (त्रिः) ।

पिबासोमाम् । इन्द्र । मन्दतुत्वा ॥ यन्तेसुषा । वाऽ३हारि । अश्वाअद्रीः ॥

सोतुर्बाहू । भ्याऽ३ ँसुया । तोनाअर्वा ॥ हाउहाउहाउ । आइही । (त्रिः) ।

आइ । (त्रिः) । इयाहाउ । (द्विः) । इयाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.१२ । प.३१। मा.२८)२०(चै । ४७)

(२८-१) ॥ शाक्करऋषभमिति तृतीयम् । रुद्रः पङ्क्तिरिन्द्रः ॥

ओऽ३१म् (त्रिः) । स्वादोरेइत्थाएविषूएवाताआ । शंयोः । शंयोः ॥

मधोरेपिबाएन्तिगोएरियाआ । हाविः । (द्विः) । याआएन्द्रेणाएसयाएवारिया ।

सुवः ॥ (द्विः) । वृष्णाएमदाएन्तिशोएभाथाआ । ज्योतिः ॥ (द्विः) ।

वस्वीरेअनूएस्वराएजियामा । ओऽ३१म् । (द्विः) । ओऽ३१२३४ । वा ॥

इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.३८। प.२१। मा.३२)२१(टा। ४८)

(२९-१) ॥ अतीषंगानि त्रीणि, इन्द्रस्य त्रयोऽतीषंगाः, अथा परंरौद्रःरुद्रः,इन्द्रोनुष्टुप्गायत्रीसोमः ॥

२र र र १ र र — १ २
एपुरोजिती ॥ वोअन्धसस्सुतायमादयाऽ२इत्नावाइ । इडा ॥ ऊच्चा ॥
व रो क का
र १र — १ २ १र — १
तेजातमाऽ२न्धासाः । अथा ॥ दाइवी ॥ सद्भूमियाऽ२दादाइ । अथा ॥
रो क का रो क
२ १ — १ र २ २ २
ऊग्रम् । शर्ममहाऽ२इश्रावाः । अथा । अपश्वान ँ्श्नाथाऽ१इष्टाऽ३ना ॥
का रो क चै
१ र र र १ २ १ ।।।
सखायोदीर्घजाऽ२३होइ ॥ ह्वायमाऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट् इडाऽ२३४५ ॥
को व कु

(दी.१२ । प.१६ । मा.१३)२२(चि । ४९)

(३०-१) ॥ वासवः इन्द्रस्त्रिष्टुप् गायत्री सोमश्येनौ ॥

१ २ १ र र — १ २ १ — १
एआसा ॥ जिवक्वारथ्येयथाऽ२जाउ । इडा ॥ आसा ॥ व्य ँ्शुर्मदाऽ२या ।
का रो क का रो
२ १२र र — १ २ १र — १
अथा ॥ धाया ॥ मानोताप्रथमामनाऽ२इषा । इडा ॥ आप्सू ॥ दक्षोगिराऽ२इष्ठाः ।
क का रो क का रो
२ १र र र — १ २
अथा ॥ दाशा ॥ स्वासारोअधिसानोऽ२अव्याइ । इडा ॥ श्याइनो ॥
क का रो क का
१र — १ २ १ र प.
नायोनिमाऽ२सादात् । अथा ॥ मार्जा ॥ तिवह्वि ँ्सदनेषुवाऽ२च्छाऽ३१उ ।
रो क का रु
१ ।।।
वाऽ२३॥ इट् इडाऽ२३४५ ॥ (दी.११। प.२२। मा.१२)२३(खा । ५०)
कि कु

(३१-१) ॥ पार्जन्यो वैश्वदेवो वा । इन्द्रोऽनुष्टुप् गायत्री सोमेन्द्रौ ॥

१ २ १ — १ २ — १ र २र १ २
एआभी ॥ नावन्तआऽ२ । द्रुहआऽ३१उवाऽ२ । तरत्समन्दीधावति ॥ प्रायाम्॥
का चो घः का का
१ — १ २ — १र र २ १ र २ १ २ १र —
इन्द्रस्यकाऽ२ । मियमाऽ३१उवाऽ२ । धारासुतस्यान्धसः ॥ वात्सम् ॥नापूर्वआऽ२ ।
चो घः घि का चो
१ २ — १ र २र १ २ १ —
युनियाऽ३१उवाऽ२ । तरत्समन्दीधावति ॥ जातम् ॥ रिहन्तिमाऽ२ ।
घः का का चो
२ १ ।।।
तरआऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट् इडाऽ२३४५ ॥ (दी.८। प.१६। मा.१४)२४(टी । ५१)
व कु

(३२-१) ॥ प्राजापत्याश्चत्वारः पदस्तोभाः।अष्टेडपदस्तोभः प्रजापतिः जगती सोमः ॥

हाहु । हौवाओऽ२३४वा । (द्वे-त्रिः) । ए । औहौहोवाहाउ । वा । ईडा ।
धर्त्तादिवःपावतेकृत्व्योरासः । ईडा ॥ ईडा । दक्षोदेवानामनुमाद्योनृभिः । ईडा ॥(द्विः)।
हरिःसृजानोअत्योनसत्वाभिः । ईडा ।(द्विः)। वृथापाजाँसिंकृणुषेनादीषुवाऽ१ ।
हाहु। हौवाओऽ२३४वा । (द्वे-त्रिः) । ए । औहौहोवाहाउ । वा ॥ ईडा ॥

(दी.४७ । प.३० । मा.१२)२५(ज्ञा । ५२)

(३२-२) ॥ षडिडपदस्तोभः गोतमः ॥

हाउहाउहाउ । हौवाओऽ२३४वा । ए । औहौहोवाहाउ । वा । धर्त्तादिवःपावा ।
ईडा । तेकृत्व्योरासः ॥ ईडा ॥ दक्षोदेवानामनुमाद्योनृभिः । ईडा ।।हरिःसृजानआ ।
ईडा । त्योनसत्वाभिः ॥ ईडा । वृथापाजाँसिकृणुषेनादीषुवाऽ१ । हाउहाउहाउ ।
हौवाओऽ२३४वा । ए । औहौहोवाहाउ । वा ॥ ईडा ॥

(दी.४४। प.२२ । मा.१४)२६(थी । ५३)

(३२-३) ॥ चतुरिडपदस्तोभः विश्वामित्रः ॥

औहौहोवाऽ२ । ओवाऽ२ । ए । औहौहोवाहाउ । वा । धर्त्तादिवःपावा । ईडा ।
तेकृत्व्योरासः ॥ दक्षोदेवानामा । ईडा । नुमाद्योनृभिः ॥ हरिःसृजानआ ।
ईडा । त्योनसत्वाभिः ॥ वृथापाजाँसिकृ । ईडा । औहौहोवाऽ२ । ओवाऽ२ ।
ए । औहौहोवाहाउ । वा ॥ णुषेनादीषुवाऽ१ ॥(दी.४२। प.२२ । मा.६)२७(छू। ५४)

(३२-४) ॥ द्विरिडपदस्तोभः ॥ इन्द्राग्नी वा ॥

आऔहोवाहाइ । ए । औहौहोवाहाउ । वा । धर्त्ता । दीऽ२ । वःपा । वा ।
तेकृत्व्यः ॥ रासः । दक्षोदेवानामनुमाद्योनृभिः । ईडा ॥ हरिः । सा ।
जानोआ । त्योना ॥ सत्वामिः । वृथापाजाँसिकृणुषेनादीषुवाऽ१ । आऔहोवाहाइ ।
ए । औहौहोवाहाउ । वा ॥ ईडा ॥ (दी.३० । प.२३ । मा.१२)२८(बा । ५५)

॥ त्रयोदशः चतुर्थः खण्डः ॥४॥

॥ इति आरण्यकगाने प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥

(३३-१) ॥ दशसंसर्पाणि, सर्पसामानि वा अग्निर्जगतीन्द्रः ॥

अभाइमाहे ॥ (त्रिः) । चर्षणीधृतंमघवानाऽ३मूक्थाऽ१याऽ२म् ॥
इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्याऽ३नूषाऽ१ताऽ२ ॥ वावृधानंपुरुहूतँसुऽ३वार्क्ताऽ१इभीऽ२ः ॥
अमर्त्यंजरमाणंदीऽ३वाइदाऽ१इवेऽ२ । अभाइमाहे । (द्विः) । अभाऽ२३इ ।
माऽ२ । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ सार्पसुवाऽ२३४५ः ॥

(दी.१०। प.१४। मा.१२)१(भा । ५६)

(३३-२) ॥ प्रसर्पम् । पृथिवीजगतीन्द्रः ॥

अभिप्रम ँ्हीऽ३राइमाहे । (त्रिः) । चर्षणीधृतंमघवानाऽ३मूक्थाऽ१याऽ२म् ॥

इन्द्रङ्गिरोबृहतीरभ्याऽ३नूषाऽ१ताऽ२ ॥ वावृधानंपुरुहूत ँ्सुऽ३वार्क्ताऽ१इमीऽ२ः ॥

अमर्त्यंजरमाणंदीऽ३वाइदाऽ१इवेऽ२ । अभिप्रम ँ्हीऽ३राइमाहे । (द्विः) ।

अभिप्रम ँ्हीऽ३राऽ२३इ । माऽ२ । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ प्रसार्पसुवाऽ२३४५ः ॥

(दी.१० । प.१४ । मा.१२)२(भा । ५७)

(३३-३) ॥ उत्सर्पम् । वायुर्जगतीसोमः ॥

हाउहाउहाउवा । चर्षणीधृतंमाघवानामुक्थ्यम् ॥ हाउहाउहाउवा ।

इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्यनूषत ॥ हाउहाउहाउवा । वावृधानंपुरुहूत ँ्सुवृक्तिभिः ॥

हाउहाउहाउवा । अमार्त्यंजरमाणन्दिवेदिवे । हाउहाउहाउवा ॥

उत्सार्पसुवाऽ२३४५ः ॥ (दी.११। प.१०। मा.१८)३(डे । ५८)

(३४-१) ॥ अन्तरिक्षस्य सर्पम् अन्तरिक्षोबृहतीन्द्रः ॥

हाउहाउहाउवा । सुवास्स ँ्सर्पन्तः । तवेदिन्द्रावामंवासु ॥ हाउहाउहाउवा ॥

सुवास्स ँ्सर्पन्तः । त्वंपुष्यसिमध्यामम् ॥ हाउहाउहाउवा । सुवास्स ँ्सर्पन्तः ।

सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि ॥ हाउहाउहाउवा । सुवास्स ँ्सर्पन्तः ।

नकिष्ट्वागोषुवृण्वते । हाउहाउहाउवा ॥ सुवास्स ँ्सर्पन्तः । ए ।

सर्पतप्रसर्पतसुवर्गमेमतेवायम् ॥ (दी.१० । प.१६। मा.२२)४(पा । ५९)

(३४-२) ॥ आदित्यस्य च सर्पम् ॥ आदित्योबृहतीन्द्रः ॥

सुवस्स ँ सार्पस ँ सर्पाऽ२ । (द्विः)। सुवस्स ँ सार्पासम् । साऽ२ । पाऽ२३४ ।
औहौवा। तवेदिन्द्रावामंवासु ॥ त्वंपुष्यसिमध्यामम् ॥ सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि ॥
नकिष्ट्वागोषुवृण्वते। सुवस्स ँ सार्पास ँ सर्पाऽ२ । (द्विः) । सुवस्स ँ सार्पासम् ।
साऽ२। पाऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । सुवर्गमेमाऽ२३४५ ॥

(दी.१२ । प.१८। मा.३)५(जि । ६०)

(३५-१) ॥ दिवश्च सर्पम् ॥ द्यौर्जगती सूर्यः ॥

सृप्रायप्रसृ । पा । इहा । ईऽ३या । (चत्वारि-त्रिः) । अभिप्रियाणि-
पवतेचाऽ३नोहाऽ१इताऽ२: ।।नामानियह्वोअधियेषुऽ३वार्द्धाऽ१ताऽ२इ।।
आसूर्यस्यबृहतोबृऽ३हानाऽ१धीऽ२ ।।रथंविष्वंचमरुहद्विऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२: ॥
सृपायप्रसृ । पा । इहा । ईऽ३या । (चत्वारि-द्विः)। सृपायसृ । पा । इहा ।
ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा । ए । सृपायप्रसृपाय । (द्वे-द्विः) । ए ।
सृपायप्रसृपायाऽ२३४५ ॥ (दी.२६ । प.३६ । मा.५)६(कु । ६१)

(३६-१) ॥ अपां सर्पसाम । आपः त्रिष्टुप्सोमः लिंगोक्ता वा ॥

सृपायप्रसृ । पा । ओहा । ईऽ३या । (चत्वारि-त्रिः) । त्वयावयंपवमाने-
नासोमा ॥ भरेकृतंविचिनुयामशाश्वात् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामाहान्ताम् ॥
अदितिस्सिन्धुःपृथिवीउताद्यौः । सृपायप्रसृ । पा । ओहा । ईऽ३या ।
(चत्वारि-द्विः) । सृपायप्रसृ । पा । ओहा । ईऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥
ए । सुवः। ए । सुवः । ए । सुवाऽ२३४५ः ॥ (दी.२७ । प.३६ । मा.७)७(चा ६२)

(३६-२) ॥ समुद्रस्य सर्पसाम । समुदःत्रिष्टुप्सोमः लिंगोक्ता वा ॥

सृपायप्रसृ । पा । ओहा । (त्रीणि-त्रिः) त्वयावयंपवमानेनासोमा ॥
भरेकृतंविचिनुयामाशाश्वात् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामाहान्ताम् ॥
अदितिस्सिन्धुःपृथिवीउताद्यौः । सृपायप्रसृ । पा । ओहा । (त्रीणि-द्विः) ।
सृपायप्रसृ । पा । ओऽ२ । हाऽ२३४ । औहोवा । सुवः । ए । सुवः । ए ।
सुवः । एऽ२३४५ ॥ (दी.२६। प.३०। मा.७)८(ङे । ६३)

(३७-१) ॥ मांडवे द्वे, द्वयोःमण्डुःपङ्क्तिरिन्द्रः ॥

स्वादोरित्थाविषूवताएहाउ ॥ मधोःपिबन्तिगौरियाएहाउ । याइन्द्रेण-
सयावराएहाउ ॥ वृष्णामदन्तिशोभथाएहाउ । वस्वीरनुस्वराजियामेऽ३हाउ ।
वा । ए । दिशःप्रादिशःका । पाऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा । ए ।
राजंगमेमस्वाराजंगमेमाऽ२३४५ । (दी.२६।प.१३।मा.१०)९(गौ।६४)

(३७-२)

२र र र र र १ २ र र र १ २ र र
स्वादोरित्थाविषुवताओहाउ ॥ मधोःपिबन्तिगौरियाओहाउ । याइन्द्रेण-
चो चो
र र १ २ र र र १२ र र र
सयावराओहाउ । वृष्णामदन्तिशोभथाओहाउ ॥ वस्वीरनुस्वराजिया-
चो चो
न २ र १ र २ १ २ १ ३ ५र र
मोऽ३हाउ । वा । ए । उद्दिशोविदिशःक । पाऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा ।
जं च च रौ का टु प
२र १र २र १र २र३ । । ।
ए । विराजंगमेमस्वाराजंगमेमाऽ२३४५ ॥
च जौ

(दी.२७। प.१३। मा.१०)१०(जौ । ६५)

दश पञ्चमः खण्डः ॥५॥

(३८-१) ॥ त्रिषंधिम् । बृहत्साम रथन्तरम् वामदेव्यं प्रजापतिःपथ्यावृहतीन्द्रः ॥

२रर र २ १ २ ३ ५
औहोइत्वमिन्द्रप्रतूर्त्तिषूऽ३ए ॥ आभाइवाइश्वाः । आसिस्पाऽ२३४र्द्धाः ॥ श्री ॥
चे र यू
१ २र र १ २ १ र २ ३ र २
आशस्तिहाजनितावृ । त्रतूऽ२३रसाइ ॥ तुवाऽ२३न्तूर्या ॥ तरौहोऽ३ ।
का कः कः टी
१ — १ प. २
हिम्माऽ२ । षाऽ२तो३५हाइ ॥ (दी.७ । प.९। मा.८)११(झै । ६६)
का वि

(३९-१) ॥ यज्ञसारथिः ॥ प्रजापतिर्बृहती सूर्यः ॥

१ २ र १ — १ २ १ २ १ २
एबाण्मा ॥ हा ँ॒असिसूऽ२रिया । इडा । बृ । हाउवा । आथा ॥ बाडा ॥
का रै क क च का का
१ — १ २ १ २ १ २
दित्यमहाऽ२ ँ॒आसाइ । इडा । हरिः । हाउवा । आथा ॥ माहः ॥
रै क क च का का
र १र र — १ २ १ २ १ २
तेसातोमहिमापनाऽ२इष्टामा । इडा । मतिः । हाउवा । आथा ॥ माह्ना ॥
रै क क च का का
र१ — १ । । ।
देवमहाऽ२ ँ॒आसाइ ॥ इडाऽ२३४५ ॥ (दी.५ । प.२१। मा.१२)१२(ण । ६७)
रै कु

(४०-१) ॥ वृषाप्रजापतिरेकपदात्रिष्टुब् विश्वेदेवाः ॥

३ २र ३र र २ १ ३ २ १ ३ २ १ ५
इमाओवा । (त्रिः) । इमाऽ३ । ओइ । इमाऽ३ । ओइ । इमाऽ३ । ओऽ२३४वा ॥
टी टी क टी क टी कु
३ २र ३र र ३ २ १ ३ २ १
वृषाओवा । (त्रिः) । वृषाऽ३ । ओइ । (द्वे-द्विः) । वृषाऽ३ । ओऽ२३४वा ।
टी टी क टी कु
३ २र ३र र २र ३र र र २ १ ३र २
णंकृणावाता । एकाओवा । (त्रिः) । एकाऽ३ । ओइ । (द्वे-द्विः) । एकाऽ३ ।
टी टी टी क टी
१ ५ २ ३ । । ।
ओऽ२३४वा ॥ इन्माऽ२३४५म् ॥ (दी.३५ । प.२९। मा.१६)१३(भू । ६८)
कु शे

(४१-१) ॥ एकवृषं प्रजापतिरुर्ष्णिगिन्द्रः ॥

१र र र र र र२र १र २ १ २ १२र
हाहिम् । (त्रिः) । योवा । (त्रिः) । योवाहाइ । (त्रिः) । यएकाइद्विदयते ।
क क का के
१र२ १र २ १र २ १ र २ र१२र १र२ १र २ १र र र २र१ २
एकँ ्समैराद्वृधे ॥ वासुमर्त्तायदाशुषे । एकँ ्समैरयन्माहे ॥ ईशानोअप्रातिष्कुतः।
गो के गो घि
१र २र१ २र१र २ १ र २ १ र र रर र र२र
एकोवृषाविराजति ॥ इन्द्रोअंगा । हाहिम् । (त्रिः)। योवा ।(त्रिः) योवाहाइ । (द्विः) ।
के कै क क का
१र न २ । । ।
योवाऽ३हाउ । वाऽ३ । ईऽ२३४५ ॥ (दी.५९। प.२७। मा.१७)१४(श्रे । ६९)
खु चा दू

(४२-१) ॥ विद्रथं प्रजापतिः ककुबिन्द्रः ॥

१ २ १ र र२र र१र र २ १ २
होवाहाइ । योनः ॥ होवाहाइ । (त्रिः) । औहोवाहाइ । (त्रिः) । इदामे । (द्विः)।
का क का चो का
१ २ १र र२र र १र र २ १ २ १ २
पुराए । होवाहाइ । (त्रिः) । औहोवाहाइ । (त्रिः) । प्रवाए । स्यआए ।
का का चो का का
१ २ १र र २र र १र र २ १ २ १ २
निनाए । होवाहाइ । (त्रिः) । औहोवाहाइ । (त्रिः) । यतामे । उवाए ।
का का चो का का
१ २ १र र२र र१र र २ १ २ १ २
स्तुषाए ॥ होवाहाइ । (त्रिः) । औहोवाहाइ । (त्रिः) । सखाए ॥ यआए ।
का का चो का का
१ २ १ २ १र र२र र १र र २ र १र न २
द्रमूए । तयाए । होवाहाइ । (त्रिः) । औहोवाहाइ । (द्विः) । औहोवाऽ३हाउ ।
का का का चो उं
१ २१ । । ।
वाऽ३ ॥ हस्बृहन्नमाऽ२३४५ः ॥ (दी.८९। प.४७। मा.४६)१५(थू । ७०)
चा घू

(४३-१) ॥ अभ्रातृव्यम् प्रजापतिः ककुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । हुवेविराज ँ्स्वाराजम् । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) ।
हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा । माहत्सामअजीजने । अभ्रातृव्योआनात्वम् ॥
माहद्भद्रमाजीजने । अनापिरिन्द्रजनुषासानादा ॥ स्यभ्रातृव्यमजीजने ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ हाउहाउहाउ । हुवेविराज ँ्स्वाराजम् । (त्रिः) हाओवा ।
(त्रिः) हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवाऽ३ ॥ एऽ३ । आमिभूरसीऽ२३४५ ॥

(दी.५४ । प.२८ । मा.२७)१६(दे । ७१)

(४४-१) ॥ रैवते द्वे । द्वयोः प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः ॥

हाउरेवा ॥ तीर्नाः । इहा । सधमादाऽ२ । हाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
इन्द्राऽ२इसन्तू ॥ इहा । तुविवाजाऽ२ः । हाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
क्षुमाऽ२न्तोया ॥ इहा । भिर्मदेमाऽ२ । हाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥

(दी.५। प.१६। मा.७)१७(पे । ७२)

(४४-२)

रा ॥ वाताऽ२इः । नाः । इहा । औहैहो । इडा । साधाऽ२ । मादाइ । इहा ।
औहैहो। इडा ॥ इन्द्राऽ२इ । सन्तू । इहा । औहैहो । इडा ॥ तुवाऽ२इ । वाजाः।
इहा । औहैहो । इडा ॥ क्षुमाऽ२ । तोया । इहा । औहैहो । इडा ॥ भिर्म्माऽ२ । देमा।
इहा। औहैहो । इडा ॥ एरा । एबृ । एरेऽ२३४५ ॥ (दीः१९। प.३४। मा.७)१८(धे । ७३)

(४५-४७-१) ॥ शाक्वरवर्णम् । शांकरवर्णोगायत्री सोमः ॥

एऊच्चा ॥ तेजातमन्धसोदिविसद्भूमियाऽ२दादाइ । इडा । उग्रꣳशर्ममाहा-
ऽ१इश्राऽ३वाः ॥ *श्री* ॥ सानः ॥ इन्द्रायजय्ज्यवेवरुणायमरुऽ२द्भियाः ।
इडा । वरिवोवित्पाराऽ१इश्राऽ३वाः ॥ *श्री* ॥ आइना । विश्वान्यर्यआ-
द्युम्नानिमानुषाऽ२णाम् । इडा ॥ सिषासन्तोवनाऽ२३होइ ॥ माहाऽ३१उवा२३ ।
इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.१४। प.१४। मा.१३)१९(धि । ७४)

(४८-१) ॥ नित्यवत्सा । प्रजापतिरत्यष्टिस्सोमः ॥

एआया ॥ रुचाहरिण्यापुनानोविश्वाद्वेषाꣳसितरतिसयूऽ२ग्वाभाइः । इडा ।
सूरोनसायूऽ१ग्वाऽ३भीः ॥ धारा ॥ पृष्ठस्यरोऽ२चाताइ । इडा ॥ धारा ।
पृष्ठस्यरोऽ२चाताइ । अथा ॥ धारा ॥ पृष्ठस्यरोऽ२चाताइ । इडा ।
पुनानोअरुषोऽ१हाऽ३रीः । विश्वायद्रूपापरियासियाऽ३ । क्वाभीः ।
सप्तास्येभिराऽ२३हो । क्वाभिराऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.१७। प.१९। मा.१२)२०(झा । ७५)

(४९-१) ॥ वसिष्ठस्य च रथन्तरम् । वसिष्ठो बृहतीशानरुद्रौ ॥

आभित्वाशूरनोनुमोवा ॥ आदुग्धाइवधेनवईशानमस्यजगतः । सुवाऽ२३दृशाम् ॥
आइशानामाऽ२३इन्द्राऽ३ ॥ तास्थूऽ२३४षा । ओवाऽ६ꣳ । हाउवा ॥ अस् ॥

(दी.१०। प.८। मा.८)२१(बै । ७६)

(५०-१) ॥ जमदग्नेश्च सप्तहम् । जमदग्निर्बृहतीन्द्रः ॥

३ २ १ २ र १ २र १र २र र १र
आयंवायाउ । (त्रिः)। त्वामिद्धाइ । हावामहाइ ॥ (त्रिः) । सातौवाजा ।
उ र र र

२र १र २र १ २र १ २र १
स्याकारवाः ॥ (त्रिः) । त्वांवृत्राइ । षूइन्द्रसात् । पातिन्नराः ॥ (त्रिः)
र र र र

२र १र २र १ ३ २ १ २ ३ २ १
त्वांकाष्ठा । सूअर्वताः । (त्रिः) । आयंवायाउ । (द्विः) । आयम् । वाऽ२ ।
र र उ य का

३ ५र र २र १ २ १ २र १ २ १ २र
याऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । त्रिवृतंप्रावृतम् । ए । त्रिवृतंप्रावृतम् । ए ।
टु प च रो च रो च

१ २ १ । । ।
त्रिवृतंप्रावृताऽ२३४५म् ॥ (दी.३१ । प.३२ । मा.२८)२२(खै । ७७)
छै

॥ द्वादशः षष्ठः खण्डः ॥६॥

(५१-१) ॥ पञ्च पविमन्ति (महासामानि) रुद्रसूक्तम् । रुद्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

१ २ ३ १ २र३२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
आक्रन्दयकुरुघोषंमहान्त ँहरीइन्द्रस्याभियोजयाशू । मर्म्माविधन्ददतामन्यो-

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २उ ३१ २र ३ १ २ ३ १२
अन्य ँशल्यात्मापततुश्लोकमच्छ । प्रयच्चक्रमराव्णेसनताअभ्यवर्त्तयत् ।

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ज्योगित्तिस्त्रओहातैशयातैकेशवच्छिरः ॥ (स्वरितम् २। उदात्तम् २ । धारि १५)२३(छु । ७८)

(५१-२) (पदपाठः)

२ ३ २ १२र ३ १ २ ३र १ २ १ २र ३ २ ३
आ । क्रन्दय । कुरु । घोषम् । महान्तम् ॥ हरीइति । इन्द्रस्य । अभि । योजय ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३
आशूइति॥ मर्माविधम् । मर्म । विधम् । ददताम् । अन्यः । अन् । यः । अन्यम् । अन् ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र १ २र ३ २ १ २र
यं ॥ शल्यात्मा। शल्य । आत्मा । पततु । श्लोकम् । अच्छ ॥ प्र । यत् । चक्रम् । अराव्णे।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
अ । राव्णे ॥ सनतै । अभ्यवर्त्तयत् । अभि । अवर्तयत् ॥ ज्योक्। इत् । तिस्त्रः ।

३ १ २र १ २र १ २र
ओहातै ॥ शयातै । केशवत् । शिरः ॥ (आद्युदात्तम् ११।अवग्रहम् ६।पदम् ४३) २४(कि।७९)

(५१-३) ॥ अथापरमग्नेर्हरसी द्वे । शर्वस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२र १ २ १ र — १ — १र र र —
आक्रन्दयोवा ॥ कुरुधोषंमहाऽ२ । आन्ताऽ२म् । हरीइन्द्रस्याभियोजयाऽ२ ।
र चो का का
१ — र १ र — १ — १र र र
आशूऽ२ ॥ मर्म्माविधंददतामन्योऽ२ । आन्याऽ२म् ॥ शल्यात्मापततुश्लोकमाऽ२३ ।
का चो का चौ
१ ३ ५र र १
आऽ२ । च्छाऽ२३४ । औहोवा ॥ अस् ॥ (दी.१२ । प.१२। मा.४)२५(छी । ८०)
का दु प क

(५१-४) ॥ रुद्रो अनुष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १
हाउहाउहाउ । अस् । (त्रिः) । फट् । (त्रिः) मृस् । (त्रिः) । हस् । (त्रिः)
च क क क क
र वि १वि १र विर १र विर १र विर १र विर
प्रायाऽ२त् । चक्राऽ२म् । आराऽ२ । आव्णाऽ२इ ॥ सानाऽ२ । ताआऽ२ ।
का का का का का का
१र विर १र वि १र विर १ वि १र विर १र विर
भ्यावाऽ२ । तायाऽ२त् ॥ जीयोऽ२क् । इत्तिऽ२ । स्त्राओऽ२ । हातैऽ२ ॥
का का का का का का
१र विर १र विर १र वि १ वि र र र १
शायाऽ२ । तैकेऽ२ । शावाऽ२त् । शाइराऽ२ः । हाउहाउहाउ । अस् ।(त्रिः) ।
का का का का च क
३ ५र र २र १
फट् । (त्रिः) । मृस् । (त्रिः) । हस् । (द्विः) । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ एअस् ।
क क क दु प र
२र १ २र १ २र १ ३ ।।।
एफट् । एमृस् । एहस् । ईऽ२३४५ ॥ (दी.३३। प.४८। मा.४४)२६(ड्री । ८१)
र र र दू

(५१-५) ॥ क्षुरस्य हरसि द्वे। रुद्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

२ १ २ १र वि १ वि १र विर १र विर
अभ्याभूः । (त्रिः) । प्रायाऽ२त् । चक्राऽ२म् । आराऽ२ । आव्णाऽ२इ ॥(त्रिः) ।
चो का का का का
१र वि १र वि १र वि १र वि १र विर १ वि
सानाऽ२ । ताआऽ२ । भ्यावाऽ२ । तायाऽ२त् ॥ (त्रिः) । जीयोऽ२क् ।इत्तिऽ२ ।
का का का का का का
१र विर १र विर १र विर १र विर १र वि १र विर
स्त्राओऽ२ । हातैऽ२ ॥ (त्रिः) शायाऽ२ । तैकेऽ२ । शावाऽ२त् । शाइराऽ२ः।
का का का का का का
१ २ १ ३ ५र र
(त्रिः) । अभ्याभूः । (द्विः) । अ । भ्याऽ२ । भूऽ२३४ । औहोवा ।
चो च का दु प
१ २ १ २ १ ३ ।।।
हस्प्राहस् एऽ३चाक्षूऽ२३४५ः ॥ (दी.३५ । प.३४। मा.२६)२७(भू । ८२)
क्ष्वे

(५१-६) ॥ हरसी द्वे रुद्रोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १र र र २१ २१ २
हाउहाउहाउ । क्षुरोहरोहरोहरः । (त्रिः) । वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि । (त्रिः) ।
च र छु

१ २ १र २र १२र१ २ १र २ १ र२रर
हाउहाउहाउवा । प्रयच्चक्रमराव्णे ॥ सनाताअभ्यवार्त्तयत् ॥ ज्योगितित्रओहातै ॥
च धि छु धि

१र२र१र २ १ २र र र १र र र
शयातैकेशवच्छिरः । हाउहाउहाउ । क्षुरोहरोहरोहरः । (त्रिः) ।
गो च र

२ १ २१ २ र १ २ १ २
वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा ॥ ए । वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि ।
छु च च छु

र १ २१ ३ ।।।
(द्वे-द्विः) । ए । वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धीऽ२३४५ ॥
च सं

(दी.३७ । प.२६। मा.२२)२८(चा । ८३)

(५२-१) ॥ मृत्योर्हरः लोकानां शान्तिरुक्तम् ॥

२र र र १ र२१२१ २ १ २१र २ १र २ १ २ १२१र२ १
हाउहाउहाउ । वयोबृहदृतँ्हाविर्भद्राँ्स्वाधाँ्स्वायँ्स्कृण्वाइषमूर्जँ्रजःसुवः ।
च व

३ ५रर २ १ र
हिम् । (त्रिः) । हो । (त्रिः) । हिँ् । (द्विः) । हिँ्ऽ२३४ । औहोवा । आभित्वा-
क क क दु पा

२र र र १ २र र१र र र२ १ २ १
शूरनोनुमोहस् ॥ अदुग्धाइवधेनवोहस् ॥ ईशानमस्यजगतस्वर्दृशँ्हस् ।
रो कै कै

र र२ १ र २र र र १ र२१२१ २ १ २१र २ १र २ १ २
ईशानमिन्द्रतस्थुषोहस् । हाउहाउहाउ । वयोबृहदृतँ्हाविर्भद्राँ्स्वाधाँ्स्वायँ्स्कृण्वा-
कै च

१२१र२ १ ३
इषमूर्जँ्रजःसुवः । हिम् । (त्रिः) । हो । (त्रिः) । हिँ् । (द्विः) । हिँ्ऽ२३४ ।
व क क क दु

५रर २र १र २र १ र २र १ २र १ २र १र
औहोवा ॥ ए । वाक् । । ए । इडा । ए । सुवः । ए । बृहत् । ए । भाः ।
प च क च क च क च क च क

२र १ २ र र१२१
ए । अर्कमर्चतदेवावृधँ्हस् ॥
च रौ

(दी.४१ । प.४०। मा.२६)२९(डू । ८४)

(५३-१) ॥ पञ्चनिधनं वामदेव्यम् । वामदेवो गायत्री विश्वेदेवाः ॥

होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ ।
(द्विः) । एहियाऽ३४ । औहोवा । इहप्रजामिहरयिँ्ररराणोहस् । होवाऽ३हाऽ३ ।
आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ । (त्रिः) । कायानश्चाइ ।
त्राआऽ२भूऽ२३४वात् ॥ होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ ।
एहियाहाउ । (द्विः) । एहियाऽ३४ । औहोवा । रायस्पोषायसुकृतायभूयासेहस् ।
होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ ।
(त्रिः) । ऊताइसादा । वार्द्धस्साऽ२३४खा । होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ ।
हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ । (द्विः) । एहियाऽ३४ । औहोवा ।
आगन्वामामिदंबृहद्धस् । होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ ।
एहियाहाउ । (त्रिः) । कायाशचाइ । ष्ठायाऽ२वाऽ२३४र्त्ता ॥ होवाऽ३हाऽ३ ।
आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ । (द्विः) । एहियाऽ३४ ।
औहोवा । इदंवामामिदंबृहद्धस् । होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ ।
हाउहाउहाउ । एहियाहाउ । (त्रिः) । कायाशचाइ । ष्ठायाऽ२वाऽ२३४र्त्ता ॥
होवाऽ३हाऽ३ । आऽ२इ । हियाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । एहियाहाउ ।
एहियाहाउ । एहियाऽ३४ । औहोवा ॥ चराचरायाबृहताइदंवाममिदंबृहद्धस् ॥

(दी.१२७ । प.८१। मा.७०)३०(चौ । ८५)

(५४-१) ॥ इन्द्रस्य महावैराजं वसिष्ठस्य या । इन्द्रोविराडिन्द्रः ॥

होइयाहोइयाहोइयाऽ३४३पिबा ॥ मत्स्वाहाउ । ओजोहाउ । सहोहाउ । बलँ्हाउ ।

इन्द्रोहाउ । वयोहाउ । बृहद्धाउ । ऋतँ्हाउ । स्वर्हाउ । ज्योतिर्हाउ ।

दाऽ३धे। हाउहाउहाउ । औहोऽ१इ । (त्रिः) । सोमाम् । इन्द्रमा । दतुत्वा ।

(त्रिः) । हाउहाउहाउ । औहोऽ१इ (त्रिः) । पिबासोमाम् । इन्द्रमा । दतुत्वा ।

(त्रिः) । (९-२) । मत्स्वाहाउ । ओजोहाउ । सहोहाउ । बलँ्हाउ । इन्द्रोहाउ ।

वयोहाउ । बृहद्धाउ । ऋतँ्हाउ । स्वर्हाउ । ज्योतिर्हाउ । दाऽ३धे ।

हाउहाउहाउ । औहोऽ१इ । (त्रिः) । यन्तेसुषा । वाहरिया । श्वाद्रिऽ२ः ।

श्वाद्रिऽ२ः । श्वाद्रिः । (९-३) । मत्स्वाहाउ । ओजोहाउ । सहोहाउ ।

बलँ्हाउ । इन्द्रोहाउ । वयोहाउ । बृहद्धाउ । ऋतँ्हाउ । स्वर्हाउ ।

ज्योतिर्हाउ । दाऽ३धे । हाउहाउहाउ । औहोऽ१इ । (त्रिः) । सोतुर्बाहू ।

भ्याँ्सुयतो । नार्वाऽ२ । नार्वाऽ२ । नार्वा (९-३) ॥ सधामे । सधामे ।

साधाऽ३माइ । ऋतामे । ऋतामे । आर्त्ताऽ३माइ । इयाहाउ । इयाहाउ ।

इयपिबमत्स्वाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी. १६४। प.१२६। मा.१०४)३१(त्री । ८६)

(५५-१) ॥ अग्नेश्च प्रियम् । अग्निर्गायत्र्यग्निः ॥

हाउहाउहाउ । प्रियहोइ । (त्रिः) । प्रियमोइ । (त्रिः) । अग्नआयाहिऽ३-
वाइताऽ१याऽ२इ ॥ गृणानोहव्याऽ३दाताऽ१याऽ२इ ॥ निहोतासत्सिऽ३-
बार्हाऽ१इषीऽ२३ ॥ हाउहाउहाउ । प्रियहोइ । (त्रिः)। प्रियमोइ । (द्विः) ।
प्रि । याऽ२म् । आऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । प्रियम् । (द्वे-त्रिः) । ए ।
ब्राह्मणानांयन्मानस्तन्मयिब्राह्मणानाम् । ए । पशूनांयन्मानस्तन्मयिपशूनाम् ।
ए । योषितांयन्मानस्तन्मयियोषिताऽ२३४५म् ॥

(दी.३३ । प.३२। मा.२९)३२(ठो । ८७)

(५६-१) ॥ सर्प साम कल्मापं वा वामदेव्यम् । प्रजातिर्गायत्री विश्वेदेवाः ॥

वीहायवाइ । (त्रिः) वीहायावाइ । (त्रिः) । कायानश्चाइ । त्राआऽ२भूऽ२३४वात् ॥
ऊताइसादा । वार्द्धस्साऽ२३४खा ॥ कायाशचाइ । ष्ठायाऽ२वाऽ२३४र्त्ता ॥
वीहायवाइ । (त्रिः) । वीहायावाइ । (द्विः) । वीहा । याऽ२ । वाऽ२३४ ।
औहोवा ॥ ए । संयमन्नव्यायमन्वियमन्नसमायमन् येकेचोदरसर्पिणस्तेभ्यो-
नमाऽ२३४५ः ॥ (दी.३७। प.२३। मा.१८)३३(जै । ८८)

अहमस्मि प्रथमजा – 594 संहिता

(५७-१) ॥ स्वर्ग्यम् सेतुषाम पुरुषगतिर्वा, ।(विशोकं वा) प्रजापतिस्त्रिष्टुबात्मा ॥

हाउहाउहाउ । सेतूँ्स्तरा । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वि-त्रिः) । दानेनादानम् ।
(त्रिः) । हाउहाउहाउ । अहमस्मिप्रथमजाऋताऽ२३स्याऽ३४५ ॥ हाउहाउहाउ ।
सेतूँ्स्तरा । (त्रिः) दुस्त । रान् । (द्वे-त्रिः) । अक्रोधेनक्रोधम् । (द्विः) ।
अक्रोधेनक्रोधम् । हाउहाउहाउ । पूर्वन्देवेभ्योअमृतस्यनाऽ२३माऽ३४५ ॥
हाउहाउहाउ । सेतूँ्स्तरा । (त्रिः) । दुस्त । रान् ।(द्वे-त्रिः) । श्रद्धयाश्रद्धाम् ।
(त्रिः) । हाउहाउहाउ । योमाददातिसइदेवमाऽ२३वाऽ३४५त् ॥ हाउहाउहाउ ।
सेतूँ्स्तरा । (त्रिः) । दुस्त । रान् । (द्वे-त्रिः) । सत्येनानृतम् । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । अहमन्नमन्नमदन्तमाऽ२३द्मीऽ३४५ । हाउहाउहाउवा ॥ एषागतिः ।
(त्रिः) एतादमृतम् । (त्रिः) । स्वार्गच्छा । (त्रिः) । ज्योतिर्गच्छा । (त्रिः)
सेतूँ्स्तीर्त्वाचातुराऽ२३४५ः ॥

(दी.१०६। प.७४। मा.६२)३४(घा । ८९)

॥ द्वादश सप्तमः खण्डः ॥७॥

॥ इति आरण्यकगाने द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

॥ इति अर्क पर्व समाप्तम् ॥

अर्कपर्वणि ८९ सामानि

—*—

अथ द्वन्द्व - पर्व

(५८-१) ॥ वसिष्ठस्य प्राणापानौ द्वौ । वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १र र
हाउहाउहाउ । (त्रिवारं-निःश्वसेत्) । आयुः । (त्रिः) । सात्यम् । (त्रिः) ।
च क क
२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५
इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । युनजा । ताइधियस्ताः॥
र रा ची र र ची
२र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १र २ १र २र ३ ४ ५
शूरोनृषा । ताऽ३श्रावा । सश्चकामाइ ॥ आगोमताइ । व्राजेभा । जातुवन्नाः ।
र रा ची र र ची
२र र र १र र
हाउहाउहाउ । (त्रिवारं-निश्वसेत्) । आयुः । (त्रिः) । सात्यम् । (द्विः) ।
च क क
३ २ ५र र ३ ।।।
सत्याऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.२८। प.३४। मा.२४)१(द्री. । ९०)
दु प दू

(५८-२)

२र र र १र र २ र १
हाउहाउहाउ । (त्रिवारमुच्छ्वसेत्) । आनोहिय । (त्रिः) । मनदोहम् ।
च का र
२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १
(त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि । ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । युनजा ।
र रा ची र र
२ ३ ४ ५ २र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १र २ १र
ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रावा । सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ । व्रजेभा ।
ची र रा ची र र
२र ३ ४ ५ २र र र १र र २
जातुवन्नाः । हाउहाउहाउ । (त्रिवारमुच्छ्वसेत्) । आनोहिय । (त्रिः) ।
ची र का
र १ १ र २ ५र र ३ ।।।
मनदोहम् । (द्विः) । मनाऽ२३दोहाऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
र वी प दू

(दी.३५। प.३४। मा.१८)२(श्रै । ९१)

(५८-३) ॥ इन्द्रस्यैन्यौ द्वौ । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १र र र र २ १ २ १
हाउहाउहाउ । एन्यौ । (त्रिः) । एन्याहाउ । (त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३माधि।
च क का र रा
२र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र २ १
ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । युनज । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रावा।
ची र र ची र रा
२ ३ ४र ५ २र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र र र १र र
सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ । व्राजेभा । जातुवन्नाः । हाउहाउहाउ । एन्यौ ।
ची र र ची च क
र र २ १र न २ । । ।
(त्रिः) । एन्याहाउ । (द्विः) । एन्याऽ३हाउ । वाऽ३ । ईऽ२३४५ ॥
का खु चा दृ

(दी.३८। प.२८। मा.१९)३(त्रौ । ९२)

(५८-४)

२र र र १र र २र र १र — १र २ १
हाउहाउहाउ । आहोएन्यौ । (त्रिः) । आहोऽ२एन्याउ । (त्रिः) । इन्द्रन्नरो ।
च का कै र
२ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र
नेऽ३माधि । ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । यूनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा।
रा ची र र ची र
२ १ २ ३ ४र ५ २र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र र र
ताऽ३श्रावा । सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ । व्राजेभा । जातुवन्नाः । हाउहाउहाउ।
रा ची र र ची च
१र र २र र १र — १र र — १र न २
आहोएन्यौ (त्रिः) । आहोऽ२एन्याउ । (द्विः) । आहोऽ२एन्याऽ३ । हाउवाऽ३ ॥
का कै घी चा
३ । । ।
ईऽ२३४५ ॥ (दी.५१। ए.२८। मा.३१)४(त्र । ९३)
दृ

(५८-५) ॥ प्रजापतेर्व्रतपक्षौद्वौः अहोरात्रयोर्वा । प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १ २ र र र २ १ २ १
हाउहाउहाउ । हिँ हिँ हिँ हिँ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । इन्द्रन्नरो ।नेऽ३माधि ।
च का च र रा
२र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र २ १
ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा । ताऽ३श्रावा।
ची र र ची र रा
२ ३ ४र ५ २र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र र र १ २
सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ । व्राजेमा । जातुवन्नाः । हाउहाउहाउ । हिँ हिँ हिँ हिँ ।
ची र र ची च का
। । ।
(त्रिः) । हाउहाउहाउ । वाऽ३ । ईऽ२३४५ ॥ (दी.१८।प.२४।मा.१९)५(त्रो। ९४)
च चा दृ

(५८-६)

२र र र १ २ र र र १
हाउहाउहाउ । इहा । हिँ॒हिँ॒हिँ॒ । (द्वे-त्रिः) । हाउहाउहाउ । इन्द्रन्नरो ।
च क का च र
२ १ २र३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र
नेऽ३माधि । ताहवन्ताइ ॥ यत्पारियाः । युनजा । ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा।
रा ची र र ची र
२ १ २ ३ ४र ५ २र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र र र
ताऽ३श्रावा । सश्चाकामाइ ॥ आगोमताइ । व्राजेभा । जातुवन्नाः । हाउहाउहाउ।
रा ची र र ची च
१ २ ।।।
इहा । हिँ॒हिँ॒ हिँ॒ । (द्वे-त्रिः) । हाउहाउहाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
क का च चा दृ

(दी.१८। प.३०। मा.१९)६(ण्रो । ९५)

(५८-७) ॥ इन्द्राण्या उल्बजरायुणी द्वे । इन्द्राणी त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

१ २ १र र र — — १ — १र र
हावीन्द्राम् ॥ नरोनेमधिताहा । वाऽ२१ । ताऽ२इ । यात्पाऽ२ ॥ र्यायुनजतेधि।
का क कै का का क
— — १ — १ र र — —
याऽ२१ः । ताऽ२ः ॥ शूरोऽ२ । नृषाताश्रवसश्च । काऽ२१ । माऽ२इ ।
कै का का क कै का
१ — १ र र १ ३ ५र र
आगोऽ२ । मतिव्रजेभजातु । वाऽ२३ । आऽ२ । नाऽ२३४ । औहोवा ॥
का क कि का दु प
३ ।।।
ईऽ२३४५ ॥ (दी.११।प.१९। मा.५)७(घ्रु । ९६)
दृ

(५८-८)

१ २ १ २ ४ ५ १ र र र
उवा । ओवा । (द्वे-द्विः) । उवा । ओवाऽ३ । आइन्द्राम् । नरोनेमधिताहवा-
क का क कि ता
२ ४ ५ १र र २ ४ ५ १ र र
ऽ२३न्ताऽ३इ ॥ यात्पा । र्यायुनजतेधियाऽ२३स्ताऽ३ः ॥ शूरो । नृषाता-
वि ता वि ता
२ ४ ५ १ र र २ १ २
श्रवसश्चकाऽ२३माऽ३इ ॥ आगो । मतिव्रजेभजातुवाऽ२३न्नाः । उवा । ओवा ।
वि ता कः क का
१ ३ ५र र ३ ।।।
(द्वे-द्विः) उवा । ओऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥
क का दु प दृ

(दी.११ । प.२३ । मा.६)८(ग्रू । ९७)

(५९-१) ॥ बृहस्पतेर्बलभिदी द्वे, उद्भिद्वा अनयोः पूर्वम् । बृहस्पतिर्गायत्रीन्द्रः ॥

होवाइ । (द्विः) । होवाऽ३हाइ । उपत्वाजाऽ३माऽ३योगिराः ॥ होवाइ ।
(द्विः) । होवाऽ३हाइ । देदिशतीऽ३र्हाऽ३विष्कृताः ॥ होवाइ । (द्विः) ।
होवाऽ३हाइ । वायोरनीऽ३काऽ३अस्थिरन् ॥ होवाइ । (द्विः) । होवाऽ३हाऽ३४ ।
औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.२७। प.१७। मा.१५)९(छु । ९८)

(५९-२) ॥ बलभित् बृहस्पतिर्गायत्रीन्द्रः ॥

ओवा । (द्विः) । ओवाऽ३हाइ । उपत्वाजाऽ३माऽ३योगिराः ॥ ओवा ।(द्विः) ।
ओवाऽ३हाइ । देदिशतीऽ३र्हाऽ३विष्कृताः ॥ ओवा । (द्विः) । ओवाऽ३हाइ ।
वायोरनीऽ३काऽ३अस्थिरन् ॥ ओवा । (द्विः) ओवाऽ३हाऽ३४ । औहोवा ॥
ईऽ२३४५ ॥ (दी.२७। प.१७। मा.७)१०(छ्रे । ९९)

॥ दशः प्रथम खण्डः ॥१॥

(६०-१) ॥ भर्गयशसी द्वे; तत्राद्यमिदं भर्गः । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

हाउधामयत् । हाहाउधामाधामायत् । हाहाउबृहद्धामाधामायत् । बृहदिन्द्रा ।
यगाऽ२याऽ२३४ता ॥ मरुतोवृ । त्रहाऽ२न्ताऽ२३४माम् ॥ येनज्योतिरजनयन् ।
ऋताऽ२वाऽ२३४र्द्धाः ॥ देवन्देवा । यजाऽ२गृऽ२३४वी । हाउधामयत् ।
हाहाउधामाधामायत् । हाहाउबृहद्धामाधा । माऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥
एऽ३ । भर्गाऽ२३४५ः ॥ (द्वी.२९। प.१९। मा.१५)११(धु । १००)

(६१-१) ॥ यशःसाम । गायत्र्यग्नि (प्रजापति) बृहतीन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । यशोहाउ । (त्रिः) । वर्चोहाउ । (त्रिः) । आस्मिन् हाइ ।
(द्विः) । आस्मिन् हाऽ३१उ । वाऽ२ । तवेदिन्द्रावामंवासु ॥ त्वंपुष्यसि-
मध्यामम् ॥ सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि ॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते । हाउहाउहाउ ।
यशोहाउ । (त्रिः) । वर्चोहाउ । (त्रिः) । आस्मिन् हाइ । (द्विः) ।
आस्मिन्हाऽ३१उ । वाऽ२ ॥ आयुर्विश्वायुर्विश्वंविश्वमायुरशीमहिप्राजां-
त्वाष्टाराधिनिधेह्यस्मेशातंजीवेमशरदोवयन्तेऽ२३४५ ॥ (दी.४७।प.२७।मा.३१)१२(छ।१०१)

(६२-१) ॥ यामे द्वे । यमो बृहत्यग्निः ॥

कायमानोवनातुवाम् ॥ यन्मातॄरजगानाऽ१पाऽ२ः । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ ।
औऽ३होऽ२३४वा ॥ नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवार्त्ताऽ१नाऽ२म् । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ ।
औऽ३होऽ२३४वा ॥ यद्दूरेसन्निहाभूऽ१वाऽ२ः । औऽ२ । हौऽ२ । हुवाइ ।
औऽ३होऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥ ए । राजँस्वाराजाऽ२३४५म् ॥
(दी.१४ । प. । १८। मा.९)१३(दो । १०२)

(६२-२)

औहोवाऽ२ । (द्विः) । औ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । कायमानोवानात्वम् ॥
यन्मातॄरजगन्नापाः ॥ नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्तानम् । यद्दुरेसन्निहाभुवः ।
औहोवाऽ२ । औहोवाऽ२ । औ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ए ।
विराजँस्वाराज्ञाऽ२३४५म् ॥ (दी.२९ । प.१८। मा.६)१४(दू । १०३)

(६३-१) ॥ घर्मतनू द्वे । प्रजापतिर्बृहतीसोमः ॥

हाउहाउहाउ । प्रसोमदेवाऽ३वाइताऽ१याऽ२३इ ॥ हाउहाउहाउ । सिन्धुर्न्नपिप्येऽ३-
आर्णाऽ१साऽ२३ ॥ हाउहाउहाउ । अँ शोःपयसामदिरोनाऽ३जागृऽ१वीऽ२३ः ॥
हाउहाउहाउ । अच्छाकोशंमाऽ३धूश्चूऽ१ताऽ२३म् । हाउहाउहाउ । वा ।
घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानृधेवृधेसुवाऽ२३४५ः ॥ (दी.२४ । प.११ । मा.२१)१५(त । १०४)

(६३-२)

औहोऽ३वा । (त्रिः) । ईऽ३या । (त्रिः) । आइहीऽ२ । (त्रिः) । प्रसोमदे ।
ववाऽ२इताऽ२३४याइ ॥ सिन्धुर्न्नपि । प्येआऽ२र्णाऽ२३४सा ॥ अँ शोःपयसामदिरः ।
नजाऽ२गृऽ२३४वीः ॥ अच्छाकोशम् । मधूऽ२श्चूऽ२३४ताम् । औहोऽ३वा (त्रिः)।
ईऽ३या । (त्रिः) । आइहीऽ२ । आइहीऽ२३ ॥ आऽ२इ । हाऽ२३४ ।
औहोवा ॥ घर्मःप्रवृ्कस्तन्वासमानशेमाहेसुवाऽ२३४५ः॥(दी.१३ । प.२१। मा.१४)१६(वी । १०५)

(६४-१) ॥ प्रजापतेश्चक्षूंषि त्रीणि । प्रजापतिरनुष्टुप्सोमः ॥

आयंपूषाऽ३ओऽ२३४वा ॥ रायिर्भगः । रायिर्भगाऽ३ओऽ२३४वा । चाऽ२३४क्षूः ॥
सोमःपुनाऽ३ओऽ२३४वा । नोअर्षाति । नोअर्षाताऽ३ओऽ२३४वा । सूऽ२३४वाः ।
पातिर्विश्वाऽ३ओऽ२३४वा । स्याभूमानः । स्याभूमानाऽ३ओऽ२३४वा ।
ज्योऽ२३४तीः ॥ वियख्यद्रोऽ३ओऽ२३४वा । दासीउभे । दासीऊभाऽ३-
ओऽ२३४वा ॥ चाऽ२३४क्षूः ॥ (दी.९। प.१६। मा.१८)१७(तै । १०६)

(६४-२)

२१ ‿ ३ ५रर २१ २ १ ३ ५रर
आयम् । पूऽ२षाऽ२३४औहोवा ॥ रायिर्भागः । रायिः । भाऽ२गाऽ२३४औहोवा।
र वै चो र वै
१र २ र१र २ र१ ‿ ३ ५रर १ २१र २
सोमःपुनानोआर्षति । नोआ । षाऽ२ताऽ२३४औहोवा । पतिर्विश्वास्यभूमानः ॥
थि र वै थि
१र ‿ ३ ५रर १ २१र २र १र २ १र ‿ ३
स्याभू । माऽ२नाऽ२३४औहोवा ॥ व्यख्यद्रोदासीउभे । दासी । ऊऽ२भाऽ२३४-
र वै थि र
५रर ३ ५ ३र२ ‿ ३ ५ ३ ५
औहोवा । चाऽ२३४क्षूः । औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा । सूऽ२३४वाः ।
वै दू थि वू दू
३र२ ‿ ३ ५ ३ ५ ३र२ ‿ ३
औहोऽ३१इ । औऽ२होऽ२३४वा । ज्योऽ२३४तीः । औहोऽ३१इ । औऽ२हो-
थि वू दू थि
५ ३ ५
ऽ२३४वा ॥ चाऽ२३४क्षूः ॥ (दी.२३। प.२४। मा.१९)१८(ढो । १०७)
वू दू

(६४-३)

२र र र १र — १
एअयम्पूषारयिर्भगाः ॥ सोमःपुना । इहा । नोऽ२अर्षा । इडा । ताइपतिर्विश्वस्या-
च क क कै क
२ २ २ १ र १
भूऽ१माऽ३नाः ॥ वियख्यद्रोदसाऽ२३होइ ॥ ऊमआऽ३१उवाऽ२३ ॥
चै को ख
१ ।।।
इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.५। प.९। मा.९)१९(भो । १०८)
कु

(६५-१) ॥ वार्षाहराणि त्रीणि वृषाहरिर्गायत्री सोमः ॥

२र र र १र २‿३ ५ २१र र २ २ २
हाउत्वमेतात् ॥ एतादेतात् । आधाराऽ२३४याः । कृष्णासुरोहीणाऽ१इषूऽ३चा ॥
च र वू छै
१ २ १ ‿ ३ ५रर
पारुष्णाऽ२३इषू ॥ रुशत् । पाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥
जा र वै

(दी.८। प.७। मा.८)२०(ठै । १०९)

(६५-२)

त्वमेतद्धोहाइ ॥ होइ । आधाऽ१रयाऽ२ः । होइ । कार्ष्णाऽ१सुरोऽ२ । होइ । हाइणीऽ१षुचाऽ२ ॥ होइ । पारुष्णाइषूऽ२ ॥ होइ । रुशत् । पाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥

(दी.३ । प.१२ । मा.११)२१(ठ । ११०)

(६५-३)

आइत्वमेतात् ॥ आआधाऽ१रायाऽ२ः । आइकार्ष्णाऽ१सुरोऽ२ । आइहाइणीऽ१षुचाऽ२ ॥ आइपारुष्णाइषूऽ२ ॥ आइ । रुशत् । पाऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ आभिस्फूर्जायंद्विष्मः । समोषाभिस्फूर्जायंद्विष्मः । अस्माभ्यंगातुवित्तामाऽ२३४५म् । (दी.९ । पा.११ । मा.१५)२२(तु । १११)

॥ द्वादश द्वितीयः खण्डः ॥२॥

इति आरण्यकगाने द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥

(६६-१) ॥ द्यौते द्वे द्युतो बृहतीन्द्रः ॥

हाउयच्छक्रासी ॥ पारावाऽ२३४ती । ईऽ४य । इयाऽ२३४ । इयाहाउ ॥ यादर्वाऽ२३४वा । ताइवृत्राऽ२३४हान् । ईऽ४य । इयाऽ२३४ । इयाहाउ ॥ आतस्त्वाऽ२३४गी । भाइर्द्यूगा२३४दी । द्राकेशाऽ२३४इभीः। ईऽ४य । इयाऽ२३४ । इयाहाउ ॥ सूतावाऽ२३४ँआ । वाइवासाऽ२३४ती । ईऽ४य । इयाऽ२३४ । इयाऽ५हाउ ॥ वा ॥ अश्वमिष्टयेऽ३हस् ॥ (दी.२ । प.२३। मा.१३)१(जि । ११२)

(६६-२)

ईऽ४य । इयाऽ२३४५ । (द्वे-त्रिः) । इयाहाउ । याच्छा । क्रा । सीऽ३पाऽ३-
रावाति ॥ यादा । र्वा । वाऽ३ताऽ३इवृत्राहून् ॥ आताः । त्वा । गीर्भिर्द्युगदी-
ऽ३न्द्राऽ३केशिभिः ॥ सूता । वाँ । आऽ३वीऽ३वासाति । ईऽ४य । इयाऽ२३४५ ॥
(द्वे-त्रिः) । इयाऽ५हाउ । वा ॥ अश्वदिष्टयेऽ३हस् ॥ (दी.४। प.२८। मा.७)२(दि । ११३)

(६७-१) ॥ तास्पन्द्रे द्वे । तस्येन्द्रः तस्पन्द्रो वा अनुष्टुप्सोमः ॥

आ । भीनवा । तआऽ२१२ । द्रुहआऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा । प्रा ।
यमिन्द्रा । स्यकाऽ२१२ । मियमाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ॥ वा । त्संनपू।
र्वआऽ२१२ । युनियाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ॥ जा । तँ रिहा । तिमाऽ२१२ ।
तराआऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.२। प.२०। मा.९)३(जो । ११४)

(६७-२)

आभीनवा । तआऽ३१उवाऽ२३ । द्रूऽ२३४हाः । होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ।
ईऽ२३४डा ॥ प्रियमिन्द्रा । स्यकाऽ३१उवाऽ२३ । मीऽ२३४याम् । होइ । हो।
वाहाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ॥ वत्संनपू । र्वआऽ३१उवाऽ२३ । यूऽ२३४नी ।
होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ॥ जातँ रिहा । तिमाऽ३१उवाऽ२३ ।
ताऽ२३४राः । होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.७। प.२८। मा.१८)४(जै । ११५)

(६८-१) ॥ तौरश्रवसे द्वे । तुरश्रवाः बृहतीन्द्रः ॥

यदिन्द्रशासोअव्रताम् ॥ च्यावयासदाऽ३साऽ२३स्पाराइ । आऽ२३स्मा । कमा।

शुंमाघाऽ१वाऽ२३न् । पूरूऽ२स्पृऽ२३४हाम् ॥ वासाव्याआऽ३४ । औहोवा ॥

धाऽ२३इबाऽ३ । हाऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ याऽ२३४५ ॥

(दी.८। प.११। मा.८)५(टै । ११६)

(६८-२)

याऽ५दिन्द्रा । शाऽ३सोऽ३अव्राताम् ॥ च्यावयासाऽ२ । दासास्पाऽ१राऽ२इ ।

उवाऽ३ । ओऽ३वा । अस्माकाऽ१माऽ२ । शुंमाघाऽ१वाऽ२न् । उवाऽ३ ।

ओऽ३वा । पुरुस्पृ१हाऽ२म् ॥ वासाव्याऽ१याऽ२ । उवाऽ३ । ओऽ३वाऽ३ ॥

धिबोवा । हाऽ५योऽ६ हाइ ॥ (दी.२ । प.१६। मा.६)६(चू। ११७)

(६९-१) ॥ धेनुषाम । प्रजापतिगार्ययत्री सोमेन्द्रौ वा ॥

हाउहाउहाउ । ओहा । (द्विः) । ओहाइ । इयाहाउ । (त्रिः) औहोऽ१इ । (त्रिः) ।

भुवत् । इडा । स्वादिष्ठया । मादिष्ठया ॥ जनत् । इडा । पवस्वसो । माधारया ॥

वृधत् । इडा । इन्द्रायपा । तावाइसुताः ॥ करत् । इडाऽ२३ । हाउहाउहाउ ।

ओहा । (द्विः) । ओहाइ । इयाहाउ । (त्रिः) । औहोऽ१इ । (द्विः) । औहोऽ१२ ।

याऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । धेनु ॥ (दी.३३ । प.३७। मा.२६)७(ठू । ११८)

(७०-१) ॥ पयस्साम । प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः (प्रजापतिः) ॥

२ २ १ —१ २ २ २ २ २र
इयोऽ३ । इया । इयोऽ२इया । इयोऽ३ । इया । अग्नेयुङ्क्ष्वाहीऽ३येतवा ।
चा य कै चा य चे
१र २र १र २र र २र २ २ १ —१
अग्नेयुङ्क्ष्वा । हीयेतवा । अग्नेयुङ्क्ष्वाहीऽ३येतवा ॥ इयोऽ३ । इया । इयोऽ२इया ।
र र चे चा य कै
२ २ र र र २र १र र २र १र
इयोऽ३ । इया । अश्वासोदाइवाऽ३साधवाः । अश्वासोदाइ । वासाधवाः ।
चा य चे र र
२ र र र २र २ १ —१ २ २
अश्वासोदाइवाऽ३साधवाः ॥ इयोऽ३ । इया । इयोऽ२इया । इयोऽ३ । इया ।
चे चा य कै चा य
र २र १ २र १र र २र
अरंवहान्तीऽ३आशवाः । आरंवहा । तीयाशवाः । अरंवहान्तीऽ३आशवाः ॥
चो र र चे
२ २ १ —१ २ र २ —
इयोऽ३ । इया । इयोऽ२इया । इयोइयाऽ३उवाऽ३ ॥ आऽ२ । (त्रिः) ।
चा य कै ही का
१ २ १ ।।।
हस्एऽ३पयाऽ२३४५ः ॥ (दी.२८। प.३५। मा.१९)८(णो । ११९)
ङि

(७१-१) ॥ स्वर्ज्योतिषी द्वे । प्रजापतिर्जगती आदित्यः सोमो वा ॥

२र र र १ २ १र २ १ — १
हाउहाउहाउ । स्वर्विश्वम् । (त्रिः) । अरूरुचत् । (त्रिः) । उषसःपृश्निराऽ२प्रायाः ॥
च का का रै
२र र र १ २ १ र २ र १ र — १
हाउहाउहाउ । स्वर्विश्वम् । (त्रिः) । उक्षामिमे । (त्रिः) । तिभुवनेषुवाऽ२जायूः ।
च का का रै
२र र र १ २ १र र २ १ र — १
हाउहाउहाउ । स्वर्विश्वम् ।(त्रिः)। मायाविनः । (त्रिः) । ममिरेअस्यमाऽ२याया ॥
च का का रै
२र र र १ २ १ २ १ र — १
हाउहाउहाउ । स्वर्विश्वम् । (त्रिः) नृचाक्षसः । (त्रिः) । पितरोगर्भमाऽ२दाधूः ।
च का का रै
२र र र १ २ १ २ २
हाउहाउहाउ । स्वर्विश्वम् । (द्विः) । सुवाऽ२३र्विश्वाउ । वाऽ३ । एऽ३ ।
च का कः चा चा
१ ।।।
सुवाऽ२३४५ः ॥ (दी.३३ । प.३९। मा.४४)९(ढी । १२०)
कु

(७१-२)

हाउहाउहाउ । ज्योतिर्विश्वम् । (त्रिः) । अरूरुचत् । (त्रिः) । उषसःपृश्निराऽ३ ।
ग्रायाः ॥ हाउहाउहाउ । ज्योतिर्विश्वम् । (त्रिः) । उक्षामिमे । (त्रिः) ।
तिभुवनेषुवाऽ३ । जायूः ॥ हाउहाउहाउ । ज्योतिर्विश्वम् । (त्रिः) । मायाविनः ।
(त्रिः) । ममिरेअस्यमाऽ३ । याया ॥ हाउहाउहाउ । ज्योतिर्विश्वम् । (त्रिः) ।
नृचाक्षसः । (त्रिः) । पितरोगर्भमाऽ३ । दाधूः । हाउहाउहाउ । ज्योतिर्विश्वम्।
(द्विः) । ज्योताऽ२३इर्विश्वाउ । वाऽ३ ॥ एऽ३ । ज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.४९। प.४३। मा.४५)१०(दु । १२१)

॥ दश तृतीयः खण्डः ॥३॥

(७२-१) ॥ यण्वम् । प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः ॥

इन्द्रामिद्गाथिनोबृहात् । एऽ२ । इन्द्रामर्केभिः । अर्किणोवा ॥औहोवाऔहोवाऔहोवा ।
औहोहाइ । (त्रिः) । इन्द्रंवाणीरनूऽ२३षताउ । वाऽ३ । ईऽ२३४डा ॥ श्री ॥
औहोवाऔहोवाऔहोवा । औहोहाइ । (त्रिः) । इन्द्रइद्धर्योऽ२३ःसचाऽ३ ।संमिश्लआ-
वचोऽ२३युजाऽ३ ॥ औहोवाऔहोवाऔहोवा । औहोहाइ । (त्रिः) । इन्द्रोवंज्री-
हिराऽ२३ण्ययाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४डा ॥ श्री ॥ औहोवाऔहोवाऔहोवा ।
औहोहाइ । (त्रिः) । इन्द्रवाजेषुनोऽ२३वाऽ३ । सहस्रप्रधनाऽ२३इषुचाऽ३ ॥
औहोवाऔहोवाऔहोवा । औहोहाइ । (त्रिः) । उग्रउग्राभिरूऽ२३तिभाउ ।
वाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.७१ । प.३७। मा. ३६)११(खू । १२२)

(७३-१) ॥ अपत्यम् । प्रजापतिर्गायत्री सोमः ॥

२र र र र र र१ २ २र र र
हाउहाउहाउ । उच्चातेजातमाऽ२३न्धसाऽ३ः ॥ हाउहाउहाउ ।
च जि च
र १ २ २र र र १ २
दिविसद्भूमियाऽ२३ददाऽ३इ । हाउहाउहाउ । उग्रँ्शर्ममहाऽ२३इश्रवाउ ।
जि च जा
५ २र र र र १ २
वाऽ३ ॥ ईऽ२३४डा । श्री ॥ हाउहाउहाउ । सनइन्द्राययाऽ२३ज्यवाऽ३इ ॥
चा दू च जि
२र र र र १ २ २र र र
हाउहाउहाउ । वरुणायमरूऽ२३द्भियाऽ३ः ॥ हाउहाउहाउ ।
च जि च
र १ २ ५ २र र र
वरिवोवित्पराऽ२३इस्त्रवाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४डा ॥ श्री ॥ हाउहाउहाउ ।
जा चा दू च
र र र १ २ २र र र र र १ २
एनाविश्वानिआऽ२३र्यआऽ३ ॥ हाउहाउहाउ । द्युम्नानिमानुषाऽ२३णाऽ३म् ॥
जि च जि
२र र र र र१ २ १ ।।।
हाउहाउहाउ । सिषासन्तोवनाऽ२३महाउ । वाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥
च जा चा कु

(दी.४१ । प.२४ । मा.४१)१२(घ । १२३)

(७४-१) ॥ आयुर्नवस्तोभे द्वे, (आयुस्साम) । प्रजापतिर्विष्टारपंक्तिरिन्द्रः ॥

२ १ २र र १र २ १र २
हाउहाउहाउवा । विश्वतोदावन्विश्वतोनाआभारा ॥ हाउहाउहाउवा ।
च के च
१ र २१र २र १र २ १र
यन्त्वाशविष्ठामीमाहे । हाउहाउहाउवा । आयुः । हाउहाउहाउवा ॥ सूवः ।
घि च क च क
२ १र २ ।।।
हाउहाउहाउवा ॥ ज्योतिः । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
च क चा दू

(दी.१०। प.१२। मा.२२)१३(फ्रा । १२४)

(७४-२) ॥ नव स्तोभम् ॥

विश्वतोदावन्विश्वतोनाआ । भाराओवा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा । विश्वतोदावन्विश्वतोनाआभारा । भराओवा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा । यन्त्वाशविष्ठामीमाहे । माहाओवा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा ॥ ईडा ।ईडाओवा।(त्रिः)। हाओवा (त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा । सूवः । सुवाओवा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा ॥ ज्योतिः। ज्योताओवा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.१२६।प.६१।मा.५९)१४(को । १२५)

(७५-१) ॥ रायोवाजीयीम् । रायोवाजः पंक्तिरिन्द्रः ॥

एस्वादोः ॥ इत्थाविषूवतोमधोःपिबन्तिगौऽ२रियाः । इडा । याइन्द्रेणसायाऽ१वाऽ३रीः । वृष्णामदन्तिशोऽ३ ॥ भाथा । वस्वीरनुस्वराऽ२३होइ । जायमाऽ३१उवाऽ२३ । इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.८ । प.९। मा.७)१५(ढे । १२६)

(७६-१) ॥ बार्हद्गिरम् । बृहद्गिरिः पथ्यापंक्तिरिन्द्रः ॥

इन्द्रोमदा ॥ यवावृधेशवसेवृत्रहाऽ२नृभाइ । अथा । तमिन्महत्सुवाऽ१जाऽ३इषू । ऊतिमर्भेहवाऽ३ । माहाइ ॥ सवाजेषुप्रनाऽ२३होइ ॥ वाइषदाऽ३१उवाऽ२३ ॥ आऽ२३४था ॥ (दी.८। प.९। मा.६)१६(दू । १२७)

(७७-२) ॥ संकृति । प्रजापतिः देवा वा पंक्तिरिन्द्रः ॥

एस्वादोः ॥ इत्थाविषूऽ२३होऽ२३ । वताऽ२३ः । हाओवा । (त्रिः) ।
हाऽ३ओऽ२३४वा । (द्विः) । हाउवा । मधोःपिबन्तिगौर्याः । याइन्द्रेणसायावारीः ॥
वृष्णामदन्तिशोमाथा ॥ वस्वीरनुस्वाराज्यम् । हाओवा । (त्रिः) ।हाऽ३ओऽ२३४वा ।
(द्विः) । हाउवाऽ३ ॥ हौऽ३ । आऽ३ । ऊऽ३ । ईऽ२३४५ ॥

(दी.३०। पा.२३। मा.१८)१७(त्रै । १२८)

(७७-२) ॥ पार्थुरश्मम् । पृथुरश्मिः प्रजापतिः पंक्तिरिन्द्रः ॥

एस्वादोः । ओऽ२३४वा ॥ इत्थाविषूऽ२वाताः । अथा ॥ एमाधोः । ओऽ२३४वा ॥
पिबन्तिगौऽ२रियाः । अथा ॥ एयाई । ओऽ२३४वा । द्रेणसयाऽ२वाराइ ।
अथा ॥ एवृष्णा । ओऽ२३४वा ॥ मादन्तिशोऽ२माथा । अथा ॥ एवास्वीः ।
ओऽ२३४वा ॥ आनुस्वराऽ२जियाम् । अथाऽ२३४५ ॥

(दी.२। प.२०। मा.१८)८(जै । १२९)

(७८-१) ॥ श्येन-वृषके द्वे, (श्येनम्) । षट् प्रजापतिपदानि जगतीन्द्रः ॥

ऊभाइ ॥ यादिन्द्ररोऽ२दासाइ । इडा ॥ आपा ॥ प्राथउषाऽ२इवा । इडा ॥
माहा ॥ तन्त्वामहाऽ२इनाम् । इडा ॥ साम्रा ॥ जंचर्षणाऽ२इनाम् । इडा ॥
देवी । जानित्र्यजाऽ२इजानात् ॥ इडा । भाद्रा । जानित्र्यजाऽ२इजानात् । इडाऽ२३४५ ॥

(दी.२ प.१८ । मा.१२)१९(जा । १३०)

(७९-१) ॥ वृषकम् । प्रजापतिः पंक्तिरिन्द्रः ॥

एस्वादोः । (द्विः) । इत्थाविषूऽ२वाताः । इडा ॥ एमाधोः ॥ (द्विः) ।
पिबन्तिगौऽ२रियाः । इडा ॥ एयाई ॥ (द्विः) । द्रेणसयाऽ२वाराइ । इडा ॥
एवृष्णा (द्विः) ॥ मादन्तिशोऽ२भाथा । इडा ॥ एवास्वीः । (द्विः) ।
आनुस्वराऽ२जियाम् ॥ इडाऽ२३४५ ॥ (दी.२ प.२०। मा.१२)२०(ञा । १३१)

॥ दश चतुर्थः खण्डः ॥४॥

(८०-१) ॥ भद्रम् । प्रजापतिर्भुवनो द्विपदविराड्विश्वे देवाः ॥

होइहा । (त्रिः) । इहोइहा । (त्रिः) । औहोऽ२ । इहा ।(द्वे-द्विः) । औहोइहाऽ३४ ।
औहोवा ॥ इमानुकंभुवनासीषधेमाऽ३ । इहा । इन्द्रश्चविश्वेचदेवाऽ३ः । इहा ।
होइहा । (त्रिः) । इहोइहा । (त्रिः) । औहोऽ२ । इहा । (द्वे-द्विः) । औहोइहाऽ३४ ।
औहोवा ॥ एऽ३ । भद्रम् ॥ (दी.४२ । प.३०। मा.१६)२१(जू । १३२)

(८०-२) ॥ श्रेयस्साम । विराट् प्रजापतिर्विश्वे देवाः ॥

होइया (त्रिः) । इयोइया (त्रिः) । औहोऽ२ । इया । (द्वे-द्विः) । औहोइयाऽ३४ ।
औहोवा ॥ इमानुकंभुवनासीषधेमाऽ३ । इया । इन्द्रश्चविश्वेचदेवाऽ३ः । इया ।
होइया । (त्रिः) । इयोइया । (त्रिः) । औहोऽ२ । इया । (द्वे-द्विः) ।
औहोइयाऽ३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । श्रेयाऽ२३४५ः ॥

(दी.४३ । प.३०। मा.१६)२२(णू । १३३)

(८१-१) ॥ तन्तुसाम । प्रजापतिर्गायत्री सोमः ॥

हाउतन्तुः । (त्रिः) । हाउविश्वम् ।(त्रिः)। अचिक्रदद्वार्षाहराइः ॥ महान्मित्रोनादर्शताः ॥ सँ्सूरियेणादिद्युताइ ॥ हाउतन्तुः । (त्रिः) । हाउविश्वम् । (द्विः) । हाउ । वाऽ२इ । श्वाऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । तन्तूऽ२३४५ः ॥

(दी.२२।प.२०।मा.२९)२३(ञो । १३४)

(८१-२) ॥ ओतु साम ॥

हावोतुः । (त्रिः) । हावैही । (त्रिः) । अचिक्रदद्वार्षाहराइः ॥ महान्मित्रोनादर्शताः ॥ सँ्सूरियेणादिद्युताइ ॥ हावोतुः ।(त्रिः) । हावैही । (द्विः) । हाउ । आऽ२इ । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ एऽ३ । ओतूऽ२३४५ः ॥

(दी.३९। प.२०। मा.१३)२४(नि । १३५)

(८२-१) ॥ सहस्साम । प्रजापतिर्विराडिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । पिबासोमाम् । इन्द्र । मन्दतुत्वा ॥ हाउहाउहाउ । यन्तेसुषा । वाऽ३हारि । अश्वाअद्रीः । हाउहाउहाउ । सोतुर्बाहू । भ्याऽ३ँ्सुया । तोनअर्वा ॥ हाउहाउहाउ । वा । ए । दिशः ॥ हाउहाउहाउ । वा । ए । प्रदिशः । हाउहाउहाउ । वा । ए । उद्दिशः । हाउहाउहाउ । वाऽ३ ॥ एऽ३ । साहाऽ२३४५ः ॥

(दी.१८ । प.२८। मा.२९)२५(डो । १३६)

(८२-२) ॥ महस्साम । प्रजापतिर्विराडिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउवा ॥ पिबासोममिन्द्रामन्दातुत्वा । हाउहाउहाउवा । यन्तेसुषावहर्यश्वाद्रिः ॥ हाउहाउहाउवा । सोतुर्बाहुभ्याँ सुयतोनार्वा । हाउहाउहाउवा । एभूमिः ॥ हाउहाउहाउवा । एअन्तरिक्षम् । हाउहाउहाउवा ॥ एद्यौः । हाउहाउहाउवाऽ३ । एऽ३माहाऽ२३४५ः ॥ (दी.१७ । प.१४ । मा.२७)२६(झे । १३७)

(८३-१) ॥ वार्कजम्भे द्वे । वृकजम्भो बृहतीन्द्रः ॥

हाउप्रवइन्द्रायबृहाताइ ॥ मरुतोब्रह्मअर्चता । हाउ । वृत्रँ हनतिवृत्रहा । हाउ । शाऽ३ताक्राऽ३तूः । हाउ ॥ वाज्रेणाशा । हाउ ॥ ताऽ२पाऽ२३४औहोवा ॥ र्वणाऽ३हस् ॥ (दी.६ । प.११ । मा.११)२७(क । १३८)

(८३-२)

हाउहाउहाउ । विश्वेषाम् । (त्रिः) । भूतानाम् । (त्रिः) । स्तोभानाम् । (त्रिः) । प्रवइन्द्रायबृहाताइ । हाताइ ॥ (द्विः) । मरुतोब्रह्मअर्च्चाता । चाता ॥ (द्विः) । वृत्रँ हनतिवृत्रहाशतक्रातूः । क्रातूः ॥ (द्विः) । वज्रेणशतपर्वाणा । र्वाणा । (द्विः) । हाउहाउहाउ । विश्वेषाम् । (त्रिः) । भूतानाम् । (त्रिः) । स्तोभानाम् । (द्विः) । स्तोभानाऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.५९ । प.३४। मा.३१)२८(घ्र । १३९)

(८४-१) ॥ इषःसाम । प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाहु । हाऽ३ । ओऽ३४वा । (त्रीणि-त्रिः) । आसा । विदाइ । वाऽ३ङ्गोत्र ।
जीकामन्धाः ॥ नाया । स्मिन्नाइ । द्रोऽ३जानु । षेमुवोचा ॥ बोधा । मसाइ ।
त्वाऽ३हारि । अश्वायज्ञैः ॥ बोधा । नस्तो । माऽ३मन्धा । सोमादेषू । हाहु ।
हाऽ३ । ओऽ३४वा । (त्रीणि-द्विः) । हाहु । हाऽ३ । ओऽ३४५वाऽ६ँ५६ँ ॥
ईऽ२३४५ष् ॥ (दी.१२। प.३५। मा.७)२९(जे । १४०)

(८४-२) ॥ विश्वज्योतिस्साम ॥

ईऽ२यो । (त्रिः) । ऐही । (त्रिः) । हिँ । (त्रिः) । ओहा । (द्विः) । ओहाइ ।
असाविदाइ । वंगोत्रजीऽ२ । कामाऽ२न्धाः ॥ ईऽ२यो । (त्रिः) । ऐही ।
(त्रिः) । हिँ । (त्रिः) ओहा । (द्विः) । ओहाइ । नियस्मिन्नाइ । द्रोजनुषेऽ२म् ।
उवोऽ२चा ॥ ईऽ२यो । (त्रिः) । ऐही । (त्रिः) । हिँ । (त्रिः) । ओहा ।(द्विः) ।
ओहाइ । बोधामसाइ । त्वाहरियाऽ२ । श्वायाऽ२ज्ञैः ॥ ईऽ२यो । (त्रिः) ।
ऐही । हिँ । (त्रिः) ओहा । (द्विः) । ओहाइ । बोधानस्तो । मामंधसोऽ२ ।
मादाऽ२इषू । ईऽ२यो । (त्रिः) । ऐही । (त्रिः) । हिँ । (त्रिः) । ओहा ।ओहा ।
ओऽ३हाउ ।वाऽ३।।एऽ३। विश्वज्योतीऽ२३४५ः ॥ (दी.६८ । प.७५। मा१४)३०(णी । १४१)

॥ दश पञ्चमः खण्डः ॥५॥

॥ इति आरण्यकगाने तृतीयस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(८५-१) ॥ द्रविणम् । प्रजापतिर्गायत्री मित्रावरुणोर्यमा ॥

हाउमहि । (त्रिः) । महीऽ२महि । (त्रिः) । माहेमाहे । (त्रिः) ।
महित्रीणामवाऽ२रस्तू । औहौहोवाऽ२ ॥ द्युक्षंमित्रस्याऽ२र्यम्णाः । औहौहोवाऽ२ ॥
दुराधर्षवरूऽ२णस्या । औहौहोवाऽ२३ ॥ हाउमहि । (त्रिः) । महीऽ२महि ।
(त्रिः) । माहेमाहे । (द्विः) । महि । माऽ२हाऽ२३४औहौवा ॥ ए । महि ।
(द्वे-द्विः) । ए । माहीऽ२३४५ ॥ (दी.४३। प.३१। मा.८)१(टै । १४२)

(८५-२) ॥ विष्पर्द्धसस्साम । प्रजापतिर्गायत्री मित्रावरुणोऽर्यमा ॥

हाउदिवि । (त्रिः) ॥ दिवीऽ२दिवि । (त्रिः) । दाइवेदाइवे । (त्रिः) ।
महित्रीणामवाऽ२रस्तू ॥ द्युक्षंमित्रस्याऽ२र्यम्णाः ॥ दुराधर्षवरूऽ२णस्या ॥
हाउदिवि । (त्रिः) । दिवीऽ२दिवि । (त्रिः) । दाइवेदाइवे । (द्विः) । दिवि ।
दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ ए । दिवि । ए । दिवि । ए । दिवीऽ२३४५ ॥

(दी.३४ । प.२८। मा.१९)२(दो । १४३)

(८६-१) ॥ यामम् । यमस्त्रिष्टुबादित्यान्तर्गतः परः पुरुषः ॥

औहोइ । इयाहाउ । औहौहोऽ३वा । नाकेसुपा । णमुपायत्पतंतम् ॥ औहोइ ।
इयाहाउ । औहौहोऽ३वा । हार्दृविना । तोअभ्यचक्षतत्वौ ॥ होइ । इयाहाउ ।
औहौहोऽ३वा । हाइरण्यापा । क्षंवरुणस्यदूतम् ॥ औहोइ । इयाहाउ ।
औहौहोऽ३वा ॥ यामस्ययो । नौशकुनंभुरण्युम् । औहोइ । इयाहाउ ।
औहौहोऽ३वाऽ३ ।हाउवाऽ३।।ईऽ२३४५॥ (दी.३१ । प.२५। मा.१६)३(ङू ।१४४)

(८७-१) ॥ माधुच्छन्दसम् । मधुच्छन्दागायत्रीन्द्रः ॥

सुरूपकृत्नुमूतायेसुदुघामा ॥ वागोऽ२ । दुहयाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४डा ।
सूऽ२३४वाः ॥ जुहूमाऽ२३सी ॥ द्यविद्यवियाऽ३१उवाऽ२३ ।। ज्योऽ२३४तीः ॥

(दी.५। प.८। मा.४)४(बी । १४५)

(८८-१) ॥ वसिष्ठ शफौ द्वौ । वसिष्ठस्त्रिष्टुप्सोम धातृविष्णवः ॥

हाउप्राथाः ॥ चयस्यसप्रथः । चानाऽ२ । माऽ३उवाऽ३ । ईहा । (त्रिः) । हुवाइ ।
ओऽ२३४वा । ईऽ२३४डा । आनुष्टुमस्यहविषः । हावाऽ२इः । याऽ३उवाऽ३ । ईहा ।
(त्रिः) । हुवाइ । ओऽ२३४वा । ईऽ२३४डा ॥ धातुर्द्युतानात्सवितुः । चावाऽ२इ ।
ष्णाऽ३उवाऽ३ । ईहा । (त्रिः) । हुवाइ । ओऽ२३४वा । ईऽ२३४डा ॥ रथन्तर-
माजभारा । वसाऽ२इ । ष्ठाऽ३उवाऽ३ । ईहा । (त्रिः) । हुवाइ । ओऽ२३४वा ।
ईऽ२३४डा ॥ एऽ३ । द्युत् ॥ (दी.३१। प.३९। मा.१८)५(चै । १४६)

(८८-२)

प्राथाः ॥ चयस्यसप्रथः । चानाऽ२ । माऽ३१उवाऽ२३ । ईडा । (त्रिः) । होइ ।

हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४हा । आनुष्टुभस्यहविषः । हावाऽ२इः ।

याऽ३१उवाऽ२३ । ईडा । (त्रिः) । होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ२३४हा ॥ धातुर्द्युतानात्सवितुः । चावाऽ२इ । ष्णाऽ३१उवाऽ२३ । ईडा ।

(त्रिः)। होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ२३४हा ॥ रथन्तरमाजभारा ।

वासाऽ२इ । ष्ठाऽ३१उवाऽ२३ । ईडा । (त्रिः) । होइ । हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ२३४हा । एऽ३ । द्युताऽ२३४५ः ॥ (दी.३५ । प.४३। मा.२१)६(ब । १४७)

(८९-१) ॥ शुक्रसाम । प्रजातिर्गायत्रीवायुः ॥

हाउहाउहाउ । शुक्रम् । (त्रिः) शुक्रँ्शुक्रम् । (त्रिः) । शुक्रँ्शूक्रम् । (त्रिः) ।

नियुत्वान्वायाऽ३वागाऽ१हीऽ२ ॥ अयँ्शुक्रोआऽ३यामाऽ१इताऽ२इ ॥ गन्तासिसुन्वा-

ऽ३तोगृऽ१हाऽ२३म् ॥ हाउहाउहाउ । शुक्रम् । (त्रिः) । शुक्रँ्शुक्रम् । (त्रिः) ।

शुक्रँ्शूक्रम् । (द्विः) । शुक्रम् । शूऽ२ । क्राऽ२३४ । औहोवा । ए ।

शुक्रम् (द्वे-त्रिः) ॥ (दी.१५ । प.३२ । मा.३१)७(फ । १४८)

(९०-१) ॥ चन्द्रमाम ॥ प्रजापतिर्गायत्रीत्वष्टाचन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । चन्द्रम् । (त्रिः) । चन्द्रश्चन्द्रम् । (त्रिः) । चन्द्रश्चान्द्रम् । (त्रिः) । अत्राहगोरा-
ऽ३मान्वाऽ१ताऽ२ ॥ नामत्वष्टुराऽ३पाइचाऽ१याऽ२म् ॥ इत्थाचन्द्रमाऽ३सोगृऽ१हा-
ऽ२३इ ॥ हाउहाउहाउ । चन्द्रम् । (त्रिः) । चन्द्रश्चन्द्रम् । (त्रिः) । चन्द्रश्चान्द्रम् ।
(द्विः) । चन्द्रम् । चाऽ२ । द्राऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । चन्द्रम् ॥ (द्वे-त्रिः) ॥

(दी.१५। प.३२ । मा.३०)८(फौ । १४९)

॥ अष्टौ षष्ठः खण्डः ॥६॥

(९१-१) ॥ वायोः स्वरसामानि षट् । वायुरनुष्टुबिन्द्रः ॥

एयज्जायथाः ॥ अपूर्विया । हाउ । मघवन्वृ । हाउ । त्रहत्याया । हाउ ।
तत्पृथिवीम् । हाउ । अप्रथयाः । हाउ । एऔहोवादीशाः ॥ तदस्तभ्नाः ।
हाउ ॥ उतोदिवाम् । हाउ । एऔहोवाऽ३ ॥ अस् पयाऽ२३४५ः ॥

(दी.१२ । प.१८ । मा.१७)९ (जे । १५०)

(९१-२)

एहाउयज्जायथाः ॥ अपूर्विया । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । मघवन्वृ । होइ । (त्रिः)।
हाउहाउहाउ । त्रहत्याया । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । तत्पृथिवीम् । होइ । (त्रिः) ।
हाउहाउहाउ । अप्रथयाः । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । एऔहोवादीशाः । तदस्तभ्नाः।
होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । उतोदिवाम् । होइ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । एऔहोवाऽ३॥
हस्पयाऽ२३४५ः ॥

(दी.१३ । प.३९ । मा.५३)१०(ढि । १५१)

(९१-३) ॥ तृतीयं स्वर साम ॥

एहाउ । औहोऽ२ । यज्जायथाऽ३ः । अपूर्विया ॥ होववाऽ२३होइ । मा ।
घवन्वृत्रहत्याया । होववाऽ२३होइ । तात् । पृथिवीमप्राथयाः । होववाऽ२३होइ ।
एऔहोवादीशाः ॥ होववाऽ२३होइ । तात् । अस्तभ्नाउतोदिवाम् । होववाऽ२३होइ ।
एऔहोवाऽ३ ॥ हस्इडापयाऽ२३४५ः ॥

(दी.१७ । प.१८। मा.१७)११(जे । १५२)

(९१-४) ॥ चतुर्थं स्वर साम ॥

याज्जायाज्जा ॥ यथाअपूर्वियाऔऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३हो ।
माघवन्वृत्रहत्यायाऔऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३हो ॥ तात्पृथिवीमप्राथयाऔऽ३हो ।
हाऽ२इया । औऽ३हो ॥ तादस्तभ्नाउतोदिवामौऽ३हो । हाऽ२इया ।
औऽ३होवाहाउवाऽ३ ॥ एऽ३ । पयाऽ२३४५ः ॥

(दी.८। प.१५। मा.११)१२(ण । १५३)

(९१-५) ॥ पञ्चमं स्वर साम ॥

हुवौहोऽ१इ । (त्रिः) । यज्जायाथाः । आपूर्विया ॥ माघावन्वृ । त्राहत्याया ॥
तत्पृथिवीम् । अप्राथायाः ॥ तादस्तम्नाः ॥ उतोदिवाम् ॥ हुवौहोऽ१इ । (द्विः) । हुवौ-
होऽ१२ । उहुवाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ हस् ॥

(दी.७। प.१७। मा.१२)१३(छू । १५४)

(१२-१) ॥ षष्ठं स्वर साम ॥

२र र २ ३ ५ २र १ २ ३
योरयिंवोराऽ३यिन्तमाः ॥ योद्युम्नाऽ२३४इर्द्यू । म्नावत्तमाऽ२३ः । सोमाःसू-
चे शे चौ

५ २र १ २ २ ३ ५ ३२ १
ऽ२३४ताः । साइन्द्रतायेऽ३ ॥ अस्तिस्वाऽ२३४धा ॥ पातेऽ३ । माऽ२३४दाः।
शे चौ शे टी की

५ ५ १
उहुवाऽ६ँ हाउ । वा ॥ अस् ॥ (दी.४। प.११ । मा.८)१४(तै । १५५)
पा प क

(१) ॥ विष्णोस्त्रीणि स्वरीयांसि पञ्चानुगानम् । पञ्चानां वायुरनुष्टुबिन्द्रः ॥

१र र २ १ २ १ २ १ र र २
हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्षँ सुवर्द्दिवंजग । न्मा । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैराय ।
क छु क का

१ र र २ १र ३र २ र
ता । (द्वे-द्विः) । परात्परमैराय । ता । औहोवाहाउ । वा । ए ।
क का च खु च च

१र २ १र २र १र र २ १र २र १र र
यज्ञोदिवोमूर्द्धदेवमादनोघर्मोज्योतिः ॥
रः

(दी.२४ । प.१९। मा.८)१५(धै । १५६)

(२)

१र र २ १ २ १ २ १ र र २
हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्षँ सुवर्द्दिवंजग । न्मा । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैराय ।
क छु क का

१ र र २ १र ३र २ र
ता । (द्वे-द्विः) । परात्परामैराय । ता । औहोवाहाउ । वा । ए ।
क का च ख च च

१ २ १र र २ १र २ १र र२१ र२र र १र र
पृथिव्यन्तरिक्षन्द्यौरापःकनिक्रादात्सिन्धुरापोमरुतोमादयन्तांघर्मोज्योतिः ॥
क

(दी.२५ । प.१९। मा.८)१६(मै । १५७)

(३)

हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्षँ सुवर्द्दिवंजग । न्मा । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैरय ।
ता । (द्वे-त्रिः) । दिवोमूर्द्धानँ समैरयन् । होयेऽ३ । होऽ२३४वा ॥
यशोघर्म्मोज्योतिः। यशःसमैरयन् । होयेऽ३ । होऽ२३४वा । तेजोघर्म्मोज्योतिः ।
तेजःसमैरयन् । होयेऽ३ । होऽ२३४वा ॥ सुवर्घर्म्मोज्योतिः । सुवःसमैरयन् ।
होयेऽ३ । होऽ२३४वा ॥ ज्योतिर्घर्म्मोज्योतिः । ज्योतिःसमैरयन् । होयेऽ३ ।
होऽ२३४५वाऽ६ँ ५६ँ ॥ घर्म्मोघर्म्मोज्योतिः ॥

(दी.३६। प.३५। मा.१६)१६(ङु । १५८)

(९३-१)

हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्षँ सुवर्द्दिवंजग । न्मा । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैरय ।
ता । (द्वे-द्विः) । परात्परमैरय । ता । औहोवाहाउ । वा ॥ ए ।
इडांयच्छहस्कृतिंयच्छ । ए । मानओजोयच्छ । ए । मनोमहिमानंयच्छ । ए ।
यशःस्त्विषिंयच्छ । ए । प्राजांवर्चोयच्छ । ए । पशून्विशंयच्छ । ए । ब्रह्मक्षत्रंयच्छ ।
ए । स्वर्ज्योतिर्यच्छ ॥ (दी.३१ । प.३३ । मा.८)८(गै । १५९)

(९३-२)

हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्ष ँ्सुवर्द्दिवंजग । न्मा । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैराय ।
ता । (द्वे-त्रिः) । यज्जायथाअपूर्वाया ॥ मघवन्वृत्रहत्याया ॥ तत्पृथिवीमप्राथायाः ॥
तदस्तभ्नाउतोदाइवाम् । हाउहोहाइ । (त्रिः) । अन्तरिक्ष ँ्सुवर्द्दिवंजग । न्मा ।
(द्वे-त्रिः) । परात्परमैरय । ता । (द्वे-त्रिः) । परात्परमैरय । ता । औहोवाहाउ ।
वा ॥ ए । तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्म्मरुद्भिर्भुवना-
निचक्रदुः ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.४५। प.४०। मा.२०।)१९(ग्रौ । १६०)

(९३-३) ॥ द्व्यनुगानम् । विष्णुः वायुरनुष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहोवा । (त्रिः) । परात्परमैरय । ता । (द्वे-द्विः) । परात्परमैरय । ता ।
औहोवाहाउ । वा ॥ इन्द्रोधेनुः । (त्रिः) । आपोधेनुः (त्रिः) । भूमिर्धेनुः ।
(त्रिः) । अन्तरिक्षन्धेनु (त्रिः) द्यौर्धेनुः । (त्रिः) परन्धेनु । (त्रिः) ।
व्रातन्धेनु । (त्रिः) । सत्यन्धेनु । (त्रिः) ऋतंधेनु । (त्रिः) । इडाधेनुः । (त्रिः)
स्वर्धेनुः । (त्रिः) । ज्योतिर्धेनुः ॥ (त्रिः) ॥

(दी.७१। प.४७। म.२५)२०(खु । १६१)

(९३-४)

१र र र र २ १ २ १र २र १र २
हाउहोवा । (त्रिः) । परात्परमैरय । ता । (द्वे-त्रिः) । यज्जायथाः । आपूर्विया ।
क का क चो चो

१र २ १ २ ३ ५ १ २ १ र २ १ र २
आपूर्वियाऽ३ । आपूर्वाऽ२३४या ॥ मघावन्वृ । त्राहत्याया । त्राहत्यायाऽ३ ।
चौ वृ का चो चौ

१ २ ३ ५ १ २ १र २१र २ १ २ १ २ ३ ५
त्राहत्याऽ२३४या । तत्पृथिवीम् । अप्राथंयाः । अप्राथयाऽ३ः । आप्राथाऽ२३४याः ॥
वृ कै चो चौ वृ

१ २ र १र २ १र २ १ २ ३ ५. १र र
तदस्तभ्नाः । उतोदिवाम् । उतोदिवाऽ३म् । ऊतोदाऽ२३४इवाम् । हाउहोवा ।
का चो चौ वृ क

र र २ १ र र २ १र ३र २
(त्रिः) । परात्परमैरय । ता । (द्वे-द्विः) । परांत्परमैरय । त । औहोवाहाउ ।
का क का च खु

र १र र२१ र २ र र१ र २र १र २ र १ २ १ २र
वा ॥ ए । तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेवायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदुः ॥
च च लै

(दी.४७। प.३८। मा.१८)२१(जै । १६२)

(९३-५) ॥ चतुरनुगानम् । विष्णुः । वायुरनुष्टुबिन्द्रः ॥

— १ २ १ २ २ र
हाऽ२ऊवाक् । (त्रिः) । होवा । (द्विः) । होवाऽ३ । हाउवा । ए ।
कै का कि च च

र १ २ १र र २र १ २ १र २ १ र २ १ २ १ ३ । । ।
तोकंप्राजाङ्गर्भोनोयमदध्मह्याचपराचपथिभिश्चरन्ताऽ२३४५ः ॥
श्चा

(दी.७। प.९। मा.८)२२(झैं । १६३)

(१)

हाऽ२ऊवाक् । । (त्रिः) । होवा । (त्रिः) । आय ँ्सशिङ्तेऽ३ । होइ ।

यस्माद्यावापृथिवीभुवनानिचक्रादुः । होइ । आय ँ्सशिङ्तेऽ३ । होइ ।

यस्मादापओषधयोभुवनानिचक्रादुः । होइ ॥ आय ँ्सशिङ्तेऽ३ । होइ ।

यस्मासमुद्रियाभुवनानिचक्रादुः । होइ । आय ँ्सशिङ्तेऽ३ । होइ ।

यस्माद्विश्वाभूताभुवनानिचक्रादुः । होइ । हाऽ२ऊवाक् । (त्रिः) होवा । (द्विः)।

होवाऽ३ । हाउवा ॥ ए । आपः । आपः । आपाऽ२३४५ः ॥

(दी.१९। प.३३। मा.२९)२३(दो । १६४)

(२)

हाऽ२ऊवाक् । (त्रिः) । होवा । (त्रिः) । येभिर्विया । श्वामैरायाऽ२ः ॥

तेभिर्विया । श्नुहीमादाऽ२म् ॥ येभिर्भूताम् । साहस्साहाऽ२ः ॥ तेंभिस्तेजआपः ।

आपाऽ२ । येभिर्व्यन्तरिक्षमैरयाऽ३ः । हाउवा ॥ ए । आपः । आपः ।

आपाऽ२३४५ः ॥ (दी.१३ । प.२० । मा.१७)२४(णे । १६५)

(१)

हाऽ२ऊवाक् । (त्रिः) । होवा । (त्रिः) । यज्जायथाअपूहोऽ२ । र्वायाऽ२ । मघवन्वृत्रहाहोऽ२ । त्यायाऽ२ ॥ तत्पृथिवीमप्राहोऽ२ । थायाऽ२ः ॥ तदस्तभ्नाउतोहोऽ२इ । दाइवाऽ२म् । हाऽ२ऊवाक् । (त्रिः) । होवा । (द्विः) । होवाऽ३ । हाउवा ॥ ए । तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वती-मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदूऽ२३४५ः॥

(दी. १६ । प.२३ । मा. २०)२५(गौ । १६६)

॥ सप्तदश सप्तमः खण्डः ॥७॥

इति आरण्यकगाने तृतीयः प्रपाठकः ॥

॥ इति द्वन्द्व पर्व समाप्तम् ॥

(द्वन्द्वपर्वणि ७७ सामानि)

—*—

अथ (वाचो)-व्रतपर्व

(१) ॥ वाचो व्रते द्वे । वाग्यजुर्वाक् वाक् त्रिष्टुप् वाक् ॥

ओम् ॥ हुवेवाचाम् ॥ वाचंवाच हूवेऽ२ । वाक्श्रृणोतुश्रृणोतूवाऽ२क् ।
वाक्समैतुसमैतूवाऽ२क् ॥ वाग्रमाताम् । रमाताम् । रमाऽ२३ । तुवाऽ३४औहोवा ॥
ईहा ॥ (त्रिः) ॥ (दी.२१ । प.११ । मा.६)१(कू । १६७)

(२)

हूवाइवाचाम् । वाचँहुवाइ ॥ वाक्श्रृणोतूऽ२३ । शाऽ३र्णोतूवाक् । वाक्समैतूऽ२३ ।
साऽ३मैतूवाक् ॥ वाग्रमताऽ२३म् ॥ रमा । तूवाऽ३४औहोवा ॥ माऽ२३४५इ ॥
(त्रिः) ॥ (दी. १३ । प.१२ । मा.१०)२(ठौ । १६८)

(९४-१) ॥ शशस्य कर्पूशयस्य व्रतम् कर्पूसाम । शशो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा ॥

आतूनाऽ२३इन्द्रवृत्रहन्हाउ ॥ आस्माकामाहाउ । धामागाहाहाउ ॥ माहान्माहाहाउ ॥
भिरूऽ३ । ताऽ२३४इभाइ । उहुवाऽ६ँहाउ । वा ॥ अस् फट् मृस् हस् वाक् ।
ऊऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१०। मा.१३)३(र्ङि । १६९)

(१) ॥ सत्रस्यर्द्धि साम ॥ प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा । अगन्मज्योतिः । (द्विः) अगन्मज्योतिः ॥ अमृताअभूम ।
(द्विः) । अमृताअभूमा । तरिक्षंपृथिव्याअध्यारुहामा । (द्विः) । तरिक्षंपृथिव्या-

अध्यारुहाम । दिवमन्तरिक्षादध्यारुहाम । (त्रिः) अविदामदेवान् । (त्रिः) ।

समुदेवैरगन्महि । (त्रिः) । औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा ॥ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी.६० । प.२१ । मा.१७)४(पे । १७०)

(९५-१) ॥ प्रजापतेः प्रतिष्ठा प्रजापतिः गायत्र्यग्निः ॥

इममूषू ॥ त्वमस्मा । काम् । सानिंगायत्रंनव्याँ सम् ॥ आग्नेदेवाइ ॥ षुप्राऽ२-

वोऽ२३४औहोवा ॥ चाऽ२३४५ः ॥ (दी.८ । प.७। मा.५)५(तु । १७१)

(१) ॥ व्याहृतिः । प्रजापतिर्यजुरग्निस्त्रिष्टुबग्निः ॥

हाउहाउहाउ । एवाहियेवाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । भूतायाऽ२३४५ ॥ भी ॥१॥

हाउहाउहाउ । एवाहियेवाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । रूपायाऽ२३४५ ॥ भी ।२॥

हाउहाउहाउ । एवाहियेवाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । आयुषेऽ२३४५ ॥ र्घा ॥ ३॥

हाउहाउहाउ । एवाहियेवाऽ२३४औहोवा ॥ एऽ३ । ज्योतिषेऽ२३४५ ॥ धी ॥४॥

(दी. ३८ । प.१६। मा.१६)१६(दू । १७२)

(९६-१) ॥ परमेष्ठिनः प्राजापत्यस्य व्रतम् । परमेष्ठ्यनुष्टुप् परमेष्ठी ॥

हाउहाउहाउ । आनोऽ२ब्रुवाइ । (द्विः) । आनोऽ२ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ।

रक्षतनोरक्षिताराऽ२३४५ः । हाउहाउहाउ । आनोऽ२ब्रुवाइ । (द्विः) । आनोऽ२-

ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा । गोपायतगोपायितांराऽ२३४५ः । हाउहाउहाउ ।

आनोऽ२ब्रुवाइ । (द्विः) । आनोऽ२ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा । मायिवार्च्चः ।
अथोयाऽ१शाऽ२ः ॥ आथोयज्ञ । स्ययात्पाऽ१याऽ२ः ॥ परमेष्ठी । प्रजापाऽ१-
तीऽ२ः ॥ दिविद्यामि । वदूँहाऽ१तूऽ२३ । हाउहाउहाउ । आनोऽ२ब्रुवाइ ।(द्विः)।
आनोऽ२ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा । रक्षतनोरक्षितारा‌ऽ२३४५ः । हाउहाउहाउ ।
आनोऽ२ब्रुवाइ । (द्विः) । आनोऽ२ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ।
गोपायतगोपायितारा‌ऽ२३४५ः । हाउहाउहाउ । आनोऽ२ब्रुवाइ । (द्विः)
आनोऽ२ब्रुवाऽ२ । याऽ२३४औहोवा ॥ ए । रक्षतनोरक्षितारोगोपायतगोपा-
यितारः । (द्वे-द्विः) ए । रक्षतनोरक्षितारोगोपायतगोपायितारा‌ऽ२३४५ः ॥

(दी. ७५ । प. ४८। मा. ४७)७(वे । १७३)

(१) ॥ परमेष्ठिनः प्राजापत्यस्य व्रतम् (कृष्ण व्रतम्) । अंगिरास्त्रिष्टुप्सोमः ॥

सोमासोऽ३मा । (त्रिः) । यात्रचाक्षुः । तदाभाऽ१राऽ२ ॥ यात्रश्रोत्रम् ।तदाभाऽ१-
राऽ२ ॥ यात्रआयुः । तदाभाऽ१राऽ२ ॥ यात्ररूपम् । तदाभाऽ१राऽ२ ॥
यत्रवार्च्चः । तदाभाऽ१राऽ२ ॥ यत्रतेजः । तदाभाऽ१राऽ२ ॥ यत्रज्योतिः ।
तदाभाऽ१राऽ२ ॥ सोमासोऽ३मा । (द्विः) । सोमाराऽ३जाऽ३न् । होऽ२हाऽ२३४-
औहोवा । इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.१३। प.२२। मा.११)८(ट । १७४)

(९७-१) ॥ सोमव्रतम् । सोमस्त्रिष्टुप्सोमः ॥

१र — १र २ १ २ ३ ४र ५ २ १
ओवाऽ२ । (त्रिः) । सन्तेपया । सीऽ३सामु । यन्तुवाजाः ॥ संवृष्णिया ।
का र रा ची र
२ १ २र ३ ४र ५ २र १र २ १ २र ३ ४र ५ २ १
नीऽ३आभि । मातिषाहाः ॥ आप्यायमा । नोऽ३अमृ । तायसोमा ॥ दिविश्रवा ।
रा ची र रा ची र
२ १ २र ३ ४ ५ १र — १ ३ ५र र
सीऽ३उत्त । मानिधिष्वा । ओवाऽ२ । (द्विः)। ओऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा ॥
रा ची का का टु प
१
प्न्य । (त्रिर्ग्रसेत्) ॥३॥ (दी.१३ । प.२३ । मा.५)९(गु । १७५)
क

(९८-१) ॥ सोमव्रतम् । सोमो विराद् सोमः ॥

२र र र र २ २र
हाउहाउहाउ । हौवाऽ३ । (त्रिः)। हाह । हौवाऽ३ । (द्वे-त्रिः) । होवाऽ३ ।
च चा ट चा चा
४ २ ।।। ४ २ ५र र
(त्रिः) । होऽ३वाऽ३४५ । (द्विः)। होऽ३वाऽ३४ । औहोवा ।
थू हि प
१ र र २र र १ २र १ २ १र २ १ र र २र १ २
त्वमिमाओषधीःसोमविश्वाः ॥ त्वमापोअजनयस्त्वंगाः ॥ त्वमातनोरुर्वन्तरिक्षम् ॥
घि गो घि
१ र २र१ र २ २र र र र २
त्वंज्योतिषावितमोववर्थ । हाउहाउहाउ । हौवाऽ३ । (३) । हाह । हौवाऽ३ ।
घि च चा ट चा
२र ४ २ ।।। ४ २
(द्वे-त्रिः) । होवाऽ३ । (त्रिः)। होऽ३वाऽ३४५ । (द्विः) । होऽ३वाऽ३४ ।
चा थू हि
५र र २र १ २ १ २ १र २ १र २ १ र २र र
आहौवा ॥ ए । जनदिवमन्तरिक्षंपृथिवींविश्वभोजसंपुरुरूपाअजीजनः ।
प च लु
१ ।।।
इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.४०। प.४१ । मा.१४)२०(पी । १७६)
कु

॥ दश प्रथमः खण्डः ॥१॥

(९९-१) ॥ भारद्वाजस्य व्रतम् । भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । वाग्दादद । ददाऽ२या । इन्द्रोराजा । जागतः । चर्षणीनाम् ॥
आधिक्षमा । विश्वारू । पंयदस्या ॥ तातोददा । तीऽ३दासु । षाइवसूनी ॥
चोदद्राधाः । उपस्तु । तंचिदर्वाक् । हाउहाउहाउ । वाग्दादद । ददाऽ२याऽ३ ।
हाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी. १५ । प.२०। मा.१२)११(म्रा । १७७)

(१००-१) ॥ भरद्वाजिनां व्रतम् । भरद्वाजोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ ॥

हाउहाउहाउ । वाजऽ२म् ।(द्विः)। वाजम् । एऽ२ । वाजाऽ२म् ।(त्रिः)। वाजम् ।
एऽ२ । वाजाऽ२म् ।(त्रिः)। वाजम् । एऽ२ । वाजाऽ२म् । वाजमोऽ२इ ।(द्वे-त्रिः)।
वाजम् ।।विवीऽ२विवि । (त्रिः)। विविहोऽ२इविवि । (त्रिः)। व्यश्नवाइवि । (त्रिः)।
आभीनवन्तआऽ२द्रूहाऽ२ः । (त्रिः) । द्रुहोद्रुहः । (त्रिः)। प्रियमिन्द्रस्यकाऽ२-
मायाऽ२म् ।मियंमियम् ।(त्रिः) । वत्सन्नपूर्वआऽ२यूनीऽ२ । युनीयुनि । (त्रिः) ।
जातँ रिहन्तिमाऽ२ताराऽ२ः । तारोतरः । (द्विः)। हाउहाउहाउ । वाजाऽ२म्।
(द्विः) । वाजम् । एऽ२ । वाजाऽ२म् (त्रिः)। वाजम् । एऽ२ । वाजाऽ२म् ।
(त्रिः) । वाजम् । एऽ२ । वाजाऽ२म् । वाजमोऽ२इ । (द्वे-त्रिः) । वाजम् ।
विवीऽ२विवि । (त्रिः) । विविहोऽ२इविवि ।(त्रिः) । व्याश्नवाइवि ।
(द्विः)। व्याऽ२३श्नवाउ । वा । ए । सुधामधाम । (द्वे-द्विः) । ए ।
सुधामधामाऽ२३४५ ॥ (दी ६३.प.८५ । मा.६८)१२(कै । १७८)

(१०१-१) ॥ यम व्रते द्वे, (यम व्रतम्) । यमो गायत्र्यग्निः ॥

मनोहाउ । वयोहाउ । वर्च्चोहाउ । अग्निम् । ईडाऽ२इ । पुरोहाऽ२३४इताम् ॥

इहाहाउ । इडाहाउ । आयुर्हाउ । यज्ञ । स्यदाऽ२इ । वमृत्वीऽ२३४जाम् ॥

स्वर्हाउ । ज्योतिर्हाउ । ऋतँ्हाउ । होता । रँ्राऽ२३ ॥ त्नाधाऽ३ताऽ५-

माऽ६ँ्५६ँ्म् ॥ एऽ३ । माहाऽ२३४५ः ॥

(दी.१८ । प. २० । मा. १७)१३(णे । १७९)

(१०२-१) ॥ अङ्गिरसां व्रतम् । अङ्गिरसस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । हाऽ३ । ओऽ२३४वाक् । (द्वे-त्रिः) । ओम् । (त्रिः) । ओम् ।

(त्रिः) । हाऽ३ । ओऽ२३४वाक् । (द्वे-त्रिः) । एआयुः । (त्रिः) आयुः । (त्रिः) ।

इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ ॥ यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः ॥ शूरोनृषाता-

श्रवसश्चकाऽ२माइ ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः । हाउहाउहाउ । हाऽ३ ।

ओऽ२३४वाक् । (द्वे-त्रिः) । ओम् । (त्रिः)। ओम् । (त्रिः) । हाऽ३ । ओऽ२३४वाक् ।

(द्वे-त्रिः)। एआयुः । (त्रिः) । आयुः । (द्विः) । आयूऽ३४ । औहोवा ॥ ए ।

आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्च्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥ (दी. ४७। प.५७ । मा.५३)१४(छि । १८०)

(१०३-१) ॥ अश्विनो व्रते द्वे । अश्विनौ बृहत्यश्विनौ ॥

होइहाऽ३। इहोइहाऽ३।(द्वे-त्रिः)। इमाउवांदिविष्टयाओहाउ ॥ उस्राहवन्ते-

अश्विनाओहाउ ॥ अयंवामह्वेवसेशचीवसूओहाउ ॥ विशंविशहिंगच्छथाओहाउ ।

होइहाऽ३ । इहोइहाऽ३ । (द्वे-द्विः) । होइहाऽ३ । इहोइहाऽ३४ । औहोवा ॥

ईऽ५हीहीहीहीहि ॥ (दी.२८। प.१८। मा.२२)१५(डा । १८१)

(१०३-२)

होइहा । इहोइहा । (द्वे-त्रिः) । इमाउवांदिविष्टयाहोहाउ ॥ उस्राहवन्तेअश्विना-

होहाउ ॥ अयंवामह्वेवसेशचीवसूहोहाउ ॥ विशंविशँ्हिगच्छथाहोहाउ । होइहा ।

इहोइहा । (द्वे-द्विः) । होइहा । इहोइहाऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२ । (त्रिः)॥

(दी.१४। प.२० । मा.१८)१६(नै । १८२)

(१०४-१) ॥ गवां व्रते द्वे । गावस्त्रिष्टुब्गावः ॥

हाउहाउहाउ । गावोहाउ ।(त्रिः)। वृषभपत्नीर्हाउ ।(त्रिः)। वैराजपत्नीर्हाउ ।(त्रिः)।

विश्वरूपाहाउ । (त्रिः) । अस्मासुरमध्व ँ्हाउ । (त्रिः) तेमन्वतप्रथमन्ना-

मगोऽ२नाम् ॥ त्रिःसप्तपरमन्नामजाऽ२नान् ॥ ताजानतीरभ्यनूषताऽ२क्षाः ॥

आविर्भुवन्नरुणीर्यशसागाऽ२वाः । हाउहाउहाउ । गावोहाउ । (त्रिः) ।

वृषभपत्नीर्हाउ । (त्रिः)। वैराजपत्नीर्हाउ । (त्रिः) । विश्वरूपाहाउ । (त्रिः) ।

अस्मासुरमध्वँ्हाउ । (द्विः)। अस्मासुरमध्वाऽ३ँ्हाउ । वा ॥ ए । गावोवृषभपत्नी-

वैराजपत्नीर्विश्वरूपाअस्मासुरमध्वम् ।(द्वे-द्विः)। ए । गावोवृषभपत्नीर्वैराजपत्नी-

र्विश्वरूपाअस्मासुरमध्वाऽ२३४५म् ॥

(दी.१२९ । प.४३ । मा.४६)१७(दू । १८३)

(१०५-१)

हाउहाउहाउवा । अग्निमीडेपुरोहितम् । देवेषुनिधिमाँ अहम् ॥ हाउहाउहाउवा । यज्ञस्यदेवमृत्विजम् । देवेषुनिधिमाँ अहम् ॥ हाउहाउहाउवा । होतारँ रत्नधातमम् । देवेषुनिधिमाँ अहम् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ ए । देवेषुनिधिमाँ अहम् ॥(द्वे-त्रिः)॥

(दी.२८। प.१६ । मा.२७)१८(टे । १८४)

(१०६-१) ॥ कश्यपस्य व्रते द्वे । कश्यपोऽनुष्टुप्सोमः ॥

हाउहाउहाउ । प्सुवन्तरा । (त्रिः)। कोज्योतिः । अर्कोज्योतिः । अर्कोज्योतिः । सुवर्द्धेनूः । (त्रिः)। कश्यपस्यसुऽ३वार्वाऽ१इदाऽ२ः ॥ यावाहुस्सयूऽ३-जावाऽ१इतीऽ२ ॥ ययोर्विश्वमाऽ३पाइव्राऽ१ताऽ२म् ॥ यज्ञन्धीरानिऽ३-चाआऽ१याऽ२३ । हाउहाउहाउ । प्सुवन्तरा । (त्रिः)। कोज्योतिः । अर्कोज्योतिः । अर्कोज्योतिः । सुवर्द्धेनूः ।(द्विः)। सुवर्द्धेनुः । औहोवाहाउ । वाऽ३ ॥ इट्-इडाऽ२३४५ ॥

(दी. ३७। प.२७। मा.२६)१९(छू । १८५)

(१०६-२)

२र र र — १— १ २
हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः)। कह्वाऽ२उ । (त्रिः)। कश्यपस्यसुवाऽ२३र्विदाः ॥
च का चौ जा

र र १ २ — र १ २ र र
यावाहुस्स्युऽ३जावाऽ१इतीऽ२ ॥ ययोर्विश्वमपाऽ२३इव्रताम् ॥ यज्ञन्धीरानिऽ३-
पु जा

१ २ २र र र — २ १—
चाआऽ१याऽ२३ । हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः)। कह्वाऽ२उ । (द्विः) ।
पू च का चौ

१ २ । । ।
कह्वाऽ२३उ । ह्वाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.११। प.२०।मा.१८)२०(डै।१८६)
चौ घा दू

दश द्वितीयः खण्डः ॥२॥

॥ इति आरण्यकगाने चतुर्थस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(१०७-१) ॥ अङ्गिरसां व्रते द्वे । अङ्गिरसस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

२र र र १ २ २र र र र र र १ २
हाउहाउहाउ । इन्द्राऽ३१२३म् । हाउहाउहाउ । नरोनेमधिताहावान्ताइ ।
च ख घ चो

१ २ १ २ २ ३ ४ ५ १ २र २र १ २ १र २ र
हावान्ताइ । हावान्ताऽ३इ । ओइ । हावन्ताइ । वन्ता । औहोवा । एहिया ॥
चो चौ च टा का चो का

र र र १ २ २र र र र र १ २ १ २
हाउहाउहाउ । यत्पाऽ३१२३ । हाउहाउहाउ । र्यायुनजतेधियास्ताः । धियास्ताः ।
च ख च चो चो

१ २ २ ३ ४ ५ १ २र र १ २ १र २ र र र र
धियास्ताऽ३ः । ओइ । धियस्ताः । यस्ता । औहोवा । एहिया ॥ हाउहाउहाउ ।
चौ च टा का चो का च

१र २ २र र र र र १ २ १ २ १ २
शूरोऽ३१२३ । हाउहाउहाउ । नृषाताश्रवसश्चकामाइ । चाकामाइ । चाकामाऽ३इ ।
ख घ चो चो चौ

२ ३ ४र ५ १र २र र १ २ १र २ र र र र १र २
ओइ । चाकामाइ । कामा । ओहोवा । एहिया ॥ हाउहाउहाउ । आगोऽ३१२३ ।
च टा का चो का च ख

२र र र र र र १ २ १ २ १ २ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ । मतिव्रजेभजातुवान्नाः । तुवान्नाः । तुवान्नाऽ३ः । ओइ । तुवन्नाः ।
घ चो चो चौ च टा

१ २र र १ २ १र २ र । । ।
वन्ना । औहोवा । एहिया । हाउहाउहाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
का चो का घ घा दू

(दी. ५३ । प. ४७। मा.४८)१(त्रै । १८७)

(१०८-१)

२र र र १ २ १ २ १ २
हाउहाउहाउ । हाहाउ । (त्रिः) । इहाहाउ । (त्रिः) । इयाहाउ । (द्विः) ।
च का का का

१ न २ १ र२र र र१ २र र१र
इयाऽ३हाउ । वा । अभित्वाशूरनोनुमोहस् ॥ अदुग्धाइवधेनवोहस् ।
खु च रो कै

र र २ १ २ १ र र २ १ र २र १ २
ईशानमस्यजगतःस्वर्दृश ँ हस् । ईशानमिन्द्रतस्थुषोहस् ॥ सहस्वान्त्सहस-
कै कै

१ २ १ २ १ २ १ र २ १र २१र २ १ २र र र १ २
स्पातिरदिद्यवद्धस् ॥ स्वर्जिद्वाजसातमोदिद्यवद्धस् । हाउहाउहाउ । हाहाउ ।
ली रं च का

१ २ १ २ १ न २ १ र
(त्रिः) । इहाहाउ । (त्रिः) इयाहाउ । (द्विः) । इयाऽ३हाउ । वा ॥ इडाहस्-
का का खु च

र
हस्इडा ॥ (त्रिः) ॥ (दी. २८ । प.३१ । मा.३७)२(टे । १८८)
क

(१०९-१) ॥ अपां व्रते द्वे । आपो विराडिन्द्र आपस्त्रिष्टुबापः ॥

२र र र १र २ १ र २ र१र २
हाउहाउहाउ । ऐरायत् । (त्रिः)। आपःसमैरायत् (त्रिः)। भूतमैरायत् ।(त्रिः)।
च का चो चो

र र र र र र र र र र र र
अपाङ्गर्भोग्निरिडा । पांगर्भोग्निरिडा । पांगर्भोग्निरिडा । पृथिव्यागर्भोग्निरिडा ।
च च च च

१ र २ १ २ र १ र २ १ २
(त्रिः) । समन्यायन्त्युपयन्तियाऽ२३न्याः ॥ समानमूर्वन्नद्यस्पृणाऽ२३न्ती ॥
धै जै

१र र र २ १ २ १र र २ १ २
तमूशुचि ँशुचयोदीदिवाऽ२३ ँसाम् ॥ अपान्नपातमुपयन्तियाऽ२३पाऽ३ः ।
धै जो

२र र र १र २ १ र २ र१र २
हाउहाउहाउ । ऐरायत् । (त्रिः) आपःसमैरायत् । (त्रिः) । भूतमैरायत् (त्रिः) ।
च का चो चो

र र र र र र र र र र
अपांगर्भोग्निरिडा । पांगर्भोग्निरिडा । (द्विः) । पृथिव्यागर्भोग्निरिडा । (द्विः) ।
च च च

र र र र २ र १ २ १ २र १ २ १
पृथिव्यागर्भोग्निरिडाऽ३ । हाउवा ॥ ए । अग्निःशिशुक्वः । ए । शुक्रःशिशुक्वः ।
चा च च रो च रो

२र १र २ १ २ १ २र १र २ १र र २र र १र २ १ २र १ २र १
ए । तेजःशक्रस्यशक्वम् । ए । तेजःसप्राःसमीचीः । ए । तेजउषोनजारः ।
च गो च धि च क्रः

२र १ र ३ । । ।
ए । सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥ (दी. ८८ । प.४९ । मा.३५)३(ढ । १८९)
च गा

(१०९-२)

हाउहाउहाउ । ऐरायन् । (त्रिः) । समैरयन् । (त्रिः)। समास्वरन् । (त्रिः) । समन्यायन्त्युपयन्तियाऽ२३न्याः ॥ समानमूर्वन्नद्यस्पृणाऽ२३न्ती ॥ तमूशुचिँ-शुचयोदीदिवाऽ२३ँसाम् ॥ अपान्नपातमुपयन्तियाऽ२३पाऽ३ः । हाउहाउहाउ । ऐरायन् । (त्रिः) । समैरयन् । (त्रिः) । समास्वरन् । (द्विः)। समस्वराऽ३न् । हाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी. २६ । पा.२६ । मा.२८)४(कै । १९०)

(११०-१) ॥ अहोरात्रयोर्व्रते द्वे, अहर्गायत्रीसूर्यः ॥

हाउहाउहाउवा । प्रागन्यदनुवर्ततेरजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा । हाउहाउहाउ । उदुत्यञ्जाताऽ३वाइदाऽ१साऽ२३म् ॥ हाउहाउहाउवा । प्रागन्यदनुवर्तते-रजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा । हाउहाउहाउ । देवंवहन्तीऽ३काइताऽ१वाऽ२३ः ॥ हाउहाउहाउवा । प्रागन्यदनुवर्ततेरजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा । हाउहाउहाउ । दृशेविश्वायाऽ३सूराऽ१याऽ२३म् ॥ हाउहाउहाउवा ॥ ए । अरूरुचद्धर्मोअरूरुचदुषसांदिविसूर्योविभातीऽ२३४५ ॥

(दी.४२।प.१५।मा.२७)५(जे। १९१)

(१११-१) ॥ रात्रेर्व्रतम् । रात्र्यनुष्टुब्रात्रिः ॥

होऽ२इ । (त्रिः)। आप्रागाद्भद्रायुवतिः ॥ होऽ२इ । (त्रिः)। अह्नःकेतून्त्समीर्त्सति ॥

होऽ२इ । (त्रिः)। अभूद्भद्रानिवेशनी ॥ होऽ२इ । (त्रिः) । विश्वास्यजगतोरात्री ।

होऽ२इ । (द्विः) । होऽ२ । वाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.१४ । प. २२ । मा.१६)६(थ्रू । १९२)

(११२-१) ॥ विष्णोर्व्रतम् । विष्णुर्जगती वैश्वानरः ॥

हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (द्विः) । ऊऽ२ । वाऽ३ । हाउवाऽ३ । हस् हा हस् ।

अर्चिःशोचिस्तपोहरः । प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमाऽ२३हाः ॥ प्रनोवचोविदथा-

जातावेदाऽ२३साइ ॥ वैश्वानरायमतिर्नव्यासेशूऽ२३चीः ॥ सोमइवपवतेचारु-

रग्नाऽ२३याऽ३इ । हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (द्विः) । ऊऽ२ । वाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥

ईऽ२३४५ ॥ (दी. २२ । प.१९। मा. १७)७(झे । १९३)

(११३-१) ॥ विश्वेषां देवानां व्रतम् । विश्वेदेवाद्यावापृथिव्यौ (इन्द्रः) जगती विश्वेदेवाः ॥

हाउहाउहाउ । आइही । (द्विः)। आइहीऽ२ । (त्रिः)। आइहिहाऽ२इ । (द्विः) ।

आइहिहाइ । विश्वेदेवाममश्रृण्वन्तुयाऽ२३ज्ञाम् ॥ उभेरोदसीअपान्नपाच्चामाऽ२३न्मा ॥

मावोवचाँ सिपरिचक्ष्याणिवोऽ२३चाऽ३म् ॥ हाउहाउहाउ । आइही । (त्रिः) ।

आइहीऽ२। (त्रिः) । आइहिहाऽ२इ । (द्विः) । आइहिहाइ ।

सुम्नेष्विद्वोअन्तमामदाऽ२इमाउवाऽ३॥ईऽ२३४५॥(दी. २१ । प. २५ । मा.३६)८(डू । १९४)

(११४-१) ॥ वसिष्ठ व्रते द्वे ॥ द्वयोर्वसिष्ठास्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः)। षि । (त्रिः)। इयाहाउ । (त्रिः) । उदुब्रह्मा । णीऽ३ऐर । तश्रवस्या ॥ इन्द्रँ्समा । येंऽ३माहा । यावासिष्ठा ॥ आयोविश्वा। नीऽ३श्रावा । सातताना ॥ उपश्रोता । माईवा । तोवचाँ्सी । हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः) । षि । (त्रिः) । इयाहाउ । (द्विः)। इयाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी. १६। प.३४। मा.१४)९(घ्री। १९५)

(११४-२)

हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः) । षि । (त्रिः) । इयो । (त्रिः) । इयोवा । (त्रिः)। इयोवाहाइ । (त्रिः)। उदुऽ२ । (द्विः) । उदु । उदोवा । उदोवाहाइ । (त्रिः)। ब्रह्मा । णीऽ३ऐरा । तश्रवस्या । स्या । स्या। स्योवा । (त्रिः)। स्योवाहाइ । (त्रिः) । इन्द्राऽ२म् । (द्विः) । इन्द्रम् । इन्द्रोवा। (त्रिः)। इन्द्रोवाहाइ । (त्रिः) । समा । येंऽ३माहा । यावसिष्ठा । ष्ठा । ष्ठा । ष्ठोवा । (त्रिः)। ष्ठोवाहाइ । (त्रिः) ॥ आयोऽ२ । (द्विः) । आयः। आयोवा । (त्रिः) । आयोवाहाइ । (त्रिः)। विश्वा । नीऽ३श्रावा । सातताना । ना । ना । नोवा । (त्रिः)। नोवाहाइ । (त्रिः) ॥ उपाऽ२ । (द्विः) । उप । उपोवा । (त्रिः)। उपोवाहाइ । (त्रिः) । श्रोता । माईव । तोवचाँ्सी । सी । सी । सोवा ।

(त्रिः)। सोवाहाइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। ऊ॒ऽ२। (त्रिः)। षि। (त्रिः)।
इयो। (त्रिः)। इयोवा। (त्रिः)। इयोवाहाइ। (द्विः)। इयोवाऽ३हाउ।
वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी. १५६। प. ११४। मा. ४२)१०(घ्रा। १९६)

॥ दश तृतीयः खण्डः ॥३॥

(११५-१) ॥ इन्द्रस्य सञ्जयम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ। विश्वाधनानिसंजित्यंवृत्रहाभूर्यासुतिः। होइ। (द्वे-त्रिः)।
उरुंघोषंचक्रेलोकम्। होइ। (द्वे-त्रिः)। वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः। होइ।
(द्वे-त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३माधि। ताहावन्ताइ ॥ यत्पारियाः। युनज।
ताइधियस्ताः ॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ ॥ आगोमताइ। व्राजेभ।
जातुवन्नाः। हाउहाउहाउ। विश्वाधनानिसंजित्यवृत्रहाभूर्यासुतिः। होइ।
(द्वे-त्रिः)। उरुंघोषंचक्रेलोकम्। होइ। (द्वे-त्रिः)। वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः।
होइ।(द्वे-द्विः) वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः। होऽ२। वाऽ२३४औहोवा ॥ ए।
वृत्रंजघन्वाँ अपतद्ववारयत्तमः। (द्वे-द्विः)। ए। वृत्रंजघन्वाँ अपतद्ववा-
रयत्तमाऽ२३४५ः। (दी.११०। प. ५७। मा.५५)११(फु। १९७)

(११६-१) ॥ यशस्साम। अगस्त्ययशः ज्योतिष्मतीजगतीद्यावापृथिव्यौ ॥

हाउहाउहाउवा। यशोमाद्यावापृथिवी ॥ हाउहाउहाउवा। यशोमेन्द्रबृहस्पती ॥
हाउहाउहाउवा। यशोभगस्यविन्दतु ॥ हाउहाउहाउवा। यशोमाप्रतिमुच्यताम् ॥

हाउहाउहाउवा । यशःस्वियस्स्यास्सँ सदः ।। हाउहाउहाउवा ।आहंप्रवदितास्याम् ।
हाउहाउहाउवा ।। अश्वमिष्टयेऽ३हस् ।। (दी.१५।प.१४। मा.२५)१२(भु । १९८)

(११७-१) ।। प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशत् सम्मितम् । प्रजापतिर्विराडिन्द्रः ।।

एऽ३१ । (चतुः)। प्रावोमहाइ । महेवृधाइभराऽ२३४ध्वाम् । क्षौ । (चतुः)।
एऽ३१ । (चतुः) प्राचेतसाइ । प्रसुमताइङ्कृणूऽ२३४ध्वाम् । क्षौ । (चतुः)।
एऽ३१ । (चतुः)। विशःपूर्वाइः । प्रचरचर्षणाऽ२३४इप्राः । क्षौ । (चतुः) ।
एऽ३१ । (द्विः)। एऽ३१२ । आऽ२३४ । औहोवा ।। ए । व्रतमेसुवरेशकुनः ।।

(दी.९। प.३७। मा.११)१३(थ । १९९)

(११८-१) ।। प्रजापतेश्चतुस्त्रिंशत् सम्मितम् । प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।।

एऽ२ । (पंचकृत्वः)। योवा । (पंच)। योवाहाइ । (पंच)। इन्द्रन्नरो । नेऽ३मधि ।
ताहवन्ताइ । एऽ२ । (पंच)। योवा । (पंच)। योवाहाइ । (चतुः)। योवाऽ३हाउ ।
वा। क्षौ । (त्रिः)। एऽ२ । (पंच)। योवा । (पंच)। योवाहाइ । (पंच)।
यत्पारियाः । युनज । ताइधियस्ताः । एऽ२ । (पंच)। योवा । (पंच)। योवाहाइ ।
(चतुः)। योवाऽ३हाउ । वा । क्षौ । (त्रिः) । एऽ२ । (पंच)। योवा । (पंच)।
योवाहाइ । (पंच)। शूरोनृषा । ताऽ३श्रव । सश्चाकामाइ । एऽ२ । (पंच) ।
योवा । (पंच)। योवाहाइ । (चतुः)। योवाऽ३हाउ । वा । क्षौ । (त्रिः)। एऽ२ ।

१र र र र२र र १र २ १र २र ३ ४ ५
(पंच)। योवा । (पंच)। योवाहाइ । (पंच)। आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः ।
क का र र ची
१ — १र र र र २र १र न २ २र
एऽ२ । (पंच)। योवा । (पंच)। योवाहाइ । (चतुः)। योवाऽ३हाउ । वा ॥ ए ।
का क का खु च च
१र २र १
व्रतमेसुवरेशकुनः ॥ (दी.२०४। प. १४७। मा. ४८)१४(थै । २००)
रो

(११९-१) ॥ जमदग्नेर्व्रतम् । जमदग्निर्बृहतीन्द्रः ॥

२र र र १ २ १ २ १
हाउहाउहाउ । हाहाउ । (त्रिः)। हाहाहाउ । (त्रिः)। कपाऽ२३उ । (त्रिः)।
च का का कि
२ ‿ १ २ — १ र र २ १
हाऽ३ओऽ२३ । (द्विः)। हाऽ३१उवाऽ२ । आमित्वाशूरनोऽ३ । आउ । वाऽ२३ ।
छौ छो चौ क कि
५ २र र १र २ १ २र १ २ १र २ १ २
नूऽ२३४माः । ईडा । (त्रिः) । ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिश-
टू च
१ र २र १र र २ ५ २र र
ऋषिन्देवान्वर्णम् ॥ अदुग्धाइवधाऽ३१उवाऽ२३इ । नाऽ२३४वाः । ईडा ।
लं ड
१र २ १ २र १ २ १र २ १ २ १ र २र १र
(त्रिः) । ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषीन्देवान्वर्णम् ॥
लं
र र २ ३ ५ २र र
ईशानमस्यजगतस्सुवाऽ३१उवाऽ२३ । दृऽ२३४शाम् । ईडा । (त्रिः) ।
ड टू च
१र २ १ २र १ २ १र २ १ २ १ र २र १र
ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषीदेवान्वर्णम् ॥
लं
र र २ ५ २र र
ईशानमिन्द्रताऽ३१उवाऽ२३ । स्थूऽ२३४षाः । ईडा । (त्रिः) ।
ड टू च
१र २ १ २र १ २ १र २ १ २ १ र २र १र
ज्योतिष्पतंस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषादेवान्वर्णम् । (त्रिः)
लं
२र र र १ २ १ २ १
हाउहाउहाउ । हाहाउ । (त्रिः) । हाहाहाउ ।(त्रिः) । कपाऽ२३उ ।
च का का कि
२ — १ २ — र १र २र १
(त्रिः) । हाऽ३ओऽ२३ । (द्विः)। हाऽ३१उवाऽ२ ॥ ए । व्रतमेसुवरेशकुनः ॥
छौ छो च रो

(दी.६४ । प.५४ । मा.४९)१५(धो । २०१)

(१२०-१) ॥ युग्यश्व दशस्तोभम् । जगदग्निस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । ओहा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) । ऊऽ२ । (त्रिः) । ओऽ२ । (त्रिः)।
हाउवाक् । (त्रिः) । आयुर्यन् । (त्रिः) । एआयुः । (त्रिः) । आयुः । (त्रिः) ।
वयाः । (द्विः) । वयः । इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ ॥ यत्पार्यायुनजते-
धियाऽ२स्ताः ॥ शूरोनृषाताश्रवसश्चकाऽ२माइ ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः ।
हाउहाउहाउ । ओहा । (त्रिः) । हाओवा । (त्रिः) ऊऽ२ । (त्रिः) । ओऽ२ ।
(त्रिः) हाउवाक् । (त्रिः) । आयुर्यन । (त्रिः) । एआयुः । (त्रिः) । आयुः ।
(त्रिः) । वयाः (द्विः) । वाऽ२ । याऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । आयुर्द्धा-
अस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः ॥ (दी. ९५ । प.६४ । मा. ९९)१६(भो । २०२)

(१२१-१) ॥ वार्त्रघ्नम् । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

वृत्रहत्यायहोइ । (त्रिः)। अधृष्णवेहोइ ।(त्रिः)। अपूरवेहोइ । (द्विः)। अपूरावाऽ२इ ।
पृथिवीश्चाहोइ । (त्रिः) । विवर्त्तयाहोइ । (द्विः) । विवर्त्तायाऽ२ । अन्तरिक्षँहोइ ।
(त्रिः) । सुधारयाहोइ । (द्विः) । सुधारायाऽ२ । दिवंवेपाहोइ । (त्रिः) ।
अवेपयोहोइ । (द्विः) अवेपायाऽ२ः । होइ । (द्विः) । हुवेऽ२ । हाऽ३१उवाऽ२ ।
इन्द्राऽ२ । (द्विः)। इन्द्र । स्यानू । (द्विः) । स्यनूऽ३ । आउ । वाऽ२ ।
वीर्याणि । प्रावा । (द्विः) । प्रवाऽ३१उ । वाऽ२३। चाऽ२३४५म् ॥ यानिऽ२ ।

(द्विः) । योनि । चाका । (द्विः) । चकाऽ३१उ । वाऽ२ । रप्रथमा । निवा ।

(द्विः) । निवाऽ३१उ । वाऽ२३ । ज्रीऽ२३४५ ॥ आहाऽ२न् । (द्विः) । अहून् ।

आहाइम् । (द्विः) । अहाऽ३१उ । वाऽ२ । अन्वापाः । ताता । (द्विः) ।

तताऽ३१उ । वाऽ२३ । दाऽ२३४५ ॥ प्रवाऽ२ । (द्विः) । प्रवा । क्षाणाः।(द्विः) ।

क्षणाऽ३१उ । वाऽ२ । आमिनत्पा । र्वाता । र्वताऽ३१उ । वाऽ२३ । नाऽ२३४५म् ।

वृत्रहत्यायहोइ । (त्रिः) अधृष्णवेहोइ । (त्रिः) । अपूरवेहोइ । (द्विः) ।

अपूरावाऽ२इ । पृथिवीश्चाहोइ । (त्रिः) । विवर्त्तयाहोइ (द्विः) । विवर्त्तायाऽ२ ।

अन्तरिक्षँ होइ । (त्रिः) । सुधारयाहोइ । (द्विः) । सुधारायाऽ२ । दिवंवेपाहोइ ।

(त्रिः)। अवेपयोहोइ । (द्विः)। अवेपायाऽ२ः । होइ । (द्विः)। हुवेऽ२ । हा३१उवाऽ२ ॥

ए । वृत्रहासापत्लहा ।(द्वे-त्रिः)॥ (दी.८५। प.१२१ । मा. ७६)१७९(पू । २०३)

(१२२-१) ॥ प्रजापतेश्चाष्टानिधनम् । प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ॥

अभिप्रघ्ना । तमोजसा । तमोजासाऽ२ । (त्रीणि-त्रिः) । तमोजसा । सुवोजासाऽ२ ।

(द्वे-द्विः)। तमोजसा । सुवो । जाऽ२ । साऽ२३४ । औहोवा । असिप्राणएअसि ।

(त्रिः) । एअसि । (त्रिः) । सत्यमित्थावृषाऽ२इदाऽ२३४सी । एअसि । (द्विः) ।

ए । आऽ२ । साऽ२३४ । औहोवा । इडाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छे । डाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छे ।

डाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छ ॥ अभिप्रघ्ना । तमोजसा । तमोजासाऽ२ । (त्रीणि-त्रिः) ।

तमोजसा । सुवोजासाऽ२ । (द्वे-द्विः) । तमोजसा । सुवो । जाऽ२ । साऽ२३४ ।
औहोवा । असिचक्षुरेअसि । (त्रिः)। एअसि । (त्रिः)। वृषजूतिर्नोऽ२वाऽ२३४इता ।
एविता । (द्विः) । ए । वाऽ२इ । ताऽ२३४ । औहोवा । अन्तरिक्षंगच्छनाकेविमाहि ॥ (त्रिः)।
अभिप्रघ्ना । तमोजसा । तमोजासाऽ२ । (त्रीणि-त्रिः) । तमोजसा । सुवोजासाऽ२ ।
(द्वे-द्विः) । तमोजसा । सुवो । जाऽ२ । साऽ२३४ । औहोवा । असिश्रोत्रमेअसि ।
(त्रिः) । एअसि ।(त्रिः)। वृषाह्युग्रश्शृण्विषेपराऽ२वाऽ२३४ती । एवति । (द्विः) ।
ए । वाऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा । स्वर्गच्छज्योतिर्गच्छ । (त्रिः) ॥ अभिप्रघ्ना ।
तमोजसा । तमोजासाऽ२ । (त्रीणि-त्रिः)। तमोजसा । सुवोजासाऽ२ ।(द्वे-द्विः) ।
तमोजसा । सुवो । जाऽ२ । साऽ२३४ । औहोवा । असिज्योतिरेअसि ।
(त्रिः)। एअसि । (त्रिः) । वृषोअर्वावताऽ२इश्रूऽ२३४ताः । एश्रुतः । (द्विः) ।
ए । श्रूऽ२ । ताऽ२३४ । औहोवा ॥ अतिज्योतिर्विभाह्येअति । (द्विः) । अतिज्योति-
र्विभाह्येआतीऽ२३४५ ॥ (दी. १४६ । प.१३६ । मा.४०)१८(कौ । २०४)

(१२३-१) ॥ इन्द्रस्य राजनम् । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हिम् । (त्रिः) । हो । (त्रिः) । हिँ । ओहा । (त्रिः) । औहोइ ।
(त्रिः)। इन्द्रन्नरो । नेऽ३मधि । ताहवन्ताइ । (त्रीणि-त्रिः) । वयोबृहत् ।
(त्रिः)। विभ्राष्टयेविधर्मणे । (त्रिः) । यत्पारियाः । युनज । ताइधियस्ताः ।

(त्रीणि-त्रिः)। सत्यमोजः । (त्रिः)। रजस्सुवः ।(त्रिः)। शूरोनृषा । ताऽ३श्रव ।

सश्वकामाइ । (त्रीणि-त्रिः) । भद्रँ सुधा । (द्विः) । भद्रँ सुधे । षमूर्जम् ।

इषमूर्जम्। (द्विः) ॥ आगोमताइ । व्राजेभ । जातुवन्नाः । (त्रीणि-त्रिः)।

बृहद्यशः । (त्रिः)। दिविदाधेऽ३हस् । (द्विः) । दिविदाधेऽ३ । हाउवा ॥

वागीडासूवोबृहद्भा२३४५ः ॥ (स्व. ६६। प.७७। वि.४६)१९(खू । २०५)

(१२३-२) ॥ रौहिणम् । इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । आइही । (त्रिः) । आइहिया । (त्रिः) । आसाउ । (त्रिः) ।

आयाम् ।(त्रिः) । नामाः । (त्रिः)। किट् । (द्वादश)। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ ॥

यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः ॥ शूरोनृषाताश्रवसश्वकाऽ२माइ ॥ आगो-

मतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः । मनाऽ२३होइ । प्राणाऽ२३होइ । चक्षूऽ२३होइ ।

श्रोत्राऽ२३ँ होइ । घोषाऽ२३ँ होइ । व्रताऽ२३ँ होइ । भूताऽ२३ँ होइ ।

पानाऽ२३ँ होइ । चित्ताऽ२३ँ होइ । धीताऽ२३ँ होइ । सुवाऽ२३होइ ।

ज्योताऽ२३इर्होऽ२ । वाऽ२३४औहोवा ॥ ऊऽ२३४५ ॥

(दी.२६ । प.३६ । मा.३७)२०(कें। २०६)

॥ दश चतुर्थः खण्डः ॥४॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने चतुर्थः प्रपाठकः ॥

(१) ॥ त्रीणि अग्नेरिलांदं पश्चानुगानम्, इरान्नं वा । अग्न्यनुष्टुबात्मा ॥

हाउहाउहाउ । ऊऽ२ । (त्रिः)। हुऊऽ२ । (त्रिः) ॥ इयाहाउ । (द्विः) ।

इयाऽ३हाउ । वाऽ३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.३। प.१२। मा.१०)१(ठौ ।२०७)

(१२४-१) ॥ (तत्र द्वितीय मिदम्) ॥

हाउहाउहाउवा । अग्निरस्मिजन्मनाजातवेदाः । इडा । सुवः । इडा ॥

हाउहाउहाउवा । घृतंमेचक्षुरमृतंमआसन् । इडा । सुवः । इडा ॥

हाउहाउहाउवा ॥ त्रिधातुरर्क्कोरजसोविमानः । इडा । सुवः । इडा ॥

हाउहाउहाउवा ॥ अजस्रंज्योतिर्हविरस्मिसर्वम् । इडा । सुवः । इडा ॥

(दी.१९। प.२०। मा.२१)२(न ।२०८)

(१२५-१) ॥ अग्नेरिलांदम् पंचानुगानम् । अग्निस्त्रिष्टुबग्निः (तत्र तृतीयमिदम्) ॥

हाउहाउहाउ । पात्यग्निर्विपोअग्रंपदंवेः। हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः ।

इह । हाऽ३१उवाऽ२३ । ज्योऽ२३४५तीः॥ हाउहाउहाउ । पातियह्वश्चरण-

सुरियास्या । हाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः । इह । हाऽ३१उवाऽ२३ ।

ज्योऽ२३४तीः ॥ हाउहाउहाउ । पातिनाभासप्तशीर्षाणमाग्निः ।

हाउ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४वाः । इह । हाऽ३१उवाऽ२३ । ज्यो२३४तीः ॥

हाउहाउहाउ । पातिदेवानामुपमादमार्ष्वः । हाऽ३१उवा२३ । सूऽ२३४वाः ।

इह । हाऽ३१उवाऽ२३ ।ज्योऽ२३४तीः॥ (दी.२८। प.२८। मा.३२)३(डा । २०९)

(१२६-१) ॥ (तत्र चतुर्थ मिदम्) ॥

१ — १ २ २ १ २ १ २र ३ ४ ५
इयाऽ२ । (त्रिः) । इयाहाउ । (त्रिः) । इन्द्रन्नरो । नेऽ३मधि । ताहवन्ताइ ।
का का र रा ची

२ १ २र ३र २ १ र २ १र
हवन्तेऽ३ । हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒ । (द्वे-त्रिः) ॥ हवन्ते । (त्रिः) ॥ यत्पारियाः।
चा कः क र

२ १ २ ३ ४ ५ २ १ २र ३र २ १ र
युनज । ताइधियस्ताः । धियस्ताऽ३ः । हिँ॒हिँ॒हिँ॒हिँ॒हिँ॒ । धियस्ताः ।
र ची चा कः कः

२र १र २ १ २ ३ ४र ५ २ र १ २र ३र २
(त्रिः)। शूरोनृषा । ताऽ३श्रव । सश्वकामाइ । चकामेऽ३ । हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒ हिँ॒॥
र रा ची चा कः

१ र र २र १र २ १र २र ३ ४ ५ २
(द्वे-त्रिः) । चकामे । (त्रिः) ॥ आगोमताइ । व्राजेभ । जातुवन्नाः । तुवन्नाऽ३ः ।
क र र ची चा

१ २र ३र २ १ — १ २
हिँ॒हिँ॒हिँ॒हिँ॒हिँ॒ । (द्वे-त्रिः)। तुवन्नः । (त्रिः) । इयाऽ२ । (त्रिः) । इयाहाउ ।
कः क का का

१ न २ र १र २र १
(द्विः)।इयाऽ३हाउ।वा॥ए।व्रतमेसुवरेशकुनः॥(दी. ५१। प.६३ । मा.२६)४(गू । २१०)
खु च च रो

(१२७-१) ॥ अग्निः पंक्तिरिन्द्रः ॥

२र र र १ २ १ र र २ — र र १ २
भ्राजाऔहोहोहाइ । त्यग्नेसमिधानादीऽ१दिवाऽ२ः ॥ जिह्वाऔहोहोहाइ ।
चौ धि चौ

१ २ — र र १ २ १र र र २ २
चरत्यन्ताराऽ१सानीऽ२ ॥ सत्वाऔहोहोहाइ । नोअग्नेपयसावासूऽ३वीत् ॥
धि चौ कः

१ २ ३र २ १ — १ २ ४ ५ ४
रायिंवर्चोदृशौहोऽ३ । हिम्माऽ२ । दा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥
जि का क ची ता प

(दी.१३ । प.१२ । मा.१०)५(ठौ । २११)

(१) ॥ देवव्रतानि त्रीणि । द्वयो रुद्रोऽनुष्टुप् रुद्रः । तृतीयस्य विश्वेदेवा अनुष्टुबिन्द्रः (रुद्रः) ॥

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ —
अधिप । ताइ । मित्राप । ताइ । क्षत्राप । ताइ । स्वःपाताइ । धनपाताऽ२इ।
का क का क का क कै धि

१ — १ २ १ र २ १र र र २ १र २ १र २ १ २र १ २र १र
नाऽ२माः ॥ मन्युनावृत्रहासूर्येणस्वराड्यज्ञेनमाघावादक्षिणास्यप्रिया-
कै

२ १र र २र १ २र र १ र २ १र २ र १ २ १ र २ १ २ १र
तानूराज्ञाविशंदाधार । वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशाचीपातिरन्नेनगयःपृथिव्यासृ-
से

२ १र र २र१ २ र र १ र र २ १र २ र र १र
णिकोग्निनाविश्वंभूतम । भ्यभवोवायुनाविश्वाःप्रजाअभ्यपवथावषट्कारे-
ळ

र २१र र र २ र १र २र र १र र र२र र र १ २
णार्द्धभाक्सोमेनसोमपाःसमित्यापरमेष्ठी । येदेवादेवाः । दिविषादः ।
लं का चो

१र र २र र र र१र २र १ २ १र र२र र र १ २
स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनामः । येदेवादेवाः । अन्तरिक्षसादः ।
डे का चो

१र र २र र र र१र २र १ २ र र२र र र र १ २ १र र
स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनामः । येदेवादेवाः । पृथिवीषादः । स्थतेभ्यो-
डे का चो

२र र र र१र २र १ २ र र२र र र १ २ १र र२र र र र१र२र १ २
वोदेवादेवेभ्योनामः । येदेवादेवाः । अप्सुषादः । स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनामः ।
डे का चो डे

र र२र र र १ २ १र र २र र र र१र २र १ २ १र र२र र र
येदेवादेवाः । दिक्षूसादः । स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनामः । येदेवादेवाः ।
का चो डे का

र र १ २ १र २र र र र१र२र १ २ १ २ १र २ १ २र१ र२ १ २र
आशासादः । स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनामः । आवज्यामिवाधन्वानोवितेमन्युन्नया-
चो डे

१र २ १ २ १ २ १ २ १ र
मसिमृडतान्नइहा ॥ अस्माभ्यम् । इडाऽ२३भा ॥ यइदंविश्वंभूतम् ।
लं चो कः क

२ १ ५
युयोऽ३आउ । वाऽ२३ ॥ नाऽ२३४माः ॥ (दी.१२६। प.३७। मा.३२)६(खा। २१२)
रा कि दू

(२)

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ —
अधिप । ताइ । मित्राप । ताइ । क्षत्राप । ताइ । स्वःपाताइ । धनपाताऽ२इ।
का क का क का क कै धि

१ — १ २ १ २र र १र २ १ र २र १ २र र १ २
नाऽ२माः ॥ नमउत्तातिभ्यश्चोत्तन्वानेभ्यश्चनमोनीषंगिभ्यश्चोपवीतिभ्यश्च-
कै

१र २ १र २र १ २ १ २ र १ २ १२ १ २
नमोस्यद्भ्यश्चप्र । तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्यश्चनामःत्सरद्भ्यश्च-
लौ

र १ २ १ २ १र २ र १ २ १ २ १ २ र १ २
त्सारिभ्यश्चनमःश्रि । तेभ्यश्चश्रायिभ्यश्चनामस्तिष्ठद्भ्यश्चोपतिष्ठद्भ्यश्च-
सु

१र २१र २ १र २१ २ १र २ १ २र १ २ १र २ १ २र १ र
नमोयातेचवियतेचनमःपाथेचविपथायच । आवज्यामिवाधन्वानोविते-
वा

२ १ २र १ र २ १ २ १ २ १ २ १ र
मन्युन्नयामसिमृडतान्नइहा ॥ अस्माभ्यम् । इडाऽ२३भा ॥ यइदंविश्वंभूतम् ।
लं चो कः क

२ १ ५
युयोऽ३आउ । वाऽ२३ ॥ नाऽ२३४माः ॥ (दी.२६। प.१९। मा.१५)७(धु । २१३)
रा कि दू

(३)

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ —
अधिप । ताइ । मित्राप । ताइ । क्षत्राप । ताइ । स्वःपाताइ । धनपाताऽ२इ।
का क का क का क कै धि

१ — १ र र २ १ र २ र र १र २र र १र २ १ २र १
नाऽ२माः । नमोन्नायनमोन्नापतयएकाक्षायचावपन्नादायचनामोनमः ।
कै ले

२१र २र १२र१ २१र २ १ २र१२१ २र १र२१२१ २र
रुद्रायातीरासादेनमःस्थिरायस्थिरधन्वानेनामःप्रतिपदायचपटरिणेचनामस्त्रियम्बकायचक ।
सै

१ र २ १ २र र १र २ र र१र २ १ २ १र २ १र २१
पर्दिनेचनमआश्रायेभ्यश्चप्रत्याश्रायेभ्यश्चनमःक्रव्येभ्यश्चविरिम्फेभ्यश्चनमः-

२ १र२ १२र १२ १र २ १ २र १र२ १ २र १र२ १ २ १ २
संवृतेचविवृतेच । आवज्यामिवाधन्वानोवितेमन्युन्नयामसिमृडतान्नइहा ॥ अस्माभ्यम् ।
सै लं चो

१ २ १ र २ १ ५
इडाऽ२३भा ॥ यइदंविश्वंभूतम् । युयोऽ३आउ । वाऽ२३ ॥ नाऽ२३४माः ॥
कः क रा कि हु

(दी.३५। प.१९। मा.१६)८(भू । २१४)

(१२८-१) ॥ ऋतुष्ठायज्ञायज्ञीयम् । प्रजापतिर्बृहत्यृतवः ॥

३ ४ २ ४ ५ १र २ २ २ १र २
वाऽ५सन्तः । ईऽ३न्नूऽ३रन्तायाः ॥ ग्रीष्मइन्नुराऽ१न्तीऽ३याः । वर्षाण्यनुशाऽ३ ।
टा थू थै चौ

१ २ २ १र ३ २ । । ।
हिम् ॥ राऽ३दाः ॥ हेमन्तशिशिरइन्नुराऽ२न्तियाउ ॥ वाऽ३४५ ॥
क चे कः ची

(दी. ३ । प. ८ । मा. ८)९(डै । २१५)

(१२९-१) ॥ अजितस्य जितिसाम । अजितो बृहतीन्द्रः ॥

२र र र १ २ १ —
हाउहाउहाउ । हुप् । (त्रिः)। बिबिबिबिबीऽ३ । (त्रिः) । हीऽ२ । (त्रिः) ।
च क कि का

१ र २र र र १ २र र १ र
हाउहाउहाउवा । आभित्वाशूरनोनुमोहुस् ॥ अदुग्धाइवधेनवोहुस् ।
च कै कै

र र २ १ २ १ र र २ १ र २र र र १
ईशानमस्यजगतस्वर्दृशँहुस् । ईशानमिन्द्रतस्थुषोहुस् । हाउहाउहाउ । हुप् ।
कै कै च क

(त्रिः)। बिबिबिबिबिबीऽ३ । (त्रिः) । हीऽ२ । (त्रिः)। हाउहाउहाउवा ॥ एअस् ।

एफट् । एमृस् । एहस् । ईऽ२३४५ ॥ (दी.२२ । प.३१। मा.२८)१०(श्चै । २१६)

(१२०-१) ॥ सोम व्रतम् । सोमस्त्रिष्टुप्सोमः ॥

ईऽ२ । (त्रिः) । सन्तेपया । सीऽ३सामु । यन्तुवाजाः ॥ संवृष्णिया । नीऽ३आमि ।

मातिषाहाः ॥ आप्यायमा । नोऽ३अमृ । तायसोमा ॥ दिविश्रवा । सीऽ३उत्त ।

मानिधिष्वा । ईऽ२ । (द्विः) । ईऽ२ । आऽ२३४औहोवा ॥ हिँ ॥

(दी.११। प.२०। मा.६)११(ङू । २१७)

(१३१-१) ॥ दीर्घतमसोऽर्कः । दीर्घतमास्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा ॥

आयाउ । (त्रिः)। अक्रान्त्समूद्रःप्रथमाइविधर्मान् । विधर्मान् । (द्विः) ।

जनयन्प्रजाभुवनास्यागोपाः । स्यागोपाः (द्विः) । वृषापावित्रेअधिसानोअव्याइ ।

नोअव्याइ। (द्विः) । आयाउ । (त्रिः) । बृहत्सोमोवावृधेसुवानोअद्राइ । नोअद्राइ ।

नोअद्राऽ३१उवाऽ२३।।एऽ३। धेस्वानोअद्रीऽ२३४५ः॥ (दी. २० । प. २० । मा. २८)१२(मै । २१८)

द्वादश पञ्चमः खण्डः ॥५॥

(१३२-१) ॥ पुरुषव्रतानि पञ्च । पुरुषोऽनुष्टुप्पुरुषः ॥ (पुरुषसूक्तम्)

उहुवाहाउ । (त्रिः) । सहस्रशीर्षाःपुरूऽ२३षाः ॥ सहस्राक्षःसहस्राऽ२३पात् ॥

सभूमिँ सर्वतोवाऽ२३त्वा ॥ अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुऽ२३लाम् । उहुवाहाउ । (द्विः) ।

उहुवाऽ३हाउ ।वाऽ३।।इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी.६। प.१२। मा.१०)१३(खे । २१९)

(१३३-१)

उहुवौहोवाऽ२ । (त्रिः) । त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरूऽ२३षाः ॥ पादोस्येहाभावत्पूऽ२३नाः ॥
तथाविष्वङ्व्यक्राऽ२३मात् ॥ अशनानशनेआऽ२३भी । उहुवौहोवाऽ२ । (द्विः) ।
उहुवौ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । ईऽ२३४ङा । उहुवौहोवाऽ२ । (द्विः) ।
उहुवौ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । सूऽ२३४वाः । उहुवौहोवाऽ२ । (द्विः)।
उहुवौ ।होऽ२।वाऽ२३४।औहोवा।।ऊऽ२३४५।। (दी.३७ । प. २८ । मा.६)१४(जूं । २२०)

(१३४-१)

इयौहोवाऽ२ । (त्रिः) पुरुषएवेदँ्साऽ२३र्वाम् ॥ यद्भूतंयच्चभावाऽ२३याम् ॥
पादोस्यसर्वाभूताऽ२३नी ॥ त्रिपादस्यामृतंदाऽ२३इवी । इयौहोवाऽ२ । (द्विः) ।
इयौ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । ईऽ२३४ङा ।इयौहोवाऽ२ । (द्विः)।
इयौ । होऽ२ । वाऽ२३४ । औहोवा । ज्योऽ२३४तीः । इयौहोवाऽ२ ।(द्विः)।
इयौ ।होऽ२।वाऽ२३४।औहोवा।।ईऽ२३४५।। (दी. ३७ । प. २८ । मा.५)१५(जु । २२१)

(१३५-१)

हाउहाउहाउ । तावानस्य । महाऽ२३इमाऽ३ ॥ हाउहाउहाउ ।
ततोज्यायाँ्श्चपूरूऽ२३षाऽ३ः ॥ हाउहाउहाउ । उतामृतत्वस्येशाऽ२३नाऽ३ः ॥
हाउहाउहाउ । यदन्नेनातिरोहाऽ२३तीऽ३ । हाउहाउहाउ । वाऽ३ ॥
इट्इडाऽ२३४५ ॥ (दी. २३ । प. १२ । मा.१९)१६(ठो । २२२)

(१३६-१)

हाउहाउहाउवा । ततोविराडजायत ।। हाउहाउहाउवा । विराजोआधिपूरुषः ।।

हाउहाउहाउवा । साजातोअत्यरिच्यत ।। हाउहाउहाउवा । पश्चाद्भूमिमाथोपुरः ।

हाउहाउहाउवाऽ३ ।। ईऽ२३४५ ।। (दी.११ । प. १० । मा. १९)१७(ङो । २२३)

(१३७-१) ।। पुरुंषव्रतं । पुरुषो गायत्रीश्वपुरुषः, विश्वे देवा वा ।।

हाउहाउहाउ । आस्मीनास्मिन् । (त्रिः)। नृम्णाइनृम्णम् । (त्रिः) । निधाइमाहे।

(त्रिः) । कयानश्चित्राऽ३आभूऽ१वाऽ२त् ।। ऊतीसदावृऽ३धाःसाऽ१खाऽ२ ।।

कयाशचिष्ठाऽ३यावाऽ१र्त्ता२३ ।। हाउहाउहाउ । आस्मीनास्मिन् । (त्रिः) ।

नृम्णाइनृम्णम् । (त्रिः) । निधाइमाहे । (२) । निधाऽ२३इ । माऽ२ । हाऽ२३४ ।

औहोवा ।। सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ।।

(दी.१४ । प.२७ । मा.३३)१८(थि । २२४)

(१३८-१) ।। द्यौर्व्रतम् । द्यौःज्योतिष्मती जगती द्यावापृथिव्यौ ।।

हुवाइ । (त्रिः) । रूपम् । मन्येवांद्यावापृथिवीसुऽ३भोजाऽ१साऽ२उ ।।

येअप्रथेथाममितमभीऽ३योजाऽ१नाऽ२म् ।। द्यावापृथिवीमवाऽ३ताँस्योऽ१नाऽ२इ ।।

तेनोमुञ्चताऽ३माँहाऽ१साऽ२ः । हुवाइ । (त्रिः) । रूपाऽ२ । वाऽ२३४औहोवा ।।

ए । रूपम् । (द्वे-त्रिः) ।। (दी. २३ । प. १९ । मा.१३)१९(दू । २२५)

(१३७-१) ॥ अन्तरिक्षव्रतम् । अन्तरिक्षं गायत्रीन्द्रः ॥

वाक् । (द्विः) । वागीयम् । कयानश्चित्राऽ३आभूऽ१वाऽ२त् ॥ ऊतीसदा-
वृऽ३धाःसाऽ१खाऽ२ ॥ कयाशचिष्ठाऽ३यावा१र्त्ताऽ२ ॥ वाक् । (द्विः) । वागीयाऽ२ ।
वाऽ२३४औहोवा ॥ ए । अन्तरिक्षेसलिलंल्लेलायाऽ२३४५ ॥

(दी.१३ । प.१२ । मा.८)२०(ठै । २२६)

(१३८-१) ॥ पृथिवीव्रतम् । पृथिवीज्योतिष्मतीजगतीद्यावापृथिव्यौ ॥

प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । (द्वे-त्रिः)। वर्च्चोसिमनोसिऐही । मन्येवांद्यावा-
पृथिवीसुभोजसावैही ॥ येअप्रथेथाममितमभियोजनामैही । द्यावापृथिवी-
भवतँ्स्योनाऐही ॥ तेनोमुञ्चतमँ्हसाऐही । प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । (द्वे-त्रिः) ।
वर्च्चोसिमनोसिऐहीऽ३ । हाउवा ॥ ए । भूतम् । (द्वे-त्रिः) ॥

(दी.४७।प.३५।मा.९)२१(ञो । २२७)

(१३९-१) ॥ ऋश्यसाम (व्रतम्) कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः ॥

हरीतइन्द्रश्मश्रूणी । उतोतेहर्याताऽ१उहा३री ॥ तन्त्वास्तुवन्तिकाऽ३ ।
वायाः ॥ परुषासोवनाऽ३ । गावाः । ऋश्यासइन्द्रभुड्ङ्तिमघवन्निन्द्रभुड्ङ्ति-
भुड्ङ्तिप्रभुड्ङ्तीन्द्रस्तसरपूताऽ२३४५ः ॥ (दी.९। प.७। मा.६)२२(थू । २२८)

॥ दश षष्ठः खण्डः ॥

॥ इति आरण्यकगाने पञ्चमस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(१४०-१) ॥ दिशां व्रतम् । दिशोऽनुष्टुबात्मा । (कश्यपगायत्रीन्द्रः) ॥

२र र र १ २ १ २र १र २र १र २र १र
हाउहाउहाउ । अहमन्नम् । (त्रिः) । अहमन्नादो । हमन्नादो । हमन्नादो ।
च र रो कै कै

२र १ २र १ २र र र १ २र १ २ १
हंविधारयो । (द्विः) । हंविधारायः । हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिरण्या । स्या ॥
कै कै च घि क

२र १ २र १ र २ १ २ १ २ १ २र १ र २र १ २र १
यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यस्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासꣳसृजाम । साइ।
के क रौ क घि क

२र र र १ २ १ २र १र २र १र
हाउहाउहाउ । अहमन्नम् । (त्रिः) । अहमन्नादो । हमन्नादो । (द्विः)।
च र रो कै

२र १र ३र १ २ र २ १ २ १ २र १र
हंविधारायो । (द्विः)। हंविधारायः । हाउहाउहाउ । वा । ए ।अहमन्नमहमन्नादो-
कै कै च च

२र १ २र १ र ३ ।।।
हंविधारायः। (द्वे-त्रिः) । ए । अहꣳसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥
रं च शि

(दी. ५३ । प.३९ । मा.२६)१(ढू । २२९)

(१४०-२)

२र र र १ २र १ २र १ २र १ २ १ २र १
हाउहाउहाउ । आहꣳसाहो । हꣳसाहो । (द्विः) । हꣳसासहिः । आहꣳसासहिः।
च चो का कै रो

२ १ र २ र १र र २ र १र र २ र १र २र र र
(द्विः)। आहꣳसासहानो । हꣳसासहानो । हꣳसासहानः । हाउहाउहाउ ।
रो कै कै च

१ २र १ २ १ २र १ २र १ र २ १ २ १ २ १ २र १
यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यस्यब्रह्मणोव । चाः ॥
घि क के क रौ क

१र २र १ २र १ २र र र १ २र १ २र
तेनामासꣳसृजाम । साइ । हाउहाउहाउ । आहꣳसाहो । हꣳसाहो । (द्विः)।
घि क च चो का

१ २र १ २ १ २र १ २ १ र २ र १र र २ र १र
हꣳसासहिः । आहꣳसासहिः। (द्विः)। आहꣳसासहानो । हꣳसासहानो ।
कै रो रो कै

र २ र १ २ र १ २र १ २र १ २ १ र २ र १
हꣳसासहानः । हाउहाउहाउ । वा ॥ ए । आहꣳसाहोहꣳसासहिराहꣳसासहानः ।
कै च च घ रः

२र १ र ३ ।।।
(द्वे-त्रिः) । ए । आहꣳसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥(दी.६२। प.३९ । मा.२६)२(झू । २३०)
च शि

(१४०-३)

हाउहाउहाउ । आहंवर्च्चो । हंवर्चो । हंवर्च्चः । हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासँ्सृजाम । साइ । हाउहाउहाउ । आहंवर्च्चो । हंवर्च्चो । हवर्च्चः । हाउहाउहाउ । वा ॥ ए । आहंवर्च्चः । (द्वे-त्रिः) । ए । आहँ्सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.२६ । प.२७। मा.२०)३(खौ । २३१)

(१४०-४)

हाउहाउहाउ । आहंतेजो । हंतेजो । हंतेजः । हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासँ्सृजाम। साइ । हाउहाउहाउ । आहंतेजो । हंतेजो । हंतेजः । हाउहाउहाउ । वा । ए । आहंतेजः । (द्वे-त्रिः) । ए । आहँ्सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ।

(दी.३५ । प.२७ । मा.२०)४(फौ । २३२)

(१४०-५)

हाउहाउहाउ । दिशन्दुहे । (त्रिः)। दिशौदुहे । (त्रिः) । दिशोदुहे । (त्रिः) । सर्वादुहे । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु। ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासँ्सृजामः । साइ । हाउहाउहाउ ।

दिशन्दुहे । (त्रिः) दिशौदुहे । (त्रिः) । दिशोदुहे । (त्रिः) । सर्वादुहे । (त्रिः) ।

हाउहाउहाउ । वा ॥ ए । दिशन्दुहेदिशौदुहेदिशोदुहेसर्वादुहे । (द्वे-त्रिः) ।

ए । आहँ‌ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥ (दी. ८५ । प.४५ । मा.१५)५(मु । २३३)

(१४०-६)

हाउहाउहाउ । मनोजयित् । (त्रिः) । हृदयमजयित् । (त्रिः) । इन्द्रोजयित् ।

(त्रिः) । आहमजैषम् । (त्रिः)। हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥

यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासँ‌ सृजाम । साइ।

हाउहाउहाउ । मनोजयित् । (त्रिः) हृदयमजयित् । (त्रिः) । इन्द्रोजयित् ।

(त्रिः) । आहमजैषम् । (त्रिः) हाउहाउहाउ । वा ॥ ए । मनोजयिद्धृदयमजयि-

दिन्द्रोजयिदाहमजैषम् । (द्वे-त्रिः) । ए । आहँ‌ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी. ४९ । प. ४५ । मा.४२)६(ना । २३४)

(१४०-७) ॥ प्रजापतेर्हृदयं । कश्यपोऽनुष्टुप्प्रजापतिः ॥

हाउहाउहाउ । वयः । (त्रिः) । वयोवयः । (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।यद्वर्च्चोहिराण्य ।

स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामासँ‌ सृजाम।

साइ । हाउहाउहाउ । वयः । (त्रिः) वयोवयः (त्रिः) । हाउहाउहाउ । वा॥

ए । वयोवयोवयः (द्वे-त्रिः) । ए । आहँ‌ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.३४ । प. ३३ । मा. ३०)७(दौ । २३५)

(१४०-८)

हाउहाउहाउ । रूपम् ॥ (त्रिः) । रूप ँ्रूपम् । (त्रिः)। हाउहाउहाउ ।
यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥
तेनामास ँ्सृजाम । साइ । हाउहाउहाउ । रूपम् । (त्रिः) । रूप ँ्रूपम् ।
(त्रिः) । हाउहाउहाउ । वा । ए । रूप ँ्रूप ँ्रूपम् । (द्वे-त्रिः) । ए ।
आह ँ्सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥ (दी.४९ । प.३३ । मा.३०)८(दौ । २३६)

(१४०-९)

हिहियऊऽ२ । (त्रिः) । उदापप्तम् । (त्रिः)। ऊर्ध्वानभा ँ्स्यकृणुषि । (त्रिः)।
व्यद्यौत्सम् । (त्रिः) । अतातनम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । यद्वर्च्चोहिराण्य ।
स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥ तेनामास ँ्सृजाम।
साइ । हिहियऊऽ२ (त्रिः)। उदापप्तम् । (त्रिः) । ऊर्ध्वानभा ँ्स्यकृणुषि ।
(त्रिः) । व्यद्यौत्सम् । (त्रिः) । अतातनम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । वा । ए ।
उदपप्तमूर्ध्वानभा ँ्स्यकृणुषिव्यद्यौत्समतातनम् । (द्वे-त्रिः) । एऽ३ ।
पिन्वस्वाऽ२३४५ ॥

(दी.५०। प.४९ । मा.३५)९(भु । २३७)

(१४०-१०)

२र र र १र २र र र र
हाउहाउहाउ । प्रथे । (त्रिः) । प्रत्यष्ठाम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।
च क का च

१ २र१ २ १ २र१ २र१र२ १ २ १ २ १ २र १
यद्वर्च्चोहिराण्य । स्या ॥ यद्वावर्च्चोगवामु । ता ॥ सत्यास्यब्रह्मणोव । चाः ॥
घि क डे क रौ क

र २र१ २र १ २र र र १र २र
तेनामासँसृजाम । साइ । हाउहाउहाउ । प्रथे । (त्रिः)। प्रत्यष्ठाम् । (त्रिः)।
घि क च क का

र १र २र र १ र३ ।।।
हाउहाउहाउ । वा । ए । प्रथेप्रत्यष्ठाम् । (द्वे-त्रिः)। ए । आहँसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः ॥
च च च का च शि

(दी.४०। प.३३। मा.२४)१०(वी । २३८)

॥ दश सप्तमः खण्डः ॥७॥

(१४१-१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम् । कश्यपो गायत्रीन्द्रः ॥

२र र र १— १— १ २ १—
हाउहाउहाउ । हाऽ२इ । ऊऽ२ । (द्वे-त्रिः) । काह्वाह्वह्वह्वह्व । (त्रिः) । हाऽ२इ ।
च का का का का

१— १— ११ १ २ १—
ऊऽ२ । ऊऽ२ ।* ऊऽ२ । (चत्वारी-त्रिः) । काह्वाह्वह्वह्वह्व । ऊऽ२ । (द्वे-त्रिः) ।
का का का का का

र र र १ र र र —१ २१र र —१ २र र र
हाउहाउहाउ । यस्येदमारजोयूऽ२जाः ॥ तुजेजनेवनाँसूऽ२वाः ॥ हाउहाउहाउ ।
च घि घु च

१— १— १ २ १— १—
हाऽ२इ । ऊऽ२ । (द्वे-त्रिः) । काह्वाह्वह्वह्वह्व । (त्रिः) । हाऽ२इ । ऊऽ२ ।
का का का का का

१— ११ १ २ १
ऊऽ२ । *ऊऽ२ । (चत्वारी-त्रिः) । काह्वाह्वह्वह्वह्व । ऊऽ२ । (द्वे-त्रिः) ।
का का का का

र र र ३ २ ४
हाउहाउहाउ । आइन्द्रस्यर ॥ तियाऽ३म्बृऽ५हाऽ६ँ५६ँत् ॥
च च टो

१ ।।।
नमःसुवरिडाऽ२३४५ ॥ (दी.१७। प.६३ । मा.२८)११(जै । २३९)
कु

(१) ॥ काश्यपग्रीवा कश्यपोनुष्टबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ ॥ आहोआहो । आहो । आहोआहो । आहो ॥ एहोएहो ॥ एहो। वाऽ३ । हाउवाऽ३ ॥ प्राजाभूतमजीजनेऽ३ । इट्इडाऽ२३४५ ॥

(दी.६ । प.११ । मा.८)१२(कै । २४०)

(१४२-१) ॥ कश्यपं व्रतं दशानुगानम् । कश्यपस्त्रिस्टुबिन्द्रः ॥

हाउहाउहाउ । फाल्फल्फल्फल्फल्फल् । (त्रिः)। हाउहाउहाउ । इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ ॥ यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः ॥ शूरोनृषाता-श्रवसश्चकाऽ२माइ ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः । हाउहाउहाउ । फाल्फल्-फल्फल्फल्फल् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । वा ॥ मनःसुवरिडाऽ२३४५ ॥

(दी.२३ । प.१६ । मा.५२)१३(टा । २४१)

(१४३-१)

हाउहाउहाउ । हाउहौहौहौहौहौ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । योनोवनुष्यन्नभिदातिमाऽ२र्त्ताः ॥ उगणावामन्यमानस्तुरोऽ२वा ॥ क्षिधीयुधा-शवसावातमाऽ२इन्द्रा ॥ आभीष्यामवृषमणस्त्वोऽ२ताः । हाउहाउहाउ । हाउहौहौहौहौहौ । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । वा ॥ एवयःसुवरिडाऽ२३४५ ॥

(दी. ५२ । प.१६ । मा.२१)१४(च । २४२)

(१) ॥ प्रजापतेर्हृदयं कश्यपोऽनुष्टुप्प्रजापतिः ॥

२र र र १र र र२र १
हाउहाउहाउ । इमाः । (त्रिः)। प्रजाः । (त्रिः) । प्रजापते । होइ । (द्वे-द्विः) ॥
च क क का क

र२र — र १ २ र १ २
प्रजापते । हाऽ३१उ । वाऽ२ ॥ ए । हृदायम् । (द्वे-द्विः) । ए । हृदायाऽ३१उ ।
का रा का च का च को

— १रर २र १ ।।।
वाऽ२ ॥ प्राजारूपमजीजनेऽ३ । इट् इडाऽ२३४५ ॥
का चौ कु

(दी.२१ । प.२३ । मा.१६)१५(गू । २४३)

(१) ॥ इडानाँ्संक्षारः । (षष्ठः) ॥

२र र र १र र र
हाउहाउहाउ । इडा । (त्रिः)। सुवः ॥ (त्रिः)। ज्योतिः । ज्योतिः ॥
च क क क क

३र २ ५र र २र १र र ३ ।।।
ज्योताऽ३४ । औहोवा ॥ ए ॥ इडासुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥
ट्ठ प च गा

(दी.१५ । प.१४ । मा.९)१६(दो । २४४)

(१४४-१)

२र र र १ २ १ २ १ २ १ २ २र र र
हाउहाउहाउ । आइही । (३) । ओहा । ओहा । ओहाऽ३ । हाउहाउहाउ ।
च का का का कि च

१ — १ र — ११ २र १
सहस्तन्नइन्द्रध्योऽ२जाः । आयाऽ२उ । *ऊ । आयाउ ॥ (त्रीणि-त्रिः) ।
कै का क र

२र र — १ र — ११ २र १
ईशेह्यस्यमहतोविराऽ२प्शाइन् । आयाऽ२उ । *ऊ । आयाउ ॥ (त्रीणि-त्रिः) ।
कै का क र

१ — १ र — ११ २र १
क्रतुन्ननृम्णँ्स्थविरश्चवाऽ२जाम् । आयाऽ२उ । *ऊ । आयाउ ॥ (त्रीणि-त्रिः) ।
कै का क र

र — १ र — ११ २र १
वृत्रेषुशत्रून्सुहनाकृधाऽ२इनाः । आयाऽ२उ । *ऊ । आयाउ ॥ (त्रिः) ।
कै का क र

२र र र १ २ १ २ १ २ १ २ २
हाउहाउहाउ । आइही । (त्रिः) ओहा । ओहा । ओहाऽ३ । हाउहाउहाउ ।
च का का का कि च

र र १र २ १ २ र१र र र ३ ।।।
वा ।ए।आयुर्धाअस्मभ्यंवर्च्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥ (दी.४६।प.५२ । मा.२१)१७(घ ।२४५)
च च सः

(१४५-१) ॥ गवां व्रते द्वे ॥ गावस्त्रिष्टुप् गावः ॥

२र र र १र र २र र र
हाउहाउहाउ । (त्रिः) । तेमन्वतप्रथमन्नामगो । नाम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।
च क क च
१ र २र र र १र र र र
त्रिस्सप्तपरमन्नामजा । नान् । (त्रिः) । हाउहाउहाउ । ताजानतीरभ्यनूषता ।
क क च क
२र र र र१ र र २
क्षाः (त्रिः) । हाउहाउहाउ ।आविर्भूवन्नरुणीर्यशसागा । वाः । हाउहाउहाउ ।
क च र क च
र १२र र १ ३ ।।।
वा ॥ ए । दुघाः । (द्वे-द्विः) । ए । दुघाऽ२३४५ः ॥
च च का च गा

(दी.२७। प.२८। मा.३०)१८(जौ । २४६)

(१४६-१) ॥ सभासत्साम । गावस्त्रिष्टुब्गावः ॥

२ १ २र १ २र १र २
हाउहाउहाउवा । सहर्षभास्सहवत्साउदेत ॥ हाउहाउहाउवा ।
च रौ च
१ र२र१र२ १ २र र र २ १ २ १ २ १र २ र १
विश्वारूपाणिबिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः ॥ हाउहाउहाउवा । उरुःपृथुरायंवोअस्तुलोकः ॥
डे च रं
२ १र र २ र १र २१ २
हाउहाउहाउवा । इमाआपःसुप्रपाणाइहस्त । हाउहाउहाउवा ।
च रौ च
१ २ १
अश्वमिष्टयेऽ३हस् ॥ (दी.१५ । प.१०। मा.२२)१९(मा । २४७)
को

(१४७-१) ॥ कश्यप पुच्छम् दशमम् । कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रोऽग्निर्वा ॥

२र र र १ २ १र विर १र २
हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः) । ऐहीऽ२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् ।
च का का का
१ २ १र र २र र १ ३ ।।।
(त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । प्राजातोकमजीजनेहस् ।इहाऽ२३४५ ।
का च रो गा
२र र र १ २ १र विर १र २
हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः) । ऐहीऽ२ । (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् ।
च का का का
१ २ १ २१ २ २
(त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) । आयाउ । (त्रिः) । अग्निरस्मिजन्मनाऔऽ३हो ।
का क जा

१ —१ २ २ १—१ २ २ २र र र १ २
हाऽ२इया । औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ ॥ हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह ।
कै चे कै शी च का

१र विर १र २ १ २
(त्रिः) । ऐहीऽ२ । (त्रिः) ऐहिहाउवाक् । (त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः)। हाउहाउहाउवा ।
का का का च

१ र र२र१ ३ ।।। २र र र १ २
ईहप्रजामिहरयिँ ररराणोहस् । ईहाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह ।(त्रिः)।
रो गा च का

१र विर १र २ १ २ १
ऐही२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् । (त्रिः) हाहाउ । (त्रिः) । आयाउ । (त्रिः) ।
का का का क

२र १र २ २ १ —१ २ २ १ —१ २ २
जातवेदाऔऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ ।
जा कै चे कै शी

२र र र १ २ १र विर १र २
हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः)। ऐहीऽ२ । (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् ।(त्रिः)।
च का का का

१ २ २ २र १र र २ १र२१र२र१ ३ ।।।
हाहाउ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस् । इहाऽ२३४५ ।
का च रं गा

२र र र १ २ १र विर १र २
हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः) । ऐहीऽ२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् ।
च का का का

१ २ १ २ १ र र २ २
(त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) । आयाउ । (त्रिः) । घृतम्मेचक्षुरमृतंमआसानौऽ३हो ।
का क जा

१ —१ २ २ १— १ २ २ २र र र १ २
हाऽ२इया । औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ । हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह ।
कै चे कै शी च का

१र विर १र २ १ २
(त्रिः) । ऐहीऽ२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् । (त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) ।
का का का

१र २र १ २ १ २ १ ३ ।।। २र र र
हाउहाउहाउवा । आगन्वाममिदंबृहद्धस् । इहाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ ।
च ङः गा च

१ २ १र विर १र २ १ २
वाग्घाहहहह । (त्रिः)। ऐहीऽ२ । (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् । (त्रिः) । हाहाउ ।
का का का का

१ २ १र र र र २ २ १ —१
(त्रिः)। आयाउ । (त्रिः) । त्रिधातुरर्कोरजसोविमानाऔऽ३हो । हाऽ२इया ।
क जा कै

२ २ १ —१ २ २ २र र र १ २
औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ ॥ हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः)।
चे कै शी च का

१र विर १र २ १ २
ऐहीऽ२ । (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् । (त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा ।
का का का च

ईदंवाममिदंबृहद्धस् । इहाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः) ।
ऐहीऽ२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् । (त्रिः)। हाहाउ । (त्रिः) । आयाउ । (त्रिः) ।
अजस्त्रंज्योताइरौऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ ॥
हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह ।(त्रिः)। ऐहीऽ२ । (त्रिः) । ऐहिहाउवाक् ।(त्रिः) ।
हाहाउ । (त्रिः)। हाउहाउहाउवा । चराचरायबृहतइदंवाममिदंबृहद्धस् ।
ईहाऽ२३४५ । हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह । (त्रिः) ऐहीऽ२ ।(त्रिः)।
ऐहिहाउवाक् ।(त्रिः) । हाहाउ । (त्रिः) । आयाउ । (त्रिः)हाविरस्मिसर्वामौऽ३हो ।
हाऽ२इया । औऽ३हो । हाऽ२इया । औऽ३होऽ३ । हाउहाउहाउ । वाग्घाहहहह ।
(त्रिः) ऐहीऽ२ । (त्रिः) ऐहिहाउवाक् । (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउहाउहाउवा ॥
एयशोक्रान्भूतमततनत्प्रजाउसमचूकुत्पशुभ्योहस् । ईहाऽ२३४५ ॥

(दी. १९१ । प.२३८ । मा.२२१)२०(ग । २४८)

(१) ॥ आनडुदृते द्वे । प्रजापतिरनुष्टुबिन्द्रः ॥

इतीऽ२इति । (त्रिः) । इतिमात्राचरतिवत्सकाऽ२इति । (द्विः) ॥ इतिमात्राचरतिवत्सकाऽ२३ः । आऽ२इ । ताऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । इति । ए । इति । ए । इतीऽ२३४५ ।

(दी. ११ । प.१५ । मा.७)२१(ङे । २४९)

(२) ॥ अभिनिह्ववमेतदनड्डुदृतं वा ॥

२ १ २ १ — २ १ २ १ —
स्वयँ᳚स्कुन्वाइ । स्वयँ᳚स्कुन्वाऽ२इ । स्वयँ᳚स्कुन्वाइ । स्वयँ᳚स्कुन्वाऽ२इ ।
र चो र चो
१ २ १ ३ ५र र २र १. र
स्वयँ᳚स्कुन्वाइ। स्वयम् । स्कूऽ२ । न्वाऽ२३४ । औहोवा ॥ ए । स्कुन्वे ।
र च का दु प च क
२र १ र २र १ ।।।
ए । स्कुन्वे । ए । स्कुन्वाऽ२३४५इ ॥
च क च कु

(दी.७। प.१५ । मा.७)२२(ञे । २५०)

॥ द्वादशाष्टमः खण्डः ॥८॥

॥ इति आरण्यकगाने पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥

॥ इति (वाचो) व्रतपर्वनाम तृतीयं पर्व समाप्तम् ॥

॥ इति पञ्चमं गानं समाप्तम् ॥

(वाचोव्रतपर्वणि ८४ सामानि)

—*—

अथ शुक्रिय-पर्व

(१४८-१) ॥ अग्नेर्व्रतम् । अग्निर्गायत्र्यग्निः।

हाउहाउहाउ । आजाओवा (त्रिः) । अग्निर्मूर्द्धादीऽ३वाःकाऽ१कूऽ२त् ॥ पतिःपृथीवी-ऽ३याआऽ१याऽ२म् ॥ अपाँ॒ रेताँ॒सीऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२३ ॥ हाउहाउहाउ। आजाओवा । (द्विः) । आजाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ॒ ५६ँ॒ ॥ ए । विश्वस्यजगतोज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी.३६ । प. १३ । मा.१७)१(गे । २५१)

(१४९-१) ॥ वायोर्व्रतम् । वायुरत्यष्टिःसोमः ॥

आजा । (द्विः) । आजाऽ३१उ । वाऽ२ । आयारुचाहारिण्यापुनानः ॥ विश्वाद्वेषाँ॒ -सितरतिसयुग्वाभिः । सूरोनसयुग्वाभिः । धारापृष्ठस्यरोचते । पुनानोअरुषोहरिः॥ विश्वायद्रूपापरियास्यृक्वाभिः ॥सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः। आजा । (द्विः)। आजाऽ३१उ । वाऽ२ ॥ ए । विश्वस्मैजगतोज्योतिः । ज्योऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ इड्इडाऽ२३४५॥

(दी.३४ । प. १९। मा.१२)२(धा । २५२)

(१५०-१) ॥ महावैश्वानर व्रते द्वे । वैश्वानरो जगती वैश्वानरः ॥

हाउहाउहाउ । ओहा । (द्विः) । ओहाइ । वयोहोइ । (त्रिः) । पयोहोइ । (त्रिः)। चक्षुर्होइ ।(त्रिः)। श्रोत्रँ॒होइ । (त्रिः) । आयुर्होइ । (त्रिः) । तपोहोइ । (त्रिः)। वर्चोहोइ । (त्रिः)। तेजोहोइ । (त्रिः)। सुवर्होइ । (त्रिः)। ज्योतिर्होइ ।

(त्रिः)। प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमाऽ२३हाः ॥ प्रनोवचोविदथाजातवेदाऽ२३साइ ॥
वैश्वानरायमतिर्नव्यासेशूऽ२३चीः ॥ सोमइवपवतेचारुरग्राऽ२३याऽ३इ । हाउहाउ-
हाउ । ओहा ।(द्विः)। ओहाइ । वयोहोइ । (त्रिः)। पयोहोइ । (त्रिः)। चक्षुर्होइ।
(त्रिः)। श्रोत्रँ्होइ ।(त्रिः)। आयुर्होइ । तपोहोइ ।(त्रिः)। वर्चोहोइ । (त्रिः)।
तेजोहोइ । (त्रिः) । सुवर्होइ । (त्रिः) । ज्योतिर्होइ (द्विः) । ज्योतिर्होऽ२ ।
वाऽ२३४औहोवा ॥ ए । अग्निःसामुद्रमाक्षयत् । ए । अग्निर्मूर्धामवद्दिवः । ए । आयुर्द्धा-
अस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः ॥ (दी. १०० । प. ७९ । मा. १०८)३(मै । २५३)

(१५१-१) ॥ वैश्वानरो बृहती वैश्वानरः ॥

ओऽ३१म् । (त्रिः) । आयूः । (त्रिः) । ज्योतीः । (त्रिः) । ज्योतोवा । (त्रिः) ।
ज्योतोवाहाइ । (द्विः) । ज्योतोवाऽ३हाउ । वा । इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशो-
ज्योतिर्बृहात् । इन्दुरिडासत्यम् । सत्यम् । सत्यम् । सत्योवा । (त्रिः) ।
सत्योवाहाइ।(द्विः)। सत्योवाऽ३हाउ । वा । इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् ।
कायमानोवनातुवाम् । तुवाम् । तुवाम् । तुवोवा । (त्रिः) । तुवोवाहाइ । (द्विः)।
तुवोवाऽ३हाउ । वा । इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् ॥द्यौर्भूतंपृथिवी।
पृथिवी । (द्विः) । पृथिव्योवा । (त्रिः) । पृथिव्योवाहाइ । (द्विः)। पृथिव्योवाऽ३हाउ ।
वा । इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् । यन्मातृरजगन्नपाः । अपाः । अपाः ।

१र र २ १र र २ १र न २
आपोवा । (त्रिः)। आपोवाहाइ । (द्विः) । आपोवाऽ३हाउ । वा ।
र चो जं च
१ २र र १र २ १ २र १र २ १ २ १र २ १र २ १र २ १र २ २र १र र
इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् ॥ साहस्तेजआपः । आपः । आपः ।आपोवा ।
रः गो का क र
२र १र र २ र १र न २ १ २र र
(त्रिः) आपोवाहाइ । (द्विः) । आपोवाऽ३हाउ । वा । इहास्वर्वैश्वा-
चो जं च
१र २ १ २र १र २ १ २ र र र
नारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् । नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्तनाम् । तनाम् । तनाम् ।
रः च च च
१र र २ १र र २ १र न २
तानोवा (त्रिः) । तानोवाहाइ । (द्विः) । तानोवाऽ३हाउ । वा ।
र चो जं च
१ २र र १र २ १ २र १र २ १ र र र र र
इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् ॥ उषादिशोज्योतिः । ज्योतिः । ज्योतिः ।
र क क क
२र १र र २र १र र २ र १र न २
ज्योतोवा । (त्रिः)। ज्योतोवाहाइ । (द्विः) । ज्योतोवाऽ३हाउ । वा ।
र चो जं च
१ २र र १र २ १ २र १र २ १ २र र र
इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् । यद्दूरेसन्निहाभुवाः । भुवाः । भुवाः ।
रः च च च
१र र २ १र र २ १र न २
भुवोवा । (त्रिः) । भुवोवाहाइ । (द्विः) । भुवोवाऽ३हाउ । वा ।
र चो जं च
१ २र र १र २ १ २र १र २ १ २ २र १
इहास्वर्वैश्वानारायप्रादिशोज्योतिर्बृहात् । ओऽ३१म् । (त्रिः)। आयूः ।(त्रिः) ।
रः रा र
२र १ २र १र र २र १र र २ २र १र न २
ज्योतीः ।(त्रिः)। ज्योतोवा ।(त्रिः) । ज्योतोवाहाइ । (द्विः) । ज्योतोवाऽ३हाउ ।
र र चो जं
१र २र १ । । ।
वा ॥ घर्मोमरुद्भिर्भुवनेषुचक्रदत् । इट्इडाऽ२३४५ ॥
च चो कु

(दी. २२० । प. १२३ । मा. ८२)४(वा । २५४)

(१५२-१) ॥ सूर्यस्य भ्राजा भ्राजे द्वे, (भ्राजम्) । द्वयोः सूर्यो गायत्र्यग्निः ॥

२र १ २र १ — १ २ १ २र र २ र १र २ १र २ १ २
भ्राजा ।(द्विः)। भ्राजाऽ३१उ । वाऽ२ । अग्नआयूँषिपवसे ॥ आसुवोर्जमिषंचानः ॥
र रा का थि के
र १र र २ १ र २र १ २र १ — र
आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ॥ भ्राजा ।(द्विः)। भ्राजाऽ३१उ । वाऽ२ ॥ ए ।
सो र रा का च
१र
भ्राज । (द्वे-त्रिः) ॥ (दी. २१ । प. १७ । मा. ५)५(खु । २५५)
क

(१५३-१) ॥ आभ्राजम् ॥

आ । भ्राज । (द्वे-त्रिः) । अग्निर्मूर्द्धादीऽ३वाःकाऽ१कूऽ२त् ॥ पतिःपृथीवीऽ३-
याआऽ१याऽ२म् ॥ अपाँरेताँसिऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२ ॥ आ । भ्राज ।
(द्वे-द्विः)। आ । भ्राजाऽ३उवा ॥ ए । आभ्राज । (द्वे-त्रिः) ॥

(दी. २१ । प. २१ । मा. ५)६(कु । ३५६)

(१५४-१) ॥ वायोर्विकर्णभासे द्वे, वायुर्जगती सूर्यः ॥

हाहाउ । (त्रिः) । इडा । (त्रिः) । हुस् । (त्रिः) ऋतम्मे । (त्रिः) ।विभ्राड्बृहत्पिबतु-
सोमियाऽ२म्माधूऽ२ । आयुर्द्दधद्यज्ञपतावढाऽ२ह्वुताऽ२म् ॥ वातजूतोयोअभिरक्षता-
ऽ२इत्मानाऽ२ ॥ प्राजाःपिपर्तिबहुधाविराऽ२जातीऽ२ । हाहाउ । (त्रिः) इडा ॥
(त्रिः) । हुस् । (त्रिः) । ऋतम्मे । (त्रिः) । औहोवाहाउ । वा ॥ फाऽ२ट् ।
ऋतम्मे । (त्रिः) । औहोवाहाउ । वा ॥ फाऽ२ट् । ऋतम्मे । (त्रिः) ।
औहोवाहाउ । वा । भ्राऽ२ट् ॥ (दी.३४ । प.४३ । मा.२२)७(दा । ३५७)

(१५५-१) ॥ भासम् । वायुः जगती वैश्वानरः ॥

हाउहाउहाउ । ओहा । (द्विः) । ओहाइ । इहौहो । (त्रिः) । इहियो ।
(त्रिः)। हिम् । (त्रिः) । हो । (त्रिः) हिँ । (त्रिः) । इडा । (त्रिः) । ऋतम्मे ।
(त्रिः) । हस् । (त्रिः) । प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यानूमाऽ२३हाः ॥ प्रनोवचोविदथाजा-

तावेदाऽ२३साइ ॥ वैश्वानारायमतिर्नव्यासेशूऽ२३चीः ॥ सोमइवपवतेचा-
रुरग्राऽ२३याऽ३इ । हाउहाउहाउ । ओहा । (द्विः) । ओहाइ । इहौहो ।
(त्रिः) । इहियो । (त्रिः) हिम् (त्रिः) हो । (त्रिः) । हिँ (त्रिः) । इडा । (त्रिः)।
ऋतम्मे । (त्रिः) । हस् । (द्विः) । हाऽ२३४ । औहोवा ॥ इहौहो ॥ भद्रम् ।
इहौहो । श्रेयः । इहौहो । वामम् । इहौहो । वारम् । इहौहो । सुवम् ।
इहौहो । आस्ति । इहौहो । अभ्राजीत् । इहौहो । ज्योतिः । अभ्राजीत् ।
इहौहो । दीदिवः । एऽ२३ । हियाहाउवाऽ३ ॥ भाऽ२३४५स् ॥

(दी. ७९ । पं. ८३ । मा. ३६)८(दू । २५८)

(१) ॥ ऐन्द्रं महादियाकीर्त्यं दशानुगानं शिरोनाम प्रथमानुगानम् ॥

हाउहाउहाउ । आयुः । (त्रिः) । ज्योतिः । (द्विः) । ज्योताऽ३४ । औहोवा ॥
एऽ३ । वाग्ज्योती२३४५ः ॥ (दी.१३ । प.१० । मा.९)९(णो । २५९)

(२) ॥ ग्रीवानाम द्वितीयानुगानम् ॥

एवाहियेवाऽ२३४औहोवा । हिँहिँहिँहिँहिँऽ३४ । औहोवा ।
(त्रीणि-त्रिः) । हियेवा । हियग्राइ । हिइन्द्रा । हिपूषान् । हिदेवाऽ२३४५ः ॥

(दी. ३० । प. १४ । मा.१३)१०(भि । २६०)

(३) ॥ स्कन्धोनाम तृतीयानुगानम् ॥

वयोमनोवयःप्राणाः । वयश्चक्षुर्वयःश्रोत्राम् । वयोघोषोवयोव्रातम् ।

वयोऽ२३भूताउ । वाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी०७ । ६ ।मा० ४) ११(त्री ।२६१)

(४) ॥ कीकसोनामचतुर्थानुगानम् ॥

वयोमनाऽ२३ः । होइहौवाओऽ२३४वा । वयःप्राणाऽ२३ः । होइहौवाओऽ२३४वा।

वयश्चक्षूऽ२३ः । होइहौवाओऽ२३४वा । वयःश्रोत्राऽ२३म् । होइहौवाओऽ२३४वा।

वयोघोषाऽ२३ः । होइहौवाओऽ२३४वा । वयोव्राताऽ२३म् । होइहौवाओऽ२३४वा ।

वयोभूताऽ२३म् । होइहौवाओऽ२३४५वाऽ६ँ५६ँ॥ ऊऽ२३४५ ॥

(दी. ८ । प. १५ । मा. ३१)१२(णे । २६२)

(५) ॥ पक्षोनाम पञ्चमानुगानम् ॥

ऊऽ२र्क । हाउहाउहाउ । होऽ३वाक् ॥ ऊऽ२र्क । हाउहाउहाउ ।

होऽ३वाक् । ऊऽ२र्क । हाउहाउहाउ । होऽ३वाक् । धर्मोऽ२धर्मः । धर्मोऽ२धर्मः ।

धर्मोऽ२धर्मः ॥ (दी.१२ । प. १२ । मा.१८)१३(छे । २६३)

(६) ॥ तवश्यावीयम्, । पक्षोनाम षष्ठानुगानमपि ॥

धर्मविधर्म । (त्रिः) । सत्यंगाय । (त्रिः) । ऋतंवाद । (त्रिः) । हिँवँवऽ२ँ-

वँवऽ२ँ वम् ॥ (त्रिः)॥ (दी.३ ।प.१२ ।मा.३)१४(ठि । २६४)

(१५६-७) ॥ महादिवाकीर्त्यं आत्मा नाम सप्तमानुगानम् ॥

औहौहोवाहोइ । (द्विः) । औहौहोवाहाऽ३१उ । वाऽ२३ । भूऽ२३४वात् ।
बिभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्यंम । ध्वौहौहोवाहोइ । औहौहोवाहोइ । औहौहोवाहाऽ३१उ ।
वाऽ२३ । जाऽ२३४नात् । आयुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥ औहौहोवाहोइ ।
(द्विः)। औहौहोवाहाऽ३१उ । वाऽ२३ । वाऽ२३४र्द्धात् । वातजूतोयोआभि-
रक्षतित्मना ॥ औहौहोवाहोइ । (द्विः)। औहौहोवाहाऽ३१उ । वाऽ२३ ।
काऽ२३४रात् । प्राजाःपिपर्तिबहुधाविराजति । औहौहोवाहोइ । (द्विः) ।
औहौहोवाहाऽ३१उ । वाऽ२ ॥ ए । अभ्राजीज्योतिरभ्राजीऽ२३४५त् ॥

(दी. ७७ । प. ३० । मा. २२)१५(ञा । २६५)

(८) ॥ ऊरुनाम अष्टमानुगानम् ॥

भूमिः । (त्रिः) । अन्तरिक्षम् । (त्रिः) । द्यौः । (द्विः) । द्याऽ३४ । औहोवा ॥
एऽ३ । भूतायाऽ२३४५ ॥ (दी. ७। प. १२ । मा. ८)१६(छै । २६६)

(९) ॥ ऊरुनाम नवमानुगानम् ॥

द्यौः । (त्रिः) । अन्तरिक्षम् । (त्रिः) । भूमिः । (द्विः) । भूमाऽ३४ । औहोवा ॥
एऽ३ । आयुषेऽ२३४५ ॥ (दी.६ । प.१२ । मा. ८)१७(खै । २६७)

(१०) ॥ पुच्छंनाम दशमानुगानम् ॥

हाउहाउहाउ । ज्योतिः । (द्विः) । ज्योताऽ३४ । औहोवा ॥ ईऽ२३४५ ॥

(स्व. ८। प.६ । मा.५)१८(द्रु । २६८)

(१) ॥ एकविंशत्यनुगाने आदित्यव्रतम् । एतत्साम सुपर्णमित्याचक्षते ॥

सन्त्वाभूतान्यैरयन् । होइ ॥ सन्त्वाभव्यान्यैरयन् । होइ ॥ सन्त्वाभविष्यदैरयत् ।
होइ ॥ सन्त्वाभुवनमैरयत् । होइ ॥ सन्त्वाभूतमैरयत् । होइ ॥

(दी. १४ । प. १० । मा. १०)१९(नौ । २६९)

॥ इति आरण्यकगाने षष्ठस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

(१५७-१५९-१) ॥ आदित्यव्रतम् ॥

उवीऽ२उवि । उविहोऽ२उवि । (द्वे-त्रिः) । इतीऽ२इति । इतिहोऽ२इति ।
(द्वे-त्रिः)। असीऽ२असि । असिहोऽ२असि । (द्वे-त्रिः) । अरुरुचोदिवंपृथिवीम् ।
असीऽ२असि । असिहोऽ२असि । (त्रीणि-त्रिः) । पतिर । स्यापामोषधीनाऽ३म् ।
ओइ । पाताइराऽ२३४सी । (चत्वारि-त्रिः) । चाइ । त्रंदेवानामुदगादनीकम्॥
वाइश्वेषान्देवाना ँ्समिदजस्त्रंज्योतिराताताऽ२म् । होइ । (द्वे-त्रिः) ।
आयुर्यन् । (त्रिः) । अवः । (त्रिः) । चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्रेः ॥ सुवस्स ँ्-
सर्पस ँ्सार्पा ।(त्रिः)। जानावन ँ्सुवाऽ२ःसुवः । जनाऽ२वनाऽ२म् । सुवाऽ२ःसुवः।
(त्रीणि-त्रिः) आप्राद्यावापृथिवीआन्तारीऽ२३क्षाऽ३म् । सृपिप्रसृपीऐही । (त्रिः) ।

अस्तोषतस्वभानवाऐही । विप्रानविष्ठयामताऐही । ग्रावाणोबर्हिषिप्रियाऐही ।

इन्द्रस्यरँ्हियंबृहादैही । इन्द्राऽ२ । स्यराऽ२ । हियाऽ२म् । बृहदिन्द्र-

स्यर ँ्हियंबृहादैही । (चत्वारि-त्रिः)। सूर्यआत्माजगतस्तास्थुषाऽ२३श्चाऽ३ ।

अन्तश्चरतिरोचनाऐही । (त्रिः) । अस्यप्राणादपानताऐही । (त्रिः) ।

व्यख्यन्महिषोदिवामैही । (त्रिः)। प्रोएतिप्रोएति । (त्रिः) । प्रो । एति । (द्वे-द्विः) ।

प्रोऽ२३ । एताऽ३४औहोवा ॥ एऽ३ । देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी. १६३। प.१०७। मा८९)१(ठो । २७०)

॥ विंशतिः प्रथमः खण्ड ॥

(१६०-१) ॥ गन्धर्वाप्सरसां आनन्दप्रतिनन्दौ द्वौ । द्वयोस्सूर्यो गायत्री सूर्यः ॥

उविऽ२ । (त्रिः) । हिगिऽ२ । (त्रिः) । हिगिगि । (त्रिः) । आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदैही ।

(त्रिः)॥ असदन्मातरंपुराऐही (त्रिः) ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही । (त्रिः) । उविऽ२ ।

(त्रिः)। हिगिऽ२ । (त्रिः) । हिगिगि । (त्रिः) ॥

(दी.३६ । प.२७ । मा.६)२(सृ । २७१)

(१६०-२)

उवी । (त्रिः) । हिगी । (त्रिः) । हिगिगी । (त्रिः)। आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदैही ॥

असदन्मातरंपुराऐही ॥ पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही ॥ उवी । (त्रिः) । हिगी ।(त्रिः) ।

हिगिगी । (त्रिः) ॥ (दी. १२ । प. २७ । मा.२)३(चा । २७२)

(१६१-१६२-१) ॥ सौर्यातीषङ्गः । उदुत्यंगायत्रीचित्रंत्रिष्टुप्सूर्यः ॥

हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) । उदुत्यञा । (त्रिः) ।
चित्रंन्देवानामुदगादानीऽ२३काऽ३म् ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः)।
तवेदसम् । (त्रिः)। चक्षुर्मित्रस्यवरुणास्याआऽ२३ग्नाऽ३इः ॥ हाउहाउहाउ ।
भ्राजाओवा ।(त्रिः)। देवंवहा । (त्रिः) । आप्राद्यावापृथिवीआन्तारीऽ२३क्षाऽ३म् ॥
हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) तिकेतवः । (त्रिः) । सूर्यआत्माजगतस्ता-
स्थुषाऽ२३श्चाइ ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) । दृशेविश्वा । (त्रिः) ।
सूर्यआत्माजगतस्तास्थुषाऽ२३श्चाऽ३ ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) ।
यसूर्यम् । (द्विः) । यसूऽ२३रियाउ । वाऽ३ ॥ एऽ३ ॥ देवादिवाज्योती२३४५ः ॥

(दी. १३६ । प. ५० । मा.५४)४(डी । २७३)

(१) ॥ इन्द्रस्य सधस्थम् । इन्द्रोऽनुष्टुप्सूर्यः ॥

हाउहाउहाउ । सहोभ्राज । (द्विः) । सहोभ्राजा । पोभ्राजा । (द्विः) पोभ्राज ।
अभ्राजीत् । (त्रिः) । व्यभ्राजीत् ।(त्रिः)। अदिद्युतत् । (त्रिः) । अदिद्युतद्विश्वं -
भूतँ सहोबृऽ२हात् ॥ अदिद्युतदभ्राट्प्राऽ२भ्राट् ॥ अदिद्युतद्धर्मोअरूरुऽ२चात्॥
अदिद्युतद्घर्म्मउषसोअरोचाऽ२याः । हाउहाउहाउ । सहोभ्राज । (द्विः) ।
सहोभ्राजा । पोभ्राजा । (द्विः) । पोभ्राज । अभ्राजीत् । (त्रिः) । व्यभ्राजीत् ।

(त्रिः) । अदिद्युतत् । (द्विः) । अदिद्युताऽ३त् । हाउवा ॥ ए । अदिद्युतद्घर्मो-
अरुरुचदुषसांदिविसूर्योविभातीऽ२३४५ ॥ (दी.७४ । प.३९मा.३३)५(धि । २७४)

(१६३-१) ॥ मरुतां भूतिसाम । मरुतो गायत्री सूर्यः ॥

औहोऔहोवा । होइ । (द्वे-द्विः) । औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ ।
भूऽ२३४वात् । अन्तश्चरतिरोचना ॥ औहोऔहोवा । होइ । (द्वे-द्विः) ।
औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ । जाऽ२३४नात् । अस्यप्राणादपानाती ॥
औहोऔहोवा । होइ । (द्वे-द्विः) । औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ ।
वाऽ२३४र्द्धात् । व्यख्यन्महिषोदिवम् ॥ औहोऔहोवा । होइ । (द्वे-द्विः) ।
औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ । काऽ२३४रात् । औहोऔहोवा । होइ ।
(द्वे-द्विः)। औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ । भूऽ२३४तीः । औहोऔहौवा ।
होइ । (द्वे-द्विः) । औहोऔहोवा । हाऽ३१उ ॥ वाऽ२ । अभ्राजीज्ज्योतिरभ्राजीत् ।
औहोऔहोवा । होइ । (द्वे-द्विः) । औहोऔहोवा । हाऽ३१उ । वाऽ२३ ॥
एऽ३ । सर्वान्कामानशीमाहीऽ२३४५ ॥

(दी. १२१ । प.६०। मा.४९)६(ञो । २७५)

(१६४-१) ॥ सार्पराज्ञ्यानि त्रीणि । प्रजापतिर्गायत्री सूर्यः ॥

हाउहाउहाउवा । ईन्दूः । भ्राजाओवा । (त्रिः) । आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदैही ॥
हाउहाउहाउवा । ईडा । भ्राजाओवा । (त्रिः) । असदन्मातरंपुराऐही ॥

हाउहाउहाउवा । सात्यम् । भ्राजाओवा । (त्रिः) । पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही ॥

हाउहाउहाउवा ॥ दीयौः ॥ (दी.४८।प.२०।मा.२६)७ (णू। २७६)

(१६५-१)

हाउहाउहाउवा । भूतम् । भ्राजाओवा । (त्रिः)। अन्तश्चरतिरोचनाऐही ॥

हाउहाउहाउवा । पृथिवी । भ्राजाओवा ।(त्रिः)। अस्यप्राणादपानताऐही ॥

हाउहाउहाउवा । साहः । भ्राजाओवा ।(त्रिः)। व्यख्यन्महिषोदिवामैही ॥

हाउहाउहाउवा ॥ तेजः ॥ (दी.५१। प.२०। मा.२६)८(ङ्गू। २७७)

(१६६-१)

हाउहाउहाउवा । आपः । भ्राजाओवा ।(त्रिः)। त्रिँ शद्धामविराजताऐही ॥

हाउहाउहाउवा । ऊषा । भ्राजाओवा ।(त्रिः)। वाक्पतङ्गायधीयताऐही ॥

हाउहाउहाउवा । (त्रिः) । दीशः । भ्राजाओवा । (त्रिः) । प्रतिवस्तोरहद्युभाऐही ॥

हाउहाउहाउवा । ज्योतिः ॥ (दी.५१ । प.२०। मा.२७)९(ङे । २७८)

(१) ॥ सर्पस्य धर्मरोचनमिन्द्रस्य वा ॥ धर्मो (सर्पो)ऽनुष्टुप्सूर्यः ॥

उद्यँल्लोकानरोचयः । होइ ॥ इमाँल्लोकानरोचयः । होइ ॥ प्रजाभूतमरोचयः ।

होइ ॥ विश्वंभूतमरोचयः । होऽ२हाऽ२३४औहोवा ॥ घर्मोज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.१६ । प.९। मा.९)१०(धो । २७९)

(१६७-६९-१) ॥ षडैन्द्राः परिधय ऋतूनां प्रथमं । इन्द्रो गायत्री सूर्यः ॥

हाउहाउहाउ । आजाओवा । (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः । उदुत्यंजाताऽ३वा-
इदाऽ१साऽ२म् ॥ देवंहन्तिऽ३काइता१वाऽ२ः ॥ दृशेविश्वायाऽ३सूराऽ१याऽ२म् ॥
श्री ॥ अपत्येतायाऽ३वोयाऽ१थाऽ२ । नक्षत्रायन्तीऽ३यात्तूऽ१भाऽ२इः ॥
सूरायविश्वाऽ३चाक्षाऽ१साऽ२इ ॥ श्री ॥ अदृश्रन्नस्याऽ३काइताऽ१वाऽ२ः ॥
विरश्मयोजाऽ३नाँ्आऽ१नूऽ२ ॥ आजन्तोअग्राऽ३योयाऽ१थाऽ२३ । हाउहाउहाउ ।
(त्रिः) । आजाओवा । (द्विः) । आजाऽ३ओऽ५वाऽ६ँ्५६ँ् ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.४०। प.१९। मा.२५)११(श्रु । २८०)

॥ दश द्वितीयः खण्डः ॥२॥

(१६७-६९-२)

हाउहाउहाउ । शुक्राओवा । (त्रिः) । दिदीहिविश्वतस्पृथुः । उदुत्यंजाताऽ३वाइदा-
ऽ१साऽ२म् ॥ देवंवहन्तीऽ३काइताऽ१वाऽ२ः ॥ दृशेविश्वायाऽ३सूराऽ१याऽ२म् ॥
श्री ॥ अपत्येतायाऽ३वोयाऽ१थाऽ२ ॥ नक्षत्रायन्तीऽ३यात्तूऽ१ऽभाऽ२इः ॥
सूरायविश्वाऽ३चाक्षाऽ१साऽ२इ ॥ श्री ॥ अदृश्रन्नस्याऽ३काइताऽ१वाऽ२ः ॥
विरश्मयोजाऽ३नाँ्आऽ१नूऽ२ ॥ आजन्तोअग्राऽ३योयाऽ१थाऽ२३ ।हाउहाउहाउ ।
शुक्राओवा । (द्विः) । शुक्राऽ३ओऽ५वाऽ६ँ्५६ँ् ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी.३४ । प.१९। मा.२५)१२(ध्रु । २८१)

(१७०-७२-३)

हाउहाउहाउ । भूताओवा । (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः । तरणिर्विश्वाऽ३-
दार्शाऽ१ताऽ२ः ॥ ज्योतिष्कृदसीऽ३सूराऽ१याऽ२ ॥ विश्वमाभासीऽ३-
रोचाऽ१नाऽ२म् ॥ श्री ॥ प्रत्यङ्देवाऽ३नाम्वाऽ१इशाऽ२ः ॥ प्रत्यङ्ङु-
देषिऽ३मानूऽ१षाऽ२न् ॥ प्रत्यङ्विश्व ँसुऽ३वार्दृऽ१शाऽ२इ ॥ श्री ॥
येनापावकाऽ३चाक्षाऽ१साऽ२ ॥ भुरण्यन्तंजाऽ३ना ँआऽ१नूऽ२ ॥
त्वंवरुणाऽ३पाश्याऽ१साऽ२३इ । हाउहाउहाउ । भूताओवा । (द्विः) ।
भूताऽ३ओऽ५वाऽ६ ँ ५६ ँ ॥ ईऽ२३४५ ॥ (दी.३७ । प.१९ । मा.२१)१३(झ । २८२)

(१७०-७२-४)

हाउहाउहाउ । तेजाओवा । (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः । तरणिर्विश्वाऽ३-
दार्शाऽ१ताऽ२ः ॥ ज्योतिष्कृदसीऽ३सूराऽ१याऽ२ ॥ श्री ॥ विश्वमाभासि-
ऽ३रोचाऽ१नाऽ२म् ॥ श्री ॥ प्रत्यङ्देवाऽ३नाम्वाऽ१इशाऽ२ः ॥ प्रत्यङ्ङुदेषिऽ३-
मानूऽ१षाऽ२न् ॥ प्रत्यङ्विश्व ँसुऽ३वार्दृऽ१शाऽ२इ ॥ श्री ॥ येनापावका-
ऽ३चाक्षाऽ१साऽ२ । भुरण्यन्तंजाऽ३ना ँआऽ१नूऽ२ ॥ त्वंवरुणाऽ३पाश्या-
ऽ१साऽ२३इ। हाउहाउहाउ । तेजाओवा । (द्विः) । तेजाऽ३ओऽ५वाऽ६ ँ५६ ँ॥
ईऽ२३४५ ॥ (दी.३७ । प. १९। मा. २१)१४(२८३)

(१७३-७५-५)

हाउहाउहाउ । सत्याओवा । (त्रिः) । दिदीहिविश्वतस्पृथुः । उद्यामेषिरा-

ऽ३जाःपाऽ१र्थूऽ२ ॥ अहामिमानोऽ३आक्तुऽ१भाऽ२इः ॥ पश्यंजन्मानीऽ३-

सूराऽ१याऽ२ ॥ श्री ॥ अयुक्तसप्ताऽ३शून्ध्यूऽ१वाऽ२ः ॥ सूरोरथस्याऽ३-

नाप्त्राऽ१याऽ२ः ॥ताभिर्यातिस्वाऽ३यूक्ताऽ१इभीऽ२ः ॥ श्री ॥ सप्तत्वाहरीऽ३-

तोराऽ१थाऽ२इ ॥ वहन्तिदेवाऽ३सूराऽ१याऽ२ ॥शोचिष्केशंविऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२३ ।

हाउहाउहाउ । सत्याओवा । (द्विः) । सत्याऽ३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ ॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३६ । प. १९ । मा. २१)१५(घ्र । २८४)

(१७३-७५-६)

हाउहाउहाउ । ऋताओवा । (त्रिः) । दिदीहिविश्वतस्पृथुः । उद्यामेषिरा-

ऽ३जाःपाऽ१र्थूऽ२ ॥ अहामिमानोऽ३आक्तूऽ१भाऽ२इः ॥ पश्यंजन्मानीऽ३-

सूराऽ१याऽ२ ॥ श्री ॥ अयुक्तसप्ताऽ३शून्ध्यूऽ१वाऽ२ः ॥ सूरोरथस्याऽ३-

नाप्त्राऽ१याऽ२ः ॥ ताभिर्यातिस्वाऽ३यूक्ताऽ१इभीऽ२ः ॥ श्री ॥ सप्तत्वाहरीऽ३-

तोराऽ१थाऽ२इ ॥ वहन्तिदेवाऽ३सूराऽ१याऽ२ ॥शोचिष्केशंवीऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२३ ।

हाउहाउहाउ । ऋताओवा । (द्विः) । ऋता३ओऽ५वाऽ६ँ५६ँ ॥ ईऽ२३४५ ॥

(दी. ३६ । प.१९ । मा. २१)१६(ग्घ्र । २८५)

(१) ॥ वागादिपित्र्यंसाम (वाङ्मनः) । ऋतवोऽनुष्टुप्सूर्यः ॥

वाक् । मनःप्राणःप्राणोपानोव्यानश्चक्षुश्रोत्रँ्शर्मवर्मभूतिःप्रतिष्ठा । आदित्यः-

पित्र्यम् ।(त्रिः)। आयुःपित्र्यम् । (त्रिः) ॥

(दी. १५ । प.८ । मा.७)१७(बे । २८६)

(१) ॥ चक्षुस्साम । मित्रावरुणौ गायत्री सूर्यः ॥

अन्तर्देवेषूऽ३रोचाऽ१साऽ२इ । (त्रिः) । अन्तश्चरतीऽ३रोचाऽ१नाऽ२ ॥

अस्यप्राणादाऽ३पानाऽ१ताऽ२इ ॥ व्यख्यन्महीऽ३षोदाऽ१इवाऽ२म् ॥

अन्तर्देवेषूऽ३रोचाऽ१साऽ२इ । (द्विः) । अन्तर्देवेषूऽ३रोऽ२३ । चाऽ२ । साऽ२३४ ।

औहोवा ॥ एऽ३ । देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः ॥

(दी.२०।प.१४।मा.९)१८(भो।२८७)

(१७६) ॥ श्रोत्रँ्साम । उदुत्यं गायत्रीचित्रंत्रिष्टुप्सूर्यः ॥

हाउहाउहाउ । भ्राजाभ्राज । (त्रिः)। आयूरायुः । (त्रिः) । उदुत्यंजा । (त्रिः) ।

तवेदसम् । (त्रिः) । चित्रन्देवानामुदगादानीऽ२३काऽ३म् ॥ हाउहाउहाउ ।

भ्राजाभ्राज । (त्रिः) । आयूरायुः । (त्रिः) । देवंवहा । (त्रिः)। चक्षुर्मित्रस्यवरुणास्या-

आऽ२३ग्राऽ३इः ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाभ्राज । (त्रिः) । आयूरायुः । (त्रिः) ।

तिकेतवः । (त्रिः) । आप्राद्यावापृथिवीआन्तारीऽ२३क्षाऽ३म् ॥ हाउहाउहाउ ।

भ्राजाभ्राज । (त्रिः) । आयूरायुः । (त्रिः) । दृशेविश्वा । (त्रिः) । सूर्यआत्माजगत-

अ २ २र र र र १ र २ र १ र २
स्तास्थुषाऽ२३श्चाऽ३ । हाउहाउहाउ । भ्राजाभ्राज । (त्रिः) । आयूरायुः ।
घो च चो घो

१ र २ १ २ २
(त्रिः) । यसूर्यम् । (द्विः) । यसूऽ२३रियाउ । वाऽ३ ॥ एऽ३ ।
का कः चा चा

२र १र र र ३ । । ।
देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः ॥ (दी.११३ । प. ६० । मा. ४७)१२(णे । २८८)
शि

(१) ॥ इन्द्रस्य शिरस्साम । इन्द्रो गायत्री त्रिष्टुप्सूर्यः ॥

२र र र ३र २र ३र र २ र २
हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) । उदुत्यंजा । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा ।
च टी च च

१ २ १ रर अ २ २र र र ३र २र ३र र
आर्चिः । इन्द्रन्नरोनेमधिताहावाऽ२३न्ताऽ३इ ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा ।
का घो च टी

२र १ २
(त्रिः) । तवेदसम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । शोचिः ।
च च का

र र र ३र २र ३र र २र र
हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) । देवंवहा । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा ।
च टी च च

१ २ १ र र अ २ २र र र ३र २र ३र र
तापः । यत्पार्यायुनजताइधीयाऽ२३स्ताऽ३ः॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा ।
का घो च टी

२ र १ २ र र र
(त्रिः) । तिकेतवः । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । हारः । हाउहाउहाउ ।
च च का च

३र २र ३र र २ र र १ २
भ्राजाओवा । (त्रिः) । दृशेविश्वा । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । साहः ।
टी च च का

१र र र र अ २ २र र र ३र २र ३र र
शूरोनृषाताश्रवसाश्चाकाऽ२३माऽ३इ ॥ हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) ।
घो च टी

२ र १ २ २र र र ३र २र ३र र
यसूर्यम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । नारः । हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा ।
च च का च टी

२र र १ —
(त्रिः) । दृशेविश्वा । (त्रिः) । हाउहाउहाउवा । भाऽ२ः ।
च च का

१र र र अ २ २र र र ३र २र ३र र
आगोमतिव्रजेभजातूवाऽ२३न्नाऽ३ः । हाउहाउहाउ । भ्राजाओवा । (त्रिः) ।
घो च टी

२ र २ । । ।
यसूर्यम् । (त्रिः) । हाउहाउहाउवाऽ३ ॥ ईऽ२३४५ ॥
च चा दू

(दी.१६४। प.७६। मा.९६)२०(त्रू । २८९)

(१) ॥ आदित्यस्यात्मा । आदित्योऽनुष्टुबादित्यात्मा ॥

१ २र १ २र १ र २ १ २ १ २र १
उन्नयामि । होइ ॥ (द्वे-त्रिः) । आदित्यंप्राञ्चंयन्तमुन्नयामि । होइ । (द्वे-त्रिः) ।
का क यौ क
२ र र १र २र १ र २ १ र र र
अहोरात्राण्यरित्राणि । होइ ।(द्वे-त्रिः) । द्यौर्नौर्हाउ । (त्रिः) । तस्यामसावा-
चो क का
र २ १ र र रर २ १र र २
दित्यईयतेहाउ (त्रिः) । तस्मिन्वयमीयमानईयामहेहाउ ।।(त्रिः)। ईयामहेहाउ ।
का का का
१र र २ २ १र र २ १ २र
(द्विः) ॥ ईयामहेऽ३ । हाउवा ॥ प्रियेधाम ँस्त्रियक्षरे । (द्विः) ।
कि च छु
१र र २ १ २ ३ । । ।
प्रियेधाम ँस्त्रियक्षारेऽ२३४५ ॥ (दी. ६५ । प. ३४ । मा. २७)२१(भे । २९०)
जौ

॥ दश तृतीयः खण्डः ॥३॥

॥ इति आरण्यकगाने षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥

॥ इति शुक्रिय नाम षष्ठं पर्वं समाप्तम् ॥

(शुक्रियपर्वणि ४० सामानि)

—*—

अथ महानाम्नी-पर्व

(१) ॥ महानाम्नी । सामः इन्द्रो विराडिन्द्रः, इन्द्रः शक्वरीन्द्रः ॥

एऽ२ । विदामघवन्विदाः ॥ गातुमनुश ँसिषः । दाइशाऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ३४डा ॥ एऽ२ । शिक्षाशचीनाम्पाताइ ॥ पूर्वीणाम्पुरूऽ२ । वासाऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ३४डा । आभिष्ट्वमभाऽ२इ । ष्टिभिराऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा ।

स्वर्ण्णाशूऽ२ः । हाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा । प्रा । चेतनप्रचेतया ॥ ईन्द्रा ॥

द्युम्नायनाऽ२इषाइ। इडा ॥ ईन्द्रा ॥ द्युम्नायनाऽ२इषाइ । अथा ॥ ईन्द्रा ॥

द्युम्नायनाऽ२इषाइ । इडा । एवाहिशक्रोरायेवाजायवाऽ१ज्रीऽ३वाः ।

शाविष्ठवज्रिन्नाऽ३ । जासाइ॥ म ँहिष्ठवज्रिन्नाऽ२३हो ॥ जासाऽ३१उवाऽ२३ ॥

इट्इडाऽ२३४५ ॥ आया ॥ हिपिबमाऽ२त्सुवा ॥ इडाऽ२३४५ ॥

(दी. २२ । प. ३६ । मा.२०)१(चौ । १)

(२)

एऽ२ । विदारायेसुवीरियाम् ॥ भुवोवाजानाम्पतिर्वशाऽ२ ँ । अनुआऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ३४डा ॥ एऽ२ । म ँहिष्ठवज्रिन्नृञ्जसाइ । यःशविष्ठःशूराऽ२ । णाऽ३१-

उवाऽ२३ । ईऽ३४डा ॥ योम ँहिष्ठोमघोऽ२ । नाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा ॥

अ ँशुर्नशोचाऽ२इः । हाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा । चाइ । कित्वोअभिनोनया ॥

ईन्द्रो ॥ विदेतमूऽ२स्तुहाइ । इडा ॥ ईन्द्रा ॥ विदेतमूऽ२स्तुहाइ । अथा ॥

इन्द्रा । विदेतमूऽ२स्तुहाइ । इडा । ईशेहिशक्रस्तमूतयेहावाऽ१माऽ३हाइ ।

जेतारमपराऽ३ । जाइताम् ॥ सनःस्वर्षदताऽ२३होइ ॥ द्वाइषाऽ३१उवाऽ२३ ॥

इट्इडाऽ२३४५ ॥ क्रातूः ॥ छन्दऋताऽ२म्बृहात् ॥ इडाऽ२३४५ ॥

(दी.२३ । प. ३५ । मा.२४)२(टी । २)

(३)

एऽ२ । इन्द्रन्धनस्यसातयाइ ॥ हवामहेजेतारमपराऽ२ । जितमाऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ३४डा ॥ एऽ२ । सनःस्वर्षदतिद्विषाः ॥ सानःस्वर्षदताऽ२इ ।

द्विषआऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा । पूर्वस्ययत्तआऽ२ । द्रिवआऽ३१उवाऽ२३ ।

ईऽ३४डा । अँ्शुर्मदायाऽ२ । हाऽ३१उवाऽ२३ । ईऽ३४डा । सू । म्नआधेहि-

नोवसाउ ॥ पूर्त्तीः ॥ शाविष्ठशाऽ२स्यताइ । इडा ॥ पूर्त्तीः ॥शाविष्ठशाऽ२स्याताइ ।

अथा । पूर्तिः । शाविष्ठशाऽ२स्याताइ । इडा ॥ वशीहिशक्रोनूनन्तन्नव्यँ्साऽ१-

न्याऽ३साइ । प्राभोजनस्यवाऽ३ । त्राहान् ॥ समर्येषुब्रवाऽ२३होइ ॥

वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ इट्इडाऽ२३४५ ॥ शूरो ॥ योगोषुगाऽ२च्छाताइ ॥

इडा ॥ साखा ॥ सुशेवोऽ२द्वायूः ॥ इडाऽ२३४५ ॥

(दी. १८ । प.३९ । मा.२५)३(ढु । ३)

(४) ॥ अथ पञ्च पुरीषपदानि ॥ गायत्री ॥ पदपंक्तिः । (पंक्तिर्वा) इन्द्रः ॥

१ २ र १ ।।। १ २र २ ५
आइवा ॥ हियेवाऽ२३४५ । होइ ॥ हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
का छ क क छौ ची

१ २ १ ।।। १ २र २ ५
आइवा ॥ हियग्राऽ२३४५इ । होइ ॥ हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
का छ क क छौ ची

१ २ १ ।।। १ २र २ ५
आइवा ॥ हिइन्द्राऽ२३४५ । होइ ॥ हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
का छ क क छै ची

१ २ र १ ।।। १ २र २ ५
आइवा ॥ हिपूषाऽ२३४५न् । होइ ॥ हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
का छ क क छौ ची

१ २ र १ ।।। १ २र २ ५
आइवा ॥ हिदेवाऽ२३४५ः । होइ ॥ हो । वाहाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ३४डा ॥
का छ क क छौ ची

(दी. ८ । प. ३० । मा. १९)४(णो । ४)

॥ इति पञ्च पुरीषपदानि ॥

(१) ॥ उद्वयामेकम् साम ॥ (शंयादपत्यः) ॥

५ ५ २ १ अ — १र अ — १
उद्वयाऽ६ँ्मे ॥ तमाऽ३सास्पांराऽ२इ । ज्योतिपःश्यन्ताउत्ताराऽ२म् ॥ स्वःपश्यन्ता-
पा छो का

अ — र१र र र ३ ५रर १ २ १र २ ३ २
उत्ताराऽ२म् ॥ देवंदेवत्रासूराऽ२याऽ२३४औहोवा ॥ अगन्मज्योतिरुत्तामाऽ१म् ॥
का जे गौ

(दी. ८ । प. ६ । मा. ७)५(टे । ५)

॥ अथ भारुण्डसाम ॥

२र र र १ — १ र २ १ र २ १र र २
हाउहाउहाउ । ऊऽ२वदः । (त्रिः) । वदोवदः । (त्रिः) । वदोनृम्णानिपुरायः ।
च कै का धि

१ २ १ २र र र १ २ १ २र १
(त्रिः) । यमोहाउ । (त्रिः) । पितरोहाउ । भारुण्डोहाउ । (त्रिः) । इमाँ स्तोमाम् ।
का का चो रो

२ १ २र १ २र १ २ ४ ५ ४ ५ २र र र १ — १
अर्हातेजा । तावेदसहोयेऽ३ । होयेहोये ॥ हाउहाउहाउ । ऊऽ२वदः । (त्रिः) ।
रो घी तु च कै

र २ १ र २ १र र २ १ २
वदोवदः । (त्रिः) । वदोनृम्णानिपुरायः । (त्रिः) । यमोहाउ । (त्रिः) ।
का धि का

१ २र र २र १ २ १ २ १ २ १
पितरोहाउ । (त्रिः) । भारुण्डोहाउ । (त्रिः) । राथामिवा । संमाहेमा ।
का चो रो कै

२र १ २ ४ ५ ४ ५ २र र र १ — १ र २
मानीषयहोयेऽ३ । होयेहोये ॥ हाउहाउहाउ । ऊऽ२वदः। (त्रिः) वदोवदः ।
घी तु च कै का

१ र २ १र र २ १ २ १ २र र
(त्रिः) । वदोनृम्णानिपुरायः । (त्रिः) यमोहाउ । (त्रिः) । पितरोहाउ । (त्रिः)।
धि का का

र १ २ १ २ १ २ १ २ १ १ २ १ २ ४ ५ ४ ५
भारुण्डोहाउ । (त्रिः) । भद्राहिनाः । प्रामातिरा । स्यासँ सदहोयेऽ३ ।होयेहोये ॥
चो रो रो घी तु

र र र १ — १ र २ १ र २ १र र २
हाउहाउहाउ । ऊऽ२वदः । (त्रिः) । वदोवदः । (त्रिः) । वदोनृम्णानिपुरायः ।
च कै का धि

१ २ १ २र र र १ २ १ २ १
यमोहाउ । (त्रिः) । पितरोहाउ । (त्रिः) । भारुण्डोहाउ । (त्रिः) अग्नाइसख्याइ ।
का का चो रो

२र १ २र १ २ १ २ ४ ५ ४ ५ २र र र — १
माराइषामा । वायंतवहोयेऽ३ ॥ होयेहोये ॥ हाउहाउहाउ । ऊऽ२वदः ।
रो घी तु च कै

र २ १ र २ १र र २ १ २
(त्रिः)। वदोवदः । (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः । (त्रिः)। यमोहाउ । (त्रिः) ।
का धि का

१ २र र र १ २ र न २ र
पितरोहाउ । (त्रिः)। भारुण्डोहाउ । (द्विः) । भारुण्डोऽ३हाउ । वा ॥ ए ।
का चो ज़ं च च

१ र र २ १र र २ १ र २ १ २र र र
वदोवदोनृम्णानिपुरायययमोवःपितरोभारुण्डः । (द्वे-द्विः) । ए ।
ल च

१ र र २ १र र २ १ र २ १ २र र ३ । । ।
वदोवदोनृम्णानिपुरायययमोवःपितरोभारुण्डाऽ२३४५ः ॥
डू

(दी.१५४ । प.११८ । मा.११३)७(दि ।)

—✱—

।। ॐ नमः सामवेदाय ।।

नारदीया शिक्षा

प्रथमः प्रपाठके

अथ प्रथमः खण्डः

अथाऽतः स्वरशास्त्राणां सर्वेषां वेद निश्चयम् ।
उच्च नीच विशेषाद्धि स्वरान्यत्वं प्रवर्तते ।।१।।
आर्चिकं गाथिकं चैव सामिकं च स्वरान्तरम् ।
कृतान्ते स्वरशास्त्राणां प्रयोक्तव्यं विशेषतः ।।२।।
एकान्तरस्वरोह्यृक्षु गाथासु द्व्यन्तरः स्वरः ।
सामसु त्र्यन्तरं विद्यादेतावत्स्वरतोऽन्तरम् ।।३।।
ऋक्-साम-यजुरङ्गानि ये यज्ञेषु प्रयुञ्जते ।
अविज्ञानाद्धि शास्त्राणां तेषां भवति विस्वरः ।।४।।
मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराघात् ।।५।।
प्रहीणः स्वरवर्णाभ्यां यो वि मन्त्रः प्रयुज्यते ।
यज्ञेषु यजमानस्य रुशत्यायुः प्रजां पशून् ।।६।।
उरः कण्ठशिरश्चैव स्थानानि त्रीणि वाङ्मये ।
सवनान्याहुरेतानि साम वाऽप्यर्थतोन्तरम् ।।७।।
उरःसप्तविचारं स्यात् तथा कण्ठस्तथा शिरः ।
न च सप्तोरसि व्यक्तास्तथा प्रावचनो विधिः ।।८।।
कठकाल-प्रवृत्तेषु तैत्तिरीयाऽऽह्वरकेषु च ।
ऋग्वेदे सामवेदे च वक्तव्यः प्रथमः स्वरः ।।९।।

ऋग्वेदस्तु द्वितीयेन तृतीयेन च वर्तते ।
उच्च-मध्यम-सङ्घातः स्वरो भवति पार्थिवः ।।१०।।
तृतीय-प्रथम-क्रुष्टान् कुर्वन्त्याह्वरकाः स्वरान् ।
द्वितीयाद्यांस्तु मन्द्रान्तांस्तैत्तिरीयाश्चतुःस्वरान् ।।११।।
प्रथमश्च द्वितीयश्च तृतीयोऽथ चतुर्थकः ।
मन्द्रः क्रुष्टो ह्यतिस्वार एतान् कुर्वन्ति सामगाः ।।१२।।
द्वितीय प्रथमावेतौ ताण्डिभाल्लविनां स्वरौ ।
तथा शातपथावेतौ स्वरौ वाजसनेयिनाम् ।।१३।।
एते विशेषतः प्रोक्ताः स्वरा वै सार्ववैदिकाः ।
इत्येतच्चरितं सर्वं स्वराणां सार्ववैदिकम् ।।१४।।

अथ द्वितीयः खण्डः

सामवेदे तु वक्ष्यामि स्वराणां चरितं यथा ।
अल्पग्रन्थं प्रभूतार्थं श्राव्यं वेदाङ्गमुत्तमम् ।।१।।
तान-राग-स्वर-ग्राम मूर्छनानान्तु लक्षणम् ।
पवित्रं पावनं पुण्यं नारदेन प्रकीर्तितम् ।।२।।
शिक्षामाहु र्द्विजातीनामृग्यजुःसामलक्षणम् ।
नारदीयमशेषेण निरुक्तमनुपूर्वशः ।।३।।
सप्तस्वरास्त्रयोग्रामाः मूर्छनास्त्वेकविंशतिः ।
ताना एकोनपञ्चशदित्येतत्स्वरमण्डलम् ।।४।।
षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।
पञ्चमो धैवतश्चैव निषादः सप्तमःस्वरः ।।५।।
षड्ज-मध्यम-गान्धारास्त्रयो ग्रामाः प्रकीर्तिताः।
भूर्लोकाज्जायते षड्जो भुवर्लोकाच्च मध्यमः ।।६।।
स्वर्गान्नाऽन्यत्र गान्धारो नारदस्य मतं यथा ।
स्वररागविशेषेण ग्रामरागा इति स्मृताः ।।७।।
विंशतिं मध्यमग्रामे षड्जग्रामे चतुर्दश ।
तानान्पञ्चदशेच्छन्ति गान्धारग्राम माश्रितान् ।।८।।

नन्दी विशाला सुमुखी चित्रा चित्रवती सुखा ।
बला या चाऽथ विज्ञेया देवानां सप्त मूर्छनाः ।।९।।
आप्यायनी विश्वभृता चन्द्रा हेमा कपर्दिनी ।
मैत्री च बार्हती चैव पितृणां सप्त मूर्छनाः ।।१०।।
षड्जेतूत्तरमन्द्रास्यांऽदृषभेचाभिरुद्गता ।
अश्वक्रान्ता तु गान्धारे तृतीया मूर्च्छना स्मृता ।।११।।
मध्यमे खलु सौवीरा हृष्यका पञ्चमे स्वरे ।
धैवते चाऽपि विज्ञेया मूर्च्छना तूत्तरायता ।।१२।।
निषादाद्रजनीं विद्यात् ऋषीणां सप्तमूर्च्छनाः ।
उपजीवन्ति गन्धर्वा देवानां सप्त मूर्छनाः ।।१३।।
पितॄणां मूर्च्छनाःसप्त तथा यक्षा न संशयः ।
ऋषीणां मूर्च्छनाःसप्त यास्त्विमा लौकिकाः स्मृताः ।।१४।।
षड्जः प्रीणाति वै देवानृषीन् प्रीणातिचर्षभः ।
पितॄन् प्रीणाति गान्धारो गन्धर्वान् मध्यमः स्वरः ।।१५।।
देवान् पितृनृषीश्चैव स्वरः प्रीणाति पञ्चमः ।
यक्षन्निषादः प्रीणाति भूतग्रामश्च धैवतः ।।१६।।

अथ तृतीयः खण्डः

(गानस्य तु दशविधा गुणवृत्तिः)

रक्तं पूर्णमलङ्कृतं प्रसन्नं व्यक्तं विक्रुष्टं ।
श्लक्ष्णं समं सुकुमारं मधुरमिति गुणाः ।।१।।

तत्र रक्तन्नाम-वेण-वीणा-स्वराणामेकीभावे रक्तमित्युच्यते ।।२।।

पूर्णन्नाम स्वरश्रुतिपूरणात् छन्दः पादाक्षरसंयोगात्पूर्णमित्युच्यते ।।३।।

अलङ्कृतन्नाम-उरसि शिरसि कण्ठयुक्तमित्यलङ्कृत मित्युच्यते ।।४।।

प्रसन्नन्नाम-अपगतगद्गदं निर्विशङ्कं प्रसन्नमित्युच्यते ।।५।।

व्यक्तन्नाम-पद-पदार्थ-प्रकृति-विकारागम-लोप-कृत्तद्धितसमास-धातु-निपातोपसर्ग-स्वर-लिङ्ग-वृत्ति-वार्त्तिक-विभक्त्यर्थ वचनानां सम्यगुपपादने व्यक्तमित्युच्यते ।।६।।

विक्रुष्टन्नामोच्चैरुच्चारितं व्यक्तपदाक्षरमिति विक्रुष्टम् ।।७।।

श्लक्ष्णन्नामाद्रुतमविलम्बितमुच्चनीचप्लुतसमाहारं ।
हेलयतालोपनयादिभिरुपपादनादिभिः श्लक्ष्णमित्युच्यते ।।८।।
समन्नाम-आवाप-निर्वाप-प्रदेश-प्रत्यन्तर-स्थानानां-समासःसममित्युच्यते ।।९।।
सुकुमारन्नाम-मृदुपदवर्णस्वरकुहरणयुक्तं सुकुमारमित्युच्यते ।।१०।।
मधुरन्नाम-स्वभावोपनीत ललित-पदाक्षर-गुणसमृद्धम्मधुरमित्युच्यते ।।११।।
एवमेतैर्दशभिगुणैर्युक्तं गानं भवति ।
एतद्विपरीतागीतिदोषाः उच्यन्ते । भवन्ति चाऽत्र श्लोकाः -

शङ्कितं भीतमुद्घृष्टमव्यक्तमनुनासिकम्
काकस्वरं शिरसि गतं तथा स्थानविवर्जितम् ।।१२।।
विस्वरं विरसञ्चैव विश्लिष्टं विषमाहतम् ।
व्याकुलन्तालहीनञ्च गीतिदोषाश्चतुर्दश ।।१३।।
आचार्याःसममिच्छन्ति पदच्छेदन्तु पण्डिताः ।
स्त्रियो मधुरमिच्छन्ति विक्रुष्टमितरे जनाः ।।१४।।

अथ चतुर्थः खण्डः

पद्मपत्रप्रभःषड्ज ऋषभः शुकपिञ्जरः
कनकाभस्तु गान्धारो मध्यमः कुन्द सप्रभः ।।१।।
पञ्चमस्तु भवेत्कृष्णः पीतकं धैवतं विदुः ।
निषादःसर्ववर्णश्च इत्येतत्स्वरवर्णताः ।।२।।
पञ्चमो मध्यमः षड्जः इत्येते ब्राह्मणाः स्मृताः।
ऋषभो धैवतश्चापि इत्येतौ क्षत्रियावुभौ ।।३।।
गान्धारश्च निषादश्च वैश्यावर्द्धेन वै स्मृतौ ।
शूद्रत्वं विद्धि चार्द्धेन पतितत्वान्न संशयः ।।४।।
ऋषभोत्थितषड्जहतो धैवतसहितश्च पञ्चमो यत्र।
निपतति मध्यमरागे तं निषादं षाडवं विद्यात् ।।५।।
यदि पञ्चमो विरमते गान्धारश्चान्तरः स्वरो भवति।
ऋषभो निषादसहितं पञ्चममीदृशं विद्यात् ।।६।।
गान्धारस्याधिपत्येन निषादस्य गतागतैः ।
धैवतस्य च दौर्बल्यान्मध्यमग्राम उच्यते ।।७।।

ईषत्स्पृष्टो निषादस्तु गान्धारश्चाधिको भवेत् ।
धैवतः कम्पितो यत्र षड्जग्रामन्तु निर्दिशेत् ।।८।।
अन्तरस्वरसंयुक्ता काकलिर्यत्र दृश्यते ।
तन्तु साधारितं विद्यात् पञ्चमस्थन्तु कैशिकम् ।।९।।
कैशिकं भावयित्वा तु स्वरैःसर्वैस्समन्ततः ।
यस्मात्तु मध्यमे न्यासः तस्मात्कैशिकमध्यमः ।।१०।।
काकलिर्दृश्यते यत्र प्राधान्यं पञ्चमस्य तु ।
कश्यपः कैशिकं प्राह मध्यम ग्राम सम्भवम् ।।११।।
गेति गेयं विदुः प्राज्ञा धेति कारूपवादनम् ।
वेति वाद्यस्य संज्ञानं गान्धर्वस्य विरोचनम् ।।१२।।

अथ पञ्चमः खण्डः

यःसामगानां प्रथमःस वेणोर्मध्यमः स्वरः ।
यो द्वितीयःस गान्धारः तृतीयस्त्वृषभः स्मृतः ।।१।।
चतुर्थःषड्ज इत्याहुः पञ्चमो धैवतो भवेत् ।
षष्ठो निषादो विज्ञेयः सप्तमः पञ्चमः स्मृतः ।।२।।
षड्जंमयूरो वदति गावो रम्भन्ति चर्षभम् ।
अजाविके तु गान्धारं क्रौञ्चो वदति मध्यमम् ।।३।।
पुष्पसाधारणे काले पिको वक्ति पञ्चमम् ।
अश्वस्तु धैवतं वक्ति निषादं वक्ति कुञ्जरः ।।४।।
कण्ठादुत्तिष्ठते षड्जः शिरसस्त्वृषभः स्मृतः ।
गान्धारस्त्वनुनासिक्यः उरसो मध्यमः स्वरः ।।५।।
उरसःशिरसः कण्ठादुत्थितः पञ्चमः स्वरः ।
ललाटाद्धैवतं विद्यान्निषादं सर्वसन्धिजम् ।।६।।
नासाकण्ठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संश्रितः ।
षड्भिःसञ्जायते यस्मात्तस्मात् षड्ज इति स्मृतः ।।७।।
वायुःसमुत्थितो नाभेः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
नर्दत्यृषभवद्यस्मात्तस्मादृषभ उच्यते ।।८।।

वायुःसमुत्थितो नाभेः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
नासागन्धवहः पुण्यः गान्धारस्तेन हेतुना ।।९।।
वायुःसमुत्थितो नाभेरुरो हृदि समाहतः ।
नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यमत्वं समश्नुते ।।१०।।
वायुःसमुत्थितो नाभेः उरोहृत्कण्ठशिरोहतः ।
पञ्चस्थानोस्थितस्याऽस्य पञ्चमत्वं विधीयते ।।११।।
धैवतञ्च निषादञ्च वर्जयित्वा स्वरद्वयम् ।
शेषापञ्चस्वरांश्चान्यान्पञ्चस्थानोत्थितान्विदुः ।।१२।।
(पञ्चस्थानस्थितत्वेन सर्वस्थानानि धार्यते)
अग्निगीतः स्वरःषड्ज ऋषभो ब्रह्मणोच्यते ।
सोमेन गीतो गान्धारो विष्णुना मध्यमः स्वरः ।।१३।।
पञ्चमस्तु स्वरो गीतो नारदेन महात्मना ।
धैवतश्च निषादश्च गीतौ तुम्बुरुणा स्वरौ ।।१४।।
आद्यस्य दैवतं ब्रह्मा षड्जस्याप्युच्यते बुधैः ।
तीक्ष्ण दीप्ति प्रकाशत्वादृषभस्य हुताशनः ।।१५।।
गावः प्रगीते तुष्यन्ति गान्धारस्तेन हेतुना ।
श्रुत्वा चैवोपतिष्ठन्ति सौरभेया न संशयः ।।१६।।
सोमस्तु पञ्चमस्यापि दैवतं ब्रह्मराट् स्मृतम् ।
निर्ह्रासो यच्च वृद्धिश्च ग्राममासाद्य सोमवत् ।।१७।।
अतिसन्धीयते यस्मादेतान्पुर्वोत्थितान्त्स्वरान् ।
तस्मादस्य स्वरस्यापि धैवतत्वं विधीयते ।।१८।।
निषीदन्ति स्वरा यस्मान्निषादस्तेन हेतुना ।
सर्वांश्चाभिभवत्येष यदादित्योऽस्य दैवतम् ।।१९।।

अथ षष्ठः खण्ड

दारवी गात्रवीणा च द्वे वीणे गानजातिषु ।
सामिकी गात्रवीण तु तस्याश्शृणुत लक्षणम् ।।१।।
गात्रवीणा तु सा प्रोक्ता यस्यां गायन्ति सामगाः ।

गात्रवीणा तु सा प्रोक्ता यस्यां गायन्ति सामगाः।
स्वरव्यञ्जनसंयुक्ता अङ्गल्यङ्गुष्ठरञ्जिता ।।२।।
हस्तौ सुसंयुतौ धार्यौ जानुभ्यामुपरि स्थितौ ।
गुरोरनुकृतिं कुर्यात् यथा ज्ञानमतिर्भवेत् ।।३।।
प्रणवं प्राक् प्रयुञ्जीत व्याहृतीस्तदनन्तरम् ।
सावित्रीञ्चानुवचनन्ततो वृत्तान्तमारभेत् ।।४।।
प्रसार्य चाङ्गुलीस्सर्वाऽरोपयेत् स्वरमण्डलम् ।
न चाङ्गुलीभिरङ्गुष्ठमङ्गुष्ठेनाङ्गुलीः स्पृशेत् ।।५।।
विरलानङ्गुलीः कुर्यान्मूलेचैना न संस्पृशेत् ।
अङ्गुष्ठाग्रेण ता नित्यम्मध्यमे पर्वणि स्पृशेत् ।।६।।
मात्राद्विमात्रावृद्धानां विभागार्थं विभागवित् ।
अङ्गुलीभि र्द्विमात्रन्तु पाणेस्सव्यस्य दर्शयेत् ।।७।।
त्रिरेखा यत्र दृश्यते सन्धिं तत्र विनिर्दिशेत् ।
स पर्व इति विज्ञेयः शेषमन्तरमन्तरम् ।।८।।
यवान्तरन्तु सामसु ऋक्षु कुर्यात्तिलान्तरम् ।
स्वरान्मध्यमपर्वसु सुनिविष्टान्निवेशयेत् ।।९।।
न चात्र कम्पयेत्किञ्चिदङ्गस्यावयवं बुधाः ।
अधस्तनं मृदु न्यस्य हस्तमास्ते यथाक्रमम् ।।१०।।
अभ्रमध्ये यथा विद्युद्दृश्यते मणिसूत्रवत् ।
एष छेदो विवृत्तीनां यथा बालेषुकर्तरि ।।११।।
कूर्मोऽङ्गानीव संहृत्य चेष्टां दृष्टिन्दिशम्मनः ।
स्वस्थः प्रशान्तो निर्भीतो वर्णानुच्चारयेद्बुधः ।।१२।।
नासिकायास्तु पूर्वेण हस्तं गोकर्णवद्धरेत् ।
निवेश्य दृष्टिं हस्ताग्रे शास्त्रार्थमनुचिन्तयेत् ।।१३।।
सममुच्चारयेद्वर्णान्हस्तेन च मुखेन च ।
यथैवोच्चारयेद्वर्णान्धस्तथैवैनान्तसमापयेत् ।।१४।।
नात्याहन्यान्न निर्हन्यान्न प्रगायेन्न कम्पयेत् ।

समं सामानि गायेत व्योम्नि श्येनगतिर्यथा ।।१५।।
यथाप्सु चरताम्मार्गो मीनानान्नोपलक्ष्यते ।
आकाशे वा विहङ्गानान्तद्वत्स्वरगता श्रुतिः ।।१६।।
यथा दध्नि घृतं च स्यात्काष्ठस्थो वा यथानलः।
प्रयत्नेनोपलभ्येत तद्वत्स्वरगता श्रुतिः ।।१७।।
स्वरात्स्वरसङ्क्रामंस्तु स्वरसन्धिरनुल्बणम् ।
अविच्छिन्नं समं कुर्यात्सूक्ष्मच्छायाऽऽतपोपमम् ।।१८।।
अनागतमतिक्रान्तं विच्छिन्नं विषमाहतम् ।
तन्वन्तमस्थितान्तञ्च वर्जयेत्कर्षणं बुधः ।।१९।।
स्वरस्थानाच्युतो यस्तु स्वं स्थानमतिवर्तते ।
विस्वरं सामगा ब्रूयुर्विरक्तमिति वीणिनः ।।२०।।
अभ्यासार्थे द्रुतां वृत्तिं प्रयोगार्थे तु मध्यमाम् ।
शिष्याणामुपदेशार्थे कुर्याद्वृत्तिं विलम्बिताम् ।।२१।।
गृहीतग्रन्थ एवन्तु ग्रन्थोच्चारणशिक्षकान् ।
हस्तेनाध्यापयेच्छिष्यान् शैक्ष्येण विधिना द्विजः ।।२२।।

अथ सप्तमः खण्डः

क्रुष्टस्य मूर्द्धनि स्थानं ललाटे प्रथमः स्वरः।
भ्रुवोर्मध्ये द्वितीयस्य तृतीयस्य तु कर्णयोः ।।१।।
कण्ठस्थानञ्चतुर्थस्य मन्द्रस्य रसनोच्यते ।
अतिस्वारस्य नीचस्य हृदि स्थानं विधीयते ।।२।।
अङ्गुष्ठस्योत्तमे क्रुष्टो ह्यङ्गुष्ठे प्रथमः स्वरः ।
प्रदेशिन्यान्तु गान्धार ऋषभस्तदनन्तरम् ।।३।।
अनामिकायां षड्जस्तु कनिष्ठायान्तु धैवतम् ।
तस्याधस्ताच्च योन्यस्तु निषादन्तत्र विन्यशेत् ।।४।।
अपर्वत्वादसंज्ञत्वादव्ययत्वाच्च नित्यशः ।
मन्द्रो हिनुहिभूतस्तु परिस्वार इति स्मृतः ।।५।।
क्रुष्टेन देवा जीवन्ति प्रथमेन तु मानुषाः ।
पशवस्तु द्वितीयेन गन्धर्वाप्सरसस्त्वनु ।।६।।

आण्डजाः पितरश्चैव चतुर्थस्वरजीविनः ।
मन्द्रन्त्वेवोपजीवन्ति पिशाचाऽसुरराक्षसाः ॥७॥
अतिस्वारेण नीचेन जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
सर्वाणि खलु भुतानि धार्यन्ते सामिकैः स्वरैः ॥८॥
दीप्ताऽऽयताकरुणानां मृदुमध्यमयोस्तथा ।
श्रुतीनां योऽविशेषज्ञो न स आचार्य उच्यते ॥९॥
दीप्ता मन्द्रे द्वितीये च प्र चतुर्थे तथैव च ।
अतिस्वारे तृतीये च क्रुष्टे तु करुणा श्रुतिः ॥१०॥
श्रुतयोऽन्या द्वितीयस्य मृदुमध्यायताः स्मृताः ।
तासामपि तु वक्ष्यामि लक्षणानि पृथक्पृथक् ॥११॥
आयतात्वं भवेन्नीचे मृदुत्वञ्च विपर्यये ।
स्वेस्वे स्वरे मध्यमन्तु तासमीक्ष्य प्रयोजयेत् ॥१२॥
द्वितीये विरता या तु क्रुष्टस्य परतो भवेत् ।
दीप्तां तान्तु विजानीयात्प्रथमेन मृदुस्मृता ॥१३॥
अत्रैव विरता या तु चतुर्थेन प्रवर्तते ।
तथा मन्द्रे भवेद्दीप्ता साम्नश्चैव समापने ॥१४॥
नाविरते श्रुतिं कुर्यात्स्वरयोर्नापिचान्तरे ।
न च ह्रस्वे च दीर्घे च न चापि घुटसंज्ञके ॥१५॥
द्विविधागतिः पदान्तः स्थितसन्धिस्सहोष्मभिः ।
पञ्चस्वेतेषु स्थानेषु विज्ञेयं घुटसंज्ञितम् ॥१६॥
स्वरान्तराऽवितानि ह्रस्वदीर्घ घुटानि च ।
श्रुतिस्थाने विशेषेण श्रुतिवत्स्वरतो भवेत् ॥१७॥
दीप्तामुदात्ते जानीयाद्दीप्ताञ्च स्वरिते विदुः ।
अनुदात्ते मृदुर्ज्ञेया गान्धर्वाःश्रुतिसम्पदः ॥१८॥
उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितप्रचिते तथा ।
निघातश्चेति विज्ञेयः स्वरभेदस्तु पञ्चधा ॥१९॥

अथ अष्टमः खण्डः

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि आर्चिकस्य स्वरत्रयम् ।
उदात्तश्चानुदत्तिश्च तृतीयःस्वरितःस्वरः ।।१।।
य एवोदात्त इत्युक्तःस एव स्वरितात्परः ।
प्रचयः प्रोच्यते तज्ज्ञैर्नचात्रान्यत्स्वरान्तरम् ।।२।।
वर्णस्वारोऽतीस्वारः स्वरितो द्विविधः स्मृतः ।
मात्रिको वर्ण एवेति दीर्घस्तूच्चारितादनु ।।३।।
स तु सप्तविधो ज्ञेयः स्वारः प्रत्ययदर्शनात् ।
पदेन तु स विज्ञेयो भवेद्यो यत्र यादृशः ।।४।।
सप्तस्वरान्प्रयुञ्जीत दक्षिणं श्रवणं प्रति ।
आचार्यैर्विहितं शास्त्रं पुत्रशिष्यहितैषिभिः ।।५।।
उच्चादुच्चतरन्नास्ति नीचान्नीचतरं तथा ।
त्रैस्वर्ये स्वारसंज्ञायां किंस्थानं स्वारमुच्यते ।।६।।
उच्चनीचस्य यन्मध्ये साधारणमिति श्रुतिः ।
तं स्वारं स्वारसंज्ञायां प्रतिजानन्ति शैक्षिकाः ।।७।।
उदात्ते निषाद गान्धारावनुदात्ते ऋषभ धैवतौ ।
स्वरितप्रभवाह्येते षड्ज मध्यम पञ्चमाः ।।८।।
यत्र क ख परा ऊष्मा जिह्वामूलप्रयोजना ।
तामप्याज्ञापयेन्मात्रां प्रकृत्यैव तु सा कला ।।९।।
जात्यः क्षैप्रोऽभिनिहितस्तैरोव्यञ्जनमेवाच ।
तिरोविरामः प्रश्लिष्टः पादवृत्तश्च सप्तमः ।।१०।।
स्वराणामहमेतेषां पृथग्वक्ष्यामि लक्षणम् ।
उद्दिष्टानां यथान्यायमुदाहरणमेव च ।।११।।

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

द्वितीयः प्रपाठके

अथ प्रथमः खण्डः

सयकारं सवं वाप्यक्षरं स्वरितं भवेत् ।
न चोदात्तं पुरस्तस्य जात्यः स्वारस्स उच्यते ।।१।।
इ उ वर्णौ यदोदात्तावपद्येते च वै क्वचित् ।
अनुदात्त परे नित्यं विद्यात्क्षैप्रस्य लक्षणम् ।।२।।
ए ओ आभ्यामुदात्ताभ्यामकारो निहितश्च यः ।
अकारं यत्र लुम्पन्ति तमभिनिहितं विदुः ।।३।।
उदात्तपूर्वं यत्किञ्चिच्छन्दसि स्वरितं भवेत् ।
एष सर्वबहुस्वारस्तैरोव्यञ्जनमुच्यते ।।४।।
अवग्रहात्परं यत्र स्वरितं स्यादनन्तरम् ।
तिरोविरामं तं विद्यादुदात्तो यद्यवग्रहः ।।५।।
इकारं यत्र पश्येयुरिकारेणैव संयुतम् ।
उदात्तामनुदात्तेन प्रश्लिष्टन्तन्निबोधत ।।६।।
स्वरेचेत्स्वरितं यत्र विवृत्ता यत्र संहिता ।
एतत्पादान्तवृत्तस्य लक्षणं शास्त्रचोदितम् ।।७।।
जात्यस्वारस्सजात्येन श्रुष्ट्यग्रे क्षैप्र उच्यते ।
तेमन्वताभिनिहितः तैरोव्यञ्जन ऊतये ।।८।।
तिरोविरामो विष्कभिते प्रश्लिष्टोहीन्द्रगिर्वणः
पादवृत्तः कईवेद स्वारास्सप्तैवमादयः ।।९।।
उच्चादेकाक्षरात्पूर्वं स्वर्यते यदिहाक्षरम् ।
स्वाराणां जात्यवर्णानामेषां प्रकृतिरुच्यते ।।१०।।
चत्वारस्त्वादितः स्वाराः कम्पं पुष्यन्ति शास्त्रतः।
उदात्तैवैकनीचे वा जुह्वोऽग्नेतत्र दर्शनम् ।।११।।

अथ द्वितीयः खण्डः

इकारान्ते पदे पूर्वे उकारे परतः स्थिते ।
ह्रस्वकम्पं विजानीयान्मेधावी नात्र संशयः ।।१।।

इकारान्ते पदेचैवोकारद्वय पदे पदे ।
दीर्घकम्पं विजानीयाच्छग्ध्यूष्विति निदर्शनम् ।।२।।
त्रयो दीर्घास्तु विज्ञेया ये च सन्ध्यक्षरेषु वै ।
समन्या पथ्या इन्द्राभ्यां शेषा ह्रस्वाः प्रकीर्तिताः ।।३।।
अनेकानामुदात्तानां अनुदात्तः परो यदि ।
शिवकं तं विजानीयादुदात्त स्वः कम्पंस्वरितो यदि ।।४।।
यत्र द्विप्रभृतीनि स्युः उदात्तान्यक्षराणि तु ।
नीचश्चोच्चश्च परतः तत्रोदात्तं विदुर्बुधाः ।।५।।
न रेफे वा हकारे वा द्विर्भावो जायते क्वचित् ।
न च वर्गद्वितीयेषु न चतुर्थे कदाचन ।।६।।
चतुर्थश्च तृतीयेन द्वितीयं प्रथमेन तु ।
आद्यमन्त्यश्च मध्यं च स्वाक्षरेणैव पीडयेत् ।।७।।
अनन्त्यश्च भवेत्पूर्वोन्त्यश्च परतो यदि ।
तत्र मध्ये यमस्तिष्ठेत्सवर्णः पूर्ववर्णयोः ।।८।।
वर्गान्त्याञ्छषसैस्सार्द्धमन्तस्थैर्वापि संयुतान् ।
दृष्ट्वा यमा निवर्तन्ते आदेशिकमिवाध्वगाः ।।९।।
तृतीयश्च चतुर्थश्च चतुर्थादि परं पदम् ।
द्वौ तृतीयौ हकारश्च हकारादि परं पदम् ।।१०।।
अनुस्वारोपध्ममूलानां न क्वचित्क्रमतेऽक्षरम् ।
र ह पूर्वयुतेचापि उत्तरं क्रमतेऽक्षरम् ।।११।।
संयोगे स्वरितं यत्र योद्घाते पतने यथा ।
पूर्वाङ्गमादितः कृत्वा पराङ्गादौ निवेशयेत् ।।१२।।
संयोगे यत्र दृश्येत व्यञ्जनं विरते पदे ।
पूर्वाङ्गं तद्विजानीयात् येनारम्भः परं हितम् ।।१३।।
संयोगात्तु परं स्वार्य परं संयोगनायकम्
संयुक्तस्य तु वर्णस्यास्वरितं पूर्वमक्षरम् ।।१४।।
अनुस्वारः पदान्तश्च क्रमजं प्रत्यये स्वके ।
स्वरभक्तिस्तथारेफः सर्वं पूर्वाङ्गमुच्यते ।।१५।।

पादादौ च पदादौ च संयोगाऽवग्रहेषु च ।
य शब्द (ज शब्द) इति विज्ञेयो योन्यस्य य इति स्मृतः ।।१६।।
पदादावप्यविच्छेदे संयोगान्ते च तिष्ठताम् ।
वर्जयित्वा रहयाणामयादेशः प्रदृश्यते ।।१७।।
(वर्जयित्वा र हौ यानामयादेशः प्रदृश्यते)
स्वसंयुक्तो गुरुर्ज्ञेयः सानुस्वारोऽग्रिमः स्फुटः ।
अणुशेषोऽग्निगोर्वापि युगलादिरविस्फुटः ।।१८।।

अथ तृतीयः खण्डः

यदुदात्तमुदात्तन्तद्यत्स्वरितन्तत्पदे भवति नीचम् ।
यन्नीचन्नीचमेव तद्यत्प्रचयस्थन्तदपि नीचम् ।।१।।
अयमग्नि स्तुतोमित्रमिदं वयमयावहाः ।
प्रियंदूतं घृतं चित्त मभिशब्दश्च नीचतः ।।२।।
अर्केष्वेवं सुतेष्वेव यज्ञेषु कलशेषु च ।
शतेषु सपवित्रेषु नीचादुच्चार्यते श्रुतिः ।।३।।
हरिवरुणवरेण्येषु धारापुरुषेषु च स्वरति रेफः।
विश्वानरो नकारेण शेषा रस्वरिता नराः ।।४।।
द्वौ वरुणौ वस्वरितौ उदुत्तमं त्वंवरुणौ ।
धाकारेचोरुधारायामुरुधारेवदोहने ।।५।।
मात्रिकं वा द्विमात्रं वा स्वर्यते यदिहाक्षरम्
तस्यादितोऽर्द्धमात्रा वै शेषन्तु परतो भवेत् ।।६।।
अदीर्घं दीर्घवत्कुर्याद्विस्वरं यत्प्रत्युज्यते ।
कम्पोत्स्वरिताऽभिगीतह्रस्वकर्षणमेव च ।।७।।
निमेषकाला मात्रास्याद्विद्युत्कालेतिचाऽपरे ।
ऋक्स्वरातुल्ययोगा वा मतिस्स्यात्सोमशर्मणः ।।८।।
समासेऽवग्रहं कुर्यात्पदञ्चात्रानुसँहितम् ।
यत्तोक्षरादिकरणं पदान्तन्तस्य तं विदुः ।।९।।

सर्वत्र पुत्र मित्र सखिशब्दा अद्रि शतक्रतो-इत्यवग्राह्याः ।
आदित्य विप्रजातवेदाश्चसत्पति गोपति वृत्रहा समुद्राश्च ।।१०।।
स्वर्युवो देवयवश्चारतिन्देवतातये
चिकितिश्चचुक्रुधं चैव नावगृह्णन्ति पण्डिताः ।।११।।

अथ चतुर्थः खण्डः

विवृत्तयश्चतस्रो वै विज्ञेया इति मे मतम् ।
अक्षराणान्नियोगेन तासान्नामानि मे शृणु ।।१।।
ह्रस्वादिर्वत्सानुसृजा वत्सानुसारिणीचाग्रे ।
पाकवत्युभयोर्ह्रस्वा दीर्घवृद्धा पिपीलिका ।।२।।
चतसृणां विवृत्तीनामन्तरम्मात्रिकं भवेत् ।
अर्द्धमात्रिकमन्येषामन्येषामणुमात्रिकम् ।।३।।
आपद्यते मकारो रेफोष्मसु प्रत्ययेष्वनुस्वारम् ।
यलवेषु परसवर्णं स्पर्शेषुचोत्तमापत्तिम् ।।४।।
नकारान्ते पदे पूर्वे स्वरे च परतः स्थिते ।
आकारं रक्तमित्याहुर्नकारेण तु रज्यते ।।५।।
नकारान्ते पदे पूर्वे व्यञ्जनैश्च य वादिषु ।
अर्द्धमात्रा तु पूर्वस्य रज्यते त्वणु मात्रया ।।६।।
नकार स्वर संयुक्तश्चतुर्युक्तो विधीयते ।
रेफो रङ्गश्च लोपश्च अनुस्वारोपि वा क्वचित् ।।७।।
हृदयादुत्थितो रङ्गः कांस्येन समनिस्स्वनः ।
मृदुश्चैव त्रिमात्रश्च दधन्वाँ इति निदर्शनम् ।।८।।
यथा सौराष्ट्रिका नारी तक्राँऽइत्यभिभाषते ।
एवं रङ्गः प्रयोक्तव्यः नारदस्य मतं यथा ।।९।।

अथ पञ्चमः खण्डः

स्वरा गडदबाश्चैव ङणनमास्सहोष्मभिः ।
चतुर्णां पदजातीनां पदान्ता दश कीर्तिताः ।।१।।
स्वर उच्चः स्वरो नीचः स्वरस्स्वरित एव च ।
व्यञ्जनान्यनुवर्तन्ते यत्र तिष्ठति स स्वरः ।।२।।

स्वरप्रधानन्त्रैस्वर्यमाचार्याः प्रतिजानते ।
मणिवद्व्यञ्जनं विद्यात्सूत्रवच्च स्वरं विदुः ।।३।।
सदुर्बलस्य यथा राष्ट्रं हरते बलवान्नृपः ।
दुर्बलं व्यञ्जनन्तद्वद्धरते बलवान्स्वरः ।।४।।
ओभावश्च विवृत्तिश्च श ष सा रेफ एव च ।
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः ।।५।।
स्वरप्रत्यया विवृत्तिस्संहितायां तु या भवेत् ।
विसर्गस्तत्र मन्तव्यस्तालव्यो वाऽत्र जायते ।।६।।
संध्यक्षरोपधे सन्धौ प्राप्तलुप्तौ यवौ यदि ।
व्यञ्जनाख्या विवृत्तिस्तु स्वराख्या प्रकृतिसंहिता ।।७।।
ऊष्मान्तं विरते यत्र सन्धावो भवते च यत् ।
विवृत्तिर्या भवेत्तत्र स्वराख्यां तां विनिर्द्दिसेत् ।।८।।
यद्योभावप्रसन्धानमुकारादि परं पदम् ।
स्वरान्तन्तादृशं विद्याद्यदन्यद्व्यक्तमूष्मणः ।।९।।
प्रथमा उत्तमाश्चैव पदान्तेषु यदि स्थिताः ।
द्वितीयँस्थानमापन्नाश्शषसाःप्रत्यया यदि ।।१०।।
प्रथमानूष्मसंयुक्तान् द्वितीयानिव दर्शयेत् ।
नचैनान्प्रतिजानीयाद्यथामत्स्यः क्षुरोऽप्सराः ।।११।।

अथ षष्ठः खण्डः

छन्दोमानञ्च वृत्तञ्च पादस्थानन्त्रिकारणम् ।
ऋचस्वच्छन्दवृत्तास्तु पादातःस्त्वक्षरमानतः ।।१।।
ऋवर्णं स्वरभक्तिञ्च छन्दोमाने न निर्दिशेत् ।
प्रत्ययेन सहाऽरेफं मिमीत स्वरभक्तिषु ।।२।।
ऋवर्णे तु पृथक् रेफः प्रत्ययस्तु पृथक् भवेत् ।
विद्याल्लघुमृकारन्तु यदि तूष्माणसंयुतः ।।३।।
ऊष्मणैव हि संयुक्त ऋकारो यत्र पीड्यते ।
गुरुवर्णः सविज्ञेयःश्रृतासोऽत्राऽनुदर्शनम् ।।४।।

ऋषभं च गृहीतं च बृहस्पतिं पृथिव्यां च ।
निर्ऋति पञ्चमाह्यत्र ऋकारा नाऽत्र संशयः ।।५।।
श ष स ह रादौ रेफः स्वरभक्तिर्जायते द्विपदासन्धौ।
इ उवर्णाभ्यां हीना क्वचिदेकपदा क्रमवियुक्ता ।।६।।
स्वरभक्तिस्तु द्विविधा ऋकारो रेफ एव च ।
स्वरोदा व्यञ्जनोदा च विहिताऽक्षरचिन्तकैः ।।७।।
शषसेषु स्वरोदयां हकारे व्यञ्जनोदयाम् ।।८।।
स्वरभक्तिं प्रयुञ्जानस्त्रीन् दोषान्परिवर्जयेत् ।
इकारञ्चाप्युकारञ्च ग्रस्तदोषन्तथैव च ।।९।।
संयोगपरं छपरं विसर्जनीयं द्विमात्रिकञ्चैव ।
अवसानिकञ्च न लघु सानुस्वारं घुटान्तञ्च ।।१०।।

अथ सप्तमः खण्डः

पथ्यापादः प्रथमो द्वादशमात्रस्तथातृतीयोऽपि ।
अष्टादशो द्वितीयस्समापनः पञ्चदशमात्रः ।।१।।
पथ्यालक्षणमुक्तं यात्वन्या सा स्मृता विपुला ।।२।।
अक्षराणां लघु ह्रस्वमसंयोगपरं यदि ।
तत्संयोगोत्तरं विद्यात् गुरुदीर्घाक्षराणि तु ।।३।।
विवृत्तिर्यत्र दृश्येत स्वरस्यैवाऽग्रतःस्थिता ।
गुरुस्वारस्सविज्ञेयः क्षैप्र स्तत्र न विद्यते ।।४।।
अन्तोदात्तमाद्युदात्तमुदात्तमनुदात्त न्नीचस्वरितम् ।
मध्योदात्तं स्वरितं द्विरुदात्तमित्येता अष्टौ पदसंज्ञाः।।५।।
अष्टप्रकारं विज्ञेयं पदानां स्वरलक्षणम् ।
अग्निस्सोमः प्रवोवीर्यं हविषास्वर्वनस्पतिः ।।६।।
अन्तमध्यमयोर्नापि उ दमनुदनिपाते ।
आद्यात्स्वरित मुपसर्गे द्विर्न्नीचमाख्यात इत्ति ।।७।।
स्वरितात्पराणि यानि तानि धार्याक्षराणि तु ।
सर्वाणि प्रचयस्थानि उपोदात्तन्निहन्यते ।।८।।

प्रचयो यत्र दृश्येत तत्रहन्यात्स्वरं बुधः ।
स्वरितः केवलो यत्र मृदुं तत्र निपातयेत् ।।९।।
पञ्चविधमाचार्यकन्नाम मुखं न्यासः करणं प्रतिज्ञोच्चारणा।
अत्रोच्यते श्रेयः खलु वै सप्रतिज्ञोच्चारणा ।।१०।।
यस्य कस्यचिद्वर्णस्य करणन्नोपलभ्यते ।
प्रतिज्ञा तत्र वोढव्या करणं हि तदात्मकम् ।।११।।
तुम्बुरुनारदवसिष्ठविश्वावस्वादयश्च गन्धर्वाः ।
सामसु निभृतं करणं स्वरसौक्ष्म्यात्तेऽपि हि न कुर्युः ।।१२।।

अथ अष्टमः खण्डः

कौक्षेयाग्निं सदा रक्षेदश्नीयादशनं हितम् ।
जीर्णाहारः प्रबुद्धस्सन्नुषसि ब्रह्म चिन्तयेत् ।।१।।
शरद्विषुवतोऽतीता दुषस्युत्थानमिष्यते ।
यावद्वासन्तिकी रात्रिः मध्यमा पर्युपस्थिता ।।२।।
आम्रपौलाशबिल्वानामपामार्गशिरीषयोः ।
वाग्यतः प्रातरुत्थाय भक्षयेद्दन्तधावनम् ।।३।।
खदिरस्य कदम्बस्य करवीरकरञ्जयोः ।
सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च यशस्विनः ।।४।।
तेनाऽस्यकरणं सौक्ष्म्यम्माधुर्यञ्चोपजायते ।
वर्णांश्च कुरुते सम्यक्प्राचीनौदव्रजिर्यथा ।।५।।
त्रिफलां लवणाख्येन भक्षयेच्छिक्षकः सदा ।
अग्निमेधाजनन्येषा स्वरवर्णकरी तथा ।।६।।
कृत्वाचाऽऽवश्यकान्धर्माञ्जाठरं पर्युपास्य च ।
पीत्वा धूमं घृतञ्चैव शुचिर्भूत्वा ततो वदेत् ।।७।।
मन्द्रेणोपक्रमेत्पूर्वं सर्वशाखास्वयं विधिः ।
सप्तमन्त्राननतिक्रम्य यथेष्टां वाचमुत्सृजेत् ।
न तां समीरयेद्वाचं या प्राणमुपरोधयेत् ।।८।।

प्राणानामुपरोधेन वैस्वर्यञ्चोपजायते ।
स्वरव्यञ्जनमाधुर्यं लुप्यते नाऽत्र संशयः ।।९।।
कुतीर्थादागतं दग्धमपवर्णञ्चभक्षितम् ।
न तस्य परिमोक्षोऽस्ति पापाहेरिव किल्बिषात् ।।१०।।
सुतीर्थादागतं व्यक्तं स्वाम्नातं सुप्रतिष्ठितम् ।
सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म राजते ।।११।।
न करालो न लम्बोष्ठो न च सर्वाऽनुनासिकः ।
गद्गदो बद्धजिह्वाश्च प्रयोगान् वक्तुमर्हति ।।१२।।
एकचित्तो निरुद्भ्रान्तः तानगानविवर्जितः ।
स तु वर्णान्प्रयुञ्जीत दन्तोष्ठं यस्य शोभनम् ।।१३।।
पञ्च विद्या न गृह्णन्ति चण्डास्तब्धाश्च ये नराः ।
अलसाश्च सरोगश्च येषाञ्च विसृतम्मनः ।।१४।।
शनैर्विद्यां शनैरर्थानारोहेत्पर्वतं शनैः ।
शनैरेवाध्वगमनं योजनानां परिव्रजेत् ।।१५।।
योजनानां सहस्रन्तु शनैर्याति पिपीलिका ।
अगच्छन्वैनतेयोऽपि पदमेकन्न गच्छति ।।१६।।
न हि पार्ष्णि हता वाणी प्रयोगान्वक्तुमर्हति ।
बधिरस्येव तल्पस्था विदग्धा वामलोचना ।।१७।।
उपांशु त्वरितञ्चैव योऽधीते वित्रसन्निव ।
अपि रूपसहस्रेषु सन्देहेष्वेव जायते ।।१८।।
पुस्तकप्रत्ययाऽधीतन्नाऽधीतं गुरुसन्निधौ ।
न भ्राजते सभामध्ये जारगर्भा इव स्त्रियः ।।१९।।
अञ्जनस्य क्षयन्दृष्ट्वा वल्मीकस्य तु सञ्चयम् ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्दाना ध्ययनकर्मसु ।।२०।।
यत्कीटैः पांसुभिश्लक्ष्णैः वल्मीकः क्रियते महान्।
न तत्र बलसामर्थ्यमुद्यद्योगस्तत्र कारणम् ।।२१।।

सहस्त्रगुणिता विद्या शतशः परिकीर्तिता ।
आगमिष्यति जिह्वाग्रे स्थलान्निम्नमिवोदकम् ।।२२।।
हयानामिव जात्यानामर्द्धरात्रार्द्धशायिनाम् ।
न हि विद्यार्थिनान्निद्रा चिरन्नेत्रेषु तिष्ठति ।।२४।।
न भोजनविलम्बी स्यान्न चाऽशननिबन्धनः ।
सुदूरमपि विद्यार्थी व्रजेद्गरुडहंसवत् ।।२४।।
अहेरिव गणाद्भीतः सौहार्दान्नरकादिव ।
राक्षसीभ्य इव स्त्रीभ्यःस विद्यामधिगच्छति ।।२५।।
न शठाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्न क्लीबा न च मानिनः।
न च लोकरवाद्भीताः न च श्वःश्वः प्रतीक्षकाः ।।२६।।
यथाखनन्खनित्रेण भूतले वारि विन्दति ।
एवं गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति ।।२७।।
शुश्रूषारहिता विद्या यद्यपि मेधागुणैस्समुपयाति।
वन्ध्येव यौवनवती न तस्य विद्या फलवती भवति।।२८।।
द्यूतं पुस्तक वाच्यञ्च नाटकेषु च सक्तिका ।
स्त्रियस्तन्द्रा च निद्रा च विद्याविघ्नकराणि षट् ।।२९।।
यथा व्याघ्री हरेत्पुत्रान्दंष्ट्राभिर्न च पीडयेत् ।
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद्वर्णान्प्रयोजयेत् ।।३०।।
एवं वर्णाः प्रयोक्तव्या नाऽव्यक्ता न च पीडिताः।
सम्यग्वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते ।।३१।।

।। इति द्वितीयः प्रपाठकः ।।

।। इति नारदीयशिक्षा समाप्ता ।।

—*—



डॉ0 विजय कुमार शर्मा

जन्मस्थान - कागपुर मूँडिया, अलवर, राजस्थान।

शिक्षा -'सामवेद रहस्यान्तम् गोकर्ण, कर्नाटक (गुरु-शिष्य परम्परा से) पूर्वमध्यमा, उत्तरमध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्यसम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी एम0ए0 (संस्कृत) संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

शोधकार्य - पुष्पसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

अध्ययन क्षेत्र - वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य

अध्यापन अनुभव - 10 छात्रों को सामवेद राणायनी शाखा का सम्पूर्ण अध्यापन।

वर्तमान पद एवं संस्था - सामवेदाध्यापक (राणायनी शाखा) श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेदमीमांसा अनुसन्धान केन्द्र, हनुमानघाट, वाराणसी।

वेद पारायण - द्वादश ज्योतिर्लिंग सहित दक्षिण भारत के प्रसिद्ध तीर्थस्थलों पर 50 से अधिक सामवेद पारायण।

प्रकाशन - शोधपत्र एवं शोधलेख - 07

पुरस्कार - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (उ0प्र0) द्वारा **'वेदपण्डित'**, गौड़ ब्राह्मण परिषद्, जयपुर (राजस्थान) द्वारा **'वेदरत्नाकर'** एवं नरहर गुरु वैदिक आश्रम, इन्दौर (म0प्र0) द्वारा **'सामवेद पारङ्गत'** पुरस्कार।

वैदिक सम्मेलन-सङ्गोष्ठियाँ - (क्षेत्रीय/राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय) - वेदपाठ एवं शोधपत्र-प्रस्तुति-21



वेदों को उनके मूल स्वरूप में संरक्षित रखने के उद्देश्य से काशी के केदारघाट में स्थापित जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी-स्वरूपानन्द-सरस्वती-न्याय-वेदान्त-महाविद्यालय में सामवेद की राणायनीय शाखा का अपने गुरु पं. श्री शम्भुलाल शर्मा जी से अध्ययन करते विभिन्न प्रदेशों से आए वैदिक बटुकगण



प्रकाशकः शारदापीठ-विद्यासभा, द्वारका

मुद्रणालयः, वाराणसी